सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥

सहज कथा

श्रीमान १०८ ब्रह्म ज्ञानी संत निक्का सिंह जी महाराज विरक्त

निर्मल आश्रम, ऋषिकेश

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि ॥

सहज कथा

संत निक्का सिंह जी महाराज विरक्त

निर्मल आश्रम, ऋषिकेश

प्रकाशक :
महन्त राम सिंह,
निर्मल आश्रम,
ऋषिकेश - 249201

प्रथम संस्करण - 1994
द्वितीय संस्करण - 1998
तृतीय संस्करण - 2001
चतुर्थ संस्करण - 2007

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।

मुद्रक :
अनीस ऑफसेट प्रेस
दरियागंज, नई दिल्ली।

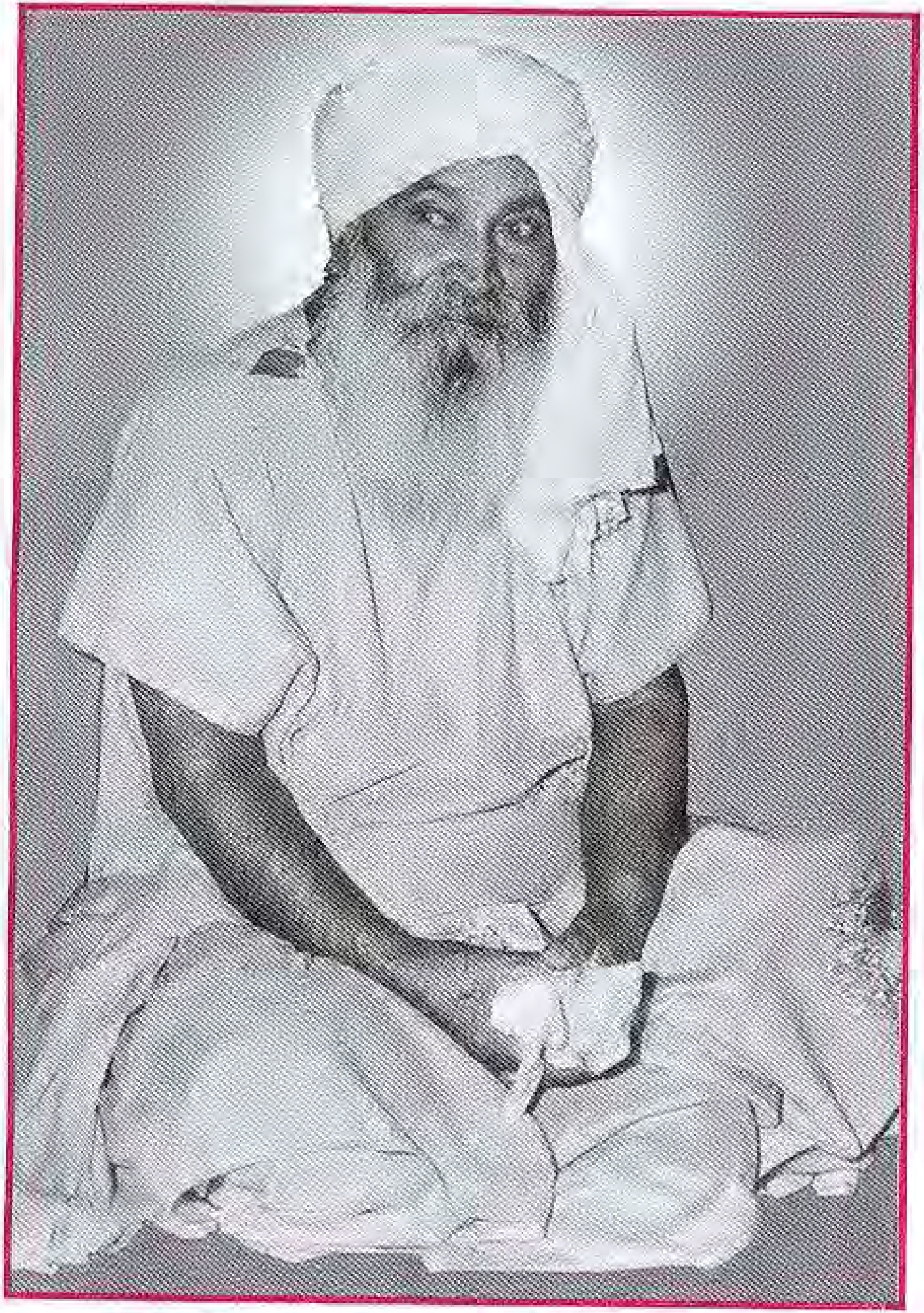

पूज्य संत बाबा निक्का सिंह जी महाराज 'विरक्त'

अनुक्रम

		पृष्ठ
१.	कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी.....	1
२.	हरि जेठि जुडंदा लोडीऐ.....	11
३.	गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥	23
४.	वड्डे वड्डे राजन अरु भूमन.....	38
५.	रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥	45
६.	कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥	60
७.	जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥	68
८.	कतिकि करम कमावणे.....	77
९.	वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ.....	86
१०.	सभु जगु जिनहि उपाइआ.....	98
११.	जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी.....	132
१२.	फलगुणि अनंद उपारजना.....	141
१३.	मेरै हीअरै रतनु नामु हरि वसिआ.....	152
१४.	जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि.....	160
१५.	माई मै किहि विधि लखउ गुसाई ॥	169
१६.	माई मनु मेरो बसि नाहि ॥	188
१७.	मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥	192
१८.	लिसना बुझै हरि कै नामि.....	202

दो शब्द

जिस समय कलियुग का प्रभाव बढ़ा, सामान्य जनता माया के प्रभाव में आ गई। सत्य को विस्मृत कर दिया। जिस कार्य के लिए बहुत लम्बे समय के पश्चात् यह अमूल्य मनुष्य-जन्म प्राप्त हुआ था, उस वास्तविक उद्देश्य से भटक गई। उद्देश्य से भटक जाने के कारण अज्ञान के तिमिर में ठोकरें खाने लगी। उस समय 'अकाल पुरख' वाहिगुरु ने आहत पृथ्वी की आवाज़ सुनकर जीवों के दुःख दूर करने हेतु और भ्रमित जन सामान्य को अज्ञान-अंधकार में से निकालने के लिए "आपि नराइणु कलाधारि जग महि परवरियउ" अपने आपको गुरु नानक देव जी महाराज के रूप में प्रकट किया और गुरु नानक देव जी का रूप धारण करके देश देशान्तर में भ्रमण किया और चार विस्तृत यात्रायें कीं। अनेक दिग्भ्रमित लोगों को प्रेमाभक्ति का सीधा और सहज मार्ग बताकर जीवन को दिशा प्रदान की। इसके उपरांत आप जी ने संसार के भले के लिये दस रूप धारण किये। 'जोति उहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ" के महावाक्य के अनुसार युक्ति वही प्रेमाभक्ति वाली रखी। ज्योति वही, केवल शरीर ही बदलते रहे। जब आप जी ने दशम् रूप धारण किया तो जहां बाणी उच्चारण की वहां पांच सिक्खों को पांवटा साहिब से संस्कृत की विद्या ग्रहण करने हेतु काशी भेजा। काशी में विद्या ग्रहण करने के पश्चात् बहुत बड़े विद्वान हुये और आत्म स्थितप्रज्ञ हुये। विद्या ग्रहण करने के उपरान्त कल्गीधर पातशाह के पवित्र चरणों में पहुंचे तो दशमेश पिताजी ने प्रसन्न होकर बड़े-बड़े वर प्रदान किये, और कहा कि तुम सब मेरे निर्मल संत हो। तुम्हारे बाद निर्मल सम्प्रदाय चलेगा जिस में बड़े-बड़े महापुरुष होंगे। महान् तेजस्वी और आध्यात्म विद्या के ज्ञाता होंगे। बहुत लोग उनसे अध्यात्म विद्या ग्रहण करने हेतु उनके पास आया करेंगे। अतः आप जाओ, देश देशान्तर में गुरु नानक देव जी के उपदेश का छींटा दो। जीवन-मुक्ति का आनंद लो और अन्य अधिकारी लोगों को अध्यात्म-ज्ञान की कृपा करो।

इस प्रकार कल्गीधर पातशाह द्वारा चलाये हुए निर्मल-सम्प्रदाय में समय-समय पर बड़े-बड़े विद्वान, महान् तेजस्वी और पूर्ण महापुरुष होते आये हैं। इस प्रकार समय गुज़रता गया। कुछ समय पश्चात् इस निर्मल सम्प्रदाय में एक महान् तेजस्वी, पूर्ण ज्ञानवान्, उद्भट विद्वान, ब्रह्मनिष्ठ, पूर्ण ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा सिंह जी हुये हैं जिन्होंने सन् १८०० ई० के करीब श्री निर्मल आश्रम, ऋषिकेश तथा निर्मल बाग, कनखल (हरिद्वार) की स्थापना की। उनके चरण स्पर्श प्राप्त करके अनेक विद्वान और बहुत से आत्म स्थित-प्रज्ञ हुये।

इस प्रकार बुड्ढा सिंह जी महाराज की सुन्दर उद्यान में एक ऐसा सुंदर और परागमय पुष्प खिला जिसकी सुगंधि दूर दूर तक फैली और बाबा बुड्ढा सिंह जी की असंख्य कृपायें प्राप्त कीं जिन को लोगों ने पूज्य बाबा निक्का सिंह जी महाराज कर के जाना जो कि पूर्ण ज्ञानवान्, उद्भट विद्वान, महान् तेजस्वी, विरक्त शिरोमणी पूर्ण निष्ठावान् हुये। बाबा निक्का सिंह महाराज जी का जन्म गांव 'सीहां दौद' ज़िला

लुधियाना में १९वीं शती के अंतिम चरण 'चहल' गोत्र के 'जट्' परिवार में हुआ। आप जी जब युवावस्था में पहुंचे तो फौज में नौकरी की। १९१४ ई० के पहले विश्व युद्ध में इजराईल में थे जहां आप जी ने युद्ध में भाग लिया। युद्ध समाप्ति पर नौकरी से त्यागपत्र दे दिया क्यों कि पूर्व जन्मों के पुण्य कर्म फल देने के लिए सम्मुख आ चुके थे। इस प्रकार नौकरी छोड़कर घर पहुंच गये, पर घर पर भी मन न लगा क्योंकि वैराग्य का वेग अत्यंत प्रबल हो चुका था। अतः शीघ्र ही घर-बार त्याग कर जीवन का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त करने के लिये घर से चल पड़े। इस प्रकार आप भ्रमण करते हरिद्वार पहुंच गये और बाबा बुड्ढा सिंह जी महाराज के साथ पहला मिलाप हुआ और अपने परमेश्वर-मिलन की आरजू जोकि दिन रात विकल कर रही थी—प्रकट की। आगे से बाबा बुड्ढा सिंह जी ने पहचान लिया कि जिसने हम से उस वास्तविक ज्ञान को प्राप्त करना है हमारे पूर्व जन्मों का हिसाब है वह पहुंच चुका है। बड़े प्रेम के साथ बैठाया और कुशल क्षेम पूछी। इधर महाराज निक्का सिंह जी को विश्वास बंध गया कि इच्छित वस्तु यहां से अवश्य प्राप्त होगी, अतः उपयुक्त स्थान पर पहुंच गये हैं। अतः इस प्रकार बाबा बुड्ढा सिंह जी ने कुछ समय अपने पास ठहराने के बाद कहा—कि आप काशी जाकर संस्कृत की विद्या प्राप्त करो क्योंकि तुम्हारे माध्यम से परमेश्वर ने जीवों के उद्धार के लिये बहुत सेवा लेनी है। अतः विद्या का होना आप के लिये परम आवश्यक है। अतः आप आज्ञा को शिरोधार्य करके काशी चले गये और दैवी विद्या ग्रहण करनी आरम्भ की। थोड़े समय पढ़ने के पश्चात् विद्या के ज्ञाता हो गये। लेकिन आप मात्र विद्वान् होना नहीं चाहते थे अपितु जीवन के वास्तविक उद्देश्य अर्थात् परमपद को प्राप्त करना चाहते थे जहां पहुंच कर सारी विद्या तुच्छ हो जाती है और समस्त दुःखों से छुटकारा मिल जाता है। जिसको परा विद्या कहते है। जिसको प्राप्त करके समस्त विद्या स्वयं में प्राप्त हो जाती है। जन्म-मरण से रहित अवस्था अर्थात् स्थितप्रज्ञ पद तक पहुंचना चाहते थे जिस के लिये गुरु सेवा अत्यंत आवश्यक है।

गुर सेवा बिनु भगति न होई।। अनेक जतन करै जे कोई।।

अतः इस बात को जानकर आप वापिस गुरु चरणों में पहुंच गये। गुरु चरणों की सेवा में तत्पर हो गये। सेवा करते महापुरुषों की खुशियां प्राप्त कीं। महापुरुषों ने प्रसन्न होकर बड़े-बड़े वरदान दिये। यह महापुरुषों की कृपा और अपने कठिन परिश्रम-जन्य त्याग और वैराग्य के बल पर आप जी ने जीवन का वास्तविक मनोरथ अर्थात् परमपद की प्राप्ति कर ली। इस समय तक साधु समाज तथा संगतों में आप जी का यश बहुत फैल चुका था। अतः अब ईश्वरीय आज्ञा शिरोधार्य कर जीवों के उद्धार हेतु यात्रा आरम्भ की। देश के कोने-कोने में पैदल चल कर गये। देश का कोई कोना ऐसा नहीं था जहां आप नहीं गये। जीवन के वास्तविक मनोरथ से भ्रमित एवं भटके लोगों को गुरुघर का वास्तविक उपदेश दिया। अर्थात् प्रेमाभक्ति जोकि इस समय सब से सरल और सीधा मार्ग है बताया। अनेक प्राणियों का उद्धार किया। यात्रा के दौरान आप जी प्रायः पद यात्रा ही करते और खेतों में कूओं पर एकांतवास करते।

पता लगने पर संगतें वहीं पहुंच जातीं। कोई ग्रन्थ पढ़ाना आरम्भ कर देते। और इधर उधर की बातें नहीं करने देते थे। पूर्ण विरक्तीय ठाठ में रहते थे। इस प्रकार आप जी के चरण स्पर्श प्राप्त करके असंख्य प्राणियों ने लाभ उठाया। सो जहां आप जी ने ईश्वरीय उपदेश का छींटा दिया वहां संगतों को प्रेरणा देकर सेवा के कार्य भी करवाये क्योंकि महाराज का यह दृढ़ विश्वास था कि सेवा के बिना मलिन मन शुद्ध नहीं होता अर्थात् मल दोष की निवृत्ति नहीं होती। शुद्ध मन के बिना उपदेश को समझने का अधिकारी नहीं होता। इस प्रकार आप जी ने सेवा को प्राथमिकता देकर अनेक गुरद्वारों का निर्माण कराया। क्योंकि आप जी का मुख्य मार्ग प्रेमाभक्ति था जिसका सीधा सम्बन्ध सेवा के साथ है। अतः आप जी ने सेवा के अनेक कार्य करवा कर असंख्य संगतों को उपदेश के अधिकारी बनाया। मनुष्य जन्म की सफलता का सीधा और सरल मार्ग बताया अर्थात् प्रेमाभक्ति के मार्ग पर चलाया जोकि उद्देश्य तक पहुंचने के लिये अत्यंत उत्तम मार्ग है।

इस प्रकार समय गुज़रता गया। इस समय आदरणीय महंत नारायण सिंह जी जो कि उन दिनों में निर्मल आश्रम के महंत थे—महाराज जी के पास आ कर बार-बार प्रार्थनायें करते कि मेरा शरीर बीमार रहता है। आप कृपा करो संगत में से कोई योग्य पुरुष दो जो आश्रम के उत्तरदायित्व संभाल सके। महंत जी की बात सुनकर आप चुप रहते, कोई उत्तर न देते। महंत जी जब भी आते फिर विनय करते क्योंकि महंत जी इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि महाराज त्रिकालदर्शी हैं। आने वाले समय में आश्रम की ओर से लोगों की जो सेवा करवानी है उसके लिये योग्य पुरुष का चुनाव आप ही कर सकते हैं। इस प्रकार बार-बार प्रार्थना करते। कभी कभी महाराज कह देते कि आप चिंता न करें, गुरु नानक ठीक ही करेगा। इस प्रकार समय गुज़रता गया। इधर राम सिंह जी जो कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक बरनाला में सेवारत थे और विरक्त जी महाराज के अनन्य भक्त थे, तीन दिन का अवकाश लेकर महाराज जी के दर्शनार्थ हरिद्वार आये हुए थे। आप जी पहले जब कभी दर्शन और सेवा के लिये आते तो विरक्त महाराज जी के चरणों में यह प्रार्थना करते कि नौकरी करने को अब दिल नहीं करता। अतः आप कृपा करो संसारी नौकरी से छुड़ा कर अपने पवित्र चरणों की नौकरी की कृपा करो। इस पर महाराज जी उत्तर देते कि अपनी नौकरी पर पहुंच-भाई !। आप आज्ञा मानकर चले जाते पर मन न लगता। इस प्रकार आप जी का तीन दिन का अवकाश पूरा हो चुका था। आज्ञा लेने के लिये महाराज जी के पवित्र चरणों में पहुंचे और प्रार्थना की—महाराज जी ! जो तीन दिन का अवकाश लिया था वह पूरा हो चुका है, अब आप जी की आज्ञा हो तो नौकरी पर उपस्थित होऊं।

इस पर महाराज जी चुप रहे। कुछ न बोले। आप करबद्ध खड़े रहे। कुछ मिनटों के पश्चात् विरक्त महाराज जी ने हाथ से बैठ जाने का संकेत किया। आप आज्ञा मान कर चरणों में बैठ गये। विरक्त महाराज जी ने अपने पवित्र सिर से पगड़ी उतारी और इनके सिर के ऊपर रख दी। आप ने किसी सेवादार से और पगड़ी मंगवा के अपने

सिर पर बांध ली और महंत नारायण सिंह जी को कह दिया कि निर्मल आश्रम की महंती राम सिंह जी को लिख दो। इस प्रकार महंत जी ने आज्ञा मानकर दो-तीन और आदमी लेकर देहरादून जाकर जो समस्त योग्य कार्यवाही जो लिखित में आने वाली थी कर दी। महंत जी उस दिन से अपने आप को भार रहित अर्थात् सुखी अनुभव करने लगे क्योंकि आश्रम को योग्य पुरुष मिल चुका था। अतः इस प्रकार विरक्त महाराज जी ने दूर दृष्टि से देखा। जिन को महंत बनाया है उन को केवल निर्मल आश्रम की जिम्मेदारी ही नहीं अपितु इन से संसार का बहुत भला करवाना है, परोपकार के कार्य करवाने हैं और देश देशान्तर में भ्रमण कर नाम और वाणी का छींटा देना है, इन्होंने भूले भटके लोगों को वाणी के साथ जोड़ना है। अतः इस प्रकार आश्रम की ओर बहुत ध्यान नहीं दे पायेंगे।

इधर परम पूजनीय महंत राम सिंह जी महाराज के ऊपर चाहे आश्रम की भारी जिम्मेदारी आ पड़ी लेकिन आप का विरक्त मन आत्म आनंद में लीन रहता है। आश्रम का काम तो सहज ही चलता रहता है। इस प्रकार समय गुज़रता गया। इन दिनों महाराज जी करनाल ठहरे हुये थे। एक दिन अचानक महाराज जी का शरीर बीमार हो गया सेवकों ने ऋषिकेश एवं दिल्ली टेलीफोन कर दिये। पता लगने पर संगत करनाल पहुंचनी आरम्भ हो गई। दिल्ली से जोधसिंह जी जो उस समय पंजाब एण्ड सिंध बैंक में सेवारत थे और महाराज जी के अनन्य सेवकों में से एक थे, पता लगने पर करनाल पहुंच गये। आकर महाराज जी के पवित्र चरणों में नमस्कार की और प्रार्थना की। अब सांसरिक नौकरी से छुड़ा कर अपने चरणों की सेवा की कृपा करो। पर महाराज जी चुप रहे। इतने में थोड़ी देर बाद ऋषिकेश से मंहत बाबा रामसिंह जी महाराज एवं गुरिन्दर सिंह (छोटू जी) भी करनाल पहुंच गये। महाराज जी का शरीर उस समय कुछ ठीक हो चुका था। सो इस प्रकार तीनों ने आकर महाराज जी के पवित्र चरणों में नमस्कार की, महाराज जी ने आश्रम का हाल-चाल पूछा। अतः छोटू जी जिन को महाराज जी ने अपने पवित्र चरणों की सेवा से ऋषिकेश में भेजा था कि जाकर महंत जी के साथ सेवा में सम्मिलित हो। उन्होंने भी प्रार्थना की कि महाराज कृपा करो आप अपने पवित्र चरणों की सेवा की कृपा करो। सदैव आप जी के पवित्र चरणों से जुड़ा रहूं, कभी विलग न होऊं। आगे से महाराज जी ने कहा कि—'जोधसिंह को बुलाओ।' जोधसिंह जी आ गये। महाराज जी ने पूछा अब कोई संसार की कामना तो नहीं है ? दोनों ने करबद्ध विनय की कि—महाराज जी अब तो आप जी के पवित्र चरणों के बिना और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मेहर करो, कृपा करो। तो महाराज जी ने प्रसन्न होकर अपने पवित्र कर-कमलों से दोनों को वस्त्र पहना दिये। बहुत आशीर्वाद दिये। तुम ने आश्रम को उन्नति के शिखर पर ले कर जाना है। साधुओं की, गरीबों की और आई संगत की सेवा संभाल करनी है। महंत जी ने घूम फिर कर अनेक लोगों का उद्धार करना है, नाम एवं वाणी के साथ जोड़ना है, देश देशांतर में नाम बाणी का छींटा देना है, अतः जाओ महंत जी के साथ आश्रम के उत्तरदायित्व संभालो और गुरुनानक की खुशियां प्राप्त करो। इस प्रकार तीनों महानुभव ऋषिकेश वापिस आ गये। आश्रम के समस्त कार्य संभाल

लिये। आदरणीय बाबा जोधसिंह जी ने आश्रम के समस्त बाह्य कार्य संभाल लिये, माननीय छोटूबाबा जी ने लंगर और आश्रम के भीतरी जिम्मेदारी संभाल ली जो कि बड़ी कुशलता से निभा रहे हैं। इस प्रकार समय गुज़रता गया विरक्त महाराज जी का पवित्र शरीर अत्यंत वृद्ध हो चुका था और वह दिन आ चुका था जिस दिन संगत को उस पवित्र शरीर का वियोग होने वाला था।

इस प्रकार आश्रम के समस्त कार्य ठीक करके संगत की विनय मानकर 'गोराया' नगर पहुंचे। उन दिनों आप बहुत ही कम बोलते थे। ज्ञान की छठी भूमिका में आरूढ़ रहते थे। वृत्ति सदा अन्तर्मुखी रहती थी। इस प्रकार आप देश के कोने-कोने में संगतों को नाम-बाणी के साथ जोड़कर तकरीबन पैंसठ वर्ष अमृतमयी वर्षा बरसाकर, असंख्य भाग्यशालियों को आत्म-ज्ञान की कृपा करके, संसार-सागर से पार करके, सांसरिक लोगों पर बहुत उपकार करके जो किसी विरले महापुरुष के भाग में आता है अंत में २२ जुलाई १९८३ को दीन दुःखियों का आश्रय, अंधकार का वह विनाशक, ज्ञान का वह महान् सूर्य सायं ७ बजे गोराया (जालंधर) में सदा-सदा के लिये छिप गया। पंच-तत्त्व, पंच तत्त्व में मिल गये, ज्योति ज्योति में विलीन हो गई जोकि पहले ही अन्तर्भूत थी। पता लगने पर संगत में हाहाकार मच गई। समस्त संगत एकत्रित हो गई। अतः दूसरे दिन २३ जुलाई सायं चार बजे संगत ने अश्रु प्रवाह एवं सजल नेत्रों से उन के पावन पवित्र शरीर का करनाल (हरियाणा) में संस्कार कर दिया गया।

इस प्रकार उन्होंने आयुपर्यंत देश के कोने-कोने में जाकर अपनी पवित्र रसना से संगतों में जो नाम बाणी का उपदेश किया, गुरुबाणी के रहस्य उद्घाटित किये और सरल स्पष्ट शब्दों में संगत को समझाया। वह कैसेटों के रूप में चाहे संगत के पास थे फिर भी उस ज्ञान के सूर्य का प्रकाश घर घर किस प्रकार पहुंचाया जाये और अधिक से अधिक लोग उस प्रकाश का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। इस बात को ध्यान में रखकर विचार विमर्श हुआ कि कैसेटों में महापुरुषों के प्रवचनों को हू-ब-हू उतार के एक ग्रन्थ के रूप में एकत्रित किया जाये। लेकिन यह कार्य सरल नहीं था। क्योंकि एक सर्वज्ञ की रचना को अल्पज्ञ बुद्धि द्वारा अक्षरों के रूप में लिपिबद्ध करना असंभव है। फिर भी उस 'अकाल पुरख' वाहिगुरु का कोटिशः धन्यवाद है जिसने मेहर करके अपने इस पवित्र कार्य को आप ही सम्पूर्णता बख्शी है। अतः आप को कोटिशः धन्यावाद है।

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु

चाहे कैसटों से हू-ब-हू उतारने का प्रयत्न किया गया है फिर भी अनेक भूलें, त्रुटियां रह गई होगीं। जैसे कुछ कैसेटों की आवाज़ ठीक न होने के कारण कुछ प्रकरण ठीकठाक नहीं लिखे जा सके अथवा कुछ लिखने से ही छूट गये। कुछ शब्दों की कथा भी पूरी नहीं लिखी जा सकी क्योंकि कैसटों की खराबी करके लिखने वालों को पूरी पूरी समझ नहीं आ सकी। इस प्रकार अनेक भूलों के बावजूद भी यह पवित्र रचना

अन्धों को उंगोरी, प्यासो को पानी, बिमारों को दवाई, ज्ञानवानों को ज्ञान का प्रकाश देगी। अनेको परमार्थी पाथियों को आगे बढ़ने का सहारा होगी।

एक अन्य आवश्यक प्रार्थना आप जी को करना चाहते हैं कि महाराज जी अपनी मौज में मालवे की ग्रामीण बोली में बड़े सीधे सरल शब्दों में प्रवचन किया करते थे। अतः यही प्रयत्न किया गया है कि महाराज जी की पवित्र शैली को ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जाये। पानी का सम्बन्ध प्यास से होता है। बिना प्यास के पानी चाहे कितना ही सुंदर हो पूरा पूरा मूल्य नहीं मिलता। परमेश्वर प्राप्ति के इच्छुक कृति से पूरा पूरा लाभ उठा सकेंगे क्योंकि बुद्धिमान पुरुष की दृष्टि अन्दर छिपे लालों पर होती है गुदड़ी पर नहीं। अतः अक्षरों में हुई उन सब ग़लतियों, भूलों, त्रुटियों के लिये संगत से क्षमा प्रार्थी हैं। आशा है आप सब हमें अल्पपज्ञ जानकर क्षमा करोगे।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये।?

भूल जो चूक परी हमते गुर किंकर तुमते बखशावत
राखो लाज निज नामे की सिख तुमरो जग माहें कहावत।।

आप जी के चरणों का विनम्र सेवक
निरभिंदर सिंह (सरपंच)
निर्मल आश्रम,
ऋषिकेश।
-३० अक्टूबर १९९३

नोट—समस्त संगत प्रति प्रार्थना है कि उपरोक्त कैसटों के अतिरिक्त महाराज जी की पवित्र वचनों की यदि कोई कैसेट किसी प्रेमी के पास हो तो कृपा करके निर्मल आश्रम ऋषिकेश पहुंचाने का कष्ट करें ताकि अगले संस्करण में उन पवित्र प्रवचनों को प्रकाशित किया जा सके।
(प्रकाशक)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१

सोरठि मः ५

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी
सरब जीआ का दाता रे।।
प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे।।
हरि आराधि न जाना रे।।
हरि हरि गुरु गुरु करता रे।।
हरि जीउ नामु परिउ रामदासु।। रहाउ।।
दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर
सरब घटा भरपूरी रे।।
पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिया दूरी रे।।
हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे।।
करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे।।
मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे।।
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिया से फिरि गरभासि न परिया रे।।

(पृष्ठ ६१२)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहि गुरु, श्री वाहिगुरु।।

गुरु परमेसरु एको जाणु। जो तिसु भावै सो परवाणु।

(गउड़ी मः ५ पृष्ठ ८६४)

एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई।।

(पृष्ठ ९३०)

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ।।
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २७६)

जीव को भ्रम हो गया, इसलिये जीव है। यह भ्रम न पड़ता, भूल न होती तो यह परिपूर्ण परमेश्वर के साथ मन को एक कर लेता।

जपि मन सतिनामु सदा सतिनामु।।

(धनासरी मः ५ पृष्ठ ६७०)

जो सदा सत्य रहने वाला परमेश्वर है, हे मेरे मन! तू उस का जाप कर। जब तक तू संसार की कल्पना करता रहेगा, तब तक तुझे वह वस्तु प्राप्त नहीं होगी। आत्म वस्तु कहीं बाहर नहीं है।

मूई सुरति बादु अहंकारु।। ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गउड़ी मः १ पृष्ठ १५२)

गुरु साहिब ने यह विधि बताई है भाई !

जपि मन सतिनामु सदा सतिनामु

(धः मः ५ पृष्ठ ६७०)

जो सदा सत्य रहने वाला परमेश्वर है, वह सत् चित् आनंद है। तू उसका जाप कर। कब तक ? जब तक तेरा मन उस परमेश्वर के साथ एक न हो जाये।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।। नानक जीअ का इहै अधार।।

(गुः सुखः पुष्ठ २६५)

हे जीव ! तेरा उद्धार नाम स्मरण में है और किसी में नहीं। (सिक्ख धर्म में नाम जाप की साधना को 'सिमरन' कहते हैं, इस्लाम में इसे ज़िकर कहते हैं, इसका भाव है, परमात्मा का श्वास, प्रतिश्वास स्मरण। सिक्ख धर्म तथा सूफी मत में 'सिमरन' की युक्तियां एक समान हैं) उस नाम स्मरण को तू बंद न कर। जब तुझे बाहर के विचार आयेंगे तेरा नाम स्मरण बंद हो जाएगा। वह जो सतिनाम है, तू उसका जाप कर। गुरू साहिब कहते हैं—वह एक सब में व्याप्त है। सत्ता एक है और तेरी दूसरी सत्ता नहीं। एक सत्ता है, वह परिपूर्ण परमेश्वर है। वह कोटि ब्रह्मांड का स्वामी है। वह सारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति, पालना और लय करता है। वह एक परमेश्वर ही है।

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु।।

(पृष्ठ-७ जपुजी)

गुरु नानक साहिब का सिद्धांत एक है और जब दिल मुहम्मद वहां आया, वह कहने लगा यह नानक सिद्धान्त नहीं। सिद्धान्त एक सत्ता है। गुरु नानक सिद्धान्त में एक सत्ता है, यहां तुम तीन किस प्रकार कह सकते हो। उत्पत्ति ब्रह्मा करते हैं,

पालना विष्णु करते हैं और लय शिव करते हैं। यह तो कारक हैं। (कारक अर्थात् किसी के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने वाला) यह तो देवते हैं। इनका यह काम नहीं है। वह एक सत्ता है। एक ईश्वर है। अब वह ईश्वर ही पालना और लय करता है। गुरु ग्रन्थ साहिब में यही बात यहां कही है। (अब पढ़ भाई)

सोरटि महला ५

सोरठ राग में पाँचवें पातशाह गुरू अर्जुन देव महाराज उपदेश करते हैं—

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी.....

वह कोटि ब्रह्मांड का स्वामी, ठाकुर, मालिक परमेश्वर है और कोई नहीं है। वह एक है। इसी लिये ब्रह्मांड का मालिक एक है। इसमें कहीं भ्रम में न पड़ जाना।

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे।।

सभी जीवों का दाता एक है। सर्व जीवों का जो दाता है वह एक है। वह एक परमेश्वर है। इसलिये जीव को इस पर दृढ़ निश्चय रखना चाहिये। जब तक उसमें वह अवस्था न आ जाये—

दिसटिमान है सगल मिथेना।

(मारू: मः ५ पृ० १०८३)

जो दृश्यमान है वह सब झूठ है। इसलिये जो देखने वाला द्रष्टा (प्रकाशक) है, वह सदैव ही एक है। द्रष्टा का द्रष्टा नहीं बनता। यदि आप 'तीन द्रष्टा' मान लें तो तुम्हें उसका भी कोई द्रष्टा मानना पड़ेगा।

इसलिये सबका द्रष्टा एक है। परमेश्वर है। वह जन्म-मरण से रहित है। वह उत्पत्ति, पालन और लय करता है। सारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति और पालना एक ही परमेश्वर करता है। जो सब का पालन करने वाला है।

प्रतिपालै नित सारि समालै.....

सब के सार का उसको पता है। तभी वह प्रतिपालना करता है, तभी तो वह संरक्षक है। वह नित्य है, सर्वज्ञ है। ईश्वर को नित्य और सर्वज्ञ लिखा हुआ है। ईश्वर तो नित्य सर्वज्ञ है। सब जीव परमेश्वर के भेजे हुये आते हैं और किसी ने नहीं भेजने। इसलिये वह सदैव सबका प्रतिपालन करता है, सबका संरक्षक है। भाई ! इस समय इसका क्या ध्यान है ? इस ध्यान का क्या फल होगा ? उसके अनुसार सब की पालना करता है।

इकु गुनु नही मूरखि जाता रे।।

इस जीव ने यही मूर्खता की है जो उसके गुणों को नहीं जाना। मेरी उत्पत्ति, पालना, लय करता है, कर्म फल का विधाता है। सदैव कर्म फल भुगतवाता है। इसी कारण इसने यह सार तत्व नहीं जाना। इस बात का इसको पता नहीं लगा। जो उनको दाता मान कर, प्रतिपालक, कर्त्ता मानकर उसका सेवक हो जाता, और मन को उसके जाप करने में लगा देता, तो किसी दिन उसको बहुत अच्छा फल मिलता। वह सब का संरक्षक है। वास्तव में वही वह जानता, वही सर्वज्ञ है। इसलिये हम उसे वास्तव में नहीं जानते, यही हमारी मूर्खता है। वह परिपालन भी करता है और संभाल भी करता है। वह मित्र भी है किन्तु हमें उसका पता न लगने के कारण हमने उसके गुणों की रक्षा नहीं की। यदि हम उसके गुणों की रक्षा करते—

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु।।
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २८६)

यदि तू उसका गुणगान करता तो वह तुम्हारी रक्षा भी करता और तेरे जितने भी विकर्म हैं वे स्वयं साफ हो जाते। तू परमेश्वर के सम्मुख हो जाता। सम्मुख होकर तुझे पता लग जाता कि परिपालन कर्त्ता उत्पत्ति कर्त्ता और लय कर्त्ता एक परमेश्वर है, उसी की उपासना करनी है।

हरि आराधि न जाना रे।।

हरि की आराधना करनी नहीं जानी। हमारे मन ने हरि के साथ सम्बन्ध जोड़ कर उसकी आराधना न की। ध्यान भी करना है। ध्यान से आगे आराधना है। आराधना भी उसी की करनी थी। कबीर ने प्रभु की आराधना की। धन्ना भक्त ने भी उसकी आराधना की। जिस जिस ने भी आराधना की वे क्षमा किये गये। उन पर कृपा हो गई। लेकिन हमने उसकी आराधना नहीं जानी। हमारा मन संसार में फंसा हुआ है। संसार के काम भी करने थे लेकिन भीतर जो आंतरिक मन है उसको उस परमेश्वर के साथ जोड़ कर रखना था।

अंतर आतमै ब्रह्म न चीनिआ माइआ का मुहताजु भइया।।

इसने अन्तरात्मा को व्यापक नहीं जाना। यदि अन्तरात्मा को यह व्यापक जान लेता तो इसका अभेद हो जाता। इसके सब दुःख निवृत्त हो जाते। आप कल्पना करें। आपका मन कल्पना करता है। पर यहां कोई द्रष्टा भी है। पर बाद में सोचा मैं तो संसार की अन्य कल्पनायें ही करता रहा। लेकिन यदि मन कल्पना करता

है तो उसको देखने वाला आत्मा है। वह द्रष्टा भी तो वहीं ही है। तुम्हारी समस्त कल्पना को वह देखता है। लेकिन स्वयं विलग है। उसके साथ ज्ञाता नहीं मिलता, ज्ञान मिल सकता है। सोचा, जाना फिर ज्ञाता ज्ञान ही होता है। पर उसको अपना ज्ञाता नहीं समझा। ज्ञाता, ज्ञाता ही रहेगा। ज्ञाता व्यापक है। एक है। हमेशा रहने वाला है। यह जो कल्पना है वह जितनी देर तुम देखते हो उतनी देर तक ही है। फिर दूसरी बात की कल्पना हो जायेगी। इस कारण ज्ञाता नहीं बदलेगा।

यदि नाम न हो तो माया का संसार किस प्रकार चले। यदि ज्ञाता एक न हो, सर्वज्ञ न हो, तो संसार को चलाये कौन ! यह तो नित्य सर्वज्ञ है। वह व्यापक है, व्यापक है तो परिपूर्ण है। इस लिये मन को उसके साथ जोड़ना। यदि पहले नहीं जुड़ा तो फिर आप नाम द्वारा जोड़ो। यदि जुड़ गया तो आपका सारा काम समाप्त हो गया।

हरि हरि गुरु गुरु करता रे।।

हरि को, गुरु को कर्त्ता जानो।

करण कारण प्रभु एकु है।। दूसर नाहीं कोइ।।
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ।।

(गुः सुखः २७६)

वह सर्व व्यापक है। उसको मैं हरि भी कहता हूँ। गुरु भी कहता हूँ। भाई ! गुरु और परमेश्वर एक होते हैं।

गुरु परमेसरु एको जाणु।।
जो तिसु भावै सो परवाणु।।

(गउड़ी मः ५ पृष्ठ ८६४)

वे दोनों एक हैं। ब्रह्मज्ञानी को गुरु कहते हैं। गुरु और किसी चीज़ का नाम नहीं। गुरु अज्ञानी को नहीं कहते। गुरु ब्रह्मज्ञानी का नाम है।

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ।।

(गउड़ी सुखः पुष्ठ २८६)

सत् पुरूष, अकाल पुरूष को जिस ने जान लिया वह ब्रह्मज्ञानी है। उसको सत्गुरु भी कहते हैं। साधु भी कहते हैं। संत भी कहते हैं। यह सब गुरु के विशेषण हैं। वह परम पुरुष है। वह बदलने वाला नहीं है। दूसरी वस्तु दूसरी के साथ मिलती है। यह माया–

रज गुण तम गुण सत गुण कहीअै इह तेरी सब माइआ।।
चउथै पद कउ जो नरु चीनै तिन ही परम पदु पाइआ।।

(बाणी कबीर जी पृष्ठ ११२३)

कबीर साहिब ने लिखा है। उसको चौथा पद प्राप्त हो जायेगा जब आपका मन परमेश्वर के साथ पूर्ण रुप से जुड़ गया। तब आपको अनुभव वस्तु प्राप्त हो जावेगी। जब इसका मन परमेश्वर के साथ जुड़ गया तो फिर इसको प्रत्येक हृदय का ज्ञान हो जायेगा। वह समस्त ज्ञान जो होना है उसका नाम ज्ञाता है।

हरि हरि गुरु गुरु करता रे।। हरि जीउ नामु परिउ रामदासु।। //रहाउ//

गुरु साहिब कहते हैं उस हरि का नाम रामदास पड़ गया। आपको इस बात का ज्ञान है। वो आप कहते हैं, क्यों ?

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।। नामु प्रभू का लागा मीठा।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २६३)

मैं इस संत गुरु रामदास महाराज जी के साथ मिल कर अपने अंतर में उस प्रभु को देखा। मैंने अपने अंतर में परमेश्वर को देखा, वे मेरे गुरु परमेश्वर हैं। उनका नाम रामदास पड़ गया। अब परमेश्वर को रामदास कहते हैं।

हरि जीउ नामु परिउ रामदासु।।

(सोरठि मः ५ पृष्ठ ६५२)

अब हरि का नाम रामदास पड़ गया। ब्रह्मज्ञानी का जहां लक्षण आया, वहां उन्होंने कहा–

ब्रहम ज्ञिआनी कउ खोजहि महेसुर।।
नानक ब्रहम ज्ञानी आपि परमेसुर।।
ब्रहम ज्ञिआनी सभ सृसटि का करता।।
ब्रहम ज्ञिआनी सद जीवै नही मरता।। (पृष्ठ २७३)

जो ब्रह्मज्ञानी है। वह परमेश्वर के साथ एक है। उसमें द्वैत नहीं है। जितना भी समस्त संसार है, वह ब्रह्मज्ञानी का शरीर है। ब्रह्मज्ञानी आप निरंकार होता है।

ब्रहम ज्ञिआनी का सगल अकारु।।
ब्रहम ज्ञिआनी आपि निरंकारु।। (पृष्ठ २७३)

ब्रह्मज्ञानी आप निरंकार है। इसलिये अब उसका नाम रामदास पड़ गया। वह परमेश्वर है पर लोगों को दृढ़ निश्चय नहीं हुआ। भाई! यह जो गुरु रामदास है–यही परमेश्वर है।

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ तनु मिलायउ।। (पृष्ठ १४०८)
नानक अंगद को वपु धरा।।
धरम प्रचुर इह जग में करा।।
अंगदु अमर दास कहाइउ
जन दीपक ते दीप जलाइउ।।
अमरु दास रामदास कहाइउ।। (दशम् ग्रन्थ)

यह जो ज्योति शीर्ष स्थान से आई थी वह ज्योति इस समय मेरे गुरु में विद्मान है। उन्होंने मुझे यह ज्योति प्रदान की है। गुरु साहिब ने स्पष्ट लिखा है—

रामदासि गुरू जग तारन कउ, गुरु जोति अरजनु-माहि धरी।।

(सवये पुष्ठ १४०९)

वह जो गुरु ज्योति थी वह मेरे गुरु ने मेरे अन्दर स्थापित कर दी, रख दी और मेरे अन्तर में भी पूर्ण प्रकाश हो गया। इसलिये हरि की आराधना, नाम न जाना। भाई हरि परमेश्वर है। वही गुरु है—

गुरु परमेसरु एको जाणु।।

(सोरठि मः ५ पृष्ठ ८६४)

वह एक है। यह पूर्ण आराधना का ज्ञान मुझे नहीं हुआ इसलिये मैं भ्रम में रहा।

दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर.....

गुरु दीना पर दया करने वाला है। वह दयालु है। वह सुखों का सागर है। वह सुख स्वरूप है।

सरब घटा भरपूरी रे।।

सब के हृदयों में परिपूर्ण, कोई ऐसा घर नहीं चार खाटियों में जिसमें परमेश्वर न हो। यही पारब्रह्म परमेश्वर है जो तेरे हृदय में बैठा, तेरे मन में बैठा, तेरे मन को देखता और जानता है। जब तुम यदा-कदा बैठे कल्पना करोगे तो तुम्हें यह पता लग जावेगा कि मेरे मन में व्यर्थ की कल्पना है। वह मन की कल्पना को और मन का द्रष्टा मन से विलग है, वे सब के हृदयों में पारब्रह्म परमेश्वर परिपूर्ण है। यह अध्यस्त जो होता है उससे अधिष्ठान पृथक नहीं होता। पर अध्यस्त झूठ होता है। सत्य परमेश्वर जो सबका मालिक है वह सब में परिपूर्ण होकर बैठा है।

जहां उसकी पहचान का लक्षण आया। उसकी और कौन सी पहचान है। सत्ता और स्फूर्ति वही देता, जो हृदय में बैठा है, हृदय को, मन को, बुद्धि को जानता है, वह ज्ञान स्वरूप है। वह ज्ञाता है। वह परमेश्वर है। अन्य जो भी किसी को कर्त्ता पुरुष मानेगा अथवा स्वामी मानेगा वह भूल होगी।

घर महि ठाकुरु नदरि न आवै।।

(पृष्ठ ७३६ सूही म: ५)

वह जो ठाकुर है, वह मालिक है, सत्य है इसलिये वह मालिक सबका एक ही है। वह परमेश्वर सबका मालिक है। वह सब में परिपूर्ण है। प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। यदि वह प्रत्येक को न जाने तो ज्ञाता कैसे होगा ? इसलिये वह परमेश्वर, भाई ! सबके हृदयों में परिपूर्ण है।

पेखत सुनत सदा है संगे.....

यह जो जीव के सदा साथ है वह देखता भी है और सुनता भी है। जो तुम बोलते हो वह तुम्हारी सारी बात सुन लेगा। जो तू देखता है वह तुझे भी देखता, देखने वाला वही है। व्यापक भी वही है इसलिये वह प्रत्येक समय तुम्हारे साथ है। कोई ऐसा समय नहीं कि वह परमेश्वर (नामी) न देख सके। कोई ऐसा समय ही नहीं जब बुद्धि को परमेश्वर न जानता हो। देख न ले। वह तेरे साथ है, विलग नहीं है। अतः अपने मन को नाम स्मरण द्वारा नामी के साथ एकाकार कर, तू अपने मन को नाम के साथ जोड़। जब तेरा मन नाम के साथ एक हो जायेगा तब तुझे नामी (परमेश्वर) प्राप्त हो जायेगा। उसको समाधि कहते हैं। कोई संकल्प नहीं। वह सदा तुम्हारे साथ है। देखता भी है सुनता भी है। इसलिये ज्ञानी ज्ञाता है। वह परमेश्वर सब में परिपूर्ण है, भाई ! वह सबका मालिक है। वही गुरु रामदास है।

मै मूरख जानिआ दूरी रे।।

मैंने परमेश्वर को दूर जाना, परमेश्वर आत्मा का नाम है। ज्ञाता का नाम है। जब इसको अपनी आत्मा का ज्ञान हो गया—

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।

(पृष्ठ ४२१ आसा म: १)

वह जो तुम्हारे साथ है। वह तेरा 'आपा' है। उसके बिना कोई रक्षक नहीं है। सुषुप्ति कहो चाहे समाधि कहो। यह सब अवस्थायें हैं पर वह जो परिपूर्ण तुम्हारा 'आपा' है वह आप है। वह तेरी अन्तरात्मा है। अंतर इसलिये कहते हैं कि वह बुद्धि को देखने वाला। दृश्यमान कभी परमेश्वर नहीं हो सकता लेकिन इसके साथ

यह बात भी है कि प्रेमाभक्ति में आकर वह सगुण भी हो जाता है।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।
कला धारि जिनि सगली मोही।।

(गउड़ी सुखः २८७)

इसलिये वह सगुण भी है, निर्गुण भी है, सब कुछ है। परन्तु वस्तुतः वह कभी दृश्य नहीं हुआ, वह तो द्रष्टा ही रहेगा। उस समय ही उसको वह ज्ञान होगा जब उस पर कृपा होगी। भाई! अन्तरात्मा जो है, मन, बुद्धि सब को देखने जानने वाला, वह परिपूर्ण है। उसको ही परमेश्वर कहते हैं।

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुरु ज्ञिआन बताई।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई

(धनासरी मः ९ पृष्ठ ६८४)

जब तक तू 'आपे' को नहीं जानता, पहचानता तब तक तेरा भ्रम दूर नहीं होगा। उतने तक तेरा मन भ्रम में है। जब तुझे वह 'दात' वास्तविक वस्तु प्राप्त हो गई मन की कोई सत्ता नहीं, बुद्धि की कोई सत्ता नहीं। यह सब अनात्म पदार्थ झूठे हैं। फिर—

आदि सचु जुगादि सचु।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।। (जपुजी पृष्ठ १)

वह सदैव ही सत्य स्वरुप है। वह कभी बदला नहीं। सत्य कभी असत्य नहीं हुआ। अमृत कभी विष नहीं हुआ।

यह तो नियम है, इसलिये वह परमेश्वर है। वह परिपूर्ण है। वह देखता सुनता सदा तुम्हारे साथ है। हमने बड़ी भारी गलती की। वह असीम है, उसको हमने ससीम बना कर सीमा में ले आये। परमेश्वर कभी किसी की मर्यादा में नहीं आया। परमेश्वर की मर्यादा में जीव चलेगा। तभी परगेश्वर के साथ मिलेगा। लेकिन यह अपनी बुद्धि के साथ ऐसी बातें बना लेता है जो नहीं करनी होती। उसकी सर्वव्यापकता को, उसकी व्यापकता को, ठाकुर स्वामी को, नहीं जानता। इसलिये गलती करता है। ससीम करके परमेश्वर को इतना लघु मान लिया।

हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे।

क्या जाने! इसका क्या फल होगा। अब क्या होगा। मैं तो अब इस मन में गलती कर बैठा हूँ जी।

करउ बेनती सतिगुर अपुने.....

यह ज्ञान भाई आप ब्रह्मज्ञानी सतगुर के निकट जा कर के प्रार्थना करो।

वह आपको सीधा मार्ग बतायेगा और तुम्हारे वश की बात नहीं। अज्ञानी से कभी ज्ञान नहीं हो सकता, ब्रह्मज्ञानी ज्ञानी है। चाहे ईश्वर आप करे। चाहे जैसे उसकी खुशी है करे। पर ज्ञान तो सदैव ज्ञानी से ही होता है। और कोई रास्ता नहीं, कोई मार्ग ही नहीं है। एक ज्ञान ही मार्ग है। इस बात का कि जो परमेश्वर करेगा, वह होगा तो मैंने इसलिये मान लिया।

मै मूर्ख देहु उपदेसो रे।।

आपने सतगुरु को कहो कि मेरी तो यह मूर्खता थी जो मैंने व्यापक को ससीम करके मान लिया। अनंत को अंत कर के मान लिया। अब हे सतगुरु मुझे उपदेश दो। परमेश्वर जैसा ही है, ऐसा ही है। और मेरे को इस अहसास का उपदेश दो, नाम दो। इस नाम के द्वारा मैं नागी (परमेश्वर) के पास पहुँच जाऊँ। तुम संसार के साथ एकमेक न हो जाओ। परमेश्वर पास पहुँच जाओ। जब परमेश्वर के पास पहुँचोगे, परमेश्वर का नाम तुम्हारे साथ, मन के साथ एक हो जायेगा, फिर सर्वज्ञ हो जायेगा। दशम पातशाह की कथा में एक स्थान पर लिखा है। गुरु साहिब त्यार होकर घोड़े पर सवार होकर चले। आगे एक भोला सिक्ख खड़ा था। वह कहता था मुझे उपदेश दो। 'समय अवसर तो विचार' यह कह कर गुरु साहिब चले गये। उसने उसको मंत्र समझ लिया। भाई ! मुझे यह मंत्र दे गये। वह ज्यों का त्यों उसको जपने लगा। गुरु साहिब ने कहा चलो वह तो वहीं बैठा है। वह तो उसको मंत्र मान बैठा। वह तो इतना साधारण है। दशम पातशाह आये और उन्होंने कहा तुझे उपदेश दिया। उसको उपदेश दिया, मार्ग बताया, नाम का उपदेश देकर आराधना-विधि बताई। इसलिये भाई ! गुरू की बात पूछो। अब मुझे वह उपदेश दो जो परमेश्वर के पास पहुँचाने वाला है।

मै मूरख की केतक बात है.....

तो मेरे जैसे मूर्खों को आप क्या समझते हैं ?

कोटि पराधी तरिआ रे।।

उनको जिन को तुम अपराधी कहते हो, सदना कसाई कहते हो, सज्जन ठग कहते हो, जब ऐसे पार हो गये तब तुम्हारे पार होने की क्या शंका है। गुरू से उपदेश लेकर ब्रह्मज्ञानी से मार्ग पूछकर उस मार्ग पर चलते जाओ, और आपने कुछ नहीं करना। मार्ग पर चलते समय बातें न करते जाओ। बातों की कल्पना न करने लग जाओ। परमेश्वर का नाम जपते समय संसार की कल्पना न करने लग जाओ।

मैं मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिया रे।।

गुरु नानकु जिन सुणिया पेखिया से फिरि गरभासि न परिआ रे।।

❑

बारह माहा मांझ महला ५ घर ४

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि।।
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि।।
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि।।
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि।।
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि।।
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि।।
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि।।
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि।।
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि।।

(पृष्ठ १३४)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ईश्वरीय वाणी द्वारा संसार को एकता का उपदेश देते हैं। जहाँ जाति, वर्ण कोई अर्थ नहीं रखते। जीव मात्र को अपने आधार की एक युक्ति बताते हैं कि हे जीव ! तेरे आधार की एक ही युक्ति है।

तिमरि तिमरि नामु बार बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९५)

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि।।

जिसके आगे समस्त देवगण दैत्य आदि जो संसार में हुए उनको अंत में झुकना पड़ा। हिरण्यकशिपु एक ऐसा ही बली था। वह किसी के आगे नहीं झुका। रावण

भी किसी के आगे नहीं झुका। अनेक पुरुषों में ऐसी सामर्थ्य थी जो झुकते नहीं थे।

जब वह प्रह्लाद के पीछे पड़ा। लेकिन प्रह्लाद तो परमेश्वर का—

रमत राम जनम मरणु निवारै।।

(गौंड म: ५ पृष्ठ ८६५)

वह जो व्यापक राम है वह सब जगह व्याप्त है। प्रह्लाद इस प्रकार के राम का नाम जपता था और सब बालकों से जपवाता था। हिरण्यकशिपु के पास सण्डेमर्के ने शिकायत की कि तेरे बालक ने सब बच्चों को बिगाड़ दिया है। जब हम कहते हैं कि हिरण्यकशिपु का नाम जपो तो वह नहीं मानता। स्वयं भी राम का नाम जपता है और बच्चों को भी इक्ट्ठे करके राम नाम जपाता है और बच्चे भी जपते हैं। अब हम क्या करें ? उसने कहा कि उसे मेरे पास ले आओ। प्रह्लाद नहीं माना। हिरण्यकशिपु ने एक बहुत बड़ा प्रश्न किया कि तू मुझे अपना राम दिखा दे मैं तब मानूँगा। जब ऐसी बात हुई तो हिरण्यकशिपु ने तलवार निकाली। प्रह्लाद ने कहा कि जल में राम, थल में राम, राम सर्व व्यापक है। हिरण्यकशिपु ने कहा कि इस स्तम्भ में भी है ? तो इसको बाहुपाश में जकड़ ले। जब भगवान् नृसिंह रूप धारण करके निकला तब जो हिरण्यकशिपु का हाल हुआ तुम सब जानते ही हो। उसके आगे सबको झुकना पड़ा। उसके आगे किसी की शक्ति नहीं है। यदि दो सत्तायें होती तो काम चल जाता। सत्ता तो एक है। जब मनुष्य को सत्ता मिल जाती है तो इसको भ्रम हो जाता है। इसलिये गुरु साहिब कहते हैं कि उस समय सिक्ख अरदास अर्थात् प्रार्थना करे कि हे परमेश्वर ! मेरे पर कृपा कर। अरदास का अभिप्राय यही है। तुम अरदास करोगे कि हे परमेश्वर ! मेरे पर कृपा कर, दया कर, मेरे कार्य सफल कर। यदि मनुष्य अपने कार्य आप सफल कर सकता तो अरदास की ज़रूरत ही न पड़ती।

गुरु नानक साहिब पंजा साहिब गये। वहां उस समय पानी नहीं चलता था। मैं स्वयं वहां गया—और भी कई गये होंगे। बड़ा भारी सरोवर है वह भरा हुआ। वहां वली कंधारी नाम का एक फकीर रहता था। सबसे ताकतवर फकीर था। गुरु साहिब ने तो निमित्त बनना था। जब वहां गये मरदाना कहने लगा कि मुझे प्यास लगी है। तब गुरु साहिब ने कहा कि ऊपर एक फकीर रहता है। उसने अपनी शक्ति से जल वहां एकत्र किया हुआ है। उसके पास जाकर पी आ। मरदाने ने वहां पहुँच कर कहा कि हे फकीर ! मुझे जल पिला दो। आगे से फकीर बोला कि तू तो काफिर के साथ रहता है। काफ़िर का तू कीर्त्तन करता है। यह बात इस्लाम में मना है।

तुझे मैं जल नहीं पिलाऊँगा—औरों को तो पिला दूँगा या फिर तू इस काफ़िर से अलग हो जा। काफ़िरों की वाणी न पढ़ा कर। तब मरदाना गुरु साहब के पास चला गया और सारी बात बताई। गुरु साहब ने कहा—हे मरदाना ! एक बार और जा। मरदाना ने कहा कि मैं तो एक बार बड़ी मुश्किल से गया था। गुरु साहिब ने मरदाने से कहा कि करतार को याद करके चला जा। वली कंधारी ने इस बार भी जल नहीं दिया। जब मरदाना गुरु साहिब के पास आया तो उसने कहा कि मुझे फकीर ने जल नहीं दिया। गुरु साहिब ने कहा मरदाना ! एक पैर तो उठा, तो जल निकल आया। वली कंधारी ने अपनी शक्ति से ऊपर से पहाड़ फैंका। मरदाने ने कहा कि जल के बिना तो बच भी जाते लेकिन अब जीवित नहीं बचेंगे। गुरु साहिब ने कहा—मरदाना ! तू चिंता न कर। सब का रक्षक एक करतार है।

राजा एकु हमारा सुआमी।।
सगल घटा का अंतरजामी।।

(भैरउ मः ५ पृष्ठ ११३६)

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिउ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(श्लोक मः ९ पृष्ठ १४२७)

जो सबके हृदयों में अन्तर्यामी रूप 'पारख रूप' 'साक्षी रूप' बैठा है। भाई वीर सिंह ने लिखा है वह जो परमेश्वर सब में व्यापक है वह 'साक्षी रूप' में सबके भीतर विराजमान है। लेकिन लोगों को यह पता नहीं कि कौन साक्षी है। तुम्हें इसका पता लगाना चाहिये। तुम्हारा मन कल्पना करता है। वह कल्पना को देखने वाला पहले से खड़ा होता है। तुमने ऐसे ही समय बरबाद कर दिया—यह तो व्यर्थ की बातें थीं। क्या लाभ था इसमें, वह देखकर ही कहता है। वो जो देखने वाला अंदर बैठा है साक्षी, व्यापक है, वह व्यापक ही साक्षी है। साक्षी व्यापक है। ज्ञाता ज्ञान और ज्ञेय त्रिकुटी है। वह तीनों गुणों की, पाँच तत्त्वों का मूल है। लेकिन त्रिकुटी को जानने वाला 'दाना-बीना' (व्यापक) भी भीतर बैठा है जो त्रिकुटी को देखता है कि यह ठीक है, अथवा यह ठीक नहीं है। वह व्यापक राम है। वह अच्छा नहीं है। फलां अच्छा है। वह जो परमेश्वर है वह व्यापक राम है। वह सर्व व्यापक है, वह सब का मालिक है, वह सब का अन्तर्यामी है। इसलिये वह व्यापक है। वह है तो एक ही, दो नहीं। यदि दो होते तो गुरु नानक देव जी वहां 'दो' लिखते। यदि तीन होते तो गुरू नानक देव जी 'तीन' लिखते—

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिया।।

(पृ० १४४ मः १)

जो अच्छे बुरे संकल्पों को जानने वाला है वह पारख है। वह इसके अन्तःकरण में बैठेगा, कल्पनायें तो सदैव माया की होती हैं।

जिन्ह कें रही भावना जैसी ।।
प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।।

(रामचरित मानस बालकाण्ड, २४९, २)

राम का विवाह हुआ। बहुत ने वंदना की कि यह सगुण रूप है। बहुत ने वंदना की कि यह निर्गुण स्वरूप है। बहुत ने शत्रुता के रूप में देखा। बहुत ने राजा देखा। सब की भावना अलग-अलग थी। तुलसीदास जी का कथन है कि जिस की जैसी भावना थी उसने उसी प्रकार श्रीराम जी के स्वरूप को देखा। यदि वह संकल्प का साक्षी होता तो एक देखता। लेकिन है तो वह संकल्प अलग। इसलिये इसका जो स्फुरण होता है, उसको वह देखता है। स्फुरण को संकल्प कहते हैं। वह संकल्प का साक्षी परमेश्वर आप है। उसके सम्बन्ध में गुरू साहिब का कथन है—

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ....

जेठ बड़े को कहते हैं। जिस प्रकार नारियां अपने जेठ से पर्दा करती हैं। पर्दे का अभिप्राय है कि तुम परमेश्वर को कभी साक्षात् विशेषण न दो। उसका अभिप्राय है—आदर दो। उसको बड़ा जानकर उसकी बात करो। जेठ के मास द्वारा गुरु साहिब उपदेश करते हैं कि भाई ! परमेश्वर से जुड़ना आवश्यक है। यह अत्यावश्यक है। तुम उस परमेश्वर के साथ अपने मन को जोड़ दो।

जिसु अगै सभि निवंनि।।

जिसके आगे समस्त संसार झुकता है, जिसके आधीन समस्त संसार है, वह जो संसार का कर्त्ता, पालन-कर्त्ता, लय कर्त्ता ईश्वर परमेश्वर है। उसके साथ हमें अपना मन अवश्य जोड़ना चाहिये। यह मन जुड़े बिना रह भी नहीं सकता। तुम चाहे कितना जोर लगाओ—इस मन ने अवश्य कहीं जुड़ जाना है। तुम कोई भी सुंदर चीज देखते हो। सुंदर पुष्प देखो—मन तुरंत उसके साथ जुड़ जाता है। मन ने तो जुड़ना है। गुरु साहिब कहते हैं—तुम इस मन को परमेश्वर के साथ जोड़ दो। यदि तुम उस परमेश्वर के दामन (नाम) के साथ जुड़ जाओगे, यदि तुम अपने मन को नाम के साथ लय कर लोगे तो इसी में आपका भला है। लेकिन यह पहले नहीं जुड़ेगा। वह हरि जो सबका मालिक है, समृद्धि देने वाला है, उसके साथ उसके अंचल (नाम) के साथ मन जोड़ो। पहले मन के साथ जुड़ेगा फिर मन को आत्मा के साथ एक रूप करके मन से आगे जाओ। द्वैत वाला मन तो प्रतिबंधक है। इसको जुड़ने नहीं देता। वर्ण, जाति, राष्ट्र, यह-वह यही सिखाता है। इसका मन आयु पर्यन्त इसको हिलाता डुलाता रहता है। अपने आपको बड़ा बुद्धिमान समझता है। इसको कहो—यह बुद्धिमान उस दिन होगा जब—

मनि जीतै जगु जीतु (जपुजी पृष्ठ ६)

जो मन को जीत लेगा, समझो सारा संसार जीत लिया। पर मन तो हमारे से जीता नहीं जाता, संसार को किस प्रकार जीतेंगे। इसलिये मन को परमेश्वर के साथ जोड़ो। उसके पल्लू से लग जाओ। आप जानते हो कि लड़की को लड़के का पल्ला पकड़ाते हैं। जिस दिन तुम भी इसके नाम के साथ जुड़ गये तो तुम्हारा मन परमेश्वर के साथ एक हो जायेगा। वैसे तो होगा नहीं।

जब मरदाना घूम कर आया तो उसने देखा कि 'पंजे' में से जल निकलता है। जा के देख लो मैं वहाँ स्नान करता रहा हूँ—मैंने देखा है। फिर जल समाप्त हो गया। वली कंधारी को बहुत क्रोध आया। उसकी कोई पेश न चली। सब कुछ कर लिया पर ईश्वरीय शक्ति तो उसमें थी नहीं।

ईश्वरीय शक्ति तो प्राप्त होती है। अर्जुन को अहंकार हो गया कि मुझे वरदान मिला हुआ है—महादेव का—कि मैं किसी को नहीं छोड़ूँगा। भगवान् कृष्ण ने सोचा कि इसके भीतर तो अंहकार हो गया। अहंकारी व्यक्ति की कभी आज तक मुक्ति नहीं हुई। यह तो कुमार्गी हो गया।

हउमै नावै नालि विरोधि है
दोए ना वसहि इक ठाइ

(वडहँस मः ३ पृष्ठ ५६०)

नाम और अहंकार दोनों एक साथ नहीं रह सकते। उसने कहा गोपियों को कि एक काम करो। आगे भीलों ने गोपियों का भी हरण कर लिया। धनुष भी छीन लिया और अर्जुन को मार-पीट कर बुरा हाल कर दिया। वह सोचता है कि बात क्या हुई ? कहने लगा अब बता आज क्या हुआ ? कहता, मुझे तो आज पता लगा। वह मेरे वश में नहीं था। मेरे से कुछ नहीं बन पाया। उस समय मुझे पता लगा कि वह शक्ति मेरी नहीं थी। मुझे कृष्ण जी ने दी हुई थी, जब वली कंधारी आकर हार कर गुरु जी के चरणों में गिरा था कि मैं अब जल के बिना क्या करूँगा, मैं वहां जल के बिना नहीं रह सकता। वो कहते—तूने गलती की है, जल सब का है। नदी का जल सब का होता है, कोई स्नान करे, कोई पीये, कोई कुआँ खोदे या कोई अपने खेतों को सींच ले। जो भी यह पाँच तत्व हैं हम सब के हैं। तुम बताओ आप सब बैठे हो। पृथ्वी तो यह किसी को कुछ नहीं कहती कि तुम उठ जाओ। ईश्वर की बहुत सी बातें सब के लिये हैं, इस लिये जल सब का है, तुझे अपनी शक्ति का अभिमान था। अब देख ले, ये जल पीयेंगे भी, स्नान भी करेंगे, घर भी ले जायेंगे। फिर यह लोगों के खेतों को सींचेगा, वहां हरियाली होगी। पशु खायेंगे और जल भी पीयेंगे। फकीर ! तुम ने गलती की है। फिर वह माना कि हाँ मुझसे गलती हुई। मैं मार्ग भूल गया था। मैं अहंकार में आ गया था। तो गुरु साहिब ने कहा कि अब तो फकीरा ! इस प्रकार ही चलेगा। तेरी गलती थी। गुरु साहिब ने कहा तेरे साथ जबरदस्ती नहीं की। तूने सबकी चीजें एकत्रित कर लीं थी। देखो अब कितने लोग जा रहे हैं 'पंजा साहिब' वहां कैसे जल चलता है। वह

सारा 'पंजा साहिब' पीता है। सारे पशु पीते हैं। लोगों के खेत सींचे जाते हैं। वहां खेती होती है, इस प्रकार सबकी चीज़ सबकी होती है। पर जीव जो है, इसकी इतनी बुद्धि नहीं, यह उसको सबकी नहीं समझता। यह कहता है लूट लो जो लूटना है फिर अवसर नहीं मिलेगा। जब इसको कोई लूटता है तब यह चिल्लाता है। उन्होंने कहा जब तू लोगों को लूटता था, अब तुझे लूट लिया तो क्या हुआ ? यह स्वभाव है इसका। इसलिये भाई ! यदि तुमने अपना उद्धार करना है, तो उस परमेश्वर से अपना नाता जोड़ लो। नाम के साथ मन को जोड़ लो। जब नाम के साथ आपका मन जुड़ जायेगा तो समस्त संकल्प अपने आप नाश हो जायेंगे। फिर समभाव रह जाता है। फिर सब संकल्प नाश हो जाते हैं। उस संकल्प में उसका जो साहिब बैठा है वह संकल्प आप ही देखता है। आप ही बताता है। कभी किसी को पूछा तो नहीं कि मेरा क्या स्फुरण हुआ है। मेरा मन बदल गया, इस स्फुरण को यदि न देखता हो, तो बताये कौन ? वह संकल्प में आप बैठा, वह सारे संसार का स्वामी सब के हृदयों का अन्तर्यामी है। जब आपका मन नाम के साथ जुड़ जायेगा तो नामी (परमेश्वर) आपको प्राप्त हो जायेगा।

गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं यह उपाय है तुम्हारे मोक्ष का, अन्य कोई नहीं। अतः यह काम करना चाहिये।

हरि सजण दावणि लगिआ.....

वह हरि जो सब का सज्जन है, मालिक है, सबकी उत्पत्ति, पालना और लय का जिम्मेदार है। जब उसके नाम के साथ तुम्हारा मन जुड़ जायेगा।

किसै न देई बंनि।।

फिर कोई उसको बाँध नहीं सकेगा। कबीर बाँधा किसी ने ? नामदेव को बाँध लिया किसी ने ? ईसा को बाँध लिया किसी ने ? जो उस प्रभु के साथ जुड़ जायेगा उसको कोई नहीं बाँध सकता। इसलिये किसी अन्य को वह बाँधने नहीं देगा। हमें कोई उल्टे मार्ग पर नहीं डाल सकेगा।

माणक मोती नामु प्रभ.....

यह जो प्रभु का नाम है यह उसकी वस्तु है। वह माणिक्य है, वह मोती है। वह ज्ञान को प्राप्त करवाने वाला है, शुद्ध है। तेरा मन जब नाम के साथ एक हो गया, तो शुद्ध हो गया। उसको समाधि कहते हैं। गुरू साहिब ने लिखा है—

पातशाही दशमी—

एक चित जिह इक छिन धिआइउ।।
काल फास के बीच ना आइउ।। (दशम् ग्रन्थ)

यदि एक क्षण मात्र भी तुम्हारा मन उस परमेश्वर के साथ जुड़ गया, उसका

जन्म-मरण कट गया। एक क्षण मात्र। फिर तुम और जगह नहीं जाओगे। जो भी समाधि द्वारा ऋषि गये, गुरु गये, वे मुक्त अवश्य हुए।

उन लगै नाही संनि।।

उसको कोई लूट नहीं सकता। उसको कोई चुरा नहीं सकता। वह खोयेगा क्या, वह अपने आप निरंकार है।

ब्रहम गिआनी का सगल अकारु।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २७३)

वह कैसे फँसेगा। उसे कौन लूटेगा ? क्या लूटेगा ? उसके पास कोई अन्य वस्तु तो नहीं थी। उसके हृदय में परमेश्वर का साक्षात् होगा। वह जिस रूप में स्थित हो गया है, उसकी मोक्ष हो गई है। अब वह अंधेरे में रस्सी में सर्प नहीं देखेगा। इसके सब भ्रम नाश हो जायेंगे। भ्रम, ब्रह्मज्ञानी को नहीं होता, अन्य सब भ्रम में जीते हैं।

भरमे सुरि नर देवी देवा।।
भरमे तिध साधिक ब्रहमेवा।।
भरमि भरमि मानुख डहकाये।।
दुतर महा बिखम इह माये।।
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ।।
नानक तेह परम सुख पाइया।।।

(गउड़ी बा० अखरी मः ५ पृष्ठ २५८)

परमेश्वर के बिना, गुरू के बिना, बाकी के सब लोग लुट जाते हैं। मन किसी को दृष्टिगोचर नहीं होता। कभी इधर चले जाता है, कभी उधर। जिधर तुम नहीं कहोगे, उधर चला जायेगा। जिधर मन को अधिक रोकोगे उधर अधिक दौड़ेगा। इस करके जिस पर ईश्वरीय कृपा हो–

रंग सभे नाराइणै.....

फिर तुझे यह अनुभव हो जावेगा कि सारे नारायण हैं।

सभु गोविंदु है सभु गोविंदु है
गोविंद बिनु नहीं कोई।।

(आसा वाणी श्री नामदेव जी की पृष्ठ ४८५)

नामदेव कहते हैं सब जगह गोबिन्द है, गोबिन्द बिना कोई नहीं। इस प्रकार इसको आत्म ज्ञान हो जावेगा और सब फल प्राप्त हो जायेंगे।

जेते मनि भावंनि।।

जो परमेश्वर के मन को भायेंगे उनको सब परमेश्वर दृष्टिगोचर होगा। यह जो संसार आप देखते हैं यह हरि का रूप है। तीसरे पातशाह कहते हैं—

हरि रूप नदरी आइआ।।

(आनंद साहिब पृष्ठ ६२२)

हम भगवान् का रूप देखते हैं। तुम्हें या तो संसार का ज्ञान होगा या परमेश्वर का। जब तक इसको संसार का ज्ञान है तब तक परमेश्वर का ज्ञान नहीं हो सकता। दो चीज़ें तो सत्य नहीं हो सकतीं, यह एक नियम है। इसलिये भाई ! वह परमेश्वर और यह सारे जीव उसके हैं।

जो हरि लोड़े सो करे.....

जो हरि चाहेगा वही करेगा। तुम्हें इतना अधिकार नहीं। पुराण में पढ़ा है कि वह एक चीज़ किसी को नहीं देता। उत्पत्ति, पालन एवं लय परमेश्वर के पास है और किसी के पास नहीं। यदि और किसी को दे दे, वो वह नहीं कर सकता। इसलिये सब ईश्वर ही है। वह जो चाहेगा वही करेगा—तुम्हारा कहना नहीं मानेगा। इसका यही अन्तर है। जो पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है, वह हुक्म में खड़ा हो जाता है। नानक दास, कबीर दास, दादू दास, यह सब जितने संत हुए हैं। यह दास-पदवी को ही प्राप्त हुए, क्योंकि वे एक परमेश्वर के उपासक थे।

परमेश्वर की उपासना उन्होंने बताई थी। यदि ये दास न बनते, ब्रह्म बन जाते तो हम सब कुमार्गी बन जाते। उन्होंने यह रास्ता बताया। इसलिये भाई ! वह परमेश्वर जो करता है, उसका हुक्म मानों। भाई ! परमेश्वर जो करता है, सही करता है। ठीक करता है, वह सर्वज्ञ है। हमें पूर्ण ज्ञान नहीं।

सोई जीअ करंनि।।

जो वह करायेगा, जीवों को वही करना पड़ेगा। जीव की क्या ताकत है जो ईश्वर के करने को हिला दे। अलग कर दे। नहीं ! नहीं ! उसकी क्या शक्ति। इसकी

शक्ति के साथ करेगा। करेगा वह परमेश्वर और यश मिलेगा जीव को। गरीबदास ने ग्रन्थ में कबीर जी की बड़ी स्तुति की है। उसने लिखा है। 'नानक, दादू अगम अगाधू' तेरे जहाज़ के खेवट सही'

सुख सागर ते हँसा आये
भगत हडम्बड़ा जर धरिउ।

गरीबदास ने कहा है कि नानक और दादू की महिमा अगम अगाध है। वह बड़े जहाज़ों को किनारे लगाने वाले खेवट हैं। इन्होंने प्रेमाभक्ति द्वारा कितनों के जहाज़ किनारे लगाये हैं। लेकिन गरीब दास कबीर का शिष्य है—

दास गरीब कबीर का चेरा

कबीर का यज्ञ हुआ, बड़े लोग आये। कबीर घबरा गया। उसने कहा कि घर में तो कुछ है नहीं। वह जंगल में चला गया। उसके बाद परमात्मा ने बड़ा भारी यज्ञ किया। अपने आप कड़ाईयां आ गई, अपने आप हलवाई एवं सामग्री आ गई। एक महात्मा यज्ञ में प्रसन्न होकर गया था। उसने कबीर को पड़ा देखा। उसको कहा कि तुम कौन हो ? कबीर ने बदनामी से डरते अपना नाम कुछ और ही बताया। उस साधु ने बताया कि कबीर का यज्ञ तीन दिनों से चल रहा है। तू यहां भूखा पड़ा है। ले दो लड्डू खा ले। मैं कबीर के यज्ञ से लेकर आया हूँ। कबीर ने कहा—

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीर।।
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु।।

(सलोक कबीर पृष्ठ १३६७)

कबीर जा कर घर बैठ गया। एक कबीर ही रहना था। लोगों ने उसकी बहुत स्तुति की। उसने कहा कि न मैं कुछ कर सकता हूँ न मैंने कुछ किया है। जो किया है वह परमेश्वर ने किया है। मेरी तो लोग बदनामी ही करते हैं। हरि ने किया और मैं बदनाम हो गया। इस प्रकार भाई ! कबीरदास इस प्रकार का था कि परमेश्वर ने आ कर उसका यज्ञ किया। इस प्रकार कबीर परमेश्वर का रूप ही था।

जो प्रभि कीते आपणे.....

जो प्रभु ने अपने बना लिये।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २७७)

जिस पर प्रभु कृपा करते हैं उस का फिर हिसाब नहीं पूछते। बावे बुड्ढे का, मनसुख का, भगीरथ का जितने भी हुये हैं, 'भाई गुरदास की वारां' पढ़ो। वहां सब दर्ज है। उनका कोई हिसाब बाकी नहीं रहा। इस करके भाई ! कृपा और मिहर के बाद कोई हिसाब नहीं होता। (अब पढ़ भाई पंक्ति)

जो प्रभि कीते आपणे....

उन पर कृपा करके प्रभु ने अपना बना लिया। वह जिस पर कृपा करता है उसे अपना बना लेता है। बाबा बुड्ढ़ा तो छोटी आयु का था। वह गुरु साहिब के लिये दूध लेकर आया। गुरु साहिब ने पूछा तू यहाँ कैसे आ गया ? वह कहने लगा—कि आप मेरे ऊपर कृपा कर दो। मेरे जन्म-मरण का चक्कर समाप्त कर दो। गुरु साहिब ने कहा कि तुम्हें यह बात कैसे पता लगी—तो उसने कहा कि मैं अग्नि जला रहा था। मैंने देखा कि छोटी-छोटी लकड़ियाँ पहले जल गई, बड़ी लकड़ी रह गई। मैंने सोचा कहीं छोटी आयु में ही मौत न हो जाये। मैंने सुना आप पूर्ण संत हैं। मैं इसलिये आपके दर पर आया हूँ। तब गुरु साहिब ने कहा कि भाई! बातें तो तो बूढ़ों वाली करता है। बाद में उसके घर वाले आये। उन्होंने कहा कि हमारा लड़का यहां आया था। गुरु साहिब ने कहा कि यह बैठा है। वे कहने लगे यह तो नहीं है। गुरू साहिब ने कहा कि देख लो भाई ! इसको पूछ लो। इस करके भाई ! कृपा को प्राप्त व्यक्ति, छठी पातशाही तक घास खोदता रहा। छठी पातशाही तक तिलक देता रहा। सो भाई ! जो उसकी कृपा प्राप्त कर लेता है, वह उसका ही हो जाता है।

वह गुरू का ही हो गया। बाबे बुड्ढे ने घर वालों को कहा—अब मेरा आप के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। जहां आना था मैं आ गया हूँ। मैं इनका ही हूँ। उसको पिछला जन्म दीख रहा था। *(अब पढ़ भाई)*

सेई कहीअहि धंनि।।

उनको लोग धन्य कहते हैं।

आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि।।

उनको धन्य कहो—लोग कहते भी हैं। धन्य रविदास, धन्य कबीर। जलूस निकालते हैं। मैंने रविदास का जलूस निकालते देखे। इसलिये वे धन्य हो जाते हैं।

यदि तुम अपने आप ले सकते हो, यदि आपको प्यारा परमेश्वर मिल जाये।

विछुड़ि किऊ रोवंनि।।

फिर बिछुड़ कर तुम धक्के क्यों खाते फिरते हो।

कई जन्म भये कीट पतंगा।।
कई जन्म गज मीन कुरंगा।।

(गउड़ी गुआरेरी मः ५ पृष्ठ १७६)

यदि तुम सब कुछ अपने आप कर सकते हो तब गुरु की कोई आवश्यकता नहीं। तो गुरु क्यों भेजा।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।।
ता ते अंगदु भयउ ततु तिउ ततु मिलायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

यदि स्वयं उस समय तक काम चल सकता तो गुरु नानक देव जी को चार विस्तृत यात्रायें (उदासियां) करने की आवश्यकता क्यों पड़ती। न! न! यह आपका अहंकार है। यूँ प्रभु नहीं मिलेंगे। जब तुम्हारे पुण्य कर्म एकत्रित होंगे तब कोई महापुरुष मिलेगा। महापुरुष तुलसीदास ने लिखा है—

पुण्य पुंज बिनु मिलहि न संता ।।
सत-संगति संसृति कर अंता।।

(रामचरित मानस' उत्तरकाण्ड ४५, ६)

तुम्हें पुण्यों के समूह बिना संत नहीं मिल सकता। फिर क्या हो जाता है। संत संसार का अंत कर देता है। जन्म मरण से छुड़ा देता है। संत की शक्ति होती है। गुरू नानक ने कितने छुड़ाये। गुरू अमरदास जी ने लिखा है—

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ।।

(गूजरी मः ३ पृष्ठ ४९०)

तीसरे पातशाह गुरु अमरदास जी महाराज कहते हैं कि वो गुरु अंगददेव जी के साथ मिलकर गुरु बन गये। उस गुरु की रज़ा देखो—

नानक अंगद को बप धरा।।
धरम प्रचुर इस जग में करा।।
अंगद अमर दास कहाइउ।।
जन दीपक ते दीप जगाइउ।।

(दशम् ग्रन्थ)

इसलिये गुरु नानक देव जी दीपक जला गये। दीपक के साथ वैसा ही हो गया। जो प्रकाश उसका होगा वही प्रकाश उसका होगा। इसलिये—

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ।।

(गूजरी मः ५ पृष्ठ ४९०)

कहते हैं गुरु की रज़ा देखो—मैं गुरू के साथ गिल कर गुरु हो गया। लेकिन बारह वर्ष तक गागर तो उठानी ही पड़ी। यदि गागर न उठाते फिर गुरु से गिलकर गुरु कैसे होते। (हाँ—चलें)

साधू संगु परापते.....

भाई ! साधु की संगति से वह वस्तु प्राप्त होगी। साधु नाम है शुद्ध पुरूष का जो प्रभु से मिला हुआ है। उसको ब्रह्मज्ञानी कह लो, साधु कह लो, गुरमुख कह लो—जो आपकी इच्छा है कह लो। जब कृष्ण जी ने उद्धव को कहा था वहां बद्री नारायण के एक ओर व्यास बैठा है। मैं तुझे साथ लेकर जाऊँ क्योंकि यादव बहुत बिगड़ चुके हैं। लोगों को दुःख देते हैं। बाद में तो वे बहुत दुःख देगे। मैंने इनका निर्णय करना है। दशम पातशाह मसंदों को इसी लिये फूँक कर गये थे। यह ससुरे लोगों का पीछा छोड़ेंगे ? वे आप ही करके जाते हैं। उनमें शक्ति होती है। उद्धव को कहते हैं कि तू चल बद्री नारायण। तू इस ओर बैठ। जाती बार तुझे साथ ले जायेंगे। समस्त कार्यों से निवृत्त होकर उद्धव को साथ लेकर गये। इसलिये भाई ! साधु के साथ मिलकर प्रभु की प्राप्ति होती है। साधु के साथ मिल कर उद्धार होता है। साधु पूर्ण ब्रह्मज्ञानी महापुरुष को कहते हैं।

नानक रंग माणेनि।।

इसका आनंद प्राप्त कर। 'रंग' आनंद को कहते हैं। फिर तुझे कोई चिंता नहीं होगी। चिंता तो तेरी समाप्त हो गई। तू जीवन मुक्त हो गया।

हरि जेठु रंगीला तिसु धणी.....

उस दिन इस परमेश्वर को—'धनी' नाम मालिक का है। मारवाड़ियों की यह बोली है। तेरा 'धनी' कहां गया ? वह पूछते हैं आपस में तेरा 'धनी' कहां गया ? 'धनी' नाम मालिक का है। वो जो सबका मालिक है (परमेश्वर) आज परमेश्वर की—व्यापकता की बात चली हुई है। (भला अब पढ़ो)

हरि जेठु रंगीला तिसु धणी.....

इस 'धनी' की कृपा से तुम्हें यह जेठ का महीना सफल होगा। तुम्हें कोई दुःख भी नहीं रहेगा, आनंद ही आनंद होगा।

जिस कै भागु मथेनि।।

जिसके मस्तक के भाग्य शुद्ध हों, उसको यह साधु प्राप्त होगा। उसकी कृपा से भाई तुम आनंद मानोगे—मोक्ष हो जायेगी। उसके जन्म मरण काटे जायेंगे।

सारे बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।

❑

सोरठि महला ५

गुरि पूरै चरनी लाइआ।।
हरि संगि सहाई पाइआ।।
जह जाईऐ तहा सुहेले।।
करि किरपा प्रभि मेले।।।१।।
हरि गुण गावहु सदा सुभाई।।
मन चिंदे सगले फल पावहु।।
जीअ कै संगि सहाई। ।रहाउ।।
नाराइण प्राण अधारा।।
हम संत जनां रेनारा।।
पतित पुनीत करि लीने।।
करि किरपा हरि जसु दीने ।।२।।
पारब्रह्मु करे प्रतिपाला।।
सद जीअ संगि रखवाला।।
हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ।।
बहुड़ि ना जोनी पाईऐ।।३।।
जिसु देवै पुरखु बिधाता।।
हरि रसु तिन ही जाता।।
जमकंकरु नेड़ि न आइआ।।
सुखु नानक सरणी पाइआ।।४।।५६।।

(पृष्ठ ६२३)

सतिनाम श्री वाहिगुरु साहिब जीउ।

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु। आप जी को इस बात का पता होगा

धरनि गगन नवखंड महि जोति सरूपी रहिओ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि।।

(सवैये पृष्ठ १४०९)

श्री गुरु नानक है, ज्योति स्वरूप। जगत् गुरु बन कर संसार में अवतरित हुए। यह आप देखेंगे वाणी पढ़कर, गुरु नानक एवं कबीर जी की जो वाणी है, वह चौथे पद (तुरीय अवस्था) की है। यह पाखंड का निषेघ है और यह चौथे पद (तुरीय अवस्था) की है। कबीर का जन्म और मरण कहीं नहीं लिखा। गुरु नानक जी के आगमन का वर्णन इतिहास में है और वाणी में भी लिखा है—

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।।
ता ते अंगदु भयउ तत तिउ ततु मिलायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

अवतार, कारक, संत और यह ऋषि बहुत संसार में आते हैं। वे स्वंय शक्ति कारक होते हैं लेकिन जो गुरू अवतार होता है, वह कभी कभी आता है, हमेशा नहीं आता। अवतार हमेशा आता रहेगा संसार में। ईश्वर ने संसार में सदैव रहना है।

घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउनिधि उतरहि पारि।।

(सलोक मः ९ पृष्ठ १४२७)

संसार में अंधकार मचेगा, एक की उपासना से दुनीयां हिल जायेगी, नाना उपासना विधियां प्रकट होंगी, उस समय गुरु-अवतार-अवतरित होगा। गुरु नानक ने एक की उपासना बताई।

एकम एकंकारु निराला।।
अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिया।।

(बिलावल मः १ पृष्ठ ८३८)

ईश्वर हमेशा ही घट-घट में व्याप्त है। यह व्यापक है। उसमें कभी भी देश, काल, वस्तु की पहुँच नहीं । ईश्वर फलित वस्तु रूप है। इसलिये वस्तु की पहुँच से परे है। इसलिये–

घट घट मैं हरि जू बसै
संतन कहिओ पुकारि।।

(पृष्ठ ५४२७)

जब यह भ्रम में फँस जाता है, तो जीव बन जाता है। जब इसका भ्रम निवृत्त हो जाता है, तो ईश्वर हो जाता है। वह शक्ति इसमें आ जाती है।

सरब भूत आपि वरतारा।। सरब नैन आपि पेखनहारा।।
सगल समग्री जा का तना।। आपन जसु आप ही सुना।।
आवन जानु इकु खेलु बणाइआ।। आगिआकारी कीनी माइआ।।
सभै कै मधि अलिपतो रहै।। जो किछु कहणा सु आपे कहै।।
आगिआ आवै आगिआ जाइ।। नानक जा भावै तां लए समाइ।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २९४)

वशिष्ठ ने इस के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है, इसको 'भगौती' कहते हैं। 'भगौती' कोई देवी का नाम नहीं है, वह शब्द भगवती है। पंडित कहते हैं कि 'भगोती' देवी है। नहीं भाई ! वह भगवती शब्द है।

भगउती भगवंत भगति का रंगु।।
सगल तिआगै दुसट का संगु।।

(गउड़ी सुख मः ५ पृष्ठ २७४)

सो भगउती जो भगवतै जाणै।।
गुरप्रसादी आपु पछाणै।।

(सिरी राग दी वार मः ३ पृष्ठ ८८)

यह पहली पातशाही ने गुरवाणी में लिखा है कि 'भगौती' तो अचिंत्य शक्ति का नाम है। वह आज्ञा पर चलेगी।

आगिआकारी कीनी माइआ।।

(गउड़ी सुख पृष्ठ २९४)

जिसकी आज्ञा में माया चलेगी वह ईश्वर कोटि में चला जायेगा। जीव माया के आधीन है और माया ईश्वर के आधीन है। इसको पार करना कोई सरल बात नहीं है। उसकी कृपा द्वारा ही पार किया जा सकता है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ–२७७)

सभ कै मधि अलिपतो रहै।।
जो किछु कहणा सु आपे कहै।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ–२६४)

माया की कोई शक्ति नहीं है। वह आज्ञा में है और परमेश्वर आज्ञा देने वाला है। हुक्म उसका क्यों नहीं कहा जाता ? इस करके जब आप श्री गुरू ग्रन्थ साहिब पढ़ोगे तब यह बात पहले १ ओंकार भाव 'भगौती' आयेगी। वह ईश्वर की शक्ति का नाम है। इन सब में जो अगम्य है, वह है–नाम। यह गुरु एवं परमेश्वर से प्राप्त होता है। गुरु किसी का बनाया नहीं होता। वह परमेश्वर द्वारा भेजा गया होता है।

अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु।।
नानक गुरु मिलिआ सोइ जीउ।।

(सोरठ मः १ पृष्ठ ५९९)

गुरु किसी पंचायत का निर्मित नहीं होगा।

थापिआ न जाइ कीता न होइ।।
आपे आपि निरंजनु सोइ।।

(जपुजी पृष्ठ २)

वह किसी का निर्मित गुरु नहीं होता। गुरु कृपा के साथ होता है। भाई नंदलाल जी को दशम पातशाह जी ने इतिहास लिखने के लिये आज्ञा दी तो सिक्खों ने बड़ा बुरा मनाया। क्योंकि पातशाह उसे अपने पास बिठाते थे। सिक्खों ने कहा–कि हम सेवा करते हैं, अमृत पान किया है, सब कुछ किया है। हम यहाँ बैठते हैं, उसको वहाँ बिठाते हो उन्होंने प्रार्थना की। गुरुजी ने कहा–कल प्रातः आना। उन्होंने अपनी शक्ति दिखाई।

वे कहने लगे बिल्कुल ठीक है। हमारी गलती है। जीव से गलती हो ही जाती है। जितना माया के आधीन होगा उतनी गलती अधिक होगी। ईश्वर तो माया का मालिक है और ईश्वर से कभी गलती नहीं होती। उसकी आज्ञा में माया है। वह तो

घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि जतरहि पारि।।

(सलोक मः ९ पृष्ठ १४२७)

यदि उस ईश्वर का, व्यापक का भजन करे वह कभी भी निष्फल नहीं होता

क्योंकि

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ।।

(सिरीराग मः ३ पृष्ठ ३६)

जब वह सब कुछ जानता है। कबीर साहब ने यह बात बताई कि उपदेश चार प्रकार का होता है—

१. ब्रह्म उपदेश
२. ईश्वर उपदेश
३. जीव उपदेश
४. माया उपदेश

इस सम्बन्ध में हमने 'बीजक' ग्रन्थ में पढ़ा है। गुरु साहिबान् ने ईश्वरीय वाणी का अधिक वचन किया। यह ईश्वरीय वाणी किसी मनुष्य की वाणी तो है नहीं। कई इस प्रकार कहते हैं कि वाणी गुरु नहीं है, "गुरु नहीं", गुरुओं का भी गुरु है। हमारे महंत को वे कहते हैं कि वह गुरुओं का गुरु कैसे हो सकता है ? हमारा बड़ा गुरु, गुरु नानक साहिब है। उस ज्योति (गुरु नानक) ने आप इसको (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब) लिखकर इसका आदर किया, इसलिये ये गुरुओं के भी गुरु हैं। इसलिये जब जीव भजन करता करता ईश्वरीय कोटि में पहुँच जाता है—

सिमर सिमर नामु बारं बार।। नानक जीअ का इहै अधार।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९५)

पर प्रभु स्मरण हमसे होता नहीं। यदि हम सच्चे मन से उसका भजन करें तो फिर—

सिमिर सिमिर नामु बारं बार

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९५)

एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है,
बाहुड़ि जनमि न आवा।।

(राग बिलावल पृष्ठ ७९५)

वह शब्द तो वही है जो श्वास के साथ आये और कोई श्वास खाली नहीं जाना चाहिये। लेकिन हमारे भीतर पता नहीं कितने विचार, संकल्प भरे हुए हैं। उस नाम की कभी बारी नहीं आने देते। कई बार तुम देखते हो—आदमी बैठा-बैठा विचारों की लड़ी चला लेता है। कोठी बना ली, हाड़ी की फसल काट ली, पास पैसे भी नहीं, जमीन खरीद ली। कोई इसको यह पूछे—भाई ! यह मनोराज्य तेरे क्या काम आयेगा ?

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा।।

(मानस बाल० ५२, ७)

होगा तो वह, जो राम ने लिख दिया है। तेरा एक भी तर्क इसमें काम नहीं

आयेगा। माया से बंधा जीव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार में जकड़ा हुआ है, लेकिन मनोराज्य तो इससे भी बुरा है। यदि कोई इन विकारों से बच जाता है तो मनोराज्य में फँस जाता है। वह श्रद्धा और विश्वास के साथ श्वास-श्वास भजन करे। गुरू घर में दो ही साधन हैं।

सिमिर सिमिर नाम बारं बार
नानक जीअ का इहै अधार।। (सुख० पृष्ठ २६५)

सिमरण (नाम स्मरण) के साथ तेरा उद्धार हो जायेगा

सेवा करत होइ निहकामी।।
तिस कउ होत प्रापति तुआमी।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २८६)

यह दो साधन हैं। इन दो कामों को करने वाला मोक्ष को प्राप्त हो गया। जब हरिमंदिर साहिब की सेवा आरम्भ हुई तो भाई 'बहलो' जो 'फफड़ियां' का था, इसका पिता बड़ा भक्त था। मुसलमानों ने इसे गाँव का मुखिया बनाया हुआ था। इसके हाथ में लोहे की छड़ी होती थी। फर्श पर बैठा होता था। लोग इसके पास आते थे। जब पहले सेवा की तैयारी की तब गुरू रामदास साहिब ने आज्ञा की—श्री गुरू अर्जुन देव जी को

१. अमृतसर पूरा करना है।
२. तरनतारन तीर्थ बनाना है।
३. गुरुवाणी की बीड़ बनानी है।
४. करतारपुर बसाना है।

वह गुरू साहिब ने चारों पूरे किये। जब सिक्ख, महाराज जी की आज्ञानुसार, 'बहलों' को लेने गये

इकु तिलु नहीं भंने घालै।।

उसको लाओ, अपना यह काम अभी पूरा करना है। वो आपके साथ आयेगा नहीं। दो व्यक्ति आगे से पकड़ना, चार व्यक्ति धक्के देना। जब उसको लाकर सतुलज नदी में नाव में बिठाया तो उसको पिछला नक्शा याद आ गया। मैं गुरू घर का था और माया ने मेरी बुद्धि को भ्रमित कर दिया। उसने अपनी लाठी उठा कर नदी में फैंक दी। कहने लगा—छोड़ दो। अब मैं दौड़ता नहीं। दौड़ने योग्य ही नहीं रहा। जाकर जब श्री गुरू अर्जुन देव के आगे मस्तक झुकाया तो साहिब कहने लगे—किस तरह ? कहने लगा—भूल गया, माया ने भ्रमित कर दिया था। महाराज जी कहने लगे, भाई 'बहिलो' सबसे 'पहलो' गुरू ने कृपा कर दी। ईश्वर भीतर संकल्प में बैठकर कृपा करता है। सब के ध्यान में वह विराजमान है। अकेला संकल्प तो जड़ है चाहे रजो, तमो अथवा सतो गुण का हो। उसमें चेतन विराजमान है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ–२७७)

सभ कै मधि अलिपतो रहै।।
जो किछु कहणा सु आपे कहै।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ–२९४)

माया की कोई शक्ति नहीं है। वह आज्ञा में है और परमेश्वर आज्ञा देने वाला है। हुक्म उसका क्यों नहीं कहा जाता ? इस करके जब आप श्री गुरू ग्रन्थ साहिब पढ़ोगे तब यह बात पहले १ ओंकार भाव 'भगौती' आयेगी। वह ईश्वर की शक्ति का नाम है। इन सब में जो अगम्य है, वह है–नाम। यह गुरु एवं परमेश्वर से प्राप्त होता है। गुरु किसी का बनाया नहीं होता। वह परमेश्वर द्वारा भेजा गया होता है।

अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु।।
नानक गुरु मिलिआ सोइ जीउ।।

(सोरठ मः १ पृष्ठ ५९९)

गुरु किसी पंचायत का निर्मित नहीं होगा।

थापिआ न जाइ कीता न होइ।।
आपे आपि निरंजनु सोइ।।

(जपुजी पृष्ठ २)

वह किसी का निर्मित गुरु नहीं होता। गुरु कृपा के साथ होता है। भाई नंदलाल जी को दशम पातशाह जी ने इतिहास लिखने के लिये आज्ञा दी तो सिक्खों ने बड़ा बुरा मनाया। क्योंकि पातशाह उसे अपने पास बिठाते थे। सिक्खों ने कहा–कि हम सेवा करते हैं, अमृत पान किया है, सब कुछ किया है। हम यहाँ बैठते हैं, उसको वहाँ बिठाते हो उन्होंने प्रार्थना की। गुरुजी ने कहा–कल प्रातः आना। उन्होंने अपनी शक्ति दिखाई।

वे कहने लगे बिल्कुल ठीक है। हमारी गलती है। जीव से गलती हो ही जाती है। जितना माया के आधीन होगा उतनी गलती अधिक होगी। ईश्वर तो माया का मालिक है और ईश्वर से कभी गलती नहीं होती। उसकी आज्ञा में माया है। वह तो

घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(सलोक मः ९ पृष्ठ १४२७)

यदि उस ईश्वर का, व्यापक का भजन करे वह कभी भी निष्फल नहीं होता

क्योंकि

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ।।

(सिरीराग मः ३ पृष्ठ ३६)

जब वह सब कुछ जानता है। कबीर साहब ने यह बात बताई कि उपदेश चार प्रकार का होता है—

१. ब्रह्म उपदेश
२. ईश्वर उपदेश
३. जीव उपदेश
४. माया उपदेश

इस सम्बन्ध में हमने 'बीजक' ग्रन्थ में पढ़ा है। गुरु साहिबान् ने ईश्वरीय वाणी का अधिक वचन किया। यह ईश्वरीय वाणी किसी मनुष्य की वाणी तो है नहीं। कई इस प्रकार कहते हैं कि वाणी गुरु नहीं है, "गुरु नहीं", गुरुओं का भी गुरु है। हमारे महंत को वे कहते हैं कि वह गुरुओं का गुरु कैसे हो सकता है ? हमारा बड़ा गुरु, गुरु नानक साहिब है। उस ज्योति (गुरु नानक) ने आप इसको (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब) लिखकर इसका आदर किया, इसलिये ये गुरुओं के भी गुरु हैं। इसलिये जब जीव भजन करता करता ईश्वरीय कोटि में पहुँच जाता है—

सिमर सिमर नामु बारं बार।। नानक जीअ का इहै अधार।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९५)

पर प्रभु स्मरण हमसे होता नहीं। यदि हम सच्चे मन से उसका भजन करें तो फिर—

सिमिर सिमिर नामु बारं बार

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९५)

एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है,
बहुड़ि जनमि न आवा।।

(राग बिलावल पृष्ठ ७९५)

यह शब्द तो वही है जो श्वास के साथ आये और कोई श्वास खाली नहीं जाना चाहिये। लेकिन हमारे भीतर पता नहीं कितने विचार, संकल्प भरे हुए हैं। उस नाम की कभी बारी नहीं आने देते। कई बार तुम देखते हो—आदमी बैठा-बैठा विचारों की लड़ी चला लेता है। कोठी बना ली, हाढ़ी की फसल काट ली, पास पैसे भी नहीं, जमीन खरीद ली। कोई इसको यह पूछे—भाई ! यह मनोराज्य तेरे क्या काम आयेगा ?

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा।।

(मानस बाल० ५२, ७)

होगा तो वह, जो राम ने लिख दिया है। तेरा एक भी तर्क इसमें काम नहीं

आयेगा। माया से बंधा जीव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार में जकड़ा हुआ है, लेकिन मनोराज्य तो इससे भी बुरा है। यदि कोई इन विकारों से बच जाता है तो मनोराज्य में फँस जाता है। वह श्रद्धा और विश्वास के साथ श्वास-श्वास भजन करे। गुरू घर में दो ही साधन हैं।

सिमिर सिमिर नाम बारं बार

नानक जीअ का इहै अधार।। (सुख० पृष्ठ २६५)

सिमरण (नाम स्मरण) के साथ तेरा उद्धार हो जायेगा

सेवा करत होइ निहकामी।।

तिस कउ होत प्रापति सुआमी।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २८६)

यह दो साधन हैं। इन दो कामों को करने वाला मोक्ष को प्राप्त हो गया। जब हरिमंदिर साहिब की सेवा आरम्भ हुई तो भाई 'बहलो' जो 'फफड़ियां' का था, इसका पिता बड़ा भक्त था। मुसलमानों ने इसे गाँव का मुखिया बनाया हुआ था। इसके हाथ में लोहे की छड़ी होती थी। फर्श पर बैठा होता था। लोग इसके पास आते थे। जब पहले सेवा की तैयारी की तब गुरू रामदास साहिब ने आज्ञा की—श्री गुरू अर्जुन देव जी को

१. अमृतसर पूरा करना है।

२. तरनतारन तीर्थ बनाना है।

३. गुरुवाणी की बीड़ बनानी है।

४. करतारपुर बसाना है।

वह गुरू साहिब ने चारों पूरे किये। जब सिक्ख, महाराज जी की आज्ञानुसार, 'बहलों' को लेने गये

इकु तिलु नहीं भंने घाले।।

उसको लाओ, अपना यह काम अभी पूरा करना है। वो आपके साथ आयेगा नहीं। दो व्यक्ति आगे से पकड़ना, चार व्यक्ति धक्के देना। जब उसको लाकर सतुलज नदी में नाव में बिठाया तो उसको पिछला नक्शा याद आ गया। मैं गुरू घर का था और माया ने मेरी बुद्धि को भ्रमित कर दिया। उसने अपनी लाठी उठा कर नदी में फैंक दी। कहने लगा—छोड़ दो। अब मैं दौड़ता नहीं। दौड़ने योग्य ही नहीं रहा। जाकर जब श्री गुरू अर्जुन देव के आगे मस्तक झुकाया तो साहिब कहने लगे—किस तरह ? कहने लगा—भूल गया, माया ने भ्रमित कर दिया था। महाराज जी कहने लगे, भाई 'बहिलो' सबसे 'पहलो' गुरू ने कृपा कर दी। ईश्वर भीतर संकल्प में बैठकर कृपा करता है। सब के ध्यान में वह विराजमान है। अकेला संकल्प तो जड़ है चाहे रजो, तमो अथवा सतो गुण का हो। उसमें चेतन विराजमान है।

जागत जोति जपै निसि बासुर।।
एक बिना मन नैक न आनै।।

(दशम् ग्रन्थ)

उस एक के बिना आप ने किसी को नहीं मानना। उस एक को गुरु साहिब ने माना। गुरू साहिब प्रसन्न होकर कहने लगे—माँग ! क्या मांगता है ? जी मैं अब क्या माँगू ? हमारे वहां पानी नहीं होता। गुरू साहिब ने कहा—ईंट उठा, पानी ही पानी होगा। उन्होंने ईंट उठाई और पानी ही पानी था। वहां पक्का सरोवर है। अब लोग स्नान करते हैं। उन लोगों ने उसकी पक्की उसारी की, और कहा, बड़ा काम किया—हमारा उद्धार कर दिया। वह कहने लगा मेरे ऊपर जो गुरू की कृपा हुई है, वह मैं जानता हूँ। इतिहास लिखता है कि जिन्होंने भी अमृतसर गुरु घर की सेवा की, वह मोक्ष को प्राप्त हो गया। भाई भगतू भी उनमें से एक था। इसलिये यह जीव जब तक गुरु के चरणों की सेवा नहीं करता, इसका उद्धार होने वाला नहीं। पर गुरू हो पूर्ण।

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।
ब्रहम गिआनी सब सिसटि का करता।।
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता।।
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २७३)

वह ब्रह्मज्ञानी कैसे हुआ। पंचम पातशाह उपदेश देते हैं—

गुरि पूरै चरनी लाइआ।।
हरि संगि सहाई पाइआ।।

पंचम पातशाह कहते हैं, वह कौन से गुरु थे। श्री गुरु रामदास महाराज—

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है।।

(सवैये पृष्ठ १३८८)

जब गुरू अर्जुन देव जी, गुरू रामदास जी के चरणों में गये तो गद्दी के मालिक हो गये। इसलिये जब यह गुरु के चरणों में जायेगा, इसका काम हो जायेगा।

हरि संगि सहाई पाइआ

(म: ५ पृष्ठ ६२३)

यह अपने ध्यान में बैठा, ज्योति स्वरूप परमेश्वर देख लेगा। एक संत होते थे 'मस्तुआने वाले' हमने उनका कीर्त्तन सुना। वे कहते—जपो खालसा जी 'जाग्रत ज्योति' को देखना ! कहीं और जगह न चले जाना। इसलिये यह जाग्रत ज्योति तो इसके अन्दर है।

जागत जोति जपै निसि बासुर।।
एक बिना मन नैक ना आनै।।

यह ज्योति सब में व्यापक है।

घट घट मै हरिजू बसै संतन कहिउ पुकारि।।

(सलोक मः ९ पृष्ठ १४२७)

जब यह गुरू के चरणों में लग जायेगा—लेकिन गुरू पूर्ण हो—तो इसके हृदय द्वार खुल जायेंगे।

संत सांगे अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९३)

हमने उस संत के संग के साथ, परमेश्वर को अपने साथ देख लिया है। कहाँ ? अपने हृदय में। इसलिये इसमें वही है। जब यह गुरु के चरणों में चला जाये, वह परमेश्वर जो समस्त सृष्टि का स्वामी है। यह समस्त सृष्टि पाँच तत्वों से निर्मित है। जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि एवं आकाश। यह पाँच तत्व हैं। तीन गुण अर्थात् सत्व, रजस् एवं तमस्। इस प्रकार इन तीन गुणों और पाँच तत्वों के साथ समस्त संसार निर्मित हुआ है। लेकिन यह किस के चलाये चलते हैं। एक उस परमेश्वर के—

एकम एकंकारु निराला।।
अमुउ अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचर रूपु न रेखिया।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिया।।

(बिलावल मः १ पृष्ठ ८३८)

वह परमेश्वर जो सब के हृदयों में विराजमान है गुरु परमेश्वर के चरणों से लगा देख लिया, समझो उद्धार हो गया। अब दो ही वस्तुयें हैं तीसरी नहीं।

मूई सुरति बादु अहंकारु।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गउड़ी मः १ पृष्ठ १५२)

इसके अन्तर में देखने वाला भी बैठा है। शेष जितना दृश्य है, अहंकार से लेकर सारा संसार, यह सारा ही मिथ्या है।

द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।

(गारू मः ५ पृष्ठ १०८३)

पर द्रष्टा तो मिथ्या नहीं है। वह जो तुम्हारे हृदय में बैठा है, वह तो मिथ्या नहीं। वह ईश्वर है। जब गुरू साहिबों को लोगों ने इक्ट्ठे होकर एक प्रश्न किया कि पंडित का पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है, तो गुरु जी ने समझाया, हम नहीं मरेंगे।

हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।
ओह न मूआ जो रहिआ समाइ।।

(गउड़ी मः १ पृष्ठ १५२)

मैं (मर्ण) धर्मा नहीं हूँ। मेरी जो अविद्या थी, बला थी। जिसने मुझे जकड़ रखा था, वह मर गई।

कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।।

(गउड़ी मः २ पृष्ठ १५२)

'पता नहीं' क्यों हम माया के इतने आधीन हो गये हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में है—

गलि चमड़ी जउ छोडै नाही।।

(आसा मः ५ पृष्ठ ३९२)

यह जो तुम्हारे साथ चिपटी हुई है, तुम्हें छोड़ेगी नहीं। तुम्हारे में कोई शक्ति नहीं छूटने की। किसी राजा एवं सम्राट में शक्ति है तुम्हें छुड़ाने की ? यह तो बस—

लागि छुटो सतिगुर की पाई।।

(आ. मः ५ पृष्ठ ३९२)

यदि तुम मुक्त होना चाहते हो तो 'सतिगुरु' के चरणों में लग जाओ। वही बात गुरू अर्जुन देव ने कही है कि जब मैं गुरू रामदास के चरणों में गया, तो मैं साक्षी हो गया। इसलिये नाम और सेवा ने उनका उद्धार कर दिया। सेवा से अन्तःकरण शुद्ध होता है। साफ दर्पण में मुख ठीक नज़र आयेगा, स्थिर जल में मुख ठीक दृष्टिगोचर होगा, ज्ञान होगा तो इस बात का अनुभव होगा। एक लड़का

नदी के किनारे अपने पिता से कहता है जल में आपका सिर नीचे और पैर ऊपर दिखाई देते हैं। पिता ने कहा कोई बात नहीं। क्योंकि पिता जानते थे कि मेरे पैर तो नीचे ही हैं और सिर ऊपर है। बच्चे को पता नहीं है। उस अज्ञानी को क्या पता ? ज्ञानी तो जानता है। उस ज्ञानी ने उसको समझाया। पिता पुत्र को कहता है कि अपने देख—तेरे भी वैसे ही हैं। वह कहता कि भ्रम में था—तुझे उपाधि कर के भ्रम था। उपाधि है माया, माया करके भ्रम पड़ जाता है। वह जीव ही रहता है। जब यह अपने आप का साक्षात् कर लेता है तो ईश्वर बन जाता है। माया इसके आधीन हो जाती है। इस प्रकार जब पूर्ण गुरु अपने चरणों में लगा लेता है तब आपे का (आत्मानुभव) होता है।

जह जाईऐ तहा सुहेले।।

अब जहां भी जायेंगे सुखपूर्वक हैं। ईश्वर मरण-धर्मा नहीं है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

उस ज्योति ने गुरू नानक कहलाया और गुरू अवतार था। वह गुरु अवतार होकर प्रकट हुआ और गुरु अवतार कहलाया। जब अंतिम समय शरीर छोड़ा तब हिन्दू और मुसलमानों ने चादर को फाड़ कर आधी-आधी कर ली। उन्होंने समाधि बना ली और उन्होंने कब्र बना ली। पहली बार मैं बड़े उत्साह के साथ करतारपुर गया। तब वहां दोनों थीं। जब दूसरी बार गया तो वहां केवल समाधि थी। मैंने पूछा वहां के जत्थेदार को कि कब्र कहां गई ? उसने कहा कि लाहौर मुकद्दमा चला, और आज्ञा हुई। इस करके हमने राहगीरी देकर कब्र उखाड़ कर ले गये थे। भाई ! यह जो महापुरूष होते हैं, पूर्ण पुरुष होते हैं। वे अपना नाम नहीं जनाते। यदि हम नाम को देखें तो अंगद, अमरदास, रामदास नाम थे लेकिन जब हम वाणी पढ़ते हैं तो अंत में नानक का नाम आता है। क्योंकि वह आप ही ज्योति था। इसलिये जब तक आपका नाम स्मरण पूरा नहीं होता, सेवा पूरी नहीं होती, तुम ईश्वर कोटि में नहीं पहुँच सकते। जब तुम कोई कार्य पूरे मनोयोग से नहीं करते तब वह काम कभी भी ढंग से पूरा नहीं होता। इस प्रकार जब जीव माया में मस्त हो जाता है तब सिमरण से खाली रह जाता है। हे भाई ! गुरु परमेश्वर की शरण में गये बिना यह छूटती नहीं है। माया परमेश्वर की शक्ति है अतः उसके आधीन रहती है।

आवन जानु इकु खेलु बनाइआ।।
आगिआकारी कीनी माइआ।।

सभ कै मधि अलिपतो रहै।।
जो किछ कहणा सु आपे कहै।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २९४)

आदेश, आदेश देने वाले का चलता है। जब तक यह जीव माया के आधीन है तो ईश्वर नहीं। जब यह ईश्वर हो गया तो माया इसकी दासी हो गई।

करि किरपा प्रभि मेले।।

जब ईश्वर कृपा करता है, तो पूर्ण गुरू की प्राप्ति होती है। पूर्ण गुरु स्वयमेव प्राप्त नहीं होता।

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ।।

(मारू अंजुली मः ५ पृष्ठ १००७)

जीव का संयोग-वियोग ऊपर से ही लिखा होता है। परमेश्वर ने कृपा करके गुरू से मिला दिया। फिर

हउ ना मूआ मेरी मुई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइया।।
मरता जाता नदरि न आइआ।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ १५२)

जो व्यापक है, मैंने उसको देख लिया। मेरी सारी अविद्या समाप्त हो गई। जब यह जाग्रत ज्योति (चेतन, ईश्वर) का उपासक हो गया तो इसका जन्म-मरण कट गया। यह सब प्रभु की कृपा से हुआ। मुझे एक बार दो सूफियों की बात बहुत पसंद आई। मैं एकेला बैठा पढ़ रहा था। दो मुसलमान आये। बैठ गये। कहने लगे सुनाओ। मैंने पढ़ा—

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा।।
तोही संगि समाई।।

(धनासरी मः ९ पृष्ठ ६८४)

उन्होंने कहा कि ठीक है। 'खुद सनासी, खुदा सनासी' अर्थात् जो स्वयं को जानता है वह परमेश्वर को जानता है।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रित होई।।

(आसा म. १ पृष्ठ ४२१)

जब यह अपनी आत्मा को पहचान लेगा तो यह ही परमात्मा होगा। आत्मा

परमात्मा दो तो हैं नहीं। जिस दिन यह अपने आपको जान लेगा उस दिन यह सुखी हो जायेगा कोई दुःख नहीं रहेगा।

हरि गुण गावहु सदा सुभाई।।

हे श्रेष्ठ पुरुषो ! हरि के गुण गाओ क्योंकि नाम और नामी (परमेश्वर) के मिलने का और कोई उपाय नहीं है। अतः इसलिये हरि के गुण गावो।

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु।।
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २८६)

यह सब छूट जायेगा। तुम स्वयं अपने मन के द्रष्टा हो जाओगे। इसलिये हरि के गुण गाया करो, तुम्हारा उद्धार हो जायेगा।

मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई।। रहाउ।।

जो भी आपका शुभ संकल्प होगा, पूरा हो जायेगा

कीता पसाउ एको कवाउ।।
तिस ते होइ लख दरीआउ।।

(जपुजी पृष्ठ ३)

सब धर्मों का एक ही मत है—एक ! जिसके एक संकल्प मात्र से सृष्टि का निर्माण होता है। गुरु साहिब ने लिखा है—

हरन भरन जा का नेत्र फोरु।।
तिस का मंत्र न जानै होरु।।

(गउड़ी सुख पृष्ठ २८४)

जिसके नेत्र उन्मेलन मात्र से सृष्टि बन जाये और बंद करने से नाश हो जाये। जिसका मन ऐसे प्रभु के साथ एकाकार हो जाता है फिर उसका जन्म मरण नहीं होगा। पर अपने आप को पहचान लो।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।

(आसा मः १ पृष्ठ ४२१)

जिसने उस प्रभु को पहचान लिया, वह प्रभु ही हो गया। पर कोई शंका न रहे। कृत्रिम न हो। भेद-बुद्धि न हो कभी।

जीअ कै संगि सहाई।।रहाउ।।

तुम्हारे जीव का सहायक जब सदा तुम्हारे साथ है तो उसका स्मरण कर भाई !

सिमरि सिमरि नाम बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (गउड़ी सुख० २६५)

'सिमरण' ने ही जीव का उद्धार करना है। सिमरण कभी न छोड़ो।

एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है।।
बाहुड़ि जनमि न आवा।। (बिलावल मः १ पृष्ठ ७६५)

एक महात्मा ने हमसे पूछा कि श्वास-श्वास नाम स्मरण कैसे चल सकता है। हमने कहा—अपना गुरु मंत्र बता। तो उसने लिख दिया। हमने कहा—रस्सी जितना तेरा मंत्र है—तुम्हारा ध्यान इसमें किस प्रकार लगेगा ? सतिनाम वाहिगुरु का, राम का, अल्लाह का नाम श्वास-श्वास चल सकता है। एक बार एक शब्द को श्वास के साथ भीतर लेकर जाये और दूसरी बार बाहर लेकर आये। वाहिगुरु अकेला ही लग सकता है। किन्तु साथ यह भी है

लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।।
साचि नामि मेरा मनु लागा।। (राग आसा मः ५ पृष्ठ ३८४)

यह सब हमारा 'ठाठा बागा' है। यह समस्त कर्म हमारे साथ जाते हैं। अतः 'ठाठे बागे' ने बिल्कुल नहीं जाना। पाँचवें पातशाह कहते हैं कि इस लिये तुम नाम को कभी न भूलो। अतः संसार के साथ 'ठाठा बागा' रखो। 'चूहड़ काणे' के एक संत होते थे, वे बड़े विवेकशील थे। उनके पास एक गोविन्द नाम का व्यक्ति आया। कहने लगा कि आप से एक बात पूछनी है। महात्माजी ने कहा—कि अब तो हमने कहीं कथा करने जाना है। वचन दिया हुआ है। गोविन्द नंद ने प्रार्थना की। तब संत कहने लगे, भगवान् को भुलाकर कभी कोई कार्य न करना। जा अब चला जा। उसके भीतर बात बैठ गई, और चला गया। इसलिये भाई ! जब परमात्मा को सर्वव्यापक जानकर कार्य करेंगे, जीवन में विचार करेंगे, तो माया का प्रभाव हमें नहीं सतायेगा। जिस करके इसका मनोवाद चला जायेगा। इसका मन नाम के साथ लग जायेगा।

नाराइण प्राण अधारा।।

(नाराइण) शब्द के ग्यारह अर्थ किये गये हैं—

१. सब का कर्त्ता-धर्त्ता परमेश्वर
२. सबका दाता परमेश्वर
३. मनुष्य मात्र का आश्रय परमेश्वर
४. उत्पत्ति, परिपालन और लय कर्त्ता आदि इस प्रकार ग्यारह अर्थ किये गये हैं।

आप जानते होंगे—

अजामलु पापी जगु जाने।।
निमख माहि निसतारा।।

(सोरठि मः ९ पृष्ठ ६३२)

महात्मा जी ने उसको कहा कि तू नाम को न भूलना। तेरे एक पुत्र होगा। उसका नाम नारायण रखना। उसने महात्मा जी का वचन सुना और अंत समय उसके मुख से नारायण ही निकल रहा था। इस प्रकार उसके सभी पाप कट गये। इसलिये भाई ! नारायण का नाम समस्त पापों को काटने वाला है। जब कोई महात्मा लंगर के लिये जाते हैं तो नारायण कहते हैं, रोटी नहीं कहते।

बहुड़ि न जोनी पाईऐ।।

सारे जन्म समाप्त हो गये। जन्मों का कोई काम ही नहीं रहा। वे संस्कार ही नहीं रहे। अब तो भाई ! जन्म-मरण से रहित नारायण हो गये।

जिसु देवै पुरखु बिधाता।।

परमेश्वर ने कृपा करके गुरू राम दास जी हमें मिला दिये–

गुरु परमेसरु एको जाणु।।
जो तिसु भावै सो परवाणु।।

(गौंड मः ५ पृष्ठ ८६४)

अब परमेश्वर और गुरू रामदास जी एक हैं। ब्रह्मज्ञानी परमेश्वर होता है।

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु।।
ब्रहम गिआनी सब सिसटि का करता।।
ब्रहम गिआनी सद जीवै नहीं मरता।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २७३)

उसका जन्म-मरण नहीं होता फिर–

हरि रसु तिन ही जाता।।

हरि रस को उसने जान लिया है।

इह रस छाडे उह रसु आवा।।
उह रसु पीआ इह रसु नही भावै।।

(बावन आखरी कबीर ३४२)

हरि का रस प्राप्त हो गया, आनंद प्राप्त हो गया।

जमकंकरु नेड़ि न आइआ।।

यम के जो दास हैं, वे समीप नहीं आते। यम के साथ हमारा कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा।

दूरि रही उह जन ते बाट।।

(आसा म. ५ पृष्ठ ३९३)

यह अलग रास्ता है जहां यमों का कोई काम नहीं है।

सुखु नानक सरणी पाइआ।।

उन्होंने हमें गुरु को मिला दिया। हमें आत्म सुख प्राप्त हो गया लेकिन शरण पड़ने के कारण हुआ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

(गीता-अध्याय १८, ६६)

तुम उस पारब्रह्म की शरण में पड़ गये तो तुम्हें सुखों का खज़ाना मिल जायेगा। और किसी की शरण में न जाना। जिन लोगों को भ्रम है कि कृष्ण ने यह कहा, यह नहीं कहा। उसने अपने व्यक्ति पक्ष की बात नहीं की। व्यक्ति का तो सातवें अध्याय में स्वयं खण्डन किया है। हे अर्जुन ! सब में क्षेत्रज्ञ तो परमेश्वर ही है, हे अर्जुन वह सबके हृदयों में विराजमान है।

घट घट मै हरि जू बसै।।
संतन कहिओ पुकारि।।

(सलोक म० ९ पृ १४२७)

वह सबके हृदयों में १ ओंकार बैठा है। अब हम पर कृपा हो गई। हमें आराम सुख की प्राप्ति हो गई।

बोलो—सतिनाम श्री वाहिगुरु।

सतिनाम श्री वाहिगुरु।

४

धनासरी महला ५

बड्डे-वड्डे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी।।
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी।।
बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई।
जिउ पावकु ईधनि नहीं ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई।। रहाउ।।
दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन तां की मिटै ना भूखा।।
उद्मु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा।।
कामवंत कामी बहु नारी पर ग्रिह जोह न चूकै।।
दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै।।
हरि हरि नामु अपार अमोला अंम्रितु एकु निधाना।।
सूखु सहिजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना।।

(पृष्ठ ६७२)

सारी संगत, कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनामु श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु—

धरनि गगन नव खण्ड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि।

(सवैयें पृष्ठ १४०९)

यह आदेश (इलहाम) गुरु अर्जुन देव द्वारा उच्चारण किया हुआ है। इस करके मथुरा भट्ट ने गुरू अर्जुन देव जी की सवैयों में स्तुति की है। यह भट्ट शाप ग्रस्त थे। कहीं भी इन पर दया दृष्टि नहीं हुई। इसलिये गुरु अर्जुन देव जी की शरण में आये—

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै।।
इहु बिरदु तुआमी संदा।।

(बिलावल मः ५ पृष्ठ ५४४)

जो परमेश्वर की शरण आ जाये, उसको परमेश्वर क्षमा कर देता है। शरण आता ही तब है जब इसकी संसार में नहीं चलती। यह समझ लेता है कि इसमें सार कुछ नहीं है। समस्त संसार असार है। सार तो एक नाम है परमेश्वर का। वह पूर्ण गुरू ब्रह्मज्ञानी द्वारा प्राप्त होता है। परमेश्वर की कृपा से गुरू प्राप्त होता है। इसलिये जब वे शरण में आये, गुरू साहिब ने कृपा करके उनको श्राप मुक्त कर दिया और ज्ञान का वरदान भी दिया। उन्होंने फिर 'भटां दे सवैये' की रचना की। इन सवैयों को लोग 'भट्टां दे सवैये' कहते हैं। वे थोड़े से पढ़ने में भी कठिन हैं क्योंकि भट्ट वाणी, डूम वाणी है। यह प्रत्येक व्यक्ति को पढ़नी नहीं आती। इसलिये जब भट्ट गुरू साहिब के पास गये, गुरू जी ने कृपा की तो मथुरा भट्ट ने यह वाणी उच्चारण की—

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि।।

(सवैये पृष्ठ १४०६)

वह ज्योति सब में परिपूर्ण है।

तम महि जोति जोति है सोइ।।
तिस दै चानणि तम महि चानणु होइ।।
गुर साखी जोति परगटु होइ।।

(राग धः मः १ पृष्ठ १३)

ज्योति कहीं बाहर नहीं है। ज्योति इसके हृदय में है। 'एक' जो गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है, किसी ग्रन्थ में 'एक' नहीं लिखा गया। 'एक' गुरु ग्रन्थ साहिब के आदि में ही लिखा हुआ है।

एकम एकंकारु निराला।।
अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

(बिलावल मः १ पृष्ठ ८३८)

ऐसे विशेषण वाला एक परमेश्वर है और कोई नहीं। वे कहते हैं जी है। कभी

फिर बतायेंगे। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हमने सब के हृदयों में उसे देखा है। वह सबकी बुद्धि में साक्षी बैठा है। वह पारख है।

नानक पारखु आपि जिनि
खोटा खरा पछाणिया।।

(म: १ पृष्ठ १४४)

प्रत्येक के अंदर वह पारख बनकर बैठा है। सब बुरे और श्रेष्ठ कर्मों को देखता और टंकित करता है। जब तक इसके हृदय में अहंकार है तब तक इसको उस 'एक' का ज्ञान नहीं हो सकता।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।।

(पृष्ठ ४६६)

अहंकार सबसे बड़ा रोग है। दूसरा रोग है तृष्णा—

एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।।

(पृष्ठ ६७६)

तृष्णा के कारण व्यक्ति सारी आयु धन के पीछे दौड़ता है पर उसकी तृष्णा समाप्त नहीं होती। यह तृष्णा एक अग्नि है।

दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री।।

(राग आसा म: ५ पृष्ठ ३८४)

इस तृष्णा ने विश्व के अन्तःकरण को झुलसा कर रख दिया है। कबीर, नामदेव, धन्ना, जयदेव आदि जितने भक्त हैं, वे इससे बचे हैं जो हरे पौधे हैं। इसकी औषधि है—नाम। अहंकार की औषधि भी नाम है। पर नाम कब प्राप्त होगा ? जब इसका हृदय शुद्ध हो जायेगा। हृदय शुद्ध सत्य के साथ होगा।

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।।
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।।

('आसा दी वार' पृष्ठ ४६८)

सत्य ऐसी ही वस्तु है जो किसी झूठ को, बेईमानी को, भीतर रहने नहीं देता। किसी ने किसी से सौ रुपये लिये। देने वाला तो एक सौ बीस रु० दे गया। उससे भूल हो गई। दूसरे व्यक्ति ने रु० गिने तो एक सौ बीस रुपये थे। मन बेईमान हो गया। जब उस व्यक्ति ने दोबारा आकर पूछा कि मैं बीस रु० अधिक दे गया हूँ—तो वह मुकर गया। उसके हृदय में मुकरने की आवाज आई, क्योंकि इसके अंदर एक गोपनीय सत्य है, चेतन है, आत्मा है, जो इसको सत्य की ओर ले जाता

है। उस सत्य के साथ जब तक इसकी बुद्धि नहीं जुड़ेगी, इसका हृदय शुद्ध नहीं होगा।

कुछ कहते हैं कि झूठ के बिना संसार में काम नहीं चलता। तुलसीदास ने लिखा है—'सत्य से बढ़कर कोई पुण्य नहीं' और—

नहिं असत्य सम पातक पुंजा

(गोस्वामी तुलसीदास)

तुलसीदास जी कहते हैं झूठ से बड़ा पाप संसार में नहीं है। इस करके भाई ! जब तक यह रहस्य सत्य नहीं मिलता, जब तक यह परमेश्वर का भय नहीं करता, तब तक इसका अंहकार निवृत्त नहीं होता। अहंकार निवृत्ति के बिना इसका पाप-पुण्य नहीं हटता। न इसका जन्म-मरण मिटता है। यह जिधर जायेगा, कर्मों के अनुसार ही जायेगा, इस सम्बन्ध में गुरू साहिबान ने लिखा है—

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ।

(मः १ पृष्ठ ५७)

गुरु जी का कथन है कि सारा संसार इच्छायें तो करता है, लेकिन कर्मों पर ही निर्णय होगा। सो एक दिन पुण्यवाले ने भी आना है और पाप वाले ने भी। इसलिये इसको सब से पहले परमेश्वर का दास बनना चाहिये। इसको प्रार्थना करनी चाहिये। विगत भूलों की क्षमा याचना करनी चाहिये। भविष्य में परमेश्वर का नाम जपना चाहिये।

वड्डे वड्डे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन ना बूझी।।

जितने भी देशों के बड़े-बड़े स्वामी हुए हैं, जो भी बड़े-बड़े भूमि के मालिक हुए हैं, देशों के राजे रावण आदि जो भी बड़े हुए हैं, जिसने सारी लंका सोने की बनाई। आप जानते ही हो। रावण का जो वेदों का टीका है। वह पंडित राम सिंह पढ़ता होता था और कहता था बड़ा ही गहन लिखा हुआ है। लेकिन उसके कर्म देखो—किस तरह के थे। इसलिये जो बड़े-बड़े लोग हुए हैं—संसार में भूमि के मालिक हुए हैं। तुम्हें उसका भी पता होगा। तुमने इतिहास में पढ़ा होगा। शिव ने जब लंका बनाई तो रावण को बुलाया और कहा—तुम प्रतिष्ठा कर दो। जब उसने प्रतिष्ठा कर दी तो शिव ने कहा—बोल क्या मांगता है ? उसने कहा लंका मुझे दे दो। वह देकर चला गया। वह बड़ा उदार था। बड़ा त्यागी था। देखो उसी मांग का क्या हुआ ? उसका समस्त कुल नष्ट हो गया। क्योंकि उसने शिव को पहले ही अपने लालच में वचनबद्ध कर लिया था कि जो मैं माँगूगा वह मुझे दोगे। इसलिये भाई ! पंचम पातशाह उपदेश करते हैं—

वड्डे वड्डे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन ना बूझी।।

जितने भी बड़े लोग हैं, उनकी तृष्णा नहीं बुझती। जिसके पास भी पाँच सौ विग्घा जमीन है वह कहता है छः सौ हो जाये तो ठीक है।

सहस खटे लख कउ उठि धावै।।
त्रिपति न आवै माइआ पाछे पावै।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २७६)

यह तो सारे माया के पीछे दौड़े जाते हैं। इनको पीछे तो दीखता कुछ नहीं। ये तो माया के पीछे दौड़ते हैं। भाई ! उसके पास इतनी माया है, हम भी यूँ कर लें। यदि नहीं है, तो किसी की चुरा लें लेकिन करो जरूर। सो ऐसे आदमी जिन्हें हम देखते हैं उनकी तृष्णा कभी भी नहीं बुझ सकती।

लपटि रहे माइआ रंग माते.....

गुरू साहिब ने लिखा है कि

दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री।।

(राग आः मः ५ पृष्ठ ३८४)

फिर आगे क्या हुआ ?

लपटि रहे माइया रंग माते लोचन कछू न सूझी।।

माया में निमग्न, माया से चिपटे पड़े हैं। विवेक तो है नहीं, इसका तीसरा चक्षु जो खुलना था--वह तो विवेक का चक्षु है। मन बुद्धि ने तो विवेक के साथ शुद्ध होना था। जब इसने द्रष्टा को जान लेना था।

त्रिशटिमान है सगल मिथेना।।

(माः मः ५ पृष्ठ १०८३)

भाई ! वह सब झूठ है, इस झूठ के साथ लिपायमान होना अच्छा नहीं। किन्तु द्रष्टा तो झूठ नहीं है।

मूई सुरति बादु अहंकारु।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।।
रतन पदारथ घट ही माही।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै।।
भीतरि होदी वसतु ना जाणै।।

(गउड़ी मः १ पृष्ठ ५२)

जब गुरू साहिब ने कहा तू इस शोक को त्याग दे—तो वह कहता कि तुम नहीं मरोगे ? तब गुरू सहिब ने कहा—

हउ न मूआ मेरी मूई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइया।।
मरता जाता नदरि न आइआ।।

(गउड़ी म: १ पृष्ठ ५२)

ब्रह्मज्ञानी का जन्म-मरण नहीं होता। यह एक नियम की बात है। तत्त्व में तत्त्व मिल जाता है। ज्योति में ज्योति तो पहले ही मिली होती है। इसलिये गुरू साहिब पहली पातशाही कहते हैं कि जन्म-मरण तो अज्ञानपन में है, और हमारी यह अज्ञानता की बला टल गई है। हम जन्म-मरण वाले नहीं हैं। हे पंडित ! तू भी विवेक को उत्पन्न करके अपना कुछ संवार ले। तुम्हारे विवेक-चक्षु तो खुले ही नहीं। तुझे यह तो पता नहीं लगा कि सत्य क्या है ? इसको ज्ञान हीं नही हुआ। इसलिये इसकी आँख ही नहीं खुली। गुरू साहिब कहते हैं कि भाई ! तू अभिमान में ही रह गया। जमीन और घर के मालिक, और पता नहीं कितना अभिमान है। उसमें इसका मन फंसा पड़ा है।

बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई।।

आज तक तुम बताओ कि विषयों में किसी की मोक्ष हुई है ? संसार में पाँच विषय हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

पाँच विकार हैं और तो कुछ है नहीं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार। इनमें यह मन घूमता रहता है।

सरवर पंखी हेकड़ो फाही वाल पचास।

(शेख फरीद पृष्ठ १३८४)

फरीद साहिब का कथन है कि जीव एक है। फाँस इसको पचास डालने वाले हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अथवा अभिमान जिनके जालपाश में जीव फँसा रहता है। यह जीव तब तरेगा, जब इस पर ईश्वर की कृपा होगी और शरणागत हो जायेगा।

जिउ पावकु ईधनि नहीं ध्रापै.....

आप अग्नि में चाहे जितना ईंधन डाल दो वह कभी बुझेगी नहीं। धीरे-धीरे सारा ईंधन जला देगी, राख बना देगी। कहने का भाव यह है कि विषयों में

कभी भी किसी को मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ। किसी का मन तृप्त नहीं हुआ। आगे-आगे वासना उत्पन्न होती रहती है।

विनु हरि कहा अघाई ।। रहाउ।।

मुझे बताओ परमेश्वर की कृपा के बिना, कौन तृप्त हुआ है ? जिस पर परमेश्वर की कृपा हो गई वह तृप्त हो गया। आप यह जानते होंगे मालवे में एक 'फफड़ा' गाँव है। भाई 'बहिलो' वहाँ का रहने वाला था। वह गाँव का मुखिया था। वह बड़ा पुराना गुरु का शिष्य था। जब अमृतसर आरम्भ किया तो वहां एक ही बात चली। गुरू साहिब के पास सब ने विनती की, तब गुरू साहिब कहते हैं कि भाई ! 'बहिलो' 'फफड़ी' बैठा है। वह गाँव का मुखिया है। मुसलमानों ने उसको लम्बरदारी दी है। लोहे की छड़ी रखता है। सुलतान के फकीरों को मानता है। उसको लाओ। शिष्य कहने लगे कि गुरूजी ! उसको किस तरह लायें। पातशाह ने हुक्म दिया कि छे शिष्य जाओ। दो व्यक्ति पकड़ना और चार व्यक्ति उसको धक्के देना। तुम्हें गाँव वाले कहेंगे कि जोर-जबरदस्ती क्यों करते हो। तुम कह देना कि वह हमारा पुराना गुरु का शिष्य है। हम गुरु के आदेश से आये हैं। जब वे आये 'बहिलो' न माना। उसने कहा मेरे साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध ही नहीं है। मैं तो सुलतान का शिष्य हूँ। गुरू को मैं नहीं मानता। यह वह माया के प्रभाव में कह रहा था। माया का मोह जीव की बुद्धि का नाश कर देता है। एक बार मैंने कीर्त्तन में भी सुना था।

तेरी मत विषिआं ने मारी ,भुल गया तूं नाम जपणा।

वह यह पंक्ति बहुत ऊँची बोलता था। वह कहता कि तुम्हारी तो विषयों ने बुद्धि नाश कर दी है। तू दौड़ता फिरता है, तू नाम क्या जपेगा ? इस करके भाई ! जब वह न माना तो—उन्होंने उसको जकड़ लिया। सतलुज नदी पर आकर नाव में बैठ गये, तो वह कहने लगा, मुझे छोड़ दो। वे कहने लगे फिर दौड़ेगा तो नहीं ? 'बहिलो' कहने लगा—नहीं जी। अब मैं दौड़ने योग्य नहीं रहा।

गुरि पूरै धरनी लाइआ।।
हरि संगि सहाई पाइआ।।

(सोरठि मः ५ पृष्ठ ६२३)

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु,
सतिनामु श्री वाहिगुरु।।

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

टोडी महला ५

रसना गुण गोपाल निधि गाइण।।
सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण।।१।। रहाउ।।
जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण।।
जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण।।१।।
खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।।२।

(पृष्ठ ७१३)

सारी संगत, कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

आप सबने ईश्वरीय वाणी, आदि वाणी का महा कथन जिसका श्री गुरु अर्जुन देव जी को इलहाम हुआ–सुना। इस वाणी को इलहाम कहते हैं। इलहाम में कभी कोई अन्तर नहीं आता। किसी व्यक्ति का हृदय दुःखी नहीं होता, इलहाम में कभी भी कोई अन्तर नहीं होता, यह परमेश्वर की वाणी है। ब्राह्मण के लिखे अथवा किसी शेख के लिखे में अन्तर आ जायेगा अथवा आ सकता है। जिधर उनका झुकाव होगा उधर झुक जायेंगे। लेकिन ईश्वरीय वाणी में कभी किसी को दुःख नहीं लगेगा। उसको एक वस्तु प्राप्त हो जायेगी कि अवगुण मेरे में हैं–यह मुझे दूर करने चाहियें। लेकिन यह तब होगा जब आप वाणी के अनुसार चलोगे। यह वाणी का जहां से उद्गम हुआ है, जीव को वहीं ले जायेगी। यह आदि वाणी है। जिसका इस के साथ तादात्मय हो जायेगा वह शिखर पर पहुँच जायेगा। यह 'आदि वाणी' गुरु अर्जुन देव जी के श्रीमुख से निसृत हुई है।

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

वह 'ज्योति स्वरूप' गुरु नानक कहलाया। क्यों कहलाया ? आपको इस बात का पता है कि अवतार हमेशा आते हैं, कारक हमेशा आते हैं। यह समस्त ग्रन्थों का, समस्त मतों का अंतिम, अटल और वास्तविक जो कथन है, कथन किया हुआ है। आप यह देखें—

धरनि गगन नव खण्ड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि।।

(सवैये पृष्ठ १४०६)

जिसके साथ यह बात हुई, उसने अपने मुख से यह बात कही। यह भट्ट शराप ग्रसत हैं, लम्बा-चौड़ा इनका इतिहास है। जब इन्होंने परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थना की कि हमसे यह गलती हुई है। अब हमें यह बतायें कि क्या हमें क्षमा भी किया जायेगा ? उन्होंने कहा जब पाँचवें नानक आयेंगे—गुरु अर्जुन देव जी तो वे तुम्हें क्षमा करेंगे। तब तुम्हारा उद्धार होगा। जब यह भट्ट शाप मुक्त हुये तो उनको आन्तरिक ज्ञान प्रकट हो गया। तब उन्होंने सवैयों का उच्चारण किया।

ज्ञान एक ही होता है, दो-चार ज्ञान तो कभी होते नहीं। यह नियम है कि प्रभु एक हैं और ज्ञान भी एक है। ज्ञान को परमेश्वर कहते हैं और परमेश्वर को ज्ञान कहते हैं। ज्ञान एक है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भज निधि उतरहि पारि।।

(सलोक मः ६ पृष्ठ १४२७)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठति।

(गीता अध्याय १८, ६१)

जितने भी संसार के ग्रन्थ हैं, वे राज योग से चले हैं। हठ योग आपको गुरु ग्रन्थ साहिब में नहीं मिलेगा। सकाम कर्म भी गुरु ग्रन्थ साहिब में नहीं मिलेगा—या खण्डन मिलेगा। इसलिये गुरु साहिब 'राज योग' से 'सहज योग' में गये। गुरु साहिब का सिद्धान्त 'ज्योति स्वरूप' का सिद्धान्त है।

रामदासि गुरु जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी।।

जब गुरु रामदास महाराज बैकुण्ठ में गये अथवा स्वरूप में समा गये तो—

जोति अरजुन माहि धरी।।

(पृष्ठ १४०६ सवैये)

पंचम पातशाह को गद्दी मिली तो 'पृथ्वी चंद' को नहीं मिली। 'महादेव' पुत्र को भी नहीं मिली। महादेव पर गुरु अर्जन देव जी ने कृपा बाद में की।

एकु पिता एकस के हम बारिक।।
तू मेरा गुर हाई।।

(श्लोक ५ पृष्ठ ६११)

उस समय यह शब्द उच्चारण किया। इसलिये यह ईश्वरीय वाणी है, ईश्वरीय वाणी ज्ञान है, और कृपालु भी ईश्वर है, कोई अन्य नहीं।

सभ महि जोति जोति है सोइ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।
गुरसाखी जोति परगटु होइ।।

(धनासरी मः १ पृष्ठ १३)

यह ज्योति सबके हृदय में है। चार वर्गों के हृदय में है। वह कौन सी ज्योति है ? भाई साहिब लिखते हैं—

एका एकंकार लिख दिखालिआ।।
ऊड़ा ओअंकार पास बहालिया।।

(भाई गुरदास जी)

संसार के जब आप ग्रन्थ पढ़ोगे, तो 'एक' पहले नहीं आयेगा। "ऊँ सत् सत्' आयेगा। कहीं मियां, कहीं अल्लाह, या कुछ और आयेगा। उन्होंने 'नाम' का मंगल किया है। गुरु साहिब ने कृपा करके पहले 'नामी' (परमेश्वर) लिखा, और साथ में नाम लिखा। उस 'एक' को पहले लिखा—

एकम एकंकारु निराला।।
अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिया।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिया।।

(बिलावल मः १ पृष्ठ ८३८)

वे कहते, वह एक क्या है ? उसका अर्थ क्या है ? जो कि गुरु नानक देव जी ने स्वयं 'ऊपर' बिलावल राग में कथन किया है।

वह 'एक' किसी पद का वाचक नहीं है। जब यह देख लेगा तब इसको उस 'एक' का पता लगेगा। गुरु साहिब ने सर्वत्र उस 'एक' के दर्शन किये। सब हृदयों में, चार वर्गों में उस 'एक' के दर्शन किये। भाई कन्हैया पर जब कृपा हुई तो उसको यह साक्षात्कार कराया—गुरु दशम पातशाह ने। जब उसने गुरु साहिब जी के हुक्म के साथ भिश्ती की 'मशक' ली तो उसने हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों को सबको पानी पिलाया। उसने किसी की बात नहीं की, किसी की निंदा नहीं की, किसी की स्तुति नहीं की। सिक्खों को दिखा दिया कि यह कृपा हुई है। इसलिये यह 'एक' वही है जो सब में परिपूर्ण एवं व्यापक है। कबीर जी को जब सब ब्राह्मणों ने मिलकर बड़ा तंग किया कि यह शूद्र है, नाम पर इसका कोई अधिकार नहीं, कथा वार्त्ता सुनने का भी कोई अधिकार नहीं, तो गुरु साहिब ने स्पष्ट बात कह दी।

खत्री ब्राह्मण सूद वैस
उपदेसु चहु वरना कउ साझा।।

(सूही मः ५ पृष्ठ ७४८)

ज्ञान, हम सब का सांझा है। सब के हृदयों में हरि का निवास है। पंडितों ने कबीर जो को कहा कि 'तुम 'ऊँ' नहीं जप सकते। अभी तक भी इसी प्रकार कहते हैं कि नारियों को 'ऊँ ' का उपदेश न दो। लेकिन गुरु साहिब ने तो '१ ओंकार' लिख दिया, और सारी बाधाओं को दूर कर दिया। कबीर ने पंडितों के बारे में कहा कि मैं उस 'ऊँ' को नहीं मानता जिसको लिख कर मिटा देते हो।

ओअंकार आदि मै जाना।।
लिखि अरु मेटै ताहि न माना।।
ओअंकार लखै जउ कोई।।
सोई लखि मेटणा न होई।।

(गउड़ी बावन अखरी जीउ पृष्ठ ३४०)

मैं 'ऊँ' उस को मानता हूँ जो सबका पालन करने वाला है। मेरा 'ऊँ' वह है जिसको तुम लिखते और मिटाते हो—उसको मैं नहीं मानता। यदि 'ऊँ' के लक्ष्य को कोई जान लेगा फिर वह लक्ष्य मिटने वाला नहीं है। वह अस्तित्व है जो व्यापक है। परमेश्वर सत्य है। वह सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला है।

सति सत्पु रिदै जिनि मानिआ।।
करन करावन तिनि मूलु पछानिया।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २८५)

जो सत्य है, उसको वह अपने हृदय में ही जान लेगा। किस प्रकार जान लेगा ? जब आप सोने का आभूषण उठाओगे तो आपकी आँखें सोने को देखेंगी—दिखेगा भी सोना, कड़ा (आभूषण विशेष) तो कल्पना मात्र है। मिट्टी में घड़ा भी कल्पना मात्र है। इस लिये बढ़ई ने, लुहार ने, स्वर्णकार ने, कल्पना को अलग किया है। वह कल्पना जहां अलग की है तो वह कल्पित पदार्थ होता है, वह सच नहीं होता। मूल तो सत्य है। लेकिन जब भी आप कड़ा, कुण्डल, कुछ भी देखोगे तो होगा सोना। बिकेगा भी सोने के भाव। इसलिये यह वस्तुएं कल्पित हैं। अध्यस्त हैं। झूठी हैं और सत्य जो है वह व्यापक है।

मूई सुरति बादु अहंकार।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गउड़ी मः १ पृष्ठ १५२)

वह मरने वाली वस्तु नहीं, जो आपके अंदर है—

दाना बीना साई मैडा।।

(सलोक मः ५ पृष्ठ ५२०)

दाना नाम है जानने वाले का, बीना नाम है देखने वाले का। आप अपने विचार को स्वयं देखते हो, मन को देखते हो। मन का लक्षण है—संकल्प और विकल्प। संकल्प करना फिर विकल्प करना यही है मन। मन तो जड़ है और मन का द्रष्टा चेतन है, ज्ञान है, आनंद है। इसलिये वह जो परमेश्वर, परिपूर्ण है सारे, जिसने भी उसको सत्य जान लिया, उसके लिये दृश्यमान मिथ्या हो जायेगा।

दिसटिमान है सगल मिथेना।।

(मारू मः ५ पृष्ठ १०८३)

जो देखने में आता है, वह सब मिथ्या, नाशवान् है, परिवर्तनशील है। आप पहले अपने अंदर देख लो। आठ पहरों में कितने विचार बदलते हैं और विचारों को देखने वाला क्या कभी इधर-उधर हुआ है ? वह ज्यों का त्यों है। तभी तो बताते हैं कि कल मेरा यह विचार था और आज यह है। द्रष्टा तो देखने वाला भी है, और जानने वाला भी है। वह सत्य स्वरूप है। जब आपने निश्चय कर लिया, आप की बुद्धि में यह बात ठीक तरह से बैठ गई तो फिर तुम सत्य स्वरूप से भिन्न नहीं हो सकते। ज्ञान भी एक है, सत्य भी एक है और आनंद भी एक है।

आनंदु आनंदु सभु को कहै।।
आनंदु गुरू ते जाणिआ।।

(रामकली मः ३ पृष्ठ ९१७)

और व्यापक भी एक है। ये चार विशेषण हैं लेकिन वस्तु तो एक है। वह परमेश्वर है। आपके भीतर है। तुम आप देखते और जानते हो। यदि अन्दर दाना बीना (जानने देखने वाला) न हो तो विचार को कौन देखे, और कौन यह जाने कि अंदर जो आत्मा है उसको ही परमात्मा कहते हैं।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई।।

(आसा मः १ पृष्ठ ४२१)

आत्मा को पहचान कर परमात्मा ही हो जाओगे। गुरु और शास्त्र आपको दाना, बीना (देखने और जानने वाला) तक पहुँचा देंगे। लेकिन व्यापक तो तुम अभ्यास के साथ होंगे। पहले जो कुछ वह कहेगा तुम वही कुछ कहोगे। जाप तो तुम करते हो, लेकिन तुम्हारा मन कहीं और गया होता है। नाम के साथ तुम्हारा मन मिला नहीं। पहले मन नाम के साथ मिलेगा तब निरंतर जाप चलेगा। जाप

के बाद 'सिमरण' आयेगा।

सिमरि सिमरि नामु बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(गउड़ी सुखः मः ५ पृष्ठ २६५)

वह 'सिमरन' आपका उद्धार कर देगा।

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।

वह 'सिमरण' जब आपका पूरा हो जायेगा तब आगे एक रस चल जायेगा। उसको अनाहद कहते हैं। अनाहद शब्द या अनाहद वाणी भी कहते हैं।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ।।
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ।।

(गउड़ी सुख मः ५ पृष्ठ २६३)

वह तुम्हारी मैल तो 'सिमरण' ने काट देनी है। फिर अमर करने वाला नामी परमेश्वर तुम्हारे अंदर बस जायेगा।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २८४)

वह जो हमारे खण्डों ब्राह्मणडों का स्वामी है, सब का आश्रय है, वह नामी (परमेश्वर) आपके भीतर है। इसमें कोई शंका नहीं। जब तुम्हारा सिमरण सही हो जायेगा तब आपका अहंकार टूट जायेगा। एक रस सिमरन चल पड़ने पर उसके बाद आयेगी 'धुन'। यह आप 'लावां' में पढ़ते हो। उसके बाद ध्यान लग जायेगा। यह है मार्ग प्रभु को मिलने का। दूसरा मार्ग है 'धातु' (माया मोह का) का।

लिव धातु दुइ राह है
हुकमी कार कमाइ।।

(वार सिरी राग पृ० ८७)

यदि आप संसार के पदार्थों में मोह डाल लोगे तो आपको उनके साथ ही जाना पड़ेगा।

वासना बधा आवै जाइ।।

(भाई गुरदास जी)

भाई साहिब कहते हैं कि—जब तक तू वासना से बँधा हुआ है—तब तक तेरा जन्म-मरण अवश्य होगा। तू स्वयं देख कि मेरे अंदर क्या वासना है। मेरे अंदर एक रस नाम चल पड़ा है कि नहीं ? जिसका ध्यान लग गया, उसको अविनाशी पद की प्राप्ति हो जायेगी।

यदि नाशवान् पदार्थों के साथ मोह करेगा तो मोह की दलदल में से निकल नहीं सकेगा। फिर आप यह न समझना कि आपकी मोक्ष हो जायेगी। यह सब कुछ आपने स्वयं देखना है—दूसरे किसी से नहीं पूछनी। इसलिये अब गुरु के शब्द का व्याख्यान करते हैं, जैसा प्रभु करवायेगा।

टोडी महला ५

टोड़ी राग में पंचम पातशाह की जो वाणी आई-वह कथन करते हैं—

रसना गुण गोपाल निधि गाइण।।

रसना से आरम्भ की कि भाई ! जीह्वा के साथ गोविन्द के गुण गाया करो। यदि कहो कि दो कार्य एक साथ नहीं हो सकते तो नाम देव जी की इस बात पर विचारो—

हाथ पाउ करि कामु सभु
चीतु निरंजन नालि।।

(सलोक कबीर पृष्ठ १३७६)

'निरंजन' के साथ चित्त को लगा कर रखना है और हाथों-पैरों से काम करना है। गुरु साहिब भी कथन करते हैं

साचि नामि मेरा मनु लागा।।
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।।

(आसा मः ५ पृष्ठ ३८४)

एक फकीर था उसने किसी को पूछा कि क्या कोई ऐसी जगह है जहां जीवों का उद्धार हो जाये। तब उस व्यक्ति ने कहा कि इस समय गुरु अर्जुन देव जी पांचवें गुरु नानक गद्दी पर विराजमान हैं। वे अमृतसर में सरोवर का निर्माण कर रहे हैं। वह सारा कार्य उन्होंने करवाना है। तू वहाँ पहुँच जा। जब फकीर वहां पहुँचा तब उस समय गुरुजी 'इलैची बेरी' के नीचे छड़ी लेकर खड़े थे। उनके मुख पर—शाबास-शाबास। फकीर ने सोचा कि न इन्होंने समाधि लगाई हुई है न ही बैठे हैं। ये तो दुनियां का काम करवा रहे हैं। मुझे वैसे ही दो कोस पैदल चलवा दिया। गुरू जी ने कहा—बाबे बुड्ढे को, कि उस फकीर को यहाँ ले आओ। उसको जलोदर का रोग है। सतिनाम कहकर उसको एक टोकरी मार दो, उसका जलोदर का रोग हट जायेगा। बाबे बुड्ढे ने तो हुक्म ही मानना था। उसने सतिनाम कह कर मारा तो फकीर का रोग जाता रहा। उसकी आँखें खुल गई। वह बाबे बुड्ढे के चरण स्पर्श करने लगा। उसने कहा कि वे जो छड़ी वाले खड़े हैं—वे हैं मालिक, यह शक्ति उनकी है। फिर फकीर ने गुरु जी से आकर पूछा। गुरु जी ने कहा—

साचि नाम मेरा मनु लागा।।
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।।

असंग रहती है। बुद्धि को ऐसा बनाओ। गुरु साहिब कहते—हे चरपट! पहले अपनी बुद्धि को शब्द के साथ एक करो।

नानक नामु वखाणे।।

(सि. गो०)

गुरु साहिब कहते हैं कि नाम को कभी न छोड़ना, उस नाम ने तुम्हें नामी (परमेश्वर) के पास ले जाना है। नाम और नामी तो अभेद हैं। यह दो नहीं हैं। एक हैं। इसलिये भाई! जितनी देर तक यहां विचार करो तो प्रभु के बारे ही करो। जो व्यर्थ के विचार हैं—वे अपने अलग किया करो। वैसे ही चक्की न चलाते रहा करो, व्यर्थ विचारों की।

सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ.....

कहते हैं कि वह जाप, जब तुम उसे प्राप्त हो जाओगे तो शान्ति का आगमन होगा। जब तेरे गुण पूर्ण हो जायेंगे तुम्हें शान्ति स्वयमेव आ जायेगी। सहज ज्ञान का नाम है। तू सहज के साथ ही मिल जायेगा। क्योंकि

नाबै अंदिर हउ वसां नाउ वसै मनि आइ।।

(सिरी राग मः १ पृष्ठ ५५)

यह आकाश वाणी बताते थे पढ़ाने के समय भाई। यह ईश्वरीय वाणी है। परमेश्वर कहता है कि मैं नाम के अंदर स्थित हूँ। तो मेरे मन में नाम बस जाये। यदि नाम तुम्हारे मन में न बसा, तो तुम्हें कोई शान्ति नहीं आयेगी और न ही कोई ज्ञान-प्राप्ति होनी है। मन में रहस्य पैदा होगा। रहस्य होता है वास्तविक चीज़। आप जानते हो कि सच दो प्रकार का लिखा है ग्रन्थकार ने। एक होता है—सच, 'झूठ वाला सत्य'। लेकिन इससे कार्यसिद्धि नहीं होती। यहां कोई आया वोट मांगने। उसने कहा कि वोट मुझे डालो। हां तुझे डालेंगे। डालना तो उसको है नहीं। मेरे सामने यह बात हुई—कहता कि और किसको डालना है? तुम्हारे बिना मैंने उस व्यक्ति को पूछा कि तुम सच में ही इसे वोट डालोगे? कहता—क्यों डालूँगा? मैंने कहा तो इसको हां क्यों की। कहता उसको प्रसन्न करना था। ह..... ह..... ह.....। डालना तो वहीं है जहाँ डालना है। तो यह है 'सत्य झूठ' दुनिया वाला। यह तुम्हें परमेश्वर के पास नहीं ले जायेगा। पर एक है रहस्यक सत्य। यह सत्य वह है जो वास्तविक है। उसमें कभी कोई गलती नहीं आई। यदि आपने किसी से बीस रु० लेने हों और देने वाला गलती से तीस दे गया। आपको पता लग गया लेकिन बताया नहीं। मन लोभ में आ गया। उसने दुबारा आकर पूछा—कि मैंने दस रु० फालतू दे दिये हैं, तो आप मुकर गये। पर आपके भीतर से देखना क्या आवाज़ आयेगी कि तुमने तीस लिये हैं—तुम्हारी जेब में है। फलां जगह रखे हैं। यह रहस्यक सच है। इसको आत्मिक सत्य कहते हैं। ईश्वरीय सत्य कहते हैं। इसलिये जब तक तुम उस सत्य के साथ नहीं मिलोगे तब तक तुम पूरे सत्यवान भी नहीं

हो सकते। वह तुम्हारे अंदर से आवाज़ आयेगी। इसमें पढ़े अथवा अनपढ़ की बात नहीं। बल्कि अनपढ़ सत्य बोल देगा। जब इन जट्टों, हालियों के साथ बात करते हैं तो ये सत्य अधिक बोलते हैं। पढ़े हुये तो झूठ ही बोल देते हैं। ह....ह.....। यह कोई हँसने वाली बात तो नहीं। जब तक तुम्हें वह रहस्यक सत्य नहीं मिलेगा तब तक काम नहीं बनेगा। वह सत्य है ज्ञान, आत्मा और वही है परमात्मा।

सगले दूख पलाइण।। रहाउ।।

जितने भी तुम्हारे दुःख हैं वे सब दूर हो जायेंगे क्योंकि जब तुम्हारा अहंकार 'अनाहद' में जाकर गिर जायेगा तो फिर दुःख कहां रहेंगे ? सारे दुःखों का मूल है तृष्णा। तृष्णा जन्म लेती है अहंकार से। जहां अहंकार होगा वहां तृष्णा आयेगी। तृष्णा और अहंकार के बारे में भी बहुत लिखा है—

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।।

(आसा दी वार पृष्ठ० ४६६)

इसका उपाय एक ही है—शब्द। और इसका कोई उपाय नहीं। तृष्णा के सम्बन्ध में भी लिखा है

एह तिसना वड्डा रोगु लगा।।
मरणु मनहु विसारिआ।।

(आनंद साहिब पृष्ठ० ९१९)

दावा अगनि बहुतु तिण जाले।।
कोई हरिआ बूटु रहिउ री।।

(राग आसा मः ५ पृष्ठ ३८४)

गुरु अर्जुन देव जी ने कहा है कि तृष्णा ने समस्त अन्तःकरण रूप पौधे झुलसा दिये हैं।

माइआ मनहु न वीसरै मागै दमां दम।।
सो प्रभु चिति न आवई नानक नहीं करमे।।

(सलोक मः ५ पृष्ठ १४२६)

इतना इसका कर्म ही नहीं है कि इससे तृष्णा छूट जाये। इसलिये कहते हैं कि कुछ हरे पौधे भी हैं, जैसे कबीर, धन्ना, नामदेव, रविदास, जयेदव, ये सब हरे पौधे हैं। अहंकार का एक ही अर्थ है। अनात्मा में आत्म बुद्धि जो असत्य है। उसको सत्य मान लेना। लेकिन उस आत्मा का क्या अर्थ है। जैसे एक रज्जु होती हैं रात्रि

में उसको देखें तो भ्रम हो जाता है तो पीछे को भागते हैं। जब गुरु जी ने हम सबको कह दिया।

दिसटिमान है सगल मिथेना।।

(मारू मः ५ पृष्ठ १०८३)

जितना भी दृश्यमान जगत् है वह मिथ्या है। आप देखते हो—अपनी बुद्धि बदल जाती है। विरुद्ध होती है तो काम ही नहीं करती। देखने वाला जो अन्दर द्रष्टा है।

दाना बीना साई मैडा।।

(वार गुजरी पृष्ठ ५२०)

वह कभी नहीं बदला। न वह कभी बालक हुआ न युवा। वह तो एक रस है। सारे दुःख तुम्हारे यहां जाकर निवृत्त। ज्ञान में जाकर तुम्हारा अज्ञान नष्ट होगा और ज्ञान के साथ जितने भी तुम्हारे अन्दर झूठ होंगे यह स्वयमेव चले जायेंगे। तुम्हें एक बात मैं बताता हूँ। जैसे मैंने पढ़ी है। तीन अवस्थायें हैं—जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति। चौथा तो चेतन है। उसकी तो कोई अवस्था ही नहीं होती। न कोई जाति और न कोई धर्म होता है। लेकिन आप यह बताओ—अपने भीतर ध्यान देकर जब आप जागृत अवस्था में होते हैं तो तुम आँखों से देखते, कानों से सुनते हो। सब कुछ करते हो। लेकिन आपको भ्रम हो गया कि आँखों से ही मैंने देखा। जब आप स्वप्न अवस्था में होते हैं तो पिछले संस्कारों के अनुसार स्वप्न आते हैं। तो मन के दो भाग हो जाते हैं। एक दृश्य बन जाता है और एक द्रष्टा हो जाता है। लेकिन वहां प्रकाश कौन सा है ?

भौतिक प्रकाश छः प्रकार का है। सूर्य, चन्द्रमा, बिजली, नक्षत्र, ग्रह और अग्नि। लेकिन वहां तो कोई भी नहीं है। फिर उस स्वप्न को किसके साथ देखते हो ? फिर बताते भी हो कि स्वप्न आया है। उसके आगे एक और निद्रा आयेगी जिसको सुषुप्ति कहते हैं। वहां तुम्हारे पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—मन, बुद्धि, सब विलीन हो जायेंगे। लेकिन फिर भी देखते हो और प्रातः उठकर कहते हो कि बड़े सुख से सोये। कुछ पता नहीं लगा। अब यह 'सुख स्वरूप' तो तुम्हारा अपना आप है। अभी अज्ञान खड़ा है, यदि अज्ञान न होता तो सब को सुषुप्ति में ज्ञान हो जाता। ब्रह्मज्ञानी हो जाता। बड़े सुख से सोया कुछ न जानता भया। अज्ञान का पर्दा था। लेकिन जब समाधि में जाओगे तो निर्विकल्प समाधि होगी।

विकल्प नाम है त्रिपुटी का। ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय और ध्याता, ध्यान और ध्येय। वहां एक वस्तु थी। यह आपको पक्का निश्चय हो जायेगा। वह जो तुम्हारी कमाई की हुई है—अभ्यास की। वह समस्त सफल हो गई। ज्ञान चेतन है। यदि इन्द्रियों द्वारा ज्ञान होता तो सुषुप्ति के समय तुम्हें ज्ञान होना ही नहीं चाहिये। वहां ज्ञान तो चेतन ही है। सुषुप्ति में इन्द्रियां, मन, बुद्धि लीन हो जाते हैं। वहां हमें साक्षात्

हो गया लेकिन अज्ञान का पर्दा था।

उसने हमें वहाँ पहुँचने नहीं दिया जहाँ पहुँचना था। उस समाधि पर जाकर मन स्थिर हो जायेगा।

जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है।।
उवक कुंभ बिगराना।।

(आसा० कबीर पृष्ठ ४७५)

तुम्हें भ्रम था कि एक जीव होता है और एक ईश्वर होता है। आम भ्रम है सब को। लेकिन आप यह बताओ कि जब वह घट-जल गिरा दिया तो सूर्य का प्रतिबिम्ब कहां गया ? वह बिम्ब में जाकर मिल गया। यदि सत्य होता तो बना रहता। लेकिन जब घट ढक दिया तो प्रतिबिम्ब कहां गया ? यह भ्रम था। वह आत्मा में अनात्म बुद्धि थी। इसलिये हे भाई ! जब तक आप नहीं पहुँचेंगे, रहस्यक सत्य तुम्हें प्राप्त नहीं होगा। तुम्हें शुद्ध ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। फिर आपकी आँखें खुल जायेंगी, निद्रा खुल जायेगी। फिर आप जागृत ज्योति के साथ एक हो जाओगे। जागृत ज्योति एक है। अत्तर सिंह जी एक महापुरुष हुये हैं। मैंने उनको पहले एक बार सुना था। जपो खालसा जी सारे जागृत ज्योति को। तुम जागृत ज्योति के उपासक हो, और किसी के नहीं। जागृत ज्योति की बातचीत करनी है।

जो मागहि सोई सोई पावहि.....

जो भी परमेश्वर से सच्चे दिल से मांगोगे, वह ही पावेगा। जितने संसार के भक्त हैं। नरसी ने एक ही वस्तु मांगी। उसको कहता कि तुम्हारे कोई भात भरने वाला ही नहीं। उसने कहा—ईश्वर जो है, वह भरेगा। उसी प्रकार प्रभु समय पर आये और भात भरकर चले गये। फिर लोगों ने यह माना कि नरसी परमात्मा का भक्त है।

सेवि हरि के चरण रसाइण।।

जो भी हरि के चरण हैं यह रसायन हैं। इनकी सेवा करने से तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा। जिसने भी सेवा की उसको सब कुछ मिल गया। यह पहले ही आप जानते हैं। गुरु नानक किसी समुदाय के गुरु नहीं थे। न ही संसार ने गुरु बनाया था। वे तो

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

उस ज्योति ने अपना नाम नानक कहलाया—

नानक अंगद को बपु धरा।।
धरम प्रचुर इत जगु में करा।।

(दशम् ग्रन्थ)

गुरु साहिब की बाबा लहणा ने पूर्ण श्रद्धा के साथ सेवा की। वे अंगद में आ गये।

जोति ओहा जुगति साइ।।
सहि काइआ फेरि पलटीऐ।।

(रामकली दी वार पृष्ठ ९६६)

परमेश्वर फिर दूसरे घट में प्रकट हो गया। लेकिन ज्योति वही है। वह अंत तक जायेगी।

जनम मरण दुहहू से छूटहि.....

जन्म-मरण दोनों से छूट जायेगा यदि आप भली भाँति विचारोगे तो जन्म-मरण आपका धर्म नहीं है। चेतन आज तक न जन्मा न मृत्यु को प्राप्त हुआ। पर यदि स्फटिक मणि पड़ी हो—और इसके समीप लाल फूल रख दें—तो वह लाल हो जाती है। लेकिन वह मणि का धर्म तो नहीं। वे जो आप के भीतर दुःख-सुख, जन्म-मरण, भय आदि यह सब चेतन के धर्म नहीं हैं। दुःख-सुख, जन्म-मरण ये अन्तःकरण के धर्म हैं। यह तुम्हें अपने आप प्रतीत होगा। ज्योति न कभी जन्म लेती है न मरती है।

जिमी ज़मान के बिखे।।
समतत एक जोति है।।

(दशम् पातशाह)

ज्योति एक है, व्यापक है, दो ज्योतियां कभी नहीं हुईं।

जनम मरण दुहहू महि नाही
जन परउपकारी आवे।।

(सूही मः ५ पृष्ठ ७४९)

जो पूर्ण तत्त्व वेत्ता पुरुष होते हैं—वे जन्म-मरण में नहीं आते। वे भगवान् के भेजे हुये आते हैं। कभी-कभी भगवान् स्वयं भी आते हैं। पर आप क्यों आते हैं ? उसके इतने अधिकारी भी तो हैं। उनको क्यों नहीं भेजता ? गुरु जी कहते हैं कि तुम्हें उत्तर दें—शब्द के माध्यम से या प्रत्यक्ष दिखायें। कहा—दिखाओ। राजा जो पूछ रहा था—यह एक महात्मा का शिष्य था। उसको परमेश्वर ने एक बच्चा दिया। पर उसको यह एक शंका हो गई। उसको वहां रख लिया। तालाब खुदवाया। सब कुछ हुआ। राजा सांयकाल को वहां जाकर बैठता। यह शंका राजा ही अधिक करता था। उसको दिखाने के लिये महात्मा ने एक बच्चा बनाया। राजा के समान। महात्मा बच्चे को लेकर तालाब के तट पर बैठ गये। जब राजा ने

उधर देखा तो महात्मा ने बच्चे को तालाब में फैंक दिया। राजा ने उसी समय छलांग लगा दी तालाब में। लेकिन वह बच्चा नहीं था-बनावटी था। लेकिन शक्ल उसी तरह की थी। महात्मा ने पूछा कि क्यों छलांग लगाई ? तेरे पास इतने अधिकारी बैठे थे उनको आज्ञा कर देता। तब उस राजा ने कहा कि मुझे समय ही नहीं मिला। महात्मा ने कहा कि परमेश्वर को भक्त इतने प्यारे हैं कि वह आप भी आता है।

भवजलु जगतु तराइण।।

कहता यह जो भवजल है, संसार, जगत्, इससे तू पार हो जायेगा। जिस दिन तुम्हें यह ज्ञान मिल गया, रहस्यक ज्ञान मिल गया। यह आप देखते नहीं कि गुरु ग्रन्थ साहब में सारा इलहाम है। इलहाम (देव-वाणी) कौन सा होता है ? जो परमेश्वर का ज्ञान हो। कई कहते हैं कि प्रणाम क्यों करते हो ? कागज़ों को। इन पागलों को यह नहीं पता कि यदि कागज़ों को ही प्रणाम करना था तो पटवारी के कागज़ों को प्रणाम करते। इसलिये यह मूर्खता है। यह तो ज्ञान को प्रणाम किया जाता है। ज्ञान की ही पूजा होती है, संसार में। यह कौन लोग प्रशंसा करते हैं ? उनको शंका हो जाती है कि शायद यह भी ज्ञान ही है। वास्तव में परमेश्वर के बिना और कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान एक है, इसलिये 'एक' लिखा है। सब में आनंद एक ही है। आप जानते हो।

खोजत खोजत ततु बीचारिउ.....

कहते—सारा संसार खोजा, मन में ढूंढा, बुद्धि ढूँढ़ी, महापुरुषों के पास जाकर खोज की। लेकिन एक वस्तु निकली—तत्त। वास्तविक चीज़ एक निकली। यह वास्तविक चीज़, व्यापक एक है। सबके अंदर है। सब में एक ही है। मैं जब रात्रि में कभी खड़ा होता तो एक कुतिया मेरे पास आ जाये। मैंने कहा कि भाई ! इसको रोटी डालो, यह तो भूखी है। यह ज्ञान सब में है लेकिन शुद्ध ज्ञान परमेश्वर की कृपा से आता है। नौवें पातशाह कहते हैं कि जब इसको ज्ञान प्राप्त हो जाये तो हृदय में ही इसको निरंजन प्राप्त हो जायेगा।

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगे समाई।। रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है।।
मुकर माहि जैसे छाई।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।।

बस ! ज्ञान तो यहां पूर्ण हो गया। लेकिन

जन नानक बिन आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।

(राग धनासरी मः ९ पृष्ठ ६८४)

जब तक तुम अपने आप को नहीं खोजते, तत्त्व को नहीं जान लेते, उतने तक भ्रम की निवृत्ति नहीं होगी। फिर आपका भ्रम निवृत्त हो जायेगा। फिर तुम ज्ञानी हो जाओगे। जो तुम्हारा अनुभव है। वह तुम्हें पता है। दूसरे किसी को नहीं पता। इसलिये भाई ! यह हमने तत्त्व का विचार किया।

दास गोविंद पराइण।।

एक ही बात है कि दास, जिज्ञासु प्रभु के परायण हो जायें। कैसे होंगे परायण ? आपके हृदय में कोई अन्य कामना, वासना कोई न रहे। संकल्प भी न रहे तो मन परमेश्वर से जुड़ जायेगा। दास को चाहिये कि प्रभु की शरण में पड़ जाये। जो प्रभु करें उसको अच्छा करके माने।

अबिनासी खेम चाहहि जे नानक.....

यदि तू नाशरहित सुख की प्राप्ति चाहता है तो गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं—

सदा सिमरि नाराइण।।

परमेश्वर का सिमरण कभी न भूलना। कबीर साहिब ने कहा कि मैं दीवाना नहीं, दीवाना तो वह है जो अपने को नहीं पहचानता।

सो बउरा जो आपु न पछानै।।
आपु पछानै त एकै जानै।।

(बिलावल वाणी कबीर पृष्ठ ८५५)

कहते हैं कि—जब उसको पहचान आ गई तब वह एक परमेश्वर को जानेगा। यह पहचान क्या है ?

पहचान यह है कि वह एक परमेश्वर को ही जानेगा।

घट घट मै हरि जू बसै।।
संतन कहिओ पुकारि।।

(सलोक ६ पृष्ठ १४२७)

सबके हृदयों में उसको एक परमेश्वर दिखेगा, द्वैत कट जायेगी और साथ ही जन्म-मरण कट जायेगा।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।

❑

६

जैतसरी पहला ५

कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि।।
चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ।।१।। रहाउ।।
मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि।
इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि।।१।।
आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुमरी ओरि।।
अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि।।२।।

(पृष्ठ ७०१)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

गुरु अर्जुन देव महाराज जी ने एक युक्ति बताई कि तुम परमेश्वर को इस युक्ति से पाओ। बात यह है–

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा
तू नानक मनि भाणा।।
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले
जै मिलि कंतु पछाणा।।

(रामकली वार पृष्ठ ९६४)

संसार में परमेश्वर के दो स्वरूप हैं एक निर्गुण और एक सगुण।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।।
कला धारि जिनि सगली मोही।।

(सुखमनी पृष्ठ २८७)

जब दुनियाँ में पाप बढ़ जाए या कोई विशेष काम हो तो वही निरंकार उस समय सगुण स्वरूप हो के संसार में शान्ति लाता है।

एक प्रार्थना बताई है।

गिआन अंजनु गुंरि दीआ
आज्ञान अंधेर बिनासु।।
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु।।

मुझे प्रभु कृपा से संत मिला।

संतसंगे अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(सुखमनी पृष्ठ २९३)

वह परमेश्वर का भेजा हुआ संत, मुझे गुरु राम दास जी के रूप में मिला, जिन्होंने कृपा करके मुझे यह उपदेश दिया–

बिसरि गई सभ तांति पराई।।
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै।।
पेखि पेखि नानक बिगसाई।।

(कानड़ा म. ५ पृष्ठ १२९९)

उस संत ने मुझे मेरे भीतर प्रभु का साक्षात् करवा दिया। सारे संसार में व्यापक प्रभु, सबके हृदय में दिखा दिया।

एकम एकंकारु निराला।।
अमरु अजोनी जाति ना जाला।।
अगम अगोचर रूपु न रेखिआ।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

(बिलावल मः १ पृष्ठ ८३८)

घट घट मै हरि जू बसै
संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना
भउनिधि उतरहि पारि।।

(सलोक मः ९ पृष्ठ १४२७)

गुरु ने कृपा, की सबके हृदय में प्रभु का साक्षात करवा दिया। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि मुझ पर गुरु राम दास जी ने कृपा की और यहाँ पहुँचा दिया।

वह निरंकार सर्गुण होकर मिला। इसी विषय में पंचम गुरु कहते हैं कि इस तरह प्रभु के आगे विनय किया करो।

जैतसरी महला ५

जैतसरी राग में गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं—

कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि।।

कोई परमेश्वर का प्यारा, कोई भक्त, कोई ईश्वर का प्यारा, मुझे हरि के साथ जोड़ दे। मैं एक ही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे कोई ऐसे परमेश्वर का प्यारा, परमेश्वर के साथ मिला दे, जो मेरे मन को, मेरे विचारों को, परमेश्वर के साथ जोड़ दे।

एक चित जिह इक छिन धिआइउ
काल फास के बीच न आइउ

(दशम् ग्रन्थ)

एक क्षण के लिये भी जो मेरे मन को परमेश्वर के साथ जोड़ दे, तो मैं काल की फांसी से बच जाऊँ, मैं उस पर बलिहारी जाता हूं।

चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि।।

मैं उनके चरण पकड़ लूँगा, चरणों पर अपना माथा रख दूँगा, मैं अपनी रसना से बड़े शुभ वचनों से उनकी स्तुति करूँगा, अपने प्राण भी उसको अर्पण कर दूंगा, जो मुझे परमेश्वर के साथ मिला दे। जैसे बाबा बुड्ढा जी छोटी सी अवस्था में ही मक्खन ले कर गुरु नानक के पास गये, जाकर नमस्कार की और कहा कि हे परीपूर्ण ! श्री गुरु नानक साहिब, मैंने सुना है कि आप संत हो, आप मेरा उद्धार कर दो। गुरु जी ने कहा कि तुम अभी बच्चे हो, तुमने अभी दुनियाँ भी नहीं देखी। बच्चे ने कहा कि आज मैंने एक बात देखी है लकड़ियाँ जलाते हुए। छोटी लकड़ियाँ चूल्हे में पहले जल गई। मेरे दिल में आया कि इस शरीर का कोई पता नहीं कि कब इसने चले जाना है। इसलिए मैं आपकी शरण में आया हूँ। यह सुन कर गुरु जी ने कहा कि बातें तो तू बूढ़ों वाली करता है। उसी समय बच्चे का स्वरूप बूढ़ों जैसा हो गया, ऐसा इतिहासकार लिखते हैं। उन पर कृपा हो गई और उन्होंने छठी गद्दी तक तिलक लगाया और घोड़ों के लिए घास काटा, लंगर की सेवा की, अपना तन-मन, सब कुछ प्रभु के अर्पण कर दिया। जो कोई मुझे प्रभु के साथ जोड़ दे, तो मैं उसको अपना तन, मन, धन और प्राण सब अर्पण कर दूँ, बाकी कुछ नहीं रखूंगा।

मनु तनु निरमल करत किआरो.....

कहते हैं भाई, तु मन और तन को पवित्र कर ले।

तन महि मनूआ मन महि साचा।।
तो साचा मिलि साचे राचा।।

(धनासरी म. १ पृष्ठ ६८६)

एक इस शरीर में मन है, तुम सब को पता है। मन नाम विचार का है, जो नाना प्रकार के विचार करता है। वह विचार कोई शरीर तो होता नहीं। जिधर का ख्याल होता है, शरीर उधर ही उठ कर चल पड़ता है। परन्तु विचार के भीतर सच है, विचार झूठा है, यह प्रकृति का कार्य है। विचार को उठाने वाला, कर्मों के अनुसार, वासना के अनुसार मन को चलाता है। वह द्रष्टा, साक्षी, चेत्तन, परमेश्वर, जानने-देखने वाला तुम्हारे अन्दर बैठा है। यदि तुम्हारा मन उसके साथ मिल गया तो तुम उस सत्य को प्राप्त कर लोगे। मन को तुम हर समय देख रहे हो कि वो क्या कर रहा है। कोई ऐसा काम नहीं जो तुम द्रष्टा से छुपा के कर सको। तुम स्वयं द्रष्टा हो, आत्मा हो, साक्षी हो, लेखा जो तुम्हारा लिखा जाना है वह मन के भावानुरूप लिखा जाना है। तुम चाहे कितना ही छुपा लो, कितनी ही धूल झोंक लो दुनिया की आंखों में, लेकिन पड़नी तो वह तुम्हारे ऊपर ही है। वह सारा तुम्हें भोगना पड़ना है, यह गुरु साहिब का हुक्म है—

जेहा बीजै सो लूणै करमा संदड़ा खेतु।।

(बारहमाहा पृष्ठ १३४)

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ।।

(गऊड़ी बैरा० म १ पृष्ठ १५७)

यूं तो सभी लोग अच्छा बनना चाहते हैं, परन्तु फैसला तो कर्मों के अनुसार है। कर्मों का नियंता तो ईश्वर है, कोई आदमी नहीं है। उसके आगे धन अथवा सिफारिश नहीं चलेगी। इसमें तुम कुछ नहीं कर सकते। जब भी तुमने बुरा या अच्छा विचार किया, उसकी प्रतिलिपि हो जानी है। फिर चाहे सारी शक्ति लगा लो, प्रार्थना कर लो, ईश्वर ही माफ कर दे तो कर दे और कोई क्षमा देने वाला नहीं।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(सुखमनी पृष्ठ २७७)

उस परमेश्वर ने तो 'सदना' को क्षमा कर दिया, अजामिल क्षमा कर दिया, कोडा राक्षस क्षमा कर दिया, सज्जन ठग क्षमा कर दिया गया। तुम भी याद करो तो क्षमा कर दिये जाओगे। उसके बिना और कोई क्षमा नहीं करता है।

राखा एकु हमारा सुआमी।।
सगल घटा का अंतरजामी।।

(भैरउ म. ५ पृष्ठ ११३६)

उसको अपना मन, तन और धन सब कुछ अर्पण कर दूं, जो मुझे परमेश्वर के साथ जोड़ दे।

मनु तनु निरमल करत किआरो.....

जैसे ज़मींदार एक खेत को बीजने के लिये पहले उसमें सुहागा चलाते हैं, अच्छी तरह तैयार करते हैं, फिर उसमें बीज डालते हैं। जब वह हरा हो जाता है तो फिर उसको सींचते हैं। इसी तरह तुम अपना मन शुद्ध कर लो, जब शुद्ध हो जाएगा तो उसमें से अमृत प्राप्त हो जाएगा। अमृत कोई बाहर से नहीं आना, वह अमृत तो तुम्हारे अन्दर ही है।

अंम्रितु नाम निधानु है मिलि पीवहु भाई।।

(गउड़ी की वार पृष्ठ ३१८)

परमेश्वर का 'नाम' रूप अमृत तो तुम्हारे अन्दर है, वो बाहर से नहीं आता, वह तुम्हारा अपना 'आपा', (स्वयं आत्मा) है, वह परमेश्वर है, जब मन साफ हो गया, तो

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु।।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

(स. कबीर पृष्ठ १३६७)

कबीर साहिब को जब किसी ने यह कहा कि प्रभु के मिलने की युक्ति बताओ, उन्होंने कहा यह कौन सी कोई बड़ी बात है। परमेश्वर को तुमने मिलना है तो मन शुद्ध करो। मैंने अपना मन शुद्ध कर लिया है। मन में जो खोटे संस्कार हैं, उनको निकाल दो और जो शुभ संस्कार हैं वह भी निकाल दो। मन को इस तरह शुद्ध कर लो जैसे फाल्गुन के महीने में गंगा का जल निर्मल होता है कि कौड़ी भी फैंके तो वह स्पष्ट दिखाई देती हो। फिर परमेश्वर तेरे पीछे भागा फिरेगा। यह दृष्टांत का दृष्टांत है।

हरि सिंचै सुधा संजोरि।।

जैसे जमींदार पानी के साथ बीजों को सींचता है उसी तरह 'नाम' रूपी अमृत के साथ तू अपने मन को सींच। मन हरा भरा हो जाएगा। शुद्ध हो जाएगा। अमृत रुप परमेश्वर अपने आप प्रकट हो जाएगा।

इआ रस महि मगनु होत किरपा ते.....

गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि जब परमेश्वर की पूर्ण कृपा हो जाए और पूर्ण गुरु की कृपा हो जाए तो इसको अमृत प्राप्त होगा। परमेश्वर और गुरु दोनों की कृपा के साथ।

गुरु परमेसरु एको जाणु।।
जो तिसु भावै सो परवाणु।।

(गौंड म. ५ पृष्ठ ८६४)

ब्रह्म गिआनी कउ खोजहि महेसुर।।
नानक ब्रह्म गिआनी आपि परमेसुर।।

(सुखमनी पृष्ठ २७३)

परमेश्वर में और गुरु में कोई भेद नहीं है। ब्रह्म ज्ञानी को गुरु कहते हैं। वह कोई बस्तु या आदमी नहीं है। गुरु तो परमेश्वर के साथ अभेद होता है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ तत मिलायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

कृपा के साथ जब तेरा अन्तःकरण शुद्ध हो जाएगा, तो तू भक्त बन जाएगा। जैसे कबीर, नामदेव, धन्ना आदि हुए हैं।

महा बिखिआ ते तोरि।।

पर एक बड़ी भारी शर्त है कि पांचों विषय, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध और पांच विकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, इन सभी से तू अपने मन को तोड़ ले। यदि मुक्ति चाहता है तो दो चीज़ें नहीं हो सकतीं कि भक्ति भी हो जाए और विषयों को भी भोगता रहे। इस तरह न तो आज तक किसी को प्रभु मिला है और न आगे कभी मिलेगा। कभी भी मन में विषय विकारों का ध्यान आए तो उसके साथ जुड़ो न। यदि मन विषयों के साथ जुड़ गया तो वहीं पकड़ के बैठ जाएगा जहां का वो है। इसलिए विषयों को त्याग दो, यदि आत्म रस पीना चाहते हो या अमर होना चाहते हो तो गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि यह युक्ति है। हमें प्राप्त हुआ है, तुम्हें हम बताते हैं।

आइउ सरणि दीन दुख भंजन.....

प्रभु के आगे प्रार्थना किया करो कि हे दीनों के मालिक, दुखों के नाश करने वाले प्रभु, मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ।

जो सरणि आवै तिसु कंठे लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा।।

(बिहागड़ा म. ५ पृष्ठ ५४४)

यह परमेश्वर का एक नियम है कि जो शरण आए उसको गले से लगा लेता है। जब बिधि चन्द सारा कार्य करके गुरु जी के सामने आया तो गुरु जी ने उसको गले से लगा लिया और कहा "छीना गुरू का सीना"। वह पहले एक डाकू था, चोर था, परन्तु आज से तू हमारा रूप है। इसलिए भाई ! उस प्रभु की शरण में पड़ जाओ यदि तुम मुक्ति चाहते हो तो। और प्रार्थना करो कि हमें किसी शुभ रास्ते लगा दो, मन को नाम के साथ जोड़ दो, कृपा करो।

आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुमरी ओरि।।

हर समय मेरा मन आप का आश्रय चाहता है। मैं आपका चिन्तन करता और आप ही की ओर ही देखता रहता हूँ। मेरा मन आप के साथ जुड़ा रहता है। जैसे ध्रुव का, प्रह्लाद का जुड़ा रहता था। आपके बिना अब मन किसी भी वस्तु को नहीं चाहता।

अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोडि।।

वह कहते हैं कि मांगता क्या है तू ? मैं कोई पदार्थ या वस्तु नहीं मांगता, बस दो चीज़ें मांगता हूं, एक परमेश्वर का सिमरण और दूसरी निर्भयता और प्रेम मांगता हूँ।

सिमरि सिमरि नामु बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(सुखमनी पृष्ठ २६५)

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।
अविनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।

(टोडी म. ५ पृष्ठ ७१४)

मैं वो सिमरन चाहता हूं परमेश्वर का, जिससे मुझे अभय पद प्राप्त हो जाए। जन्म-मरण कट जाए। पांचवे गुरु कहते हैं कि हे प्रभु, मेरे सारे बन्धन काट दो। मुझे सिमरन देकर अपनी प्राप्ति करवा कर, मेरा जन्म मरन काट दो।

आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुमरी ओरि।।

प्रभु तुम्हारी कृपा से ही अपने आप को जाना जा सकता है और कृपा से ही आत्मा का लक्ष्य होता है।

हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि।।
नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि।।

(सलोक फरीद पृष्ठ १३८४)

तेरा दीआ नामु वखाणै।।

(स० फरीद वडहंस म. ५ पृष्ठ ५६३)

तुम्हारी कृपा से ही आत्मा का बोध होता है और नाम प्राप्त होता है। यह सभी ग्रन्थों का निचोड़ है कि संकल्प का साक्षी जो व्यापक ब्रह्म है उसका प्रत्यक्ष भी इसी तरह होता है। प्रकृति मिथ्या है और द्रष्टा सत्य है।

साकसी ब्रहम सरूप इक नहीं भेद को गंथ।।
राग दवैस मती के धरम तां मैं मानत अंध।।

(निहचल दास)

वह व्यापक क्षेत्रज्ञ तू मुझे जान अर्जुन !

मैं सभी शरीरों का साक्षी हूँ। ध्यान का और बुद्धि का भी साक्षी हूँ। पर हूँ व्यापक। मैं भगवान हूँ इसलिए तुम्हें भगवान उवाच कहता हूँ कि मैं वह स्वयं प्रकाश हूँ। जितने भी दुनिया के संस्कार है, हर्ष, शोक, राग, द्वेष, भले, बुरे, वह सब संकल्प में हैं।

जो सबके हृदय में जानने और देखने वाले साईं, द्रष्टा, जन्म-मरण से रहित नारायण बैठा है, उसको पाना है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(सलोक म. ९ पृष्ठ १४२७)

जाननहार प्रभू परबीन।।
बाहरि भेख ना काहू भीन।।

(सुखमनी पृष्ठ २६९)

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि।।
जानणहारे कउ बलि जाउ।।

(रामकली म. ५ पृष्ठ ८८५)

जो कुछ भी हमारे द्वारा जाना जा सकता है वो प्रभु नहीं है परन्तु जो हमें भी जान रहा है, वह परमेश्वर है।

मुई सुरति बादु अहंकार।।
ओहु ना मूआ जो देखणहारु।।

(गऊड़ी म १ पृष्ठ १५२)

देखने वाला गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

७

रामकली सदु १ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।
जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ।।
गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ।।
अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे।।
परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे।।
आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ।।
जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ।।१।।
हरि भाणा गुरु भाइआ गुर जावै हरि प्रभ पासि जीउ।।
सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ।।
पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो।।
अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो।।
सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ।।
हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ।।२।
मेरे सिख सुणहु पुत भाई हो मैरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ।।
हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हर प्रभु करे साबासि जीउ।।
भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए।।
आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए।।
तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ।।
धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ।।३।।
सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ।।
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ।
मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए।।

तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए।।
सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ।।
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ।।४।।
अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ।।
केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ।।
हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए।।
पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए।।
हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ।।
रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ।।५।।
सतिगुर पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ।।
मोहरी पुतु सनमुख होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ।
सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरु आपु रखिआ।।
कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आपि निवाइआ।।
हरि गुरहि भाणा दीई वडआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ।।
कहै सुंदरू सुणहु संतहु सभ जगतु पैरी पाइ जीउ।।६।।

(पृष्ठ ९२३)

सारी संगत, दया, कृपा और मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

समस्त संसार का मालिक, वह आप भक्त वत्सल है। वह भक्तों का बेअंत प्यारा है और वह तीनों लोकों में समाया हुआ है।

गुर सबदि समावए अवुरु न जाणै कोइ जीउ।।

भाई ! कोई बात नही जाननी, यदि तुम मुक्ति की इच्छा करते हो तो गुरु के शब्द में अपने मन को मिला दो।

सिमरि सिमरि नामु बार बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(सुखमनी पृष्ठ २९५)

सिमरन के साथ ध्यान को एकाग्र करके, मन को नाम के साथ अभेद कर लो।

खोजत खोजत तत्तु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।

(टोडी मः ५ पृष्ठ ७१४)

उसका सिमरन कभी न भूले, यदि अमर पद को प्राप्त करना है तो–

उसतति मन महि करि निरंकार।।
करि मन मेरे सति बिउहार।।

(सुखमनी, पृष्ठ २८१)

स्तुति या उपमा, सदैव प्रभु की करो और अपना व्यवहार भी शुद्ध रखो।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै बिसरि न जाई।।

(जपुजी पृष्ठ २)

वह जो एक प्रभु, सभी जीवों का मालिक है, उसको कभी मन से मत भूलो।

अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे।।

गुरु के शब्द के बिना और कोई भी मुक्ति का हेतु नहीं है और न ही जानो। जंत्र-मंत्र जो भी हो, वह गुरु का शब्द ही हो। गुरु-मंत्र जैसे प्रह्लाद ने, कबीर ने, रविदास ने नहीं छोड़ा, इसको कभी भी छोड़ना नहीं।

ऐको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई।।

(आसा म. ३ पृष्ठ ४२५)

ध्यान और जाप, केवल प्रभु के नाम का ही करना है।

परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे।।

नानक अंगद को बपु धरा
धरम प्रचुर इत जग मे करा।।

(दशम् ग्रन्थ)

जैसे नानक देव जी की कृपा से अंगद देव जी को गुरु पदवी मिली, उसी तरह पंचम गुरु पर गुरु राम दास जी की कृपा हुई। अंगद देव जी का स्वरूप बना कर, गुरु नानक जी ने फिर धर्म का प्रचार किया।

आइआ हकारा चलणवारा.....

हमें प्रभु का आदेश आया था, अब चले जाना है, कहते हैं गुरु अमरदास जी।

हरि राम नामि समाइआ।।

हमारा मन, हरि के नाम में समा गया है। उसके साथ एक हो गया है।

जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु.....

इस सारे संसार का मालिक, अटल है, अमर है और उसके साथ हमारा मन जुड़ गया है।

भगति ते हरि पाइआ।।

हमने प्रेमा भक्ति द्वारा उस हरि को पा लिआ है। गुरु अमर दास जी कहते हैं कि इस बात की पीछे किसी ने शंका नहीं करनी।

हरि भाणा गुरु भाइआ गुर जावै हरि प्रभ पासि जीउ।।

हरि का हुक्म, हमेशा गुरु को भाता है, और हमें भी हरि का हुक्म भा गया और गुरुओं का वचन भी हमें भा गया।

जो तुधु भावै साई भलीकार।।
तू सदा सलामति निरंकार।।

(जपुजी पृष्ठ ४)

गुरु अमरदास जी कहते हैं कि हम, हरि के पास जाएंगे तुम्हें पहले ही बता दिया है।

सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ।।

गुरु अमरदास जी कहते हैं कि मेरी इज्ज़त आपने रखनी है।

पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो।।

अपने सारे भक्तों की आबरू, आपने रखी है और मेरी आबरू भी आपने रखनी है। मुझे कृपा करके निरंजन, निरंकार का नाम दो।

अंति चलदिआ होइ बेली.....

वह नाम अन्त में मेरा मित्र बनेगा, साथ जाएगा, नाम और नामी अभेद हैं।

जमदूत कालु निखंजनो।।

यमदूत, जिनको काल कहते हैं उनका नाश प्रभु ने कर दिया है, उनकी अब मुझ पर कोई ताकत नहीं रही।

सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ।।

सतगुरु ने प्रभु के आगे विनती की और परमेश्वर ने वह स्वीकार कर ली, अंगीकार कर ली।

हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ.....

हम पर बहुत कृपा की और हमें गुरु अंगद देव जी का मिलाप करवा दिया और जिस गुरु ने, हमें बख्श के गुरु ही बना दिया।

धनु धनु कहै सावासि जीउ।।

सभी लोग धन्य धन्य कहते हैं कि गुरु अमरदास जी ने, गुरु अंगद देव जी को मिल कर, 'स्वयं स्वरूप' की प्राप्ति कर ली।

मेरे सिख सुण्हु पुत भाई हो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ।।

मेरे सिक्खो ! मेरे भाईयो ! मेरे पुत्रो ! मेरी बात सुन लो, मेरा हुक्म मान कर मेरे पास आ जाओ सारे।

हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे सावासि जीउ।।

हरि का हुक्म गुरु को भा गया, मेरे हरि प्रभु परमात्मा ने, मुझे शाबाशी दी और अपने साथ मिला लिया।

भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए।

जिस को प्रभु का हुक्म मीठा लगा, जो हुक्म में खड़ा हो गया, वही भक्त है, वही सतगुरु है।

आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए।

आनन्द रूपी, अनाहद बाजे बजने लग गए, अब हमें हर्ष, शोक नहीं आता।

हरख अनंत सोग नही बीआ
सो धुरु गुरि नानक कउ दीआ।

(गउड़ी मः ५ पृष्ठ १८६)

हर्ष, शोक से रहित घर, हमें प्राप्त हो गया है। हरि ने अपने गले से हमें लगा लिया है। मुझे प्रभु ने स्वयं कृपा करके, गुरु द्वारा मिलाया।

तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ।।

मेरे पुत्र, मेरे भाई और जितना भी मेरा परिवार है, तुम सब अपने मन में निर्णय कर के देख लो, जो हम उपदेश करते हैं, उसको विचार करके देख लो।

धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही.....

जो परमेश्वर का, विधि का लेख है उसको कोई बदल नहीं सकता, परमेश्वर का हुक्म अटल होता है।

गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ।।

अब हम प्रभु के पास जाएंगे, कहते हैं गुरु अमरदास जी।

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ।।

गुरु जी कहते हैं कि मैं अब हरि प्रभु के पास जाऊंगा, उन्होंने अपना सारा परिवार अपने पास बुला लिया और कहा–

मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि ना भाइआ।।
मितु पेझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए।।

भाई ! यह बात ध्यान से सुन लो, मेरे पीछे किसी ने भी रोना नहीं, जो रोएगा वह मुझे कदाचित नहीं भाएगा। तुम मेरे वचनों को अंगीकार करके खुश होना, रोना कभी नहीं। मैं परमेश्वर को भा गया, प्रभु को प्राप्त होकर मैं उसके साथ एक हो गया। प्रभु के साथ तुमने कभी शोक नहीं करना–

तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए।।

सतगुरु ने पहले मुझे सिरोपा दे दिया अर्थात् कृपा कर दी। शरणागति में कृपा होती है, मुझे प्रेमाभक्ति दे कर अपने साथ मिला लिया। तुम इस बात को सारे समझ लो।

सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ।।

गुरु अमरदास जी ने आप, गुरु रामदास जी को गुरु गद्दी पर बिठा दिया और तिलक लगा दिया।

सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ।

सब सिखों को गुरु जी ने गुरु रामदास जी के चरणों के साथ लगा दिया। भाई ! अब मैं रामदास जी में आ गया हूँ। अब मेरी ज्योति चौथी पतिशाही में आ गई है।

जब बरदान समां वो आवा
राम दास तब गुरू कहावा
इह बरदान पुरातन दीआ
अमरदास कउ तुर मग लीआ।।

(दशम् ग्रन्थ)

गुरु अमरदास जी बैकुण्ठ को जाएंगे, गद्दी का मालिक आ गया है। अमानत जिसकी थी, उसको दे के चले गए।

अंते सतिगुरु बोलिया
मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ।।

फिर सतगुरु जी ने कहा कि अन्तिम समय शुद्ध कीर्तन करना। शुद्ध कीर्तन में कोई दृष्टांत नहीं होता। शुद्ध वाणी ही पढ़ना और गाना।

केसो गोपाल पंडित सदिअहु
हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ।।

केसो गोपाल पंडित को बुला कर, हरि प्रभु की कथा सुनना।

हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ
बेबाणु हरि रंगु गुर भावए।।

लोगों की रीति है, हरा कपड़ा डालना या हरी झंड़ियां लगाना। प्रभु को रंग रूपी बेबाण भाता है, गुरु परमेश्वर के साथ प्रेम करना।

पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए।।

हरि सत्य में फूल डालने हैं, यह मेरा नाम ही है सब कुछ। गुरबाणी में ध्यान के साथ नाम का महात्म्य देखा तो पता लगा कि नाम सब का शिरोमणि है।

नामु सिरोमणि सरब मै
भगत रहे लिव धारि।।
सोई नामु पदारथु अमर गुर
तुसि दीओ करतारि।।

(सवैये पृष्ठ १३९३)

हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ.....

हरि नाम ही मेरा सब कुछ है। जब हरि को भा गया तो गुरु अमरदास जी कहते हैं कि–

हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ।।

वह जो व्यापक है, नित्य ज्ञान स्वरूप है, परिपूर्ण परमेश्वर है, वह हरि हमें मिल गया है। यह सब को हरे करने वाला, सर्व व्यापक है।

रामदास सोढी तिलकु दीआ.....

रामदास जी, जो सोढ़ी वंश के थे, उनको तिलक दिया और गद्दी का मालिक बना दिया।

गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ।।

जब गुरू जी ने एक शब्द दे दिया जो कि चिह्न है। एक संत से बातचीत हुई। गुरमत में चिह्न क्या है ? वह कहता "सैभं" (स्वयंभू) है, और–

चिह्न क्या होना है। स्वयं प्रकाश जो स्वच्छन्द परमेश्वर है, यही चिह्न है। 'नाम' और 'नामी' अभेद है। नामी के साथ मन को स्थित करके सिमरन करना है। फिर 'नामी' की प्राप्ति हो जाएगी। वह तुम्हारे संकल्प का साक्षी है। ध्यान में बैठा है, वह स्वयं प्रकाश है और स्वयं सिद्ध है।

सतिगुरु पुरखु जि बोलिया
गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ।।

सारे सिक्खों ने गुरु जी की रज़ा, आदेश मान लिया। सब ने हाथ जोड़ कर गुरु रामदास जी के चरणों पर नमस्कार कर दी।

मोहरी पुतु सनमुख होइआ.....

मोहरी पुत्र आगे हुआ और उसको गुरु रामदास जी के चरणों में लगा दिया। उसको कुछ अंहकार था। मोहन हठयोगी था, वह गुरुजी के पास न आया तो उसको दर्द होने लग गई। वो ईर्ष्या करता था। गुरु जी ने कहा कि गुरु रामदास जी के चरणों में जाएगा तो यह दर्द हटेगा। उसने सम्मुख जाकर शब्द पढ़ा। ग्रन्थ रखे और चरणों पर सिर रख दिया। उसका दर्द बन्द हो गया।

रामदासै पैरी पाए जीउ।।

शेष भी जो सिक्ख संगत थी वो भी गुरु रामदास जी के चरणों में पड़ गई। मोहरी पुत्र ने गुरु अमरदास जी की आज्ञा पूरी तरह मानी। सतगुरु तो पारब्रह्म परमेश्वर है, प्रभु के साथ अभेद है।

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।

(पृष्ठ २७३)

गुरु अमरदास जी ने, वो ईश्वरीय ज्योति गुरु रामदास जी में रख दी और जो उनको नहीं मानता था, उनको भी स्वयं झुकाया।

सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरु आपु रखिआ।।
कोई करि बखीली निवै नाही
फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ।।

वह सतिगुरु सब को स्वयं गुरु रामदास जी के आगे निवाएंगे।

हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई.....

हरि के हुक्म का बड़ा यश है, बहुत महत्त्व है।

धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ।।

आरम्भ से, रज़ा प्रभु का लेख लिखा हुआ है, जो कि हमने तुम्हें सुनाया है।

कहै सुंदरु सुणहु संतहु.....

सुंदर कवि को गुरु साहिब ने बुला के लिखाया था कि सन्तो सुनो–

सभु जगतु पैरी पाइ जीउ।।

समस्त संसार गुरु रामदास जी के चरणों में डाल दिया। इस सारे शब्द का नाम 'सद्' है। जीव के प्राण छोड़ने के पीछे, गुरु घर में यह शब्द पढ़ने की रीति है। इसलिए इसका अर्थ जैसा हमें आया वह कर दिया है।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु।।

❑

कार्त्तिक मास की कथा

बारह माहा मांझ पहला ५ घरु ४

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु।।
परमेसर ते भुलियां विआपनि सभे रोग।।
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग।।
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग।।
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज।।
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग।।
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिउग।।
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच।।
कतिक होवै साधसंग बिनसहि सभे सोच।।

(पृष्ठ १३५)

सारी संगत, कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

आज कार्त्तिक मास का शुभारम्भ हुआ है और साथ ही आज संक्रांति (वह समय जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है) है। दो चीज़ों का मिलाप हुआ है। पहली राशि से हट कर सूर्य दूसरी राशि में आएगा। इसका मिलाप समय, पुण्य समय होता है। इसलिए लोग संक्रांति मनाते हैं। आज कार्त्तिक की संक्रांति है, सब मिल कर कार्त्तिक के महीने की खुशी मनाओ।

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु।।

गुरु साहिब फरमाते हैं कि जो तूने कर्म अर्जित किये हैं तुझे ही भोगने पड़ेंगे। लोगों को दोष देने का कोई लाभ नहीं भाई।

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ।।

(गउड़ी बै: म: १ पृष्ठ १५७)

तेरे कर्मों का निपटारा होना नहीं, चाहे इस जन्म के हों, चाहे अगले जन्म के। ब्रह्मज्ञानी के सिवाय आज तक किसी के कर्मों का निपटारा नहीं हुआ। इसलिए भाई ! तू कर्म सोच समझ कर करना।

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेत।।

(पृष्ठ १३४)

हे भाई ! यह तेरा शरीर तेरे संचित कर्मों का ही फल है।

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।।

(जपुजी पृष्ठ २)

वह द्रष्टा सबमें साक्षी रूप में विराजमान है। तेरा यह क्षेत्र कर्मों का बना है। इसलिए भाई ! तू अपने मन में यह बात मत लाना कि उसके पास ज्यादा धन है, मुझे गरीब बना दिया, किसी को सुन्दर बना दिया आदि। यह सब कर्मों का फल है। कर्म चार प्रकार के हैं—

१. विहित कर्म २. निषिद्ध कर्म ३. नित्य कर्म ४. निमित्त कर्म

१. विहित कर्म—विहित कर्म वो होते हैं जिनकी विधि होती है

(i) मुसलमानों का विहित कर्म है, पांच समय नमाज़ पढ़नी और रोज़े रखने।

(ii) सिखों का विहित कर्म है, पांच वाणियों का पाठ करना और

(iii) हिन्दुओं का विहित कर्म है तीन समय सन्ध्या करनी। यह जो संकेत किए हैं इनको भाई विचार लो। इससे पीछे नित्य कर्म आता है।

२. नित्य कर्म—रोज़ बाणी पढ़नी, गुरूद्वारे जाना, सेवा करनी आदि नित्य कर्मों में आते हैं।

३. निमित्त कर्म—जब कोई निमित्त हो, जैसे आज संक्रान्ति है। हम सब जुड़े बैठे हैं, निमित्त से इक्ट्ठे हुए हैं। इसलिए यह कर्म भी बड़ी खुशी के साथ करना है। निमित्त करके आज सेवा करनी है। झाड़ू भी लगाना है, लोगों को रोटी बना कर भी खिलानी है, कड़ाह प्रसाद भी बांटना है। सारा काम करना है।

४. निषिद्ध कर्म—गुरु साहिब कहते हैं, निषिद्ध कर्म कभी नहीं करने। निषिद्ध कर्म करोगे तो तुम्हें पश्चाताप करना पड़ेगा। मुहम्मद को हुक्म हुआ खुदा का कि मूसा, तूं मेरा एक संदेश पहुंचा दे लोगों तक, तुझे स्वर्ग दे दूँगा। जो भी मान लेंगे उनका जिम्मेवार मैं होऊंगा। तू पैगाम में फर्क न करना, नहीं तो तुझे भी जहन्नुम

में फेंक दूंगा। इसलिए भाई ! निषिद्ध कर्म कभी नहीं करना, शुभ कर्म करना है। इसलिए गुरु साहिब वही बात कर रहे हैं।

कतिकि करम कमावणे.....

कार्त्तिक के महीने में भाई ! तुमने शुभ कर्म अर्जित करने हैं। देश की सेवा करनी है, ईश्वर की उपासना करनी है, गरीबों की सहायता करनी है। मुहम्मद ने भी पांच कर्म लिखे हैं यतीमों की, मुसाफिरों की, गरीबों की और जो स्त्री निराश्रित हो उनकी सहायता करनी है। काफिरों को मैं सजा दूंगा। यदि तुम अपने श्रम से कमाते हो तो चालीसवां हिस्सा जरूर यतीमों को देना है। यदि काफिरों को लूटो तो पांचवा हिस्सा देना है। इसलिए भाई ! कार्त्तिक के महीने में खूब पुण्य कर्म कमाने हैं। कुरान में, गुरु ग्रन्थ साहिब में और अन्य शास्त्रों में लिखा हुआ है। ऐसे न सोचो कि कोई देख नहीं रहा, जैसे मर्जी लूटते जाओ। नहीं भाई ! देखने वाला तो हमारे अन्दर बैठा है।

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ।।

(श्री राग म. ३ पृष्ठ ३६)

उससे हम छुपा नहीं सकते हैं। तुम्हें एक दृष्टांत देते हैं। एक दिन लक्ष्मी ने सोचा, मैं देखती हूँ कि भगवान् सब को अन्न किस तरह देता है। उसने एक चींटी को मंजूषा (पिटारी) में बन्द कर दिया। लक्ष्मी ने टीका लगाया हुआ था, उसमें से एक दाना चावल का मंजूषा में गिर गया। उसको पता नहीं लगा था। उसने विष्णु भगवान् को पूछा कि आपने सब को भोजन दे दिया है। भगवान् ने कहा हां दे दिया है। फिर लक्ष्मी जी कहने लगी कि एक चींटी कल की मंजूषा में बंद पड़ी है। उसका भोजन कहां ? भगवान् ने कहा मंजूषा खोल, जब खोला तो उसमें से आधा चावल का दाना उसने खा लिया और आधा दाना पड़ा था। भगवान् ने कहा कि जब तूने संकल्प किया था मैं जान रहा था। इसको मैंने पहले ही दो तीन दिन की खुराक फेंक दी थी, फिर वो मान गई।

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ।।

(पृष्ठ ३६)

शास्त्रों, ग्रन्थों आदि में सारी मर्यादा लिखी हुई हैं। भाई ! अच्छा काम करो, बुरा न करो, किसी से धोखा न करो। परन्तु लोगों ने यह मर्यादा छोड़ दी और अपने आप ही चल पड़े एक दूसरे के आगे। इसलिए भाई !

कतिकि करम कमावणे

दोसु न काहू जोगु।।

जो भी दुख सुख मिलते हैं वो तुम्हारे किये हुए कर्मों का फल है, ऐसे ही लोगों पर दोष नहीं लगाना चाहिए।

दोसु देत आगह कउ अंधा।

(गउड़ी बावन अखरी पृष्ठ २५८)

जो दूसरों को दोष देता है वह अज्ञानी है, कर्म तो तेरे अपने किये हुए हैं और दोष दूसरों को।

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग।।

यदि तुम इन कर्मों में लगे रहे और प्रभु को भूल गए तो तुम्हें सारे रोग लग जाएंगे। डाक्टरों का ही घर भरोगे तुम।

वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग।।

जो परमेश्वर से विमुख होंगे, उनको जन्मों के दुख लगेंगे। जन्मेंगे, मरेंगे। अपने कर्मों का फल भुगतेंगे।

खिन महि कउड़े होइ गये जितड़े माइआ भोग।।

जितने भी माया के भोग हैं वो क्षणों में कड़ुवे, अर्थात् दुःख रूप हो जाएंगे, तुम पछतावोगे। दौद का एक थानेदार था उदय सिंह। मेरा शरीर भी वहां गया हुआ था। मैं साधु होके वहां एक गुफा में गया। मुझे किसी ने 'जपुजी साहिब' के ४० पाठ करने को बताया था। थानेदार का बेटा मेरे पास आया और कहने लगा कि मेरे पिता जी ने आपको बुलाया है। वे चल नहीं सकते। अधरंग हो गया है। मैंने कहा मैं साथ चल सकता हूँ इसमें कोई दुःख नहीं, परन्तु कर्मों को काटने की तो मेरे पास कोई दवाई नहीं। जब मैं उसके पिता के पास पहुंचा तो वह आदमी बड़ा रोया परन्तु बोला सच। कहता कि मैंने ऐसे कर्म किये हैं थानेदारी में जिनका फल अब मुझे मिला है। मैं बहुत दुःखी हूँ। यदि कृपा करके आप प्रार्थना कर दो तो मेरा शरीर छूट जाए और मैं सुखी हो जाऊँ। मैंने उसको कहा कि—यह शरीर मेरी प्रार्थना से नहीं छूटेगा, यह कर्म तुझे भोगने ही पड़ेंगे और तू सुखी हो कर नाम जपते हुए भोग। वह नाम तो मुख से बोले, पर बोला न जाए, अधरंग की वजह से। इसलिए भाई यह कर्मों का खेत है। यदि तुम इन कर्मों में पड़े रहे तो तुम्हारी बुद्धि मैली हो जाएगी और आत्मा का प्रत्यक्ष नहीं हो सकेगा और तुम विमुख हो जाओगे। जन्मों के वियोग लग जाएंगे। पता नहीं उन कर्मों के तुम्हें कितने जन्म

भोगनें पड़ जाऐं। सात-सात जन्म एक आदमी के हुए, सिर्फ एक कर्म के कारण। शास्त्रों में लिखा है कि वर्जित कर्म कभी भी न करो, नित्य कर्म जरूर करो परन्तु विधि कर्म तो यह है कि आठों पहर नाम तो कभी छोड़ो ही न।

ऊठत बैठत सोवत नाम
कहु नानक जन के सद काम।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २८६)

पाखण्ड कभी भूल के न करो। यदि कभी फंस जाओ तो वहां से निकल जाओ, पांखड में से। तुम्हारा शरीर कर्मों का खेत है, कर्मों से ही मिला है।

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआर।। (जपुजी)

जब प्रभु की मेहर हो गई, कृपा हो गई तो मुक्ति की प्राप्ति हो जाएगी।

जा कउ अपुनी करै बखसीस
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २७७)

विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज।।

मुहम्मद ने खुदा को कहा कि मेरे बीच कोई मध्यस्त नहीं होगा। मैंने आप सब कुछ करना है। काफिरों को मारना है और मुसलमानों को गले लगाना है। उनकी रक्षा करनी है। इसमें कोई मध्यस्त नहीं होगा। कोई संसार का काम तो है नहीं, जहां वकील की जरूरत पड़े। कर्मों से कोई नहीं छुड़ा सकेगा। परमेश्वर ही तुम्हारा मध्यस्त बनेगा। यदि तुम कहो कि गुरु बख्श सकते थे, तो कहते हैं कि वह भी तो स्वयं प्रभु ही आया था।

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।
ता ते अंगद भयउ तत तिउ तत्तु मिलायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०९)

वह 'ज्योति स्वरूप' आप ही गुरु नानक के रूप में आया था। यह उसकी खुशी है। 'जैमिनी' (मीमांसा दर्शन के आदि आचार्य महर्षि जैमिनी हुये। उनके ग्रन्थ का नाम 'मीमांसा सूत्र' है) ने एक सूत्र लिखा—जिसमें बताया कि परमेश्वर किसको कहते हैं ?

करतू, अकरतू अनथा करतू

जो कर दे, चाहे न करे या उल्टा कर दे, उसको ईश्वर कहते हैं। उसको सब अधिकार है, या तो तुम उसकी शरण में चले जाओ।

जिते शरण आऐ है तिते राख लए है।।
बिना शरण ताकी नही और ओट।।

लिखे जंतर केते पड़े मंतर कोटं।।
बचेगा ना कोई करे काल चोटं।।
जिते शरण आए है तिते राख लए है।।

(दशम् ग्रन्थ)

कबीर, नाम देव, धन्ना, जयदेव आदि शरण में पड़ गए। सबके सब प्रभु ने रख लिए। दुबारा जन्म में नहीं पड़े। इस तरह तुम भी शरण में पड़ जाओ।

"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज"

(गीता अध्याय १८, ६६)

कृष्ण जी कहते हैं कि शरण में पड़ जाओ, वह जो सच्चिदानन्द व्यापक है, उसकी शरण में पड़ जाओ। दशम गुरु कहते हैं कि शरण में आया कोई भी वापस नहीं गया। शरण पड़कर बच जाओगे। रोज़ रोज़ दुख किसके आगे रोये जाएं।

किस थै रोवहि रोज।।

ईश्वर के बिना कोई भी क्षमा करने वाला नहीं है। चाहे वह निर्गुण, सगुण हो कर क्षमा करे चाहे बिना रूप के क्षमा करे। वह क्षमा करने वाला है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २७७)

लेख तो कृपा से ही कटेगा, जिन पर कृपा हो गई वह कभी वापिस नहीं आए।

कीता किछू न होवई.....

अब तेरा किया कुछ नहीं होगा। तू कर बैठा है, जो बाण तेरे हाथ से छूट गया, वह तो तेरे बस में नहीं है। बाण छोड़ा बाबा गुरदित्ता ने किसी निशाने पर, परन्तु वो गाय को लग गया। सारे पहाड़ी इक्ट्ठे हो कर उनके पास आ गए कि तुमने यह क्या काम किया। वह कहने लगे, भाई ! हमसे अचानक हो गया है। अब तुम जाने दो। वे कहते कि नहीं जी गाय को जिन्दा करो। नहीं तो हम हमेशा के लिए तुम्हारे साथ विरोध रखेंगे। बाबा गुरदित्ता ने गाय जिन्दा कर दी। छठे गुरु कहते कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। या तो तुम रहोगे या हम रहेंगे। यहां तो दुनियां रोज़ मुर्दे ला कर रख देगी। तो बाबा गुरदित्ता ने चादर ओढ़ के शरीर त्याग दिया। कर्म तो आरम्भ में ही लिख दिये जाते हैं।

लिखिआ धुरि संजोग।।

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ।।

(मारू अंजुली ५ पृष्ठ १००७)

जो कर्म हम करते हैं वो तो लिखा जाना है, शुभ भी और अशुभ भी।

नानक पारखु आपि
जिनि खोटा खरा पछाणिआ।

(महला १ पृष्ठ १४४)

वह प्रभु आप, पारखी है, जो सब संकल्पों की प्रतिलिपि कर रहा है। इसलिए बुरा कर्म कभी न करो, यदि हो जाय तो क्षमा मांग लो।

वडभागी मेरा प्रभु मिलै.....

बड़े भाग्य से ईश्वर की प्राप्ति होती है।

तां उतरहि सभि बिओग।।

उसके फिर सब दुःख और वियोग दूर हो जाते हैं।

जो सरणि आवै तिसु कंठे लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा।।

(बिहागड़ा म. ५ पृष्ठ ५४४)

यह प्रभु का नियम है, बिरद है कि जो भी उसकी शरण में आ जाता है, वह उसको गले के साथ लगा लेता है।

नानक कउ प्रभ राखि लेहि.....

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि हे प्रभु ! मुझे अपना हाथ दे कर रख लो तभी मैं बच सकता हूं।

मेरे साहिब बंदी मोच।।

हे मालिक ! हे साहिब 'बंदी मोच', बन्धनों को काट देने वाले प्रभू ! मुझ पर कृपा करो। छठे गुरु साहिब को जहांगीर किसी बात पर ग्वालियर के किले में ले गया और कहा कि आप यहां हमारे निमित्त ४० दिन अनुष्ठान करो। उसका मतलब था कि अन्दर जाएंगे तो हम बन्द कर देंगे तो हमारा राज्य अच्छा चलेगा, यही हमारे लिए अड़चन है। गुरु साहिब के जाने के साथ वहां सारे सिक्ख सेवक जाने लग गए। कीर्त्तन शुरू हो गया, भंडारे शुरू हो गए। वहां ५२ राजा कैद थे। कीरतपुर का राजा भी वहां था। उसने ही गुरु जी को कीरतपुर दिया था। गुरु जी

ने जहांगीर को कहा कि इन राजाओं को छोड़ दो। तभी हम यहाँ से बाहर जाएँगे। उन राजाओं ने गुरु जी को कहा यदि आप यहाँ से चले गए तो हम यहीं रह जाएँगे, हमें किसी ने नहीं छोड़ना। जहांगीर ने गुरुजी को ग्वालियर लाने के लिए हाथी सजा कर भेजा, परन्तु गुरु जी ने कह दिया कि हम तो नहीं जाते। अपने बादशाह को कह दो—कि हम अपने साथियों को साथ ले कर ही बाहर आएंगे। तो बादशाह ने कहा कि उनको भी बाहर ले आयें ताकि मेरी मुक्ति हो किसी तरह। जब से गुरु जी किले में थे, बादशाह को न रात को नींद आए और न दिन को चैन। जब उसको रात को दोज़क (नरक) का रूप प्रभु ने दिखाया जहाँ उसने जाना था, तो देख कर बहुत डर गया और गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और महाराज जी को कहा कि जितने राजा आपका आंचल पकड़ के आ सकते हैं उनको बाहर ले आओ। तो गुरुजी ने ५२ लड़ियों वाला एक चोला सिलवाया। यह अभी भी 'घुड़ाणी' गाँव में पड़ा है, मैंने देखा है, वहाँ शीशे में पड़ा है। एक-एक लड़ी पकड़ा के गुरु जी ५२ राजाओं को बाहर ले आए। तभी लोगों ने छठे गुरु साहिब का नाम 'बंदी मोच' रख दिया। गुरु अर्जुन देव ही कहते हैं कि मेरा जो मालिक प्रभु है वह 'बंदी छोड़' है, वह जन्म-मरण काट देता है। आपको पता है, वो घास काटने वाला आया था पांच पैसे लेके महाराज जी के तम्बू में। पहरेदारों ने सलाह कर ली, कि तम्बू भी जहांगीर के, राशन भी उसका, परन्तु जो भी सिक्ख आता है वह पूछता है कि सच्चे पातशाह का तम्बू कहाँ है, और राजा को झूठा पातशाह कहते हैं। इसमें हमारा बड़ा निरादर है। उन्होंने संतरी को समझाया और खड़ा कर दिया कि जो भी सिक्ख आए उसको जहांगीर के तम्बू में भेज देना। घासी ने आके पूछा, घास बेच के जो पैसे थे—वह साथ ले आया, उस दिन रोटी भी न खाई और भेंट करने के लिए पैसे बचा लिए। सन्तरी ने घासी को जहाँगीर के तम्बू की तरफ ईशारा करके कहा कि यह है—सच्चे पातशाह का तम्बू। घासी ने पाँच पैसे जहाँगीर के आगे रख दिए, परिक्रमा की और माथा टेक कर खड़ा हो गया। जहाँगीर ने कहा कि मांग भाई—क्या माँगता है ? घासी ने कहा मुक्ति मांगता हूँ। राजा ने कहा तू इतना गरीब है, एक गाँव का स्वामित्व ले ले—इलाके की मालिकी ले ले। उसने कहा कि नहीं मुझे तीनों लोकों की भी जरूरत नहीं है, मैंने तो सिर्फ मुक्ति लेनी है। राजा ने कहा कि वह है तम्बू सच्चे पातशाह का, मुक्ति के मालिक का। मैं तो झूठा पातशाह हूँ। घासी ने पैसे उठा लिए और चल पड़ा। वही पैसे छठे पातशाह के आगे रख दिए, परिक्रमा की और माथा टेक के खड़ा हो गया हाथ जोड़ कर। गुरु जी ने कहा, क्या माँगता है ? तो घासी ने कहा—मुक्ति। गुरू जी ने कहा, मेरी आँख से आँख मिला, जब

उसने आँख मिलाई तो गुरु जी ने उसको ज्ञान दे कर, मुक्त कर दिया। घासी कहता निहाल, निहाल, निहाल और चला गया। जहाँगीर ने गुरु जी को कहा कि हिन्दुओं की मुक्ति बड़ी सस्ती है जो थोड़े से पैसो में आ जाती है। गुरु जी ने उसको पूछा कि तुम उसको क्या देते थे। राजा ने कहा मैं उसको इस क्षेत्र का राज्य भी देता था परन्तु घासी कहता कि मुझे तीन लोकों का राज्य भी नहीं चाहिए, सिर्फ मुक्ति चाहिए। गुरु जी ने कहा उसमें तीन लोकों की भी वासना नहीं रह गई थी। अन्तःकरण शुद्ध हो चुका था और वह मुक्ति का अधिकारी था। "नदरी नदर निहाल हो गया।" जो प्रभु के भेजे हुए होते हैं, गुरु नानक, दादू, कबीर, रविदास, यह सभी 'बंदी मोच' थे। रामानन्द ने १२ लोगों की मुक्ति की। यह भगवान् के भेजे होते हैं। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि बख्श लेता है, परन्तु उन पर ही कृपा करता है जो सत्यशील एवं पवित्र पुरुष हैं, परमेश्वर के प्यारे हैं। कई बार स्वयं जा के करता है, भक्तों को पता भी नहीं होता।

कतिक होवै साध संगु.....

यदि कार्त्तिक मास में तुम्हें साधुओं का संग प्राप्त हो जाए। साधु ब्रह्मज्ञानी को कहते हैं, तब क्या होगा ?

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २९३)

संत गुरु रामदास जी की कृपा से हमें अपने अन्दर भगवान् दिखाई दे गया या दिख गया। इसलिए इस महीने में हमें संतों का संग प्राप्त हो जाए।

बिनसहि सभे सोच।।

हमारी सब चिंतायें मिट जाएं, हम पर कृपा हो जाये। सारा काम साफ हो जाए।

नानक कऊ प्रभ राखि लेहि
मेरे साहिब बंदी मोच।।
कतिक होवै साध संगु बिनसहि सभे सोचि।।

पंचम पातशाह कहते हैं कि हे प्रभु, 'बंदी छोड', मुझ पर कृपा करो। मुझे रख लो।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।

सतिनाम श्री वाहिगुरु।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु।।
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु।।
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु।।
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु।।
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि।।
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिन अवरु न कोइ।।
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ।।
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ।।
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ।।

(बारह माहा पृष्ठ १३३)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो, सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु।।

बैशाख के महीने द्वारा गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं, धैर्य किस तरह से बंधे ? धैर्य तब बंधे, यदि इसको कोई वस्तु प्राप्त हुई हो। प्राप्त होने वाली एक ही वस्तु है। उसको आत्मा-परमात्मा कहते हैं। और कोई जो भी वस्तु है, वो आने जाने वाली है। सारा संसार परिणामी है। आने जाने वाला है। बदलने वाला है। एक 'आत्म वस्तु' नहीं बदलती। जब यह जीव को प्राप्त हो जाए तो इसको सब कुछ प्राप्त हो गया। यह जब तक आत्म अवस्था को प्राप्त न हो तब तक धैर्य कैसे पाए ? इसको धैर्य कैसे बंधे ? जीव हमेशा अज्ञानवश रहता है। इस अज्ञानता के कारण ही जीव उपाधि हो जाती है। आत्मा को जीव नहीं कहते–

अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ
माइआ का मुहताज भइआ।।

(राग आसा म. ५ पृष्ठ ४३५)

यह माया के आधीन हो गया। उस (माया) के आधीन होने के कारण, प्रवृत्ति में पड़ कर दूसरी ओर चला गया।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अंम्रितु बिरखु है फलु अंम्रितु होई।।

(आसा मः १ पृष्ठ ४२१)

जिन्होंने उस आत्मा, परमात्मा को जान लिया। वह परमेश्वर का रूप हो गया। उनको फिर धैर्य बंध गया। जब तक 'जागती ज्योति' का उपासक नहीं होता इसको वस्तु प्राप्त नहीं होती।

समझ न परी बिखै रस रचिइओ जसु हरि को बिसराइओ।

(जैतसरी म. ९ पृष्ठ ७०२)

इसको समझ नहीं आई। विषयों के रस में लिपट गया। वह ना समझ आने के कारण, उसी तरफ चला गया।

मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।
पर दारा निंदिआ रस रचिउ राम भगति नहि कीनी।।रहाउ।।
मुकति पंथु जानिउ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ।।
अंति संग काहू नहीं दीना बिरथा आपु बंधाइआ।।
न हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।।
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई।।
मानस देह पाइ पद हरिभजु नानक बात बताई।।

(सोरठि म. ९ पृष्ठ ६३१)

इसलिए माया में संलग्न रहने से उस वस्तु की प्राप्ति नहीं हुई।

मन रे कउन कुमति तै लीनी।।

हे मन ! तू कौन-सी ओछी बुद्धि में फँस गया। तूने परमेश्वर का भजन करना था। परन्तु निकृष्ट बुद्धि में लग कर पराई स्त्रियों, पराए धन में लगके संसार की निन्दा में फँस गया। मुक्ति का मार्ग तो तूने जाना ही नहीं। आयुपर्यन्त तू धन जोड़ने में लगा रहा। अन्त में इस धन ने तेरा कोई साथ नहीं देना। तू व्यर्थ इस के पाश में बंध गया। न तूने प्रभु का भजन किया न गुरु की सेवा की। न अपने

स्वरूप का ज्ञान हुआ। वह निरंकार परमेश्वर तेरे हृदय में है। तू संसार रूपी जंगल में घुसा, विषयों में खोजता रहा। वहां से आज तक परमेश्वर किसी को प्राप्त हुआ ही नहीं है। तेरी बुद्धि एकाग्र हो कर उस आत्मा का स्पर्श प्राप्त नहीं करती। जब तू बारंबार भजन सिमरन करेगा, तो तेरा मन एकाग्र हो जाएगा। यदि तू अविनाशी पद की प्राप्ति चाहता है तो सदा नाम का सिमरन कर। इसलिए भाई, निष्काम सिमरन, सेवा और निष्काम कर्म के बिना उस आत्म पद की प्राप्ति नहीं होगी।

सेवा करत होइ निहकामी।।
तिस कउ होत परापति सुआमी।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २८६)

इसलिए भाई ! इस अवस्था से ही, आत्म पद की प्राप्ति है।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २६६)

सारे धर्मों से एक बड़ा धर्म है जिसके बराबर कोई धर्म नहीं। तूने प्रभु के नाम का सिमरन करना था और निष्काम सेवा करनी थी। निष्काम सेवा, सिमरन से धर्म की प्राप्ति होती है और जिसके फलस्वरूप परम धर्म परमात्मा की प्राप्ति है। जब इसको परमात्मा प्राप्त हो गया तो इसका धैर्य बंध गया जिससे मन शान्त हो जाता है। आत्म वस्तु की प्राप्ति के बिना आज तक किसी को शांति नहीं आई। इसलिए गुरु साहिब कहते हैं–

वैसाख धीरनि किउ वाढीआ।।

बैसाख के महीने द्वारा गुरु साहिब कथन करते हैं तुझे धैर्य किस तरह बंधे। धैर्य तब बंधे यदि तेरा मन सिमरन द्वारा परमेश्वर के साथ एक हो जाये।

जो एहु जाणहु सो ऐहु नाहि।।
जानणहारे कउ बलि जाउ।।

(रामकली म. ५ पृष्ठ ८८५)

जहाँ तक सांसारिक बुद्धि की पहुँच है वहाँ तक परमेश्वर नहीं होता। वहाँ तक तो ध्यान, ध्याता और ध्येय है। यह त्रिपुटी भी मिथ्या है। जहाँ तक तुम्हारी बुद्धि की पहुँच है वहाँ तक परमेश्वर नहीं है। तेरे अन्दर एक जानने वाला है जो तेरे सब विचारों को, कामनाओं को और सब वासनाओं को जानने वाला है। वह परमेश्वर है। उस जानने वाले प्रभु पर समर्पित हो जाओ।

जाननहार प्रभू परबीन।। बाहरि भेख न काहू भीन।।

(गऊड़ी सुखः पृष्ठ २६६)

बाहरी आडम्बरों से वह परमेश्वर रीझता नहीं है।

साच कहौं सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीउ तिन ही प्रभ पाइओ।।

(दशम् ग्रन्थ)

जिसको पूर्ण प्रेम प्राप्त हो गया, वह परमेश्वर उसको प्राप्त हो गया। अपने प्रेमी को परमेश्वर स्वयं बुला लेता है। इसलिए भाई इसका धैर्य, आत्मा की प्राप्ति से बंधता है।

जिना प्रेम बिछोहु।।

जिनको प्रेम विरह ने नहीं सताया, जिनको प्रेम नहीं प्राप्त हुआ उनको धैर्य कैसे बंधेगा ? प्रेम के साथ ही प्रेगा पद प्राप्त होता है। जब तक पूर्ण प्रेम प्राप्त नहीं होता इसको परमात्मा की प्राप्ति नहीं है। इसलिए भाई ! गुरु साहिब कथन करते हैं–

हरि साजनु पुरखु बिसारि कै.....

प्रभु जो लोक परलोक का मित्र है–

तैडी बंदसि मै कोइ ना डिठा तू नानक मनि भाणा।।
धोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा।।

(सलोक म. ५ पृष्ठ ९६४)

वह जो मित्र है, लोक परलोक का रक्षक है उसको जब तक जीव मन में नहीं बसाऐगा, प्रेम के साथ याद नहीं करेगा–

लगी माइआ धोहु।।

तब तक इसको माया का "धोहु" लगा रहेगा। धोहु होता है छल। यह माया छल करती रहेगी। माया इसको किसी न किसी ढंग से छलती रहेगी, क्योंकि इसका प्रेम सहित, प्रभू में मन तो जुड़ा नहीं। इसलिए भाई ! तब तक माया की 'धोहु' इस को लगी रहेगी। तब तक यह जीव माया के आधीन है। जब परमेश्वर का प्रेम प्राप्त हो गया नाम द्वारा, जब नाम के साथ सदा मन जुड़ गया। इसलिए भाई ! नाम के साथ जुड़ने के बिना इसको माया का छल लगा रहेगा–

पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु।।

"पुत्र, कलत्र और धन" यह तीनों साथ नहीं जाएँगे। पुत्र का अर्थ है पुत्र, 'कलत्र' का अर्थ स्त्री और धन का धन। कोई भी किसी के साथ नहीं जाएगा। अंत समय इसको कोई साथ नहीं देगा। वह जो प्रभु अविनाशी है, इसका रक्षक है, वही इसको क्षमा करने वाला है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २७७)

वह अविनाशी जो परमेश्वर है, इसको सुमति देने वाला है और जो क्षमा कर दिया जाता है उसको कोई भी भय नहीं रहता।

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु।।

सारी दुनियाँ मोह में फंस कर मर गई। मोह एक ऐसी वस्तु है इसमें जब तक इसका मन लगा रहता है तब तक कोई शांति नहीं मिलती। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार यह पांच विकार हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध, यह पाँच विषय हैं। जब इसका मन विषय विकारों में लगा रहता है,वो सारी सृष्टि मोह में फंस कर जन्म-मरण में चली गई और वह पार न हुआ। वह जो भी माया का धंधा है, वह झूठा है। सत्य तो इसमे है ही नहीं। सत्य तो एक परमेश्वर है।

आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु।। नानक होसी भी सचु।।

(जपुजी पृष्ठ १)

सत्य तो एक है। झूठ और सच दो पदार्थ हैं। झूठ आज तक कभी भी सच नहीं हुआ। सत्य कभी झूठ नहीं हुआ। इसलिए झूठे धन्धों में फंस कर सारी आयु 'पलच पलच' के मर गया, इस को कोई चीज़ प्राप्त नहीं हुई।

इकसु हरि के नाम बिनु.....

एक जो परमेश्वर है, एक उसके नाम से बिना–

ऐकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई।।

(दखनी० ओं० पृष्ठ ९३०)

साहिब मेरा एको है।। एको है भाई एको है।।

(आसा म. १ पृष्ठ ३५०)

एकम एकंकार निराला।। अमरु अजोनी जाति ना जाला।।
अगम अगोचरु रूप न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

(बिलावल म. १ पृष्ठ ८३८)

वह खोज करके, जो 'एक' था, हम सब के हृदय में, उसका ज्ञान प्राप्त हो गया। तुम कुछ अपना विचार करो, तुम्हारे हृदय में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, चार संकल्प बदलते रहते हैं। कभी चिन्तन करता है, जब चित्त होता है, जब अहंकार होता है तो अहं करता है, कभी बुद्धि के साथ निश्चय करता है। जब मन होता

है तो संकल्प करता हैं। परन्तु ये चारों परमेश्वर नहीं हैं। यह तो संकल्प हैं। इन्होंने तो जैसे कैसे अपने अपने समय पर आना है और अपना प्रभाव दिखाना है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भजनिधि ऊतरहि पारि।।

(सलोक म. ९ पृष्ठ १४२७)

तू संसार से पार तभी हो सकता है, जो सब के हृदयों में परमेश्वर है, वह तुझे प्राप्त हो जाए। वह हृदय में है।

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी।।

(सलोक म. ५ पृष्ठ ५२०)

वह देखता भी है और जानता भी है। जो भी तुम्हारा विचार होता है, वह उसको देखता भी है और जानता भी है। वह देखने वाला और जानने वाला जो है, वह परमात्मा है—

मूई सुरति बादु अहंकारु।। ओहु न मूआ जो देखणहारु।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।। रतन पदारथ घट ही माही।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै।। भीतरि होदी वसतु न जाणै।।
हउ न मूआ मेरी मूई बलाइ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।। मरता जाता नदरि न आइआ।।

(गऊड़ी म. १ पृष्ठ १५२)

वह तो गुरु की कृपा से प्राप्त होना हैं। और कोई उसका मालिक नहीं है। गुरु घर में—

धरि महि ठाकुरु नदरि न आवै।।
गल महि पाहणु लै लटकावै।।
भरमे भूला साकतु फिरता।।
नीलु बिरोलै खपि खपि मरता।। रहाउ ।।
जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता।।
ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता।।
गुनहगार लूण हरामी।।
पाहण नाव ना पारगिरामी।।
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता।।
जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता।।

(सूही म: ५ पृष्ठ ७३९)

गुरु को मिले बिना, वह ठाकुर, मालिक तुझे प्राप्त नहीं होगा।

गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता।।
जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता।।

(सूही म. ५ पृष्ठ ७३६)

गुरु को मिले बिना, वह ठाकुर स्वामी तुझे प्राप्त नहीं होगा। गुरु साहिब कहते हैं उस गुरु को मिल कर हमने ठाकुर को जाना है, उसे देखा है। वह तो परिपूर्ण है, सब के हृदय में बैठा है–

घट घट मै हरिजू बसै।।

(सलोक म. ९ पृष्ठ १४२७)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति

(गीता अध्याय १८, ६१)

राम के ज्ञान से सर्व भूतों में, सारी जनता के हृदय में, भगवान को देखा। फरीद साहिब ने कहा है–

बसी रुख हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि।।

(स. फरीद पृष्ठ १३७८)

फरीद साहिब कहते हैं वो आयुपर्यंत जंगल ढूढंते रहे परन्तु परमेश्वर तो सबके हृदय में बसता है। वह पारखी है।

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।

(म. १ पृष्ठ १४४)

वह सब वस्तुओं की परख करता है। कबीर साहिब जी ने तो 'बीजक ग्रन्थ' में यही फैसला किया है कि वह जो पारखी सबके विचारों को परखने वाला है, जानने वाला है, वह परमेश्वर है। इसलिए जब तक पूर्ण गुरु के साथ मिलाप नहीं होता, नाम का सिमरन नहीं होगा। जब तक मन पूर्ण एकाग्र नहीं होता, तब तक वह प्राप्ति नहीं होती। इस लिए गुरु साहिब जी कहते हैं, भाई ! वह तो गुरु को मिलके ही प्राप्त होगा–

इकसु हरि के नाम बिनु.....

एक जो हरि का नाम है, बस और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। नाम के साथ जब मन एकाग्र हो गया।

नाम सांगे जिस का मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २८१)

नाम के साथ जब मन एकाग्र हो गया, मन एकाग्र होते ही, नाम के साथ 'नामी' प्राप्त होता है। इसलिए एक प्रभु के नाम के बिना–

अगै लईअहि खोहि।।

इसका कोई भी काम आगे सहायता नहीं करेगा। सब गुम हो जाएंगे। मिथ्या है। जो कुछ इसने संसार में किया। आगे कोई काम नहीं आएगा। आगे सब छीने जाएंगे। यह सारा ही जो तुमने यत्न किया है। यह सारा निष्फल गया। यह सब छीन लिए गए। पुराणों में लिखा है—जब यह जीव जाता है, इसको प्यास लगती है। यह एक पात्र पानी का मांगता है। वह कहते हैं जो तुमने किया वही देंगे। यहाँ तक वह आगे भी नहीं जा सकता। इसलिए भाई ! आगे सब छीन लिए जाएंगे। और तेरा कोई भी पदार्थ तेरी सहायता नहीं करेगा। एक सहायता करने वाला परमेश्वर है।

अंत बार नानक बिनु हरि जी
कोऊ कामि न आइओ।।

(सोरठि म. ९ पृष्ठ ६३४)

एक परमेश्वर के बिना और कोई काम नहीं आया।

दयु बिसारि बिगुचणा.....

'दयु' नाम है प्रेरक परमेश्वर का। दशम पातशाह ने कहा, 'दयु' की बड़ी कृपा हुई, 'दयु' ने बड़ी दया की। 'दयु' नाम है प्रेरक परमेश्वर का। वह जो सब का प्रेरक, मालिक रक्षक है। उसको जो भी भूलेगा, बिसारेगा, उसका कल्याण नहीं होगा। दरगाह में उसका कोई भी साथी नहीं होगा। सिवाय परमेश्वर के और कोई साथी नहीं। दरगाह में तो इसकी एक, नाम ने सहायता करनी है। 'नाम' और 'नामी' अभेद हैं। 'नाम' और 'नामी' दो नहीं हैं। जब नाम के साथ इसका मन एकाग्र हो गया तो इसको परमेश्वर की प्राप्ति हो गई। यदि नाम के साथ इसका मन एकाग्र न हुआ तो, वह जो अन्दर प्रकाशक है, वह तो तुम्हारे संकल्पों में बैठा है, उस को प्राप्त नहीं कर सकते।

घट घट मै हरि जू बसै।।

(सलोक म. ९ पृष्ठ १४२७)

यदि वो तुम्हारे हृदय में न हो तो इन विचारों को देखो किसके द्वारा, और तुम जानो किसके द्वारा।

दाना बीना साई मैडा।।

(मारू म. ५ पृष्ठ ४२०)

वह तो एक ही है और तो कोई है नहीं। उसको साक्षी कहते हैं। इसको ही द्रष्टा कहते हैं। सब जितने नाम हैं, उस परमेश्वर के हैं। यदि तुमने एक, व्यापक,

परमेश्वर, प्रेरक, मालिक को भुला दिया तो तुम्हें अभाव आ जाएगा भाव फिर तुम्हारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। बस संसार के कार्य ही होते रहेंगे। इसलिए भाई ! उसको भूलना नहीं–

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि ना जाई।।

वह सभी जीवों का एक दाता है, परमेश्वर है, वह मुझे कभी भूले न। यह गुरु साहिब की एक विशेष पंक्ति है। उसको कभी भूल कर दुनियां का कोई काम नहीं करना है।

प्रभ बिनु अवरु ना कोइ।।

प्रभु के बिना और इसका रक्षक कोई नहीं है। प्रभु नाम प्रेरक का है। सब के हृदय में बैठ कर प्रेरणा करता है। इसके कर्मों के अनुसार प्रेरणा करता है। जो नाम जपता है उसकी रक्षा आप करता है।

जाकउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुख० पृष्ठ २७७)

इसलिए उसकी रक्षा करता है। प्रेरणा देने वाला सबको क्षमा देता है। इसलिए भाई ! परमेश्वर के बिना इसको क्षमा करने वाला कोई नहीं है। इसका रक्षक कोई नहीं है–

प्रीतम चरनी जो लगे.....

जो सारी दुनियां का प्यारा है, सब का 'आपा' (आत्म स्वरूप) है, वह सब का प्यारा है। उस परमेश्वर के चरणों में जो लगेगा। चरण उसके क्या हैं ? वह है नाम, जो भी उस नाम को जपेगा, उस नाम के साथ मन एक हो गया, पूरी तरह से जुड़ गया। उस नाम के बिना किसी का मन प्रीतम के चरणों में नहीं लगा, उसका कभी कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। परमेश्वर के नाम रूपी चरणों में जो जुड़ जाएगा, उसके सब काम सिद्ध हो जाएंगे। वह कोई बाहर तो है नहीं, कहीं अलग तो है नहीं, और किसी जगह तो मिलना नहीं। गुरु साहिब इसलिए लिखते हैं

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।। रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।
तैसे ही हरि बसै निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।।

(धनासरी म. ९ पृष्ठ ६८४)

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।।

(सोरठ म. ९ पृष्ठ ६३२)

वह सब जगह निवास करता है। सब जगह व्यापक है, परिपूर्ण है, तेरे हृदय में है।

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।।

अन्त में यह बात कही–

काहे रे बन खोजन जाई।। सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।।

वह तेरे साथ है। कहीं अलग नहीं। वह व्यापक जो है। जो वस्तु व्यापक है, वह दुनियां की वस्तु नहीं है। वह जो सब जगह व्यापक है, हमारे हृदय में भी व्यापक है। इस लिए भाई ! जैसे पुष्प में सुगन्ध बसती है। "पुहप" नाम है फूल का, इस तरह वह सारे फूलों में होती है। 'मुकर' नाम है दर्पण का, जैसे दर्पण हर एक की शक्ल दिखा देता है। वह मुख उसको, उसमें चाहे उलटा दिखे या सीधा परन्तु दिखेगा जरूर। भाई ! वह निरन्तर भासता है, सब जगह बसता है, परन्तु तुम अपने हृदय में देखो, कहीं और न खोजो। तुम अपने हृदय में खोज करो। वह बाहर भी है और भीतर भी है–

अंतरि बसे बाहरि भी ओही। नानक दरसनु देखि सभ मोही।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २९४)

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।। कला धारि जिनि सगली मोही।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २८७)

इसलिए वह परमेश्वर सब जगह व्यापक है। इसलिए भाई ! नवें पातशाह सार की बातें बताते हैं। जितनी देर तुम अपने आप को नहीं पहचानोगे अपने आप को नहीं जानोगे, वह भ्रम जो है, कभी नहीं मिटेगा।

भरमे सुरि नर देवी देवः।। भरमे तिय साधिक ब्रहमेवा।।
भरमि भरमि मानुख डहकाये।। दुतर महा बिखम इह माए।।
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ।। नानक तेह परम सुख पाइआ।।

(गउड़ी बावन अखरी पृष्ठ २५८)

जब तक इसका भ्रम निवृत्त नहीं होता। भ्रम और भय तब मिटेगा जब यह अपने आप को जान लेगा। 'आपा' तुम्हारा परमेश्वर है, 'आपा' तुम्हारा चेतन है। वह सारी सृष्टि को जानने वाला है। हम सबका मालिक है। वह तुम्हारा अपना 'आपा' है और कुछ नहीं। यह जो भ्रम की काई है। भ्रम नाम है झूठी वस्तु का।

रज्जु में सर्प होता नहीं। सीपी में चांदी प्रतीत होती है। पास जा के देख लो। चांदी नहीं होती। जब दीपक के साथ देखें तो रस्सी सर्प नहीं होती।

माधवे किआ कहीऐ भ्रम ऐसा।। जैसा मानीऐ होइ न तैसा।। (रहाउ)।।
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी।।
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी।।

(बाणी भगत रविदास जी पृष्ठ ६५७)

रविदास जी जब ईश्वर के चरणों में गए, उन्होंने कहा तू इतना घबरा रहा है। इतना क्यों बुद्धिहीन हुआ है। वह कहता हम जो अनात्मा को आत्मा जानते थे, सो है नहीं, झूठ है। इसलिए हमें ज्ञान नहीं था। यह भ्रम है, जैसा मानते हैं, होता नहीं है। नरपति, राजा, सिंहासन पर बैठा सो गया। यह कथा तो लम्बी चौड़ी है। जब सो गया तो उसको भूख लगी, भूख लगी तो मांगने गया। उसको कुछ न मिला, मिली तो खिचड़ी मिली और जब वो खिचड़ी मिली तो पीछे से कुत्ता आ गया। उसने झपट के सारी खिचड़ी छीन ली तो खिचड़ी गिर गई। उसने कहा ऐसा दुनियाँ में मन्द भाग्य वाला है कोई, जिस को कुछ न मिले, यदि मिले तो छिन जाए। इसलिए भाई ! स्वप्न में वो भिखारी हो गया, वह राज गद्दी पर बैठा था, परन्तु उसने कितना दुःख, भ्रम के कारण पाया। रविदास जी कहते, वही गति मेरी हुई। इसलिए महाराज भ्रम में भूला जीव क्या नहीं करता। इसलिए मैं बुद्धिहीन हुआ फिरता था। अपने आपको जानने से ही भ्रम की निवृत्ति है—

चीनत चीतु निरंजन लाइआ।। कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ।।

(गउड़ी कबीर जी ,पृष्ठ ३२८)

अपने आप को पहचान कर, जब इसका ध्यान एक हो जायेगा। जब इसका ध्यान अखण्डाकार, आत्माकार, ब्रह्माकार हो गया तो क्या पाया—

चीनत चीतु निरंजन लाइआ।। कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ।।

(गउड़ी कबीर जी पृष्ठ ३२८)

जब इसका मन नाम के साथ एक हो गया तो नाम, नामी तो अभेद हैं। इसको उस वस्तु की प्राप्ति हो गई। इसलिए जब तक इसको वह वस्तु प्राप्त नहीं होती, शांति नहीं मिलती। तब तक इसको जो भी प्राप्त हुआ वो अन्त को इसके संग जाने वाला नहीं है। इसकी सहायता करने वाला नहीं है।

तिन की निरमल सोइ।

जिस को वह आत्म वस्तु प्राप्त हो गई, उनकी शोभा निर्मल हो गई। कबीर, रविदास, नामदेव, जितने भी संसार में भक्त हुए उनकी शोभा हुई।

नानक की प्रभ बेनती.....

श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं, एक मेरी प्रार्थना है, परमेश्वर के आगे, श्री गुरु नानक देव जी स्वयं कथन करते हैं।

प्रभ मिलहु परापति होइ।।

हे प्रभु, आप मिलो और प्राप्त हो जाओ, तो मेरा जन्म-मरन कट जाएगा, तो मेरी निर्मल शोभा संसार में फैलेगी।

वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ।।

जब परमेश्वर की कृपा प्राप्त, पूर्ण संत मिल जाएँ तो—

संत संगि अंतरि प्रभु डीग।। नामु प्रभु का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुखः पृष्ठ २९३)

तो हमने संतों के संग के साथ, वह परमेश्वर अपने हृदय में देख लिया। अब मुझे नाम कभी भूलता नहीं है। तुलसी दास ने भी लिखा है।

पुण्य पुंज बिनु मिलहि न संता।।
सत संगति संसृति कर अंता।।

(मानस-उत्तरकाण्ड ४५, ६)

कहते हैं, पुण्य कर्मों के जब तक, इसके समूह नहीं इक्ट्ठे होते। निष्काम पुण्य जब इसके पूर्ण हो जाते हैं, इसको संत प्राप्त हो जाता है। फिर कहते, क्या हो जाता है, संसार का अन्त हो जाता है। वो जिसको अपने स्वरूप की प्राप्ति हो गई, उसके संसार का अन्त हो जाता है। वो संत जैसे गुरु रामदास जी संत हुए, उनके साथ हमें आत्मा, परमात्मा की प्राप्ति हुई है और अपने भीतर हमने परमेश्वर देखा। जब तक वह संत नहीं प्राप्त होते, तब तक परमेश्वर की प्राप्ति नहीं होती। तब तक शांति नहीं होती।

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ।।
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ।।

बोलो—

सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१०

सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ १ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।
सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु।।
जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु।।
किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु।।
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस ते जापै तथु।।१।।
मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता।।
नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता।। रहाउ।।
जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार।।
तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार।।
जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार।।
सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार।।२।।
सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु।।
मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु।।
मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु।।
गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुरु पासि।।३।।
मेरा तेरा छोडीअै भाई होईअै सभ की धूरि।।
घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि।।
जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि।।
करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि।।४।।
प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु।।
तिसु भावै ता मेलि लऐ भाई हिरदै नाम निवासु।।
गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु।।
प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु।।५।।

गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ।।
रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ।।
करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ।।
जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ।।६।।
बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ।।
ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ।।
रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ।।
जिसु गुरु साचा भेटिऐ भाई पूरा तिसु करमाउ।।७।।
तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि।।
सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि।।
साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि।।
जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि।।८।।
अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु।।
करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु।।
मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु।।
नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु।।८।।१।।

(पृ० ६३६)

धरनि गगन नव खंड महि जोति सरूपी रहिउ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतखि हरि।।

(सवैये पृ० १४०६)

आप को पता होगा इस बात का, यह लम्बी-चौड़ी भूमिका है। 'भट्टों' को शाप मिला हुआ था, उन्होंने भगवान् के आगे बहुत प्रार्थना की, हे महाराज ! हमारा यह शाप किस तरह दूर हो। हमें यह बताया जाए। हम गलतियों के पुतले हैं। उन्होंने कहा पांचवी गद्दी गुरु अर्जुन देव विराजमान होंगे। ज्योति और युक्ति एक ही होती है। ज्योति कभी बदली नहीं है और युक्ति गुरु प्रेमाभक्ति भी कभी बदली नहीं है। यह सिद्धान्त गुरु साहिब का अटल है।

सबदु जिती सिधु मंडली कीतोसु आपणा पंथ निराला।।

(वार भाई गुरदास जी)

शब्द के साथ जब गुरु नानक साहिब ने सिद्ध मंडली को जीत लिया तो अपना पंथ 'प्रेमाभक्ति' को अलग कर लिया। उनका पंथ हठ योग का था। गोरख, हठ योग का शिरोमणि आचार्य था। परंतु जब गोरख के साथ, गुरु साहिब का संवाद हुआ तो प्रेमाभक्ति मुख्य हो गई और साथ ही गोरख मतवादियों के लोगों ने कह दिया कि हमें नानक मत ठीक लगता है। यह प्रेमाभक्ति है, प्रत्येक व्यक्ति इसे कर सकता है। गृहस्थी भी कर सकता है, और योग जो है, हठ योग हर आदमी नहीं कर सकता। (वह योग) गुरु के पास 'योगी हो', तभी वह हो सकता है। इसलिए उसका नाम 'नानकमता' पड़ गया। 'नानकमत्ते' का अर्थ है हमने नानक मत्त को अपने अनुसार मान लिया। भाई ! यह हमें उपयुक्त है। पहले इसका नाम गोरखमता था। इतिहास में बहुत लिखा है। इसलिए प्रेमाभक्ति का मार्ग है और पंचम गुरु के बारे में 'भट्ट' ने आप लिखा है भाई यह साक्षात् जो व्यापक है, परिपूर्ण, यह सगुण स्वरूप में तुम्हारे सामने बैठा है। जिसने हमें ज्ञान भी दिया है। यह जो हमारा शाप था, उसका अंत कर दिया। फिर इन 'भट्टों' ने सवैये का उच्चारण किया। वो गुरबाणी में आप पढ़ते हो। बोली भी ठीक वही है। इसलिए 'मथुरा भट्ट' ने यह बात कही है। पंचम गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज इस बात का कथन करने वाले हैं परंतु साथ ही यह बात भी है।

सोरठि राग में अब पढ़ो भाई.....

सभु जगु जिनहि उपाइया भाई .....

आप लोग सारे कृपा करके, दया करके, मेहर करके, बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु। सतिनाम श्री वाहिगुरु। यह मंगल ग्रन्थों में सबसे श्रेष्ठ लिखा है। नाम का मंगल। ग्रन्थों में नाम का सबसे बड़ा नाम मंगल होता है। इसलिए हमने भी, जब पढ़ा है—नाम का मंगल करते हैं।

सोरठि महला ५

सोरठ राग में पंचम पातशाह महाराज कथन करते हैं—

घर १ असटपदीआ

पहली तार में गाना है। असटपदिआं शुरू होती हैं।

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

एक जो परमेश्वर है, वह सतगुरु की कृपा से प्राप्त होता है। यह नियम है।

गुर प्रसादि।।

'जपु' आगे आएगा। जप तो विधि वाक्य है। 'जपु' के आगे दोनों तरफ दो दो डंडे होते हैं। उसका अर्थ है 'जपु' इस तरफ भी लगेगा और उस तरफ भी लगेगा। 'जपु' विधि वाक्य है। भाई, गुरु से नाम लेके जपना। तुझे ओंकार प्राप्त हो जाएगा।

सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई .....

वह कौन है ? १ ओंकार है जिसने सारी सृष्टि की रचना की, पालना की और नाश किया। वह ईश्वर है।

करण कारण समरथु।।

सब कुछ करने को और कराने को वह परमेश्वर समर्थ है। सर्वज्ञ है। सर्वशक्तिमान् है।

जीउ पिंड जिनि साजिआ भाई .....

तेरा जीव और तेरी देह तेरी समस्त इन्द्रियां, तेरे प्राण, जो कुछ है वह उस परमेश्वर ने बनाया है। फिर क्या किया सर्जना करके।

दे करि अपणी वथु।।

यदि अपनी वस्तु-आत्मा तेरे अन्दर न रखता ! और तो चेतन शक्ति कोई है नहीं। जितना तेरा शरीर है, तेरी इन्द्रियां हैं, अंतःकरण, मन-बुद्धि, चित्त अहंकार है, प्राण है, यह सब तो जड़ हैं। शरीर भी जड़ है, पांच तत्त्वों का। यदि कहीं वह अपनी वस्तु अन्दर न रखता तो किसके साथ प्राणों को चलाता। किसके साथ तू इन्द्रियों को देखता, कैसे तू देखता, इन्द्रियों द्वारा देखता, झरोखों से देखता। अपनी जो वस्तु थी, वह आत्म वस्तु तेरे अन्दर रखी। यह भी तुम देख लो अपना विचार करके, तुम्हारे अन्दर विचार उठते हैं परंतु विचारों को देखने वाला कौन है ? देखने और जानने वाला चेतन ही होता है।

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी।।

(सलोक म० ५ पृष्ठ ५२०)

'दाना' का अर्थ है जानने वाला, 'बीना' का अर्थ है देखने वाला। वह एक परमेश्वर ही है और कोई नहीं हो सकता।

नानक सार न जाणा तेरी।।

गुरु साहिब कहते हैं—लोगों ने तेरी सार नहीं जानी, वास्तविकता नहीं जानी। उनको पता नहीं लगा, जो परमेश्वर ने अपनी वस्तु रखी है, उसका

तुम्हें पता नहीं कि यह परमेश्वर की वस्तु है। यह प्रकृति का सामान तुम्हारे अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार पांच ज्ञान इन्द्रियां, पांच कार्मेन्द्रियां, पांच प्राण, स्थूल शरीर, यह जो सब कुछ है यह तो प्रकृति का है। प्रकृति तो जड़ है। प्रकृति माया को कहते हैं वह तो–

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ।।
चउथे पद कउ जो नरु चीनै तिन ही परम पदु पाइआ।।

(राग केदारा कबीर जी पृ० ११२३)

चौथा पद तो तुम्हारे पास एक वस्तु है। वह परमेश्वर ने तुम्हारे अंदर आप रखी है। रखा क्या है, वह तो व्यापक है।

जनमि न मरै न आवै न जाइ।।
नानक का प्रभु रहिउ समाइ।।

(भैरऊ म० ५ पृ० ११३६)

नानक का प्रभु तो सर्व व्यापक है। वह तो चारों वर्गों में है। कोई वर्ग ऐसा नहीं–

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(सलोक म० ९ पृ० १४२७)

देखो तो ! किसके हृदय में परमेश्वर नहीं है ? यह तो जो तुम पढ़ोगे। राज योग शुरू किया है। गुरु साहिब ने हठ योग नहीं माना। हठ योग का खंडन, सकाम कर्मों का खण्डन। निष्काम कर्म माने हैं। परन्तु अत्यंत गहन जाकर निष्काम सेवा मानी है।

सेवा करत होइ निहकामी।। तिस कउ होत परापति सुआमी।।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २८६)

जब हरिमंदिर साहिब की गुरु साहिब ने स्थापना की, बनाया, सब कुछ हुआ। उसमें भाई 'बहलो' भी थे। जिसको कहा भाई ! 'बहलों सब से पहलों', और बुलवाया उसको जबरदस्ती था। शिष्य भेज के, उन्होंने कहा वह हमारा पुराना शिष्य है। उसको लेके आओ और वह तुम्हें जवाब देगा क्यूंकि उस पर सत्ता का प्रभाव है। उस समय मुसलमानों की सत्ता थी। जब वह नहीं आएगा, तुम जबरदस्ती पकड़ना। दो आदमी आगे लगना, चार पीछे से धक्के मारना, उसको कहना कि तुम्हें गुरु साहिब की आज्ञा हुई है। हमने तुम्हें लेके जाना है। तू पुराना सेवा करने वाला शिष्य है। लोगों को कहना

भाई ! यह हमारे गुरु साहिब का शिष्य है और तुम्हारा कोई मतलब नहीं। गुरु जी के शिष्य भाई 'बहलो' को पकड़ लाए। इतिहास कहता है जब भाई 'बहलों' सतलुज के बीच नाव में बैठे, तब तक वह नहीं माना। उसके पास लोहे की छड़ी जैसी थी। क्यूंकि वह मुखिया था गांव का। चौबूतर उसके घर में था, जिस ऊपर वह बैठता था। मुसलमानों के समय वे लोग चौधरी बनते थे। उसने कहा मैं तो सुलतान को मानने वाला हूं। मैं तुम्हारे साथ क्यों जाऊं ? वह जब वहां आया नाव में बैठा, गुरु साहिब ने उसको पिछला सब कुछ दिखा दिया। उसने छड़ी घुमा के सतलुज नदी में फेंक दी। उसने कहा छोड दो। गुरु जी के शिष्यों ने कहा अगर तू फिर भाग गया। भाई बहलो ने कहा—मैं तो अब भागने योग्य रहा ही नहीं। भागना क्या था, भागने योग्य रहा ही नहीं। मुझे सारा पता लग गया। गुरु साहिब ने वह चीज़ दिखा दी। मैं पीछे गुरु घर का सेवक था और सेवा करता था। आप मुझे छोड़ दो। उसने कहा, जब वह नाव से उतरे तो सिक्खों ने भाई बहलो को छोड़ दिया। वह आगे चल पड़ा। सिक्खों को उसने साथ न मिलने दिया। वह सबसे आगे जा रहा था। उसने कहा भाई अब नहीं भागूँगा। वह गया और जाके गुरु साहिब के आगे विनती की—महाराज ! बड़ी कृपा की, मैं भूलने वाला हूं, भूल गया था मैं कुछ सत्ता के नशे में आ गया था। आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है। उन्होंने (गुरु साहिब) कहा बस ठीक है। उसने ईंटों के भट्ठे पकाए, वह आप पढ़ोगे, बहुत अच्छी तरह पकाए। जब हरिमंदिर साहिब पूर्ण हो गया, ठीक हो गया, गुरु साहिब ने कहा "भाई बहलो सब से पहलो"। उन्होंने कहा हमने तुम पर कृपा करनी है। भाई बहलो ने कहा, महाराज, मैं तो निहाल हो गया हूं। गुरु जी ने कहा निहाल तो है पर मांग ज़रूर। उसने कहा महाराज जी हमारा गांव फफड़े हैं। अब उस गांव को 'भाई के फफड़े' कहते हैं। अब उस जगह एक तालाब भी है। आप में से कइयों ने देखा भी होगा। वहां पानी नहीं है। पानी की बड़ी कठिनाई है। गुरु जी ने कहा उस तालाब में जाके एक ईंट उठा दे। जितना पानी चाहेगा उतना ही आ जाएगा। वह गांव आया, उसने एक ईंट उठाई, सब जगह पानी हो गया। अब तालाब पक्का किया हुआ है, वहां लोग, बच्चे स्नान करते हैं, ठीक है। सब लोगों ने कहा भाई तूने बड़ा काम किया। तूने गुरु की सेवा की तो तेरे में शक्ति आई तो पानी आया। मुझ पर जो कृपा की वह तो तुम्हें पता ही नहीं; यह तो उनकी तनिक सी कृपा है। इसलिए उस गांव को 'भाई के फफड़े' कहने लग गए। भाई बहलो के पौत्र, राम राय के साथ गए थे। कभी राम राय उदास होता था। भाई मुझसे गलती हो गई। मैं मिट्टी मुसलमान की जगह मिट्टी बेईमान की कह बैठा। वह कहते आप चिंता क्यों करते हो, हम

आपके साथ हैं। वह (राम राय) कहते भाई वह पूर्ण पुरुष हैं, मेरे से भूल हो गई। आखिर जब गुरु साहिब पाऊँटा साहिब गए उन्होंने (राम राय) चिठी भेजी और एक आदमी भेजा कि गुरु साहिब को मेरी प्रार्थना करना कि मुझे एक बार दर्शन दें। उनको शंका थी कि मुझे दर्शन तो देंगे नहीं। जब बहुत प्रार्थना की तो गुरु साहिब ने कहा, हम नाव में जाएंगे। वहां आ जाना। वह (राम राय) संगत के साथ था, वह भी नाव पर चढ़ा और बाकी संगत खड़ी थी। उसने आकर गुरु साहिब के चरणों पर अपना शीश रख दिया और बहुत प्रार्थना की। वह कहते थे (गुरु साहिब) हम तेरे साथ हैं। संगत ने राम राय की तरफ पीठ कर ली। भाई ! हमने तो अपने गुरु के दर्शन करने हैं। उनको ये पता नहीं था कि ये पूर्ण शक्ति है और गुरु तो सर्वव्यापक होता है।

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ।।

(सलोक म० १ पृ० १२७६)

गुरु के भीतर स्वयं परमेश्वर ने बैठकर शब्द उच्चारण किया है। यह आपने गुरबाणी में पढ़ा है कि गुरु तो एक व्यक्ति होता है परंतु उसमें जब ज्योति प्रकट हो जाएगी, उसमें शक्ति आ जाएगी। बड़े-बड़े महापुरुषों में इसी तरह शक्ति आई। चाहे दादू है, चाहे ईसा, कोई ऐसे ही नहीं आती। इसलिए वह चरणों में गिर के रोया। उन्हें (गुरु साहिब) कहा, 'राम राय गुरु और संगत भूतनी'। फिर गुरु साहिब ने कहा, वह तुम कहते थे, लाओ तुम्हारे तीर देखें तो वह भी चरणों में गिर के रोने लग गए। गुरु साहिब ने कहा 'बहलो के कारण बख्श दिए, नहीं तो तुम्हें छोड़ना नहीं था। सो भाई बहलो, गुरु घर में मुख्य हुआ है उसके कारण तुम्हें बख्श दिया, उसके पौत्र थे, इसलिए भाई–

सेवा करत होइ निहकामी।। तिस कउ होत परापति सुआमी।।

(गउड़ी सुखः पृ० २८६)

उसको परमेश्वर प्राप्त हुआ, वो बख्शा गया। उस पर पूर्ण कृपा हो गई। इसलिए जब तक तुम परमेश्वर के प्यारे नहीं बनोगे, परमेश्वर की सेवा नहीं करोगे, उतनी देर वह फल नहीं होगा। अब जो यह सेवा जिन्होंने की है, उनको उत्साहित करो। क्या सुन्दर स्थान है, सड़क पास है बहुत साहस किया और बड़ा अच्छा किया और बनाया। तुमको भी बड़ा अच्छा लगता है। इसलिए जो गुरु की सेवा करेगा, जैसा उसका अन्तःकरण होगा, फल तो उस तरह का ज़रूर मिलेगा। यह नहीं पता उसका अन्तःकरण साकाम है या निष्काम है, यह तो हमें पता ही नहीं है परंतु फल तो होगा। इसलिए वह परमेश्वर जो कि निर्गुण से सगुण हुआ–

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।।
कला धारि जिनि सगली मोही।।

(गउड़ी सुख : पृ० २८७)

वह जो निर्गुण परमेश्वर है, 'भट्ट कहते हैं, यह गुरु अर्जुन देव परमेश्वर है, अब तुम दृढ़ निश्चय रखना। इन्होंने हमारे ऊपर कृपा की है। हमारे अन्दर इन्होंने स्वयं ज्ञान कराया है।

किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई .....

अब किस को यह बात कहें, किसने देखा है, देखने में तो चेतन आता ही नहीं है, अगली पंक्ति पढ़ो—

करता ऐकु अकथु।।

'करते' का कोई कथन नहीं कर सकता। जितनी देर तुम कोई विशेषण नहीं लगाओगे उतनी देर क्या कथन करोगे। वह तो अकथ कहानी है। कोई विशेषण 'सत्' लगाओगे तो परमेश्वर 'सत्' है। किसी जगह 'कर्ता' लगाओगे वह 'करता पुरख' हो जाएगा। करता पुरख, वह पूर्ण है, व्यापक है, परंतु विशेषण से कैसे बताओगे आप। आज तक परमेश्वर देखा है किसी ने ? कोई मुझे बताए, वह तो अनुभव रूप है। तुम अपने मन को हर समय देखते हो, तुम्हारे मन ने तो आज तक परमेश्वर नहीं देखा। मन तो जड़ है, बुद्धि भी जड़ है उसने कभी परमेश्वर नहीं देखा। देखा नहीं कह सकता। वह स्वयं जो है 'दाना बीना', 'दाना' नाम है जानने वाले का। 'बीना' नाम है देखने वाले का। देखने वाला तो द्रष्टा परमेश्वर ही है, और संसार में कोई द्रष्टा नहीं है, कोई बताओ भाई और कोई द्रष्टा हो तो। वह अकथ है। उस कर्त्ता का कथन कैसे किया जाए और देखा कैसे जाए, वह तो सर्वज्ञ है और आप अल्पज्ञ हो। जब तुममें सर्वज्ञता आ जाएगी तो तुम्हें यह पता लग जाएगा, तुम्हारा अनुभव, ज्ञान है और तो कोई वस्तु नहीं है। शेष तुम्हारी बुद्धि प्रकृति की है, मन प्रकृति का है, इन्द्रियां आदि सब प्रकृति के हैं। प्रकृति सारी देखने में आएगी। परंतु 'उसको' कौन देखे ? वह तो जागृत ज्योति है। मैं सरोदी वालों की हवेली में गया, संत मसतू आने वालों ने वहां उपदेश किया। बहुत सुन्दर उपदेश था। उनका बहुत सरल था। उन्होंने पहले यह धारणा लगाई, वह तीन धारणा लगाते थे, पहले खुद बोलते, फिर पुरष बोलते, फिर औरतें बोलतीं, "जपो खालसा जी सारे जागृत ज्याति को।" बस यह उन्होंने धारणा लगाई, फिर उन्होंने अर्थ किया, भाई तुम जागृत ज्योति के उपासक हो, देखना किसी और मार्ग पर न चले जाना। परन्तु हमारा जो इष्ट है, जागृत ज्योति है, वह जागृत ज्योति तुम्हारे

अन्दर भी है, वह तो मेरी या तुम्हारी चिमनी मैली है। परन्तु वह तो असंग है, निर्विकार है, शुद्ध है वह तो 'आपा' है। जब तक तुम अपने आपको नहीं जानोगे तब तक तुम्हें प्राप्त नहीं होगा।

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।। रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।।

(धनासरी मः ९ पृ० ६६४)

गुरु का ज्ञान यहां तक ही है। अब कहते हैं, उसका कोई उपाय।

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।

(धना. म. ९ पृ० ६८४)

जब तक तुम 'आपा' को नहीं जानोगे, उतनी देर तुम्हारा भ्रम नहीं मिटेगा और कोई उपाय ही नहीं है। भ्रम की काई को मिटाने का और कोई उपाय नहीं है। इसलिए भाई स्वयं को जानना है। जब कबीर को पंडितों ने इकट्ठे हो के कहा, तू तो फिर बावरा हो गया, तुझे तो पता ही नहीं। शूद्र है। कबीर साहिब ने कहा—

सो बउरा जो आपु न पछानै.....

(बिलावल कबीर जी, पृ० ८५५)

बावरा तो वो होता है जो स्वयं को न जाने, और तो कोई पागल होता ही नहीं है।

आपु पछानै त एकै जानै।।

पूछते हैं, जी—उसकी निशानी क्या होती है ? कहते जो सब में 'एक' देख ले तो वह अपने आप को, स्वयं को पहचान लेता है। वह जो तुम्हारे हृदय में है, वह चेतन है, व्यापक है, ज्ञान, दाना, बीना, द्रष्टा, वह सबके हृदय में है वह तो चारों वर्गों में है, किसी ऊपर परमेश्वर ने कृपा कर दी। उसका मन-दर्पण साफ हो गया तो उसको सब कुछ दिख गया। कबीर साहिब ने तो साफ ही कहा है—

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु।।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

(सलोक कबीर जी पृ० १३६७)

वह (कबीर साहिब) कहते, मन को शुद्ध करो पहले। मन तुम्हारा कब शुद्ध होगा, जब तुम अनेक में एक देख लोगे। यदि 'एक' अनेक में दिख

जाए तो मन शुद्ध हो जाएगा। एक उसने बड़ा सुन्दर ग्रन्थ लिखा। गुरु घर में उसने लिखा, गुरुमत और दुर्मत पर। उस ग्रन्थ में लिखा है, मैंने पढ़ा है—जो अनेक में एक देखता है, वह गुरुमत है। भाई कन्हैया को गुरुमत मिली, उसने अनेक में एक देखा। चाहे सिख और चाहे हिन्दू यह चाहे मुसलमान थे। उसने सबको एक सा पानी पिलाया। सबको किसी को नहीं पूछा तू कौन है ? कैसे है ? "आ गई न गुरुमत ! दशम पातशाह ने गुरुमत बख्शी। जो एक में अनेक देखता है वह दुर्मत होती है। उसमें भेद बुद्धि है। भई यह बुरा है, भला है, अच्छा है। वह कैसे शुद्ध हो जाएगा। इसलिए तुम सबमें एक देखो परंतु अपने अनुभव में टिके रहो। और जो व्यवहार है, वह शुद्ध करो जैसे किसी से पैसे लेने हैं, किसी को जगह देनी है, व्यवहार शुद्ध होना चाहिए। आत्मा तो हमेशा ही शुद्ध है। एक संत होते थे, वह कहते थे तू आत्मा का क्या शुद्ध करेगा, तू व्यवहार ही शुद्ध कर। परमार्थ तो शुद्ध पहले ही है। परमार्थ तो तेरा आत्मा, चेतन है, शुद्ध है, निर्विकार है, वह तो असंग है। तू अपने मन को शुद्ध कर। जब तेरे मन का दर्पण शुद्ध हो जाएगा, वह जो उसमें अग्नि जलती होगी, वह जैसे की तैसे दिखेगी। जब वह काली होगी चाहे तुम कुछ कर लो, तुम्हें वो ठीक नहीं दिखेगी। इसलिए वह जागृत ज्योति सब में है। वह तुममें भी है। मुझमें भी है। परंतु पहले मन को शुद्ध करो, मन को तुम इस तरह करो। मन को हमेशा तुम परमेश्वर के सम्मुख रखो। परमेश्वर के आदेश से तुम्हें परमेश्वर की कृपा होगी। तो तुम्हें उसका कथन आएगा। इसलिए भाई ! तुम अनेक में एक देखो। व्यवहार शुद्ध रखो। (हां जी चलो आगे)

गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई .....

कहते हैं—दो चीज़ों की प्रशंसा करो। एक तो पूर्ण गुरु की करो। हमारा जो मत है, 'गुरुता' से चला, परंतु अच्छी तरह बिचारोगे तो ज्योति से चला।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।।

(सवैये पृ० १४०८)

गुरु नानक तो उन्होंने कहाया। अवतार हमेशा आते हैं। कारक हमेशा आते हैं। तभी संसार का काम ठीक चलेगा। पर साथ लगती बात यह भी ज़रूर है गोबिन्द की और पूर्ण गुरु की, दोनों की पूजा अवश्य करो। जब पूर्ण गुरु ने कृपा की श्री अंगद देव को गुरु बना दिया।

नानक अंगद को बपधरा।।
धरम प्रचुर इस जग महि करा।।
अंगद अमरदास कहाइउ।।
जन दीपक ते दीप जगाइओ।।

(दशम् ग्रन्थ)

इसलिए ज्योति तो एक ही है, वही ज्योति यहां है। यह जो ज्ञान है, तुम कोई पंक्ति पढ़ो उसमें ज्ञान बोलेगा। मुझे एक आदमी ने कहा, जी यहां भी तो पूजा कागजों और मसि की लिखी है। मैंनें कहा ये तेरी मूर्खता है। कहता क्यों ? मैंने कहा पटवारी के कागजों को हम कभी जाके माथा टेकते हैं ? वो तो इतने पड़े होते हैं और किसी कागज को माथा नहीं टेकते। तूं यह कह पूजा ज्ञान की होती है। यह ज्ञान है, कि ज्ञान भी तुम्हें बताए, तुझे पता नहीं यह इलहाम है। यह ज्ञान आदि ज्ञान है। यह ब्राह्मण की कलम से ज्ञान नहीं बना। मीआं की कलम से ज्ञान नहीं बना। किसी और की कलम से ज्ञान नहीं बना। यह तो देववाणी है—

धुर की बाणी आई।।
तिनि सगली चिंत मिटाई।।

(सोरठि म० ५, पृष्ठ ६२८)

यह तो आदि वाणी है। यह तो शुद्ध ज्ञान है। इस शुद्ध ज्ञान को माथा नवाते हैं भाई ! शुद्ध ज्ञान का जलूस (आदर करते हैं) निकालते हैं। यह भाई ! ज्ञान की पूजा है। और कोई नहीं। उसने फिर कहा बात तो ठीक है, यदि ऐसा हो तो पटवारी के कितने कागज पड़े होते हैं। उनको जाकर मस्तक झुकाया करें। लेकिन ऐसा कोई करता नहीं। ऊपर जाके चाहे कोई बैठ जाए। इसलिए ज्ञान है, शुद्ध ज्ञान है। परमेश्वर की देव वाणी है। चाहे वह गुरु नानक स्वयं आए ईश्वर, उन्होंने गुरु कहलवाया। क्यूंकि मर्यादा चलानी थी, चाहे रविदास है, चाहे नामदेव हैं, चाहे धन्ना है, चाहे जयदेव है। ईश्वरीय वाणी, जितनी यह ईश्वरीय वाणी है, इसमें कोई गलती निकाल के दिखा दे, और ज्ञान में कोई गलती नहीं निकाल सकता। मैं बांगर में था। उन संत से मैं पढ़ता था 'वृत्ति प्रभाकर'। वेदान्त उनको बड़ा सुन्दर आता था, वह मुझे कहते थे, यह वाणी मुझे सुनाओ। मैंने सुनाई थोड़ी सी। वह कहते आज तक पता ही नहीं था, यह तो ईश्वरीय वाणी, ईश्वर की बातें हैं। उन्होंने कहा जब तुम्हारा इक्टठ होगा, उस दिन मुझे जरूर पता देना। मैं कथा सुनूंगा इसकी। वह पढ़े लिखे बहुत थे। तो इसलिए भाई ! जब भी यहां पढ़ा लिखा लायक बक्शा हुआ आदमी होगा, वह हर बार एक पंक्ति सुन कर सिर जरूर मारेगा। इसलिए, क्योंकि यह शुद्ध ज्ञान है, ईश्वरीय ज्ञान है, ईश्वरीय वाणी कह लो, ईश्वरीय ज्ञान कह लो। इसलिए भाई ! दो चीजों की पूजा जरूर किया करो—एक गोबिन्द की, एक गुरु की, दोनों एक हैं।

गुरु परमेसरु एको जाणि।।
जो तिसु भावै सो परवाणु।।

(गौंड म. ५ पृष्ठ ८६४)

गुरु ज्ञानी का नाम है। गुरु ऐसे तो नहीं, जिसे आप गुरु मान लेंगे वही गुरु बन जाएगा। ज्ञानी चाहे रविदास है, उसकी बाणी देख लो, लिखी पड़ी है। वह जो यहां पहुंच जाएगा, ईश्वर के साथ एक हो जाएगा। यह दोनों पूजा के योग्य हैं। उनकी स्तुति करो, उनका नाम जपा करो और दूसरी बातें न किया करो। आजकल तो रिवाज ही खराब हो गया है। मैं जानबूझ कर यह बात कहता हूं। वह गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करते हैं, फिर गाली निकालते हैं। फलां यह हुआ। परसों चौथे ही देखा 'कविसर' लगे इधर उधर की करने। स्त्रियों ने दो शब्द ठीक पढ़े। शेष मैं भी सुनता गया। किसी ने उनको नहीं टोका। मैंने बाद में कहा कि—यह क्या, यह जो तुमने गालियां निकालनी थीं, जो कुछ करना था, वहीं इक्टठे कर लेते। गुरु ग्रन्थ साहिब को जब तुम परमेश्वर मानते हो इसके सामने क्यों ये बातें करते हो। फिर किसी ने कुछ नहीं कहा। सो इसलिए भाई किसी की ऐसे ही प्रशंसा करनी और किसी की निंदा करने लग जाना।

उसतति निंदा दोऊतिआगै
खोजै पदु निरवाना।।
जन नानक इहु खेल कठनु है
किन हूं गुरमुखि जाना।।

(राग गउड़ी म० ६ पृ० २१६)

स्तुति, निन्दा का तो हमेशा निषेध कर दिया। निर्वाण पद को खोजो। तुम वास्तविकता को खोजो। इसलिए गुरु साहिब कहते हैं यह खेल कठिन है—

किनहूँ गुरमुखि जाना।।

यह बात गुरमुखों ने जानी है और किसी को पता नहीं है, और ये लोग ऐसे करते हैं। गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश होगा। इनकी बातें और होंगी। यह गलत बात है। इसलिए गोविन्द और गुरु दोनों का वर्णन करो। यह दोनों हैं। तीसरा यदि ज्यादा करना हुआ तो धर्म का वर्णन करो। क्योंकि धर्म जो होता है। धर्म में परमेश्वर के साथ मिलन होता है। गुरु साहिब ने लिखा है—

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु।।

(गउड़ी सुख०: पृ० २६६)

शुद्ध कर्म करो, हरि का नाम जपो। यह धर्म यदि तुम्हारे पास आ जाए तो परम धर्म भी मिल जाएगा। परमेश्वर मिल जाएगा। नाम 'नामी' को मिला देगा। तुम नाम जपते चलो। कितने बड़े भक्त हुए हैं, जिन्होंने एक अक्षर नहीं पढ़ा, परन्तु वे आचार्य हुए। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने एक अक्षर नहीं पढ़ा था परंतु उन्होंने विवेकानंद को ऐसा रंग चढ़ाया कि वह कहते—मैं नास्तिक था मुझे आस्तिक बना दिया। वह कहते आओ, मेरे गुरु ने मुझे ईश्वर दिखा दिया, आओ जिसने देखना है। सात साल रहे वो, उसने २२ हस्पताल बनवाए गरीबों के लिए। इसलिए तुम यहां से न हिलना।

जिस ते जापै तथु।।

जिसके द्वारा तुम्हें 'तथु' अर्थात् वास्तविक वस्तु मिल जाए। 'तथु' नाम है असली वस्तु का। जैसे बादाम रोगन निकाला हुआ हो और सारे फोकट को फेंक देते हैं। लेकिन बादाम रोगन को तो नहीं फेंकते। इसलिए 'तथु', अर्थात् वास्तविक वस्तु को, जिस करके तुम्हें परमेश्वर मिल जाएगा, वास्तविक वस्तु मिल जाएगी। (चलिए)

मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता।।

हे मेरे मन जो भगवंत सबका मालिक है, उसका जाप किया करो। भगवान् का अर्थ करते हैं, खुद खुदा वाला जो सर्वशक्तिमान है। जिसमें सब बातें हों, उस परमेश्वर का जाप किया करो। किसी अल्पज्ञ की तारीफ मत करो। ऐसे ही गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने ऐसी बातें मत करो। ऐसी वैसी बातें अलग किसी जगह पर करो। कहीं और जाके कर आओ। फिर आ जाना। भाई ! एक बात कर लो परमेश्वर की। (चलिए)

नाम दानु देइ जन अपुने .....

नामदान, अपने जन को देता है परमेश्वर। कबीर को दे दिया। धन्ने को दे दिया। रविदास को दे दिया। जयदेव को दिया। सबको क्यूं न नामदान दिया ? नामदान तो जिस पर ईश्वर खुश होगा, उसको देगा। तुम यह बताओ क्या तुम्हारा मन नाम के साथ एक हुआ है ? सच बोलना, हुआ है कभी? फिर तुम कैसे कह सकते हो कि नाम दान मिल गया मुझे। तुम ऐसे कहो कि परमेश्वर की कृपा होगी, जो हमें गुरु ने बताया था हम वह करते जाएंगे। मैं हरिद्वार के इस तरफ गया गांव में, वहां सबने कथा की, मैंने भी की। वहां एक सिक्ख था बहुत लायक। मैं थोड़े में ही बताता हूं। उसने कहा मैंने आपको साथ लेकर चलना है। मैंने कहा क्यों। उसने कहा मैंने ज़रूर लेकर चलना है। उसके कहने पर हम चले गए। उसके खेत में गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश हुआ था। बड़ा अच्छा भजन करने वाला था। मैंने कहा

तू अपनी बात सुना पहले, उसने कहा—संत नंद सिंह जी देहरादून आए। मैंने उनसे नाम लिया। उन्होंने नाम दिया। कहा—भाई ! गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने प्रातः बैठ जाया कर, और स्नान करके यह जाप किया कर। सतिनाम वाहिगुरु का जाप है। उन्होंने कहा गुरु ग्रन्थ साहिब में से तुझे गुरु नानक देव प्रकट होंगे। उसने कहा मुझे संशय पैदा हुआ कि भाई-यह क्या बात बता दी ? गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु नानक प्रकट होंगे ? वह कहता मैंने छोड़ा नहीं। दो साल लगे। और मैं वही करता गया जो उन्होंने कहा। एक दिन मैं सामने बैठकर जाप कर रहा था। गुरु नानक का फोटो सामने आ गया। मैंने देख लिया। मेरे सामने ही गुरु ग्रन्थ साहब में प्रवेश कर गया। कहने लगा कि मुझे विश्वास हो गया। जो मुझे उन्होंने बताया था, ठीक था। इसमें तो सभी बैठे हैं। रविदास यहां बैठे हैं। नामदेव यहां बैठे हैं। कबीर यहां बैठे हैं। वह जो नामदान वाले हैं वे यहां बैठे हुए हैं। तुम्हारे, हमारे बड़े का नाम लिखा किसी ने ? यदि इस तरह होता तो ध न दे के लिखा लेते लोग। इसलिए भाई ! नामदान परमेश्वर उसको देता है जिस पर अत्यंत खुश होता है और प्रसन्न उस पर होगा जो उस का जन बनेगा। जो उसका दास बनेगा। उस पर खुश होगा। (चल भाई)

दूख दरद का हंता।। रहाउ।।

सब दुख दर्द नाश हो जाएंगे। उस नाम के साथ—जो नाम परमेश्वर ने तुम्हें बक्शा। वह नाम सबका नाश करने वाला है।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।

(गउड़ी सुख पृ० २८४)

नाम 'नामी' अभेद हैं। नाम जब तुम्हें प्राप्त हो गया। नामी तुम्हें उसी समय प्राप्त हो जाएगा। यह नियम है। जब तुम्हारा मन नाम के साथ एक हो गया तो नामी वहां बैठा ही है।

नावै अंदरि हउ वसां
नाउ वसै मनि आइ।।

(सिरी राग म. १ पृ० ५५)

परमेश्वर कहते हैं नाम में मैं बसता हूं। परंतु नाम को तू अपने मन में बसा ले। तू अपने मन को और नाम को तो एक कर ले। फिर तो सब कुछ हो जाएगा। फिर सारे दरिद्र दूर हो जाएंगे। जिस दिन परमेश्वर ने तुझे नाम बक्श दिया, जिस दिन तुझे नाम प्राप्त हो गया, जिस दिन तेरा ध्यान लग गया, उसी दिन तुझे सब कुछ प्राप्त हो जाएगा। (चलिए)

रहाउ।।

रहाउ होता है रागियों के लिए। इसमें तात्पर्य होता है शब्द का।

जा कै घरि सभु किछु है भाई .....

जिसके घर में कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जो न हो। सब कुछ परमेश्वर के घर में है।

नउ निधि भरे भंडार।।

नव निधियों के भंडार उस परमेश्वर के घर भरे पड़े हैं परंतु जिस पर वह कृपा करेगा, मिलेंगे तो उसी को, और यह कृपा द्वारा ही मिलेंगे।

तिस की कीमति ना पवै भाई .....

उस परमेश्वर की कीमत कोई नहीं पा सकता। उस परमेश्वर की कीमत तब पड़े, जब कोई उसके बराबर का हो। फिर हम कहें भई—ऐसा है। दूसरा तो कोई है ही नहीं, वह तो एक है।

एकम एकंकारु निराला अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूप न रेखिआ
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

(बिलावल म. १ पृ० ८३८)

वह तो सबके हृदय में है, जिस दिन उसको सर्वव्यापक देख लिया तुम भाई कन्हैया बन जाओगे। फिर द्वेष की जगह ही नहीं। राग-द्वेष वहां होता ही नहीं। न फिर कभी हो, इसलिए उसकी कीमत नहीं पड़ सकती। कीमत तो अनात्म वस्तुओं की पड़ेगी। प्रकृति की पड़ेगी। यदि चेतन की कीमत पड़े तो दो चेतन बना दो। सत्त बनाओ। यह तो है ही नहीं, वह तो एक है। यह तो गुरु साहिब ने ऐसा कार्य किया है, सब में नाम का मंगल आया है। गीता में जब तुम पढ़ो। वहां आयेग॥ 'ॐ तत्सत्' वेद को पढ़ो- वहां भी "ॐ तत्सत्" आयेगा। वह तो मियां के भी, जो उनका नाम है वह आएगा, परंतु 'एक' कहां नहीं आएगा। 'एक' तो नामी है। भाई साहब लिखते हैं।

एका एकंकार लिख दिखालिया।।
ऊड़ा ओंकार पास बहालिया।।

(वार भाई गुरदास)

परमेश्वर एक है। भाई ! यह उसका नाम है, नाम 'नामी' अभेद है। वह तो 'एक' की बात है।

ऊचा अगम अपार।।

ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु।।

(जैतसरी म. ५ पृ० ७०४)

वह ब्रह्मा, विष्णु, सब, जितने भी हुए हैं, से ऊंचा है और अगम है, मन वाणी से परे एवं अपार है। वह परमेश्वर ऐसा है।

महिमा न जानहि बेद।। ब्रहमे नही जानहि भेद।।
अवतार न जानहि अंतु।। परमेसरु पारब्रहम बेअंतु।।

(रामकली म. ५ पृ० ८९४)

यह शब्द तो स्थूल लगते हैं। हमारे एक संत थे। उसने एक शब्द सुनाया। कंसवाना का उदासी था। उसने अर्थ किया, वह कहता—क्या कहिए, लाठिओं में मोती पिरोए हुए हैं। इनकी हमें परख नहीं आती। वाणी ठेठ पंजाबी है और इसमें बारीक मोती पिरोए हुए हैं। उनकी हमें पहचान नहीं आती। छह मास मैंने लगा दिए। आज तक मुझे शब्द का भेद नहीं आया। यह उसकी कृपा से ही काम बनेगा। (हां जी)

जीअ जंत प्रतिपालदा भाई .....

बताओ, जिनको तुम जीव कहते हो, जिनको बिल्कुल जंतु भी कहते हो। बारीक जन्तु, उन सबकी पालना नहीं करता ? सबकी रक्षा करता है, सबको खाना पहुंचाता है। सृजन, पालना, लय तीनों ईश्वर के पास हैं। यह किसी ने नहीं लिखा। दिल मुहम्मद लिख गया। मैं जपुजी साहिब पढ़ता था, जो उसने जपुजी साहिब का टीका किया, किसी से ऐसा नहीं लिखा गया, वहां जाकर—

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु।।
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु।।

(जपुजी साहिब)

वह (दिल मुहम्मद) कहता यह तो नानक मत्त ही नहीं है। नानक तो एक ईश्वरवादी है। यह तुम तीन अर्थ क्यों करते हो यह तो शिष्यों में है, वह तो एक ही है। उसने नीचे पंक्ति लिख दी, वह तुम दिल मुहम्मद का टीका देख लो। उसको सिक्खों ने एक हज़ार रुपए इनाम में दिए। उसने जपुजी साहिब और सुखमनी साहिब का टीका किया है। उसने गीता का भी टीका किया। उन्होंने भी एक हज़ार रुपया दिया था। मियां को आपने भी किसी ने पढ़ा होगा ? इसलिए भाई ! यह जीव-जन्तुओं सबकी पालना करता है। कोई ऐसा है जो उसको भूला हुआ है। एक मोटा दृष्टांत देते हैं समझाने के लिए। कहते हैं एक दिन विष्णु और लक्ष्मी की आपस में बहस हो गई। यह पौराणिक बात है, वेद की बात नहीं है। लक्ष्मी ने कहा

आप सबको रोज़ी देते हो। उन्होंने कहा—हां देते हैं। लक्ष्मी ने एक चींटी मंजूषा में डाल दी। वह अपना टीका लगा कर हटी थी। एक चावल का दाना लगा हुआ था। वह अचानक मंजूषा में गिर गया। उसने सोचा मैं कल पूछूँगी कि आपने सबको भोजन दे दिया। उसने दूसरे दिन विष्णु जी को पूछा कि आपने सबको भोजन दे दिया। उन्होंने कहा 'हां'। लक्ष्मी ने कहा मैंने एक चींटी मंजूषा में डाली हुई है। विष्णु जी ने कहा—हमने तो उसको पहले ही दे दिया था। हमें पता था कि तेरा संकल्प है। तू इसमें बन्द करेगी। हमने एक चावल का दाना पहले ही फेंक दिया था। उसने जब डिब्बी खोली तो चींटी चावल खा रही थी। फिर वह चरणों में गिर पड़ी। हां जी आप सर्वज्ञ हो। इसलिए भाई ! सबकी पालना करता है। कोई ऐसा नहीं है जिसकी पालना न करता हो। समर्थ गुरु रामदास हुए। वह बड़े महापुरुष, तपस्वी थे। उन्होंने शिवाजी को कहा—किला बना। शिवाजी ने कहा किसके साथ बनाऊं ? उन्होंने कहा—बन जाएगा, तू शुरू तो कर। शिवाजी ने शुरू किया, बनाया। उसने कहा कि मुसलमान सत्ता के बहुत नशे में आ गए हैं। कुछ करना पड़ेगा। वह बनाने लग गया। अकाल पड़ गया, उसके दिल में यह बात आई यदि मैंने किला न बनाया होता तो सारे भूखे मर जाते। वह समर्थ गुरु रामदास जंगल में से चले। दोपहर के समय आए, शिवाजी पैरों में गिर पड़े, उसने माथा टेका। कहने लगा महाराज इस समय। कहते इस समय, तुझे बताएंगे, एक मिस्त्री बुला तू। जो सबसे लायक है। उसने बुलाया, उन्होंने कहा इस पत्थर को इस तरह चीर। वह जब चीरा, उसमें पानी में एक मेंढ़क बैठा था। उन्होंने कहा—इसको भी तू रोज़ रोज़ी पहुंचाता है ? उन्होंने शिवाजी को कहा। शिवाजी ने कहा जी मैं भूल गया। मुझ में अहंकार आ गया था। यह तो ईश्वर का उत्तरदायित्व है। यह तो और किसी का उत्तरदायित्व नहीं। इसलिए भाई ! वह सब जीव जन्तुओं को पालता है। वह सर्वज्ञ है। सर्वशक्तिमान है। सबका मालिक है।

नित नित करदा सार।।

और सबका वह ध्यान करता है। जितने तुम्हारे और मेरे कर्म हैं जो तुम रोज़ रोज़ करते हो। वह लिखे नहीं जाते रोज़ रोज़ ?

सभु किछु सुणदा देखदा
किउ मुकरि पइआ जाइ।।

(सिरी राग म० ३ पृ० ३६)

तुम कोई विचार करोगे ? उसने तो उसी समय टंकित कर देना है। तुम जब मन में विचार करते हो, वह देखता नहीं है ? वह जानता नहीं है ? वह तो तुम्हारे अन्दर बैठा है। तुम्हारे हृदय में नहीं बैठा ? वह सबकी सार करता है। भाई ! वह-यह करता, भई, वह वह करता और सबके कर्मों को टंकित करता है रोज़। वह तो नित्य ध्यान रखता है सबकी।

सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई .....

भाई ! यदि पूर्ण सतगुरु को मिल जाए तो फिर क्या होगा ?

सबदि मिलावणहार।।

तेरे मन को शब्द के साथ मिला देगा और शब्द 'शब्दी' अभेद। नाम 'नामी' अभेद है। पूर्ण सतगुरु की यही निशानी है। शब्द के साथ मिला देगा तो तभी ज्ञान हो जाएगा। शब्द 'शब्दी' तो एक है, नाम और 'नामी' दो तो हैं नहीं।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।

(गउड़ी सुख पृ० २८४)

यह जो तुम लिखते हो नाम, इसके ऊपर खंड ब्रह्मण्ड रखे हुए नहीं हैं, जो तुम्हारे अन्दर चेतन बैठा है। साक्षी, द्रष्टा वह है नाम, जो व्यापक है। वह है नामी, नाम नामी तो अभेद है। वह तो उपाधि कारण ऐसे कहते हैं, समझाने के लिए, जिन्होंने लिखा है। वास्तव में तो एक है। दो होते तो दूसरा लिखा होता। इसलिए सबका रोज़ ध्यान रखता है। नित्य सब का ध्यान करता है। जो तुम करते हो वह तुम मत सोचो, यह जो हम करते हैं किसी को पता नहीं है। जो तुम मन में संकल्प करोगे, देखता तो वही है। जानता भी वही है। वो टंकित भी हो जाता है। उसने फल भी दे जाना है। परंतु जब पूरा गुरु मिल जाएगा, वो निशानी है। तुम्हारे मन का मिलाप शब्द के साथ हो जाएगा। तुम्हारा मन शब्द के साथ एक हो जाएगा। यह बात तुम स्वयं अनुभव करो। तुम्हें दुनिया की उस समय कोई वस्तु नहीं दिखती जब नाम के साथ तुम्हारा मन एक हो जाएगा। फिर मन से कुछ और हो नहीं सकेगा। वह तो शब्द के साथ एक हो गया। शब्दी वहां वही है। इसलिए कबीर को उन ब्राह्मणों ने कहा—काशी में तेरा ॐ का अधिकार नहीं। तूं क्यों ॐ कहता है। तू जुलाहा है, शूद्र है। उसने कहा मैं तुम्हारा ॐ तो नहीं कहता। फिर कौनसा ॐ कहता है। उसने कहा—

ओअंकार आदि मै जाना।।
लिखि अरु मेटै ताहि न माना।।
ओअंकार लखै जउ कोई।।
सोई लखि मेटणा न होइ।।

(राग गउड़ी कबीर जी पृ० ३४०)

वे कहते कि सृष्टि की उत्पत्ति जो करता है, मेरा तो वह ॐ है। जो तुम लिख देते हो, मिटा देते हो। मेरा वह ॐ नहीं है, यह मैं नहीं मानता। वह सब चुप कर गए। बात तो ठीक है। सो इसलिए भाई ! वह नाम है, तुम्हें 'नामी' के साथ मिला देगा। परंतु नाम से तुम्हारा मन, उसकी कृपा से मिलेगा। कहने से नहीं मिलेगा। यह झूठ है। गुरु साहिब—लहना उनका नाम था और देवी के उपासक थे। वैष्णों देवी के जत्थेदार थे। जब गुरु साहिब ने नाम के साथ उनका मन मिला दिया तो उन्होंने जवाब दे दिया। भई ! तुम जाओ चाहे न जाओ, मैंने तो जहां पहुंचना था पहुंच गया। फिर गुरु साहिब तो नहीं गए। कहते—बस जहां मैंने आना था आ चुका। वो गुरु साहिब ने कृपा करके तभी मिला दिया। जो माता सुभराई ने कहा, तू जाता है हर साल, तू देवी का भक्त है परंतु तू वहां जाना। देवी वहां झाड़ू लगाने आती है। वह माता सुभराई का (दया कौर) यकीन करके आया। परंतु फिर नहीं गया वैष्णों देवी दुबारा। उसका मन नाम के साथ मिल गया। कृपा से 'नामी' प्राप्त हो गया। चलो झगड़ा खत्म हुआ।।

सचे चरण सरेवीअहि भाई।।

सच्चे परमेश्वर के चरणों की सेवा किया करो।

निरगुण ते सरगुण थीआ।।

निर्गुण से सर्गुण भी हो जाता है।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।।
कला धारि जिनि सगली मोही।।

(गउड़ी सुख पृ० २८७)

अब इन सबमें भगवान् नहीं बैठा ? मुझे एक आदमी निकाल कर दिखा दो जिसके हृदय में भगवान् न हो। कोई है ऐसा ? हां-तुम यह कहो कि उसकी बुद्धि मैली है। किसी संस्कारों में फंसी हुई है, गलत है—यह तो कह सकते हो। चल भाई—

भ्रमु भउ होवै नासु।।

तुम्हें जो भ्रम पड़ा है, भय पड़ा है, जो जन्म मरण का भय पड़ा है, यह सब नाश हो जाएगा। भ्रम को तुम जानते हो, भ्रम का क्या अर्थ है। 'अनात्म' में 'आत्म बुद्धि' भ्रम है। झूठे पदार्थ को सत्य मानना यह ही भ्रम है।

मूई सुरति बादु अहंकारु।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(पृ० १५२)

दिशटिमान है सगल मिथेना।। (पृ० १०८३)

जो झूठी वस्तु है उसको तुम सत्य मान बैठे हो। उसमें मोह फंसा है। इतना तुम्हारा परमेश्वर में प्रेम नहीं लगा जितना वहां मोह फंसा है। यह तुम स्वयं देख लो। जिस दिन तुम्हारा मोह टूट गया, प्रेम आ गया, तब तुम्हारी वृत्ति लग जाएगी। हां जी।

मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई .....

जो परमेश्वर की कृपा प्राप्त संत होते हैं उनके साथ मिल के अपने मन को साफ कर, भाई साफ करो उसे, उस संत के साथ मिल—जो तेरे मन को नाम के साथ जोड़ दे। तेरा मन शुद्ध हो जाएगा। इस तरह काम बनेगा।

हरि कै नामि निवासु।।

तेरे मन में हरि के नाम का निवास हो जाएगा। तेरा मन नाम नहीं छोड़ेगा, तुम्हें पता नहीं। तुम सुखमनी साहिब में पढ़ते होंगे—

संतसंगे अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुखः पृ० २९३)

गुरु रामदास संत के साथ हमने अपने अंदर परमेश्वर देखा। पंचम पातशाह कहते अब हमें कभी भूलता नहीं। ऐसी वैसी चीज़ हो तो भूल जाए। जब फरीद आए तो उनकी मां ने बहुत प्यार किया। बहुत चीज़ें रखीं। उसने कहा तुझे ऐसे पदार्थ मिलेंगे। फरीद ने कहा—

फरीदा सकर खंडु निवात गुडु माखिओ मांझा दुधु।।
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु।।

(सलोक फरीद जी पृ० १३७९)

माता यह उस जैसी मीठी नहीं है। 'नाम' जितनी मीठी नहीं है। सब चीज़ें मीठी मुझे दीं परंतु उस जैसी मीठी नहीं है।

मिटै अंधेरा अगिआनता भाई.....

तेरा 'अज्ञानता का अंधेरा', तेरे अन्दर भूल है जो तुझे परमेश्वर का दर्शन नहीं हुआ। भाव-मन तो उसके साथ एकाकार नहीं हुआ। यह सारा अंधेरा मिट जाएगा और अज्ञान अपने आप चला जाएगा।

दीवा बलै अंधेरा जाइ।।
बेद पाठ मति पापा खाइ।।

(सूही वार म० २ पृ० ७९१)

तुम जब यहां दीपक जला दोगे रात को। अन्धेरा चला जाता है। जब तुम्हारा सूर्य जाग गया, जागृत ज्योति में मिल गया, तुम्हारी वृत्ति का ध्यान लग गया, अविनाशी पद की प्राप्ति हो जाएगी। फिर अज्ञान कहां रखोगे ? अज्ञान नाम की वस्तु रही ही नहीं, समाधि हो जाएगी। हां जी।।

कमल होवै परगासु।।

तेरे कमल-हृदय में प्रकाश हो जाएगा। प्रकाश रूप तो पहले ही वहां बैठा है। वही तेरा साक्षी, चेतन, अपना आप है। परंतु तू भ्रम में होने के कारण, तुझे उस बात की समझ नहीं आई।

गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि।।

एक संत हमें पढ़ाते थे, बड़े पढ़े-लिखे थे, लायक थे, वह कहते थे जब बातें करते थे, कहते थे। ईश्वर ने तुझे कर्मों के अनुसार 'पंजाली' दे दी, उतारता कोई नहीं, जब साधन करेगा, वह ईश्वर स्वयं ही गुरु बन के 'पंजाली' उतारेगा, 'पंजाली' और कोई नहीं उतारता। कहते थे—गुरु नानक ईश्वर थे—

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।

(सवैये पृ० १४०८)

वही थे ज्योति स्वरूप, उसने गुरु कहाया। उन्होंने कितनों की 'पंजाली' उतारी, 'झंडाबाढ़ी' आदि कितनों पर कृपा कर दी। वह कहते जब तू संतों की संगत में जाएगा, मन को मांज लेगा, शुद्ध हो जाएगा, तेरे अन्दर प्रकाश हो जाएगा भाई। हां जी—

मेरा तेरा छोडीऐ भाई .....

पर यह तुझे मिलेगा कैसे ? कहते, पहले मेरा-तेरा गंवा दे। यह मेरा-यह तेरा। कहते हैं 'मेर-तेर' गंवा दे, बड़ी बीमारी दुनिया में यही है। मेरा लड़का तो जाए कार में पढ़ने और इनका लड़का जाए बिना जूती के, नंगे पांव, ससुरे को कांटे चुभें। इसको कहो जब तू इतना बड़ा बुद्धिमान आदमी है। यदि तुझमें लड़के के लिए कार लेने की शक्ति है, इसको भी जूता बनवा दे। परंतु नहीं। मेरा-तेरा तो छोड़ना नहीं है। वेदान्त में तीन संकल्प किए हैं। मैं, मेरा और तेरा। कहते हैं—और कोई चौथी वस्तु ही नहीं। इसलिए 'मेर-तेर' गंवा दे। गुरु ग्रन्थ साहिब में आता है—

मेर तेर जब इनहि चुकाई
ता ते इसु सांगि नही बैराई।।

(राग गउड़ी म० ५ पृ० २३५)

जब इसने 'मेर-तेर' गंवा दिया फिर इसके साथ बुराई कौन करेगा ? 'मेर-तेर' तो गंवाता नहीं। चल भाई–

होइऐ सभ की धूरि।।

सबके चरणों की धूलि हो जा। अहंकार त्याग दे। जो तेरे अन्दर है जाति का, कर्म का, 'फलाना-ढिमका', पढ़ने का, विद्या का, वह सब त्याग दे। सबकी चरण धूलि बन जा। यह छोड़ दे। गुरु साहिब ने सुखमनी साहिब में लिखा है–

आपस कउ आपि दीनो मानु।।
नानक प्रभ जनु एको जानु।।

(गउड़ी सुखः पृ० २८२)

वह कहते हैं अपने आप को आप ही, स्वयं ही सम्मान देना है। तेरे अन्दर आत्मा है वही परमात्मा है–

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई।।

(आसा म० १ पृ० ४२१)

तू अमर हो जाए .....

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ।।
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ।।

(गउड़ी सुख० पृ० २६३)

वह अमर करने वाला नाम तेरे हृदय में समा जाएगा परंतु 'मेर-तेर' छोड़ेगा तो। यदि 'मेर-तेर' के झगड़े में सारी उम्र बिता दी कोल्हू के बैल की तरह, फिर क्या बनेगा। अब तुम बताओ। तुममे 'मेर-तेर' तो नहीं है? मुझे लगता है शायद एक भी नहीं होगा 'मेर-तेर' त्यागने वाला, एक भी नहीं है। मुझे तो ऐसे लगता है, यदि कोई हो तो बता दे। इसको त्यागे बिना काम नहीं बनना। फिर तुम माथा टेकते हो गुरु ग्रन्थ साहिब को, बचन तो मानते नहीं।

घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई .....

सबके हृदय में ब्रह्म है

वडा वैरु न करीऐ काहू।। घट घट अंतरि ब्रहम समाहू।।

(गउड़ी बावन अखरी पृ० २५६)

कहते ओ ! किसी के साथ शत्रुता न कर लेना। सबके हृदय में परमेश्वर बैठा क्रोधित हो जाएगा। एक कहता क्या कर लेगा क्रोधित होकर। फिर कहते—ससुरे जहन्नुम जाएगा, आयुपर्यंत पश्चात्ताप करेगा। वह साधु कभी-कभी बातें करते। सो इसलिए भाई ! वह सबमें व्यापक है, परिपूर्ण है, सबके हृदय में है, इसलिए भाई तुम्हें प्रकाश हो जाएगा।

पेखै सुणै हजूरि।।

और सबको देखेगा। अनुभव करेगा। सर्वव्यापक है। सबसे पहले तो परमेश्वर ही है। तुम बताओ—तुम्हारा मन, वृत्ति जिसको कहते हैं या चित्त कहते हैं। एक ही होगा, कभी चिंता करते होंगे, कभी संकल्प विकल्प करते होंगे, कभी निश्चय करते होंगे, वह वृत्ति है। वह पहले है। जो वृत्ति को देखने वाला है वह पहले है । मैं तुम्हें पूछता हूं कि जब वह सर्वव्यापक है और 'ज़ाहिरा-जहूर' है तो फिर तुम भूल क्यों करते हो अथवा मैं क्यों भूल करता हूं ? गलत बात है। पूरा पता ही नहीं लगा। ऐसे ही व्यर्थ ही बातें हैं। और संसारी बातों में सब चतुर हो जाते हो। यहां तो नहीं होगा। यह तो ईश्वरीय कृपा होगी। फिर पूरे गुरु की कृपा होगी। फिर तुम्हारा मन वहां मिल जाएगा लिखा है—

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ।।

(सलोक म० १ पृ० १२७६)

गुरु में बैठ कर परमेश्वर ने शब्द चलाया। उस शब्द के साथ तुम्हारे मन ने जुड़ना है। यदि मेर-तेर में रहे, फिर तो बहुत दूर हो, चाहे मैं हूं चाहे तुम हो। इसलिए सब की धूलि बन जाएगा।

जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई .....

जो सबमें व्यापक ब्रह्म का नाम है। व्यापक पारब्रह्म है। सब जगह व्यापक है। तुझे वह भूल गया।

तितु दिनि मरीऐ झूरि।।

कहते तू झूर-झूर के मरेगा, हर्ष-शोक में। इकट्ठे हो के बातें भी करोगे। वह बुरा है, वह अच्छा है। उस ससुरे ने ऐसे किया, हम ऐसे करेंगे। कहते इन झगड़ों में मरोगे। यदि परमेश्वर तुझे बिसर गया फिर इन झगड़ों में पड़ जाएगा। तेरी जिन्दगी झगड़ों में बीत जाएगी।

करन करावन समरथो भाई .....

कहते करण-कारण समर्थ तो परमेश्वर है। जो उसने करना वह कर देना है। मैं इस बार चला धनौले से, बीमार हो गया, दिल्ली जाना था मैंने

कहा—जाना उधर था, जाता इधर को हूं। यदि मेरे वश में होता तो मैं इधर को न जाता। इसलिए इसको पता ही नहीं। 'उसको' पता है सारा, जो कुछ उसने करना है। किया पड़ा है, परंतु इसको भूल पड़ी है। भूल में फंसा पड़ा है। झगड़ों में मरेगा। सारी उम्र झगड़े नहीं खत्म होते। तुम कभी बैठते हो, मनोराज करते हो, और हवेली भी बना लोगे, रुपए भी जमा कर लोगे, होता कुछ भी नहीं। जब उठते हो तो खाली के खाली। स्वप्न में कई वस्तुएं देखते हो। जब स्वप्न से जागते हो तो कुछ नहीं होता। बस इसी तरह है। यदि परमेश्वर को भूल गए तो तुम्हारा स्थान कोई नहीं। बात तो यही है, सीधी बात तो यही है—

सरब कला भरपूरि।।

'वह' सब शक्तियों के कारण परिपूर्ण है। ब्रह्म-परमेश्वर जो है भाई, ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उसमें न हो। सब शक्तियों का पूर्ण तो वही है।

प्रेम पदारथु नामु है भाई .....

यह तुम्हें पता है गुरु साहिब कहते यह विशेष बात है। प्रेम पदार्थ नाम है। तुम समझ गए। नाम जपते जाओ। प्रेम आ जाएगा एक दिन। तुम नाम जपते जाओ। किसी देवता का नाम जपते जाओ वह देवता प्रकट हो जाएगा। नाम से प्रेम पैदा होता है। प्रेम से नाम नहीं पैदा होता। वह कहते हैं नाम पदार्थ जो है, यह प्रेम है। नाम तुम्हारा चल जाएगा, एक रस हो जाये सिमरन।

सिमरि सिमरि नामु बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(ग० सुख. पृ० २६५)

कहते हैं प्रेम प्रगट हो जाएगा। नाम से प्रेम प्रगट होता है। जिसका लो गे उसी के हो जाओगे। किसी की बातें करो वहां पता लग जाएगा। जिसके साथ तुम्हारी पूरी मित्रता है, उसकी तुम स्तुति न करो परंतु यदि कोई उसकी निन्दा करता हो तो तुम नहीं मानोगे क्योंकि तुम उसे जानते हो कि वह लायक आदमी है। इसलिए भाई परमेश्वर सर्वज्ञ है। सब कुछ जानने वाला है। उस नाम से प्रेम पदार्थ पैदा होता है। प्रेम के आने से यह कूड़ा साफ हो जाता है। प्रेमी को कोई चीज़ कभी याद नहीं आती। तुम्हें पता है बहुत। एक उदाहरण है—कृष्ण आया, दरवाजा खटखटाया, पहले तो उसको यह नहीं पता कि मैं स्नान करती हूं, फिर वह बैठ गया, वह केले देने लगी, वह छिलके देती जाए और दूसरे फेंकती जाए। जब बिदर

आया उसने कहा—तू क्या करती है, खाने वाली चीज़ को इधर फेंकती जाती है और छिलके इधर देती जाती है। यह तो हमारा इष्ट देव है। उसने कहा तूने तो सारा काम ही बिगाड़ दिया। जो उनमें रस था इनमें नहीं है अब। न उसको पता था, न मुझे पता था। प्रेम एक ऐसी चीज़ है। प्रेम बहुत ऊंची चीज़ है। प्रेम परमेश्वर से मिलने वाला है। परंतु पहले नाम शुरू करो। जो गुरु ने नाम दिया है उसको जपते जाओ। तुम्हें बताया था—भाई ! वह कहता था मुझे गुरु नानक का प्रत्यक्ष हुआ। तब से मुझे निश्चय हुआ।

माइआ मोह बिनासु।।

यदि तूने नाश होना है, जन्म में आना-जाना है तो माया का मोह कर ले। यदि तेरी मर्ज़ी है नरक स्वर्ग देखने की तो माया में मोह डाल ले।

माइआ मनहु न वीसरै मागै दंमा दंम।।
सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि।।

(वारां ते वधीक पृ० १४२६)

इतना कर्म ही नहीं है। अब तुम देख लो। तुम्हारा माया के साथ अधिक मोह है कि परमेश्वर के साथ प्रेम है। तुम तोल लो, अपने मन को, यह बात अकेले बैठ के तोल लो कि प्रेम परमेश्वर के साथ ज्यादा है या माया के साथ ज्यादा है। यदि माया के साथ ज्यादा है तो समझ लेना कि नरक को जाना पड़ेगा। फिर तू न विचार करना कोई और। मोह तो नरक को लेके जाता है। ग्रन्थों में लिखा है प्रेम ने परमेश्वर से मिलाना है, दसम पातशाह कहते हैं फिर तुम आप ही सोच लो। चल

तिसु भावै तां मेलि लए भाई .....

यदि उसको यह जीव जंच जाए तो अपने साथ मिला ले। भाई कन्हैया को क्यों मिला लिया, अपने साथ। और वहां कितने थे, उनको क्यों न मिला लिया। ऐसी बहुत उदाहरण हैं। हां जी—

हिरदै नाम निवासु।।

हृदय में नाम का निवास हो जाएगा। बाकी अहंकार का हृदय में पहले से निवास है। अहंकार के रोग गुरु ग्रन्थ साहिब में बहुत लिखे हैं—

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।।

(सलोक म. १ पृ० ४६६)

एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।।

(पृ० ६१६)

वह मेरे हृदय में और तुम्हारे हृदय में काबिज़ (कबजा) है, अहंकार का। और नाम आ गया तो अहंकार कहाँ रह जाएगा ?

हउमै नावै नालि विरोधु है
दुइ न वसहि इक ठाइ।।

(वडहंस म. ३ पृ० ५६०)

गुरु साहिब कहते हैं यह दोनों इकट्ठे नहीं रहते। जब तक अहंकार है तब तक नाम वहां नहीं होता। जब नाम आ गया, अहंकार ने स्वयं ही भाग जाना है और काम क्रोध पीछे पीछे बिस्तर समेट के चले जाएंगे। सब अपने आप ही भाग जाएंगे। यह है औषधि–

गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई .....

गुरमुखों का हृदय-कमल प्रकाशित हो जाता है। उनके हृदय में प्रकाश हो जाता है। चौथे पद में सहज है।

गुरमुख पलै पाइ।।

(गुरबाणी)

चौथे पद में सहज है, ज्ञान है, परंतु मिलेगा गुरमुखों को। दूसरे को नहीं मिलेगा। चल भाई–

रिदै होवै परगासु।।

तुम्हारे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाएगा। गुरु साहिब कहते हैं ये तो मिथ्या बात नहीं। यह तो इलहाम है। कोई कलम तो है नहीं किसी की जो गलत हो जाएगी। एक गंगा सिंह प्रिंसीपल थे। वह मेरे साथ मिले। फिर तो बहुत ही प्रेम करने लगे। साथ ले गए कि ज़रूर चलना है। आगे मोटर में चलेंगे नानक मत्ता। उसके एक बात बड़ी याद थी–वह कहता था ब्राह्मण की कलम यहां तक गई है। दूसरे की यहां तक गई। मैंने कहा इलहाम, कहते इलहाम के साथ नहीं मिली। इलहाम तो परमेश्वर का होता है। यहां कलम का कोई काम नहीं, यह तो परमेश्वर की वस्तु है भाई ! इसलिए भाई सच्ची चीज़ है।

प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई .....

प्रभु का प्रताप सब जगह प्रगट है जिस काम की किसी को आशा नहीं होती उनके कर देता है। जब उसकी खुशी होती है। बिदुर का कर दिया, और कितने तुम्हें गिना देते हैं, सबके काम कर देता है। गरीबों के कर देता है परंतु जब वह खुश हो जाए और ज्ञान भी दे सकता है। उसने तो देखना है भाई–इस बर्तन में क्या पकेगा और इस बर्तन में पहले क्या

पड़ा है वह तो सर्वज्ञ है। पहले तुम्हारा हृदय देखेगा कि इसके हृदय में अमृत नाम डाला जाए या कुछ और डाला जाए। परंतु तुम्हारी मांग कोई और होगी। तुम्हारी मांग तो माया की है, अब तुम में नाम कैसे डाल दे। वह तुम्हारी मांग के साथ ही आना है नाम, यदि तुम्हारी मांग होगी माया की, तो वह नाम कैसे डाल दे तुम्हारे हृदय में ? माया दे देगा, खुश हो जाओगे। सकाम कर्म है तुम्हारा अथवा निष्काम कर्म है, उसके अनुसार फल हो जाएगा।

मउलिया धरति अकासु।।

कोई ऐसी जगह नहीं जहां परमेश्वर नहीं है। सारे व्यापक है, या प्रफुल्लित है, व्यापक है, साक्षात् है।

गुरि पूरै संतोखिआ भाई .....

पूर्ण गुरु ने जब नाम के साथ जोड़ कर मन को एक कर दिया। उसको संतोष स्वयं ही आ जाएगा। तुम्हारे मन में कोई उस जैसी वस्तु है ही नहीं। नाम जैसी वस्तु है ही नहीं कोई। दुनिया में नाम और 'नामी' अभेद है।

अहिनिसि लागा भाउ।।

भाई ! दिन-रात तुम्हारा प्रेम लग जायेगा।

रसना रामु रवै सदा भाई .....

वह रसना के साथ राम का उच्चारण करेगा। रवै का अर्थ है उच्चारण। वह हमेशा ही, उसके मुख से नाम निकलेगा। मैंने एक बात सुनी है परंतु स्वयं देखी नहीं। हीरासिंह एक राजा होता था। वह एक संत को कहता आपसे हमारे फौजी अच्छे हैं या आप अच्छे हो ? संत ने कहा देख ले। यह बात मुझे संत ने सुनाई है ! बोला कैसे ? जब सोए पड़े होंगे तुम ठंडा पानी फेंकना। पहले हीरासिंह उनको साथ ले गया। उसने पानी का छींटा मारा। पकड़ लो, पकड़ लो, पकड़ लो। इस तरह जैसे उनके भीतर था। बाद में उन्होंने संतों पर छींटा मारा। इसी तरह, वह कहते राम राम, कोई कहता हरे राम, कोई कहता सतनाम। वह कहता अब तुम देख लो। इधर से क्या निकला और उधर से क्या निकला ! जो कुछ अन्दर था वही निकलना था।

साचा सादु सुआउ।।

यह जो स्वाद है, सच्चा स्वाद है भाई। नाम के साथ मन का जुड़ जाना, परमेश्वर को मिल जाना। यह सब से सच्चा आनंद है। यह ध्यान है।

करनी सुणि सुणि जीविआ भाई .....

यह कानों के साथ भी नाम सुने तों भी इसको जीवन प्राप्त हो जाता है। कभी तो पता लगेगा ही। इसलिए इसका मन भी उधर लग जाएगा। 'करन' नाम है वहां कान का। कानों से भी नाम सुनना अच्छा है। बहुत कहते हैं वाणी के साथ तू क्या करता है। हम एक गांव में रहते थे। एक वहां था। वह माला जपता था। दरवाजे बैठ के दो चार बैठ जाते थे। बातें करते थे, लोगों की। 'फलाने' का यह और 'फलाने' का यह है। बालक राम वहां था पढ़ा लिखा। मेरे पास आता था। वह कहता अगर रस्सी बना लो तो पशुओं को बांध लोगे। घास खोद लो तो पशुओं को डाल लोगे। यह तुम क्या करते हो सारा दिन, माला फेरते रहते हो। वह कहता आपका भक्त क्या कहता है—मैंने कहा—क्या कहता है' ? वह कहता, यह ऐसे माला फेरते हैं। बातें ऐसे करते हैं, उसका खेत अच्छा है, उसकी पत्नी अच्छी है, उसकी यह है। यह पागलपन नहीं तो क्या है ? मैंने कहा भाई ! बात तो इसकी ठीक है। अब कहता ऐसे कभी माला फेरते, हर समय लगा रहेगा, माला तो फेरते जाते हैं। वह कहता फिर तुम्हारा माला फेरने का फायदा क्या। क्यों हाथ घिसाते हो ? मैंने कहा बात इसकी सच्ची है। वह कान से सुने अपनी वृत्ति को जोड़ के—

आपि उपदेसै समझै आपि।।
आपे रविआ सभ कै साथि।।

(गउड़ी सुखः पृ० २७६)

वह स्वयं ही उपदेश करता है इधर बैठा त्रिकुटी में। उधर सुनता भी स्वयं है वृति द्वारा। और सब में मिला भी वह परमेश्वर है। यह तो परमार्थी बात है, जो हमारी बातें हैं यह तो व्यर्थ होती हैं। यह तो ऐसे आदत बन जाती है। जिस प्रकार किसी की बगार करनी होती है। दरवाजे बैठ गए, कभी कहीं बैठ गए, गप्पें मारते गए। वहां एक पंडित आ गया। मेरे से पढ़ता था। वह आ के जाट वहां बातें करने लग गया। वह कहता इस 'टुच्चे' ज्ञान वहां अपने घर पर किया करो जा कर। यहां बाणी सुनो या बाणी की बातें करो। यहां 'टुच्चे' ज्ञान का कोई काम नही। पंडित कहता—यहां आके 'टुच्चे' ज्ञान शुरू कर देते हैं। यह तो कुस्थान पर बैठ के किया जाता है। बोला—यहां बाणी भी सुनते हैं साथ ही बातें भी करते हैं। मैंने कहा—बात तो इसकी ठीक है, कहते हां जी। है तो ठीक। सो ऐसे ही व्यर्थ बातें करते जाना। गप्पें, किसी की स्तुति, किसी की निन्दा, सब गलत है—भाई, चलिए।

निहचलु पाइआ थाउ।।

वह स्थान स्थिर, जो हिलने वाला नहीं। 'अटल' परमेश्वर जो ध्रुव ने

पाया था। वह स्थान तुम्हें मिल जाएगा। परमेश्वर में तुम्हारा मन स्थिर हो जाएगा।

अचल मूरति अनुभव प्रकास।।

(दसम् ग्रन्थ)

प्रकाश हो जाएगा, जब तुम्हारा मन टिक गया। अनुभव प्रकाश हो जाएगा। यह दशम पातशाह का वचन है।

जिस परतीति न आवई भाई .....

जिसका निश्चय नहीं हुआ नाम में या नामी में, परमेश्वर में, गुरु परमेश्वर में—

सो जीअड़ा जलि जाउ।।

वह जीव, कहते जल कर क्यों न मर जाए ? उसका लाभ क्या हुआ? उसको निश्चय ही नहीं हुआ। उसका मन टिका ही नहीं। वह जल जाये। गुरु साहिब बात भी करते हैं, सिरे तक जाते हैं—

बहु गुण मेरे साहिबै भाई .....

मेरे साहिब में बहुत गुण हैं। गिनती में नहीं आते। बहुत का अर्थ है, जो गिनती में न आए। मेरे साहिब, मालिक में बहुत गुण हैं, गुरु साहिब कहते—

हउ तिस कै बलि जाउ।।

मैं तो उस परमेश्वर के बलिहारी जाता हूं। बस-मैं और कुछ नहीं जानता।

ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई .....

जिनमें कोई गुण नहीं उनको पालता है। शेर तुम्हें क्या सुख देता है ? रीछ भी क्या सुख देते हैं ? चाहे यह कुछ सुख देते होंगे कई चीज़ें ऐसी हैं नुक्सान पहुंचाने वाली। उनकी भी परिपालना करता है। ऐसे तो नहीं, किसी को अन्न न दे पालना न करे ? रक्षा न करे ? जिस समय याद करोगे उसी समय उपस्थित हो जाएगा। याद हो उसी की, और न कोई हो बीच में, परंतु लोगों की और रीति है। परमेश्वर को याद करेंगे। प्रार्थना पत्र और लिखी होगी कि यह मिल जाए। कि यह मिल जाए। 'फलाना' मिल जाए। वह सर्वज्ञ है। एक संत थे, ईश्र दास। बड़े लायक थे। उनके पास कुछ समाजी आ गए। चनाब नदी के किनारे। वह कहते जी उसने नारायण कहा अपने पुत्र को। परमेश्वर क्यों आया अजामल के पास। वह संत कहते, परमेश्वर का दिमाग हिल गया होगा। वे समाजी बोले उसका दिमाग तो हिलता ही नहीं। फिर संत ने कहा तुम पागल नहीं ! वह सर्वज्ञ

है कि नहीं। बोले जी सर्वज्ञ तो है। मानते हैं। लेकिन उसने तो लड़के को याद किया था, वह परमेश्वर इतनी दूर से भागा क्यों आया बैकुंठ से। संत कहते तुम्हारे जवाब ऐसे ही हैं क्योंकि तुम पागल जो हुए, इसलिए भाई वह तो सर्वज्ञ है। वह सब वस्तुओं को जानता है, लोगों का यह काम है। हम देखते हैं अरदास करने वालों को। जब परमेश्वर की अरदास करते हैं, इतनी सूची होती है इनके पास। यह भी देना, यह भी देना। ऐसे तो नहीं कहते कि दर्शन देना। यह तो नहीं कहते परमेश्वर को कि दर्शन देना। वह प्रार्थना पत्र दे देते हैं। लिखी भी बहुत बड़ी होती है। कई भाई तो आधा-आधा घंटा कहते जाते हैं। उनको कहो कि परमेश्वर तुझसे छोटा है तेरे कहने से आ जाएगा। वह सर्वज्ञ, तू अल्पज्ञ। वह आता है गुरवाणी में—

बिणु बोलिया सभु किछु जाणदा
किसु आगै कीचै अरदासि।।

(श्लोक म. ३ पृ० १४२०)

गुरु साहिब कहते—वह तो तेरे अन्दर की सारी बात जानता है। अरदास का मतलब यह होता है लोगों का मुंह इधर हो जाए। क्या वह अन्तर्यामी नहीं है ?

राखा ऐकु हमारा सुआमी।।
सगल घटा का अंतरजामी।।

(भैरउ म. ५ पृ० ११३६)

ऐसे लोगों को वहम ही पड़े हुए हैं। वह तो अन्तर्यामी है।

देइ निथावे थाउ।।

जिनको कोई जगह न हो उनको परमेश्वर आसरा देता है। अजामिल को आसरा दिया।

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा।।

(सोरठि म. ९ पृ० ६३२)

वह तो आसरा दे देता है।,

रिजकु संबाहे सासि सासि भाई .....

तुम यह बताओ, सब को रिजक नहीं पहुंचाता ? श्वास प्रति श्वास, तुम्हारी रक्षा नहीं करता ? गुरु साहिब कहते हैं—

कहता तो परमेश्वर है लेकिन कहता तो गुरु द्वारा ही है—

गूड़ा जा का नाउ।।

उसका नाम बड़ा पवित्र नाम है। सबसे बड़ा नाम है। वह तो असीम है।

जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई .....

जिसको सच्चा गुरु मिल जाएगा।

पूरा तिसु करमाउ।।

वह समझ लो उसके कर्म पूरे थे, उसके निष्काम कर्म पूरे हो चुके थे, उसको परमेश्वर मिला।

तिसु बिनु घड़ी न जीवीअै भाई .....

भाई ! उस परमेश्वर के बिना एक घड़ी भी न जीओ। उसका सिमरन इतना करो, वह तो कभी भूले न। मैं आपको एक बात बताता हूं। मेरे पास कोई आया, उसने कहा मुझे कुछ बताओ। मैंने कहा—नाम जपा कर। कहता अच्छा जी। फिर कहता कैसे जपा जाता है ? मैंने कहा नाम जो है, इसको जपना, जो इसका नामी है, उसको हर समय याद रखना, तेरे हृदय में बैठा है, तेरे मन में बैठा है। कहने लगा—ऐसे तो रहता नहीं। मैंने कहा तू सच बता तेरे रुपए दबे पड़े हैं। उसने कहा हां, तो मैंने कहा तू उसको भूल जाता है। कहता जी वह तो नहीं भूलते। मैंने कहा यदि वह नहीं भूलते तो यह कैसे भूल जाएगा ? तूं अपने खड्डे पर जा के खड़ा होगा। फिर यह क्यों भूल जाता है तू। यह तो बहुत ऊंची बात है। यह तो रुपए देने वाला है, जिसने रुपए तुझे दिए हैं, जीवन दिया है, सब कुछ दिया है, उसको तो तू भूलता है। यह जो झूठी माया, उसको तो तू भूलता नहीं।

सरब कला भरपूरि।।

सारी शक्तियों के कारण वह परिपूर्ण परमेश्वर है भाई, कोई वस्तु नहीं ऐसी जो उसके पास न हो।

सासि गिरासि न विसरै भाई .....

भाई ! 'सासि गिरास न विसरै', यह भाई कभी भूले न। मैं तुम्हें एक बात बताता हूं, मेरी अनुभव की हुई है। हम बाग में रहते हैं। वहां उनकी मिट्टी की परात होती है, आटा होता है, मिर्चें रगड़ते हैं, जब वह ग्रास तोड़ते हैं मुसलमान-'या अल्ला', 'या अल्ला' कहते हैं। उम्मीद है—तुम भगवान् कहते हो कि नहीं कहते हो। समझ गए। वह 'या अल्ला' कहते हैं, फिर तुमसे तो अच्छे ही हुए। कहते किसी सांस किसी ग्रास उसको (परमेश्वर) भूल न जाना भाई ! जो नहीं भूलेगा वह संत बन जाएगा।

पेखउ सदा हजूरि।।

वह 'हाज़रा हजूर' है, तेरे मन को देखता है, तेरी बुद्धि को देखता है, तेरे विचारों को देखता है। जो तू सोचता है तब भी वह देखता है। यदि वहां खड़ा है तभी तो देखता है। तेरा अपना आप भी वह है। यह भी साथ लगती बात है। यह पक्की बात है, तेरा आप भी वही देखने वाला ही है परंतु वह जो दिखता है, उसको तुम अपना आप मानते हो। सच तुम्हारा आपा है, वह द्रष्टा है, कोई भी संकल्प बिना देखे से नहीं गुजरेगा, चाहे ज़ोर लगा लो।

साधू संगि मिलाइआ भाई .....

भाई साधुओं के संग से उसका मिलाप हो जाता है। साधु नाम है बक्शे हुये पुरुष का। साधुओं के संग से उसका मिलाप हो जाएगा। साधु परमेश्वर को कहते हैं। जो हाथों पैरों वाला परमेश्वर है उसको साधु कहते हैं। बात तो सीधी यह है हाथों पैरों वाले परमेश्वर को साधु कहते हैं। वह निर्गुण दूसरा होता है। इसलिए उसका मिलाप हो जाएगा। भाई 'गुरदास की वारें' पढ़ के देख लो, कितने गुरु नानक ने मिलाए, कितने गुरु अंगद ने मिलाए, कितने गुरु अमरदास ने मिलाए, वो साधुओं के भीतर बैठ के ही मिलाये।

सरब रहिआ भरपूरि।।

वह सारे परिपूर्ण हैं चाहे तू जंगल में बैठ कर जप ले। चाहे घर में बैठ कर जप ले। चाहे काम करता जपता चल। वह तेरा सब कुछ हर समय देखता है। हाज़िरी तेरी ज़रूर लगेगी, जैसा करेगा लगेगी वैसी और गैर हाज़िरी भी लगेगी। यदि जपेगा तो हाज़िरी भी लगेगी।

जिना प्रीति न लगीआ भाई .....

जिसकी प्रीति, वृत्ति नहीं जुड़ी है।

से नित नित मरदे झूरि।।

वे प्रतिदिन झूरते झूरते मरते हैं, दुखों में मरते हैं। यह हो गया, वह हो गया, यह हो जाता, वह हो जाता। वह तो झूर-झूर के मरेंगे।

अंचलि लाइ तराइआ भाई .....

आंचल नाम है 'पल्ले' का। तुम्हें पता है 'पल्ले' को आंचल कहते

हैं। भगवान् का आंचल क्या है ? नाम ! ठीक बात है। परंतु आंचल के साथ जब तुम्हारा मन जुड़ गया तो तुम्हारा मिलाप हो जाएगा। सीधी बात है! यह बात तुमने खुद देखनी है कि मन कहां जुड़ा है। हर वक्त तुम्हें मन दिखता है अपना, वृत्ति ऐसे ही दिखती है कि फलां जगह जुड़ी हुई है। यह भी तुम्हें दिखती है परंतु तुम उसको ध्यान नहीं देते।

भउजलु दुखु संसारु।।

यह जो संसार को तुम समझते हो, वह 'भवजल' है। यह दुःखों का सागर है तुम्हारे लिए। पर जिसको ज्ञान हो गया उसके लिए यह संसार परमेश्वर है।

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूप है हरि रूप नदरी आइआ।।

(आनंद साहिब पृ० ६२२)

तीसरे पातशाह कहते—यह तो हरि का रूप है। कभी कोई गहना सोने का, सोने से अलग नहीं हुआ। कोई भी शस्त्र तुम्हारे पास है, शस्त्र लोहे से अलग नहीं हुआ। मिट्टी का घड़ा वगैरह, ढक्कन आदि मिट्टी से अलग नहीं है। यह भगवान् का रूप नहीं है। सारा संसार, भगवान ही तो है। परंतु यदि तुम न समझे तो तुम्हारे लिए डूबने का हेतु हो जाएगा यह संसार।

करि किरपा नदरि निहालिआ भाई .....

कृपा की, जब नज़र की, आनंदित हो गया। वह तो घासी था। पर उसको एक शंका थी। बहुत भजन करता था और घास काट के रोटी खाता था रोज़। उसको पता लगा छठे पातशाह का, क्योंकि उसने पार उतरना था। उस दिन मुसलमानों ने कहा कि यह 'सच्चे पातशाह' जहांगीर को मौलवी कहते—यह तो बात ही बुरी है। अनादर है इस्लाम का। जो खड़े थे उनको कहा, 'सच्चे पातशाह' का तम्बू यह बताया करो—जहांगीर का। वह घासी आया बेचारा पहले दिन, उसने रोटी नहीं खाई। वही उसके पास पैसे थे। उसने कहा—मैंने सच्चे पातशाह के तम्बू में जाना है। उन्होंने जहांगीर के तम्बू की तरफ हाथ कर दिया। वह अंदर गया। उसकी परिक्रमा की, फिर दण्डवत् किया खड़ा हो गया। जो पैसे पास थे रख दिए। जहांगीर ने कहा मांग क्या मांगता है। घासी ने कहा—जी 'मुक्ति'। जहांगीर कहता अब तुम बताओ भाई ! अब तुम बताओ, तुमने जो ऐसे किया। उसने कहा 'मुक्ति' वाला तम्बू वह है। सच्चे पातशाह का। उसने पैसे उठाए, चल पड़ा, उसके

पास और पैसे तो थे नहीं, वहां जा के यही काम किया। गुरु छठे पातशाह कहते—मांग क्या मांगता है ? कहता जी—'मुक्ति'। गुरु साहिब ने कहा आंख से आंख मिला। नदरी-नदर निहाल (आनंदित) कर दिया, निहाल, निहाल, निहाल। ज़हांगीर भी चल पड़ा और सारे चल पड़े। वहां जा के बैठ गए, कहते जी हिन्दुओं की 'मुक्ति' बड़ी सस्ती है। इतने थोड़े पैसों में आ जाती है। गुरु साहिब ने जहांगीर से पूछा—तू क्या देता था। उसने कहा पहले एक कुंआ कहा, गांव कहा, इलाका कहा। घासी कहता मुझे तीन लोकों की ज़रूरत नहीं मैंने तो मुक्ति लेनी है। जहांगीर ने कहा, मुक्ति वाला तो वह है (गुरु), मैं तो दूसरा हूं। इसलिए भाई यकीन ही नहीं हुआ। सच्चे पातशाह से जब इसका मिलाप हो जाए, तभी निहाल हो जाएगा।

कीतोनु अंगु अपारु।।

कितनी सहायता की, मेरी उन्होंने। कितनी उसने कृपा की, मुक्ति तक पहुंचा दिया। किसने ? ईश्वर ने आनंदित कर दिया। किसी शरीर में बैठ के किया।

मनु तनु सीतलु होइया भाई .....

मन तन शांत हो गया। मुक्ति हो गई। जन्म-मरन टूट गया। सब प्रकाश हो गया जो अपना आप था। आत्म ज्ञान हो गया।

भोजनु नाम अधारु।।

कहते, जी उसका आधार क्या होता है ? नाम, उसका भोजन नाम है। ऐसे भोजन की तरफ नहीं जाता। उसका आधार ही नाम है, फिर—

नानक तिसु सरणागति भाई .....

भाई उस परमेश्वर की शरण पड़ जाओ।

जि किलबिख काटणहारु।।

जिसने छोटे बड़े पाप काट दिए, उसकी शरण पड़ जाओ। चाहे गुरु नानक है, चाहे गुरु अंगद देव है, चाहे कबीर है, चाहे दादू, चाहे ईसा है, जिस पर कृपा हो गई, वह तारने (पार उतारने) वाला हो जाएगा। जो यहां से गुजरा, तुम्हें बता देगा। भाई ! यह मार्ग ठीक है। चलता जा, बता कितनी देर लगी।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

११

सूही महला ५

जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी, सो दुखु कैसा पावै।।
बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै।।
मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे।।
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे।।रहाउ।।
जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन का जनम मरण दुखु नासा।।
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा।।
नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि।।
तेरी सरणि तेरै भरवासै, पंच दुसट लै साधहि।।
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी।।
सभ ते वड्डा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी।।

(सूही म. ५ पृ० ७४९)

श्री गुरु अर्जुन देव जी कथन करते हैं—

जिस कें सिर ऊपर तूं सुआमी सो दुख कैसा पावै।।

हे स्वामी जिसके सिर पर आपकी कृपा का हाथ है वह दुःखी नहीं हो सकता। बाबा बुड्ढ़ा जी छोटी आयु में सतिगुरु नानक के चरणों में माखन लेकर के गया तब गुरु ने पूछा—तूं माखन क्यों लेकर आया है। तब बाबा बुड्ढ़ा जी ने कहा—जन्म मरण से छुटकारा पाने के लिये। गुरु जी कहने लगे कि तुम्हें इस छोटी अवस्था में इस ज्ञान की बात किसने बताई। तब वह कहने लगे, मैं एक दिन चुल्हे में लकड़ियां जलते देख रहा था कि छोटी-२ लकड़ियाँ पहले जल गई और बड़ी-२ बाद में। मैंने सोचा कि काल के सन्मुख छोटे बड़े का कोई भेद नहीं रहता। परमात्मा कृपा करे तो जन्म मरण से मुक्ति मिल जाये, और यह किसी संत महापुरुष की कृपा से ही सम्भव है। इसलिये मैं आप जी को संत जान कर आपके चरणों में आया हूं।

गुरु साहिब ने कहा कि तूं बातें तो बूढ़ों जैसी करता है। वह गुरु साहिब के आदेश से सेवा में लग गया। पीछे उनके माता पिता ढूंढ़ते हुए

आये। गुरु साहिब से पूछा कि हमारा लड़का आपके पास आया था। तो महाराज जी ने कहा कि ढूंढ़ लो। वह गुरु जी के आज्ञानुसार बूढ़ा हो गया था। गुरु जी कहने लगे भाई ! वह अपने ही निश्चय भाव के कारण हमारे पास आया था और हमारा पिछले जन्म का सम्बन्ध था, उस पर कृपा करने का। यह पारस है। जंग लगा लोहा नहीं है। पारस वह होता है—जो संसार के भले के लिये काम करे। संसार को शिक्षा दे। प्रत्येक जीव की सेवा करे। इस करके जहां पर इसने आना था आ गया है। तुम जाओ। बाबा बुड्ढ़ा जी ने छठी पातशाही तक तिलक किया, घास खोदा और छठी पातशाही तक लंगर में लकड़ियां लाकर सेवा की। जैसी भी आज्ञा हुई उसने स्वीकार की। और कृपा भी की। भाई करमों और भाई दुर्गा प्रतिदिन अमृतसर से तरणतारण तक पैदल स्नान करने जाती थीं। वे आपस में बातें करती थीं। दुर्गा कहने लगी—करमों ! अगर तेरा पति योग्य होता तो गद्दी तुम्हारे को मिल जाती। जब इस बात का माता गंगा को पता चला तो उसने सारी बात पंचम् पातशाह के चरणों में विनती पूर्वक कह दी कि—एक राजकुमार चाहिए। महाराज जी कहने लगे कि यह मेरे वश की बात नहीं। ऐसा कार्य तो संत करते है। संत हैं बाबा बुड्ढ़ा जी। आप उन्हीं के पास जायें। उनकी आज्ञानुसार लड़का होगा। वह रथ पर अपनी दासियों को साथ लेकर चल पड़ीं। उस रथ की तीव्र गति से बहुत धूलि उड़ रही थी, बाबा बुड्ढ़ा जी ने उस धूलि उड़ने का कारण पूछा तो सिक्खों ने बताया कि आपके पास गुरु जी आ रहे हैं। बाबा जी ने सहज स्वभाव से कह दिया कि गुरु को भाग दौड़ क्यों करनी पड़ गई। यह कहते-२ बाहर आ गये और यह वचन शराप में बदल गया। जब यह सारी घटना माता जी ने सच्चे पातशाह को सुनाई तो उन्होंने बताया कि साधु पुरुषों के पास रथ पर चढ़कर शाही ठाठ बाठ के साथ इस तरह नहीं जाना चाहिये। उनके पास तो नंगे पांव मिस्सी रोटी, प्याज और लस्सी साथ लेकर जाना चाहिये। आप स्वयं अपने हाथ से मिस्सी रोटी बनाकर प्याज़ और लस्सी लेकर जाओ। माता जी इसी प्रकार बाबा जी के पास गई। इनके जाते-२ बाबा जी यह बात कर रहे थे कि जितनी भूख बेटे को होती है वह माता ही जानती है और कोई नहीं जानता। इतनी देर में माता गंगा जी बाबा जी के चरणों में मिस्सी रोटी लेकर पहुंच गईं। बाबा जी सहर्ष पूर्वक हाथ धो करके लंगर खाने लगे। जब प्याज़ अपने हाथों से तोड़ने लगे बाबा जी ने वरदान दिया कि तुम्हारा बेटा इसी प्रकार तुर्कों के सिर तोड़ेगा। इस प्रकार माता जी ने बाबा जी की ओर से वरदान प्राप्त किया। माता जी के उदर में श्री गुरु हरि गोबिन्द जी ने जन्म लिया। इसी प्रकार पंचम पातशाह ने संतों को मान दिया और प्रेमाभक्ति दिखाई।

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है।।

(सवैये पृ० १३८८)

श्री गुरु नानक देव जी ने बाबा बुड्ढ़ा जी के सिर पर हाथ रख कर कहा था कि तुमने सेवा करनी है। मर्यादा भी बतानी है या चलानी है। घास खोद के घोड़ों को ड़ालना है। तिलक भी तुमने ही करना है। तिलक लगाने की रीति आप के रहते ही गुरु अंगद देव जी को तिलक करवाकर स्थापित की।

नानक अंगद को बपु धरा।।

(दशम् ग्रन्थ)

इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने 'लहना' को अपने अंग से लगाकर अंगद बना दिया। उन में वही ज्योति प्रगट कर दी।

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ।।

(वार सता बलवंड पृ० ९६६)

इस प्रकार भाई जिस पर पूर्ण गुरु का हाथ हो—

गुरु परमेसरु एको जाणु। जो तिसु भावै सो परवाणु।।

(गौड़ 'म'० ५ 'पृ०' ८६४

ब्रह्मज्ञानी ओर परमेश्वर दो नहीं होते। ब्रह्मज्ञानी गुरु परमेश्वर के रूप में आता है। इस प्रकार जिस पर ब्रह्मज्ञानी की कृपा है अर्थात् प्रभु की कृपा है—

राखा एकु हमारा सुआमी।।
सगल घटा का अंतरजामी।।

(भैरउ 'म०' ५ 'पृ०' ११३६)

वह प्रभु सर्व सृष्टि का मालिक है अर्थात चारों वर्गों का वह आप जानने वाला और देखने वाला मालिक है। भाई ! हमें इस बात पर दृढ़ विश्वास होना चाहिये। इस निश्चय वाले मनुष्य को वासना नहीं सताती। वह ज्ञानी हो जाता है। असंग हो जाता है।

इसलिये भाई ! पूर्ण पुरुष की कृपा से मन निश्चय के घर में प्रवेश कर जाता है और यह अवस्था प्राप्त हो जाती है।

बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै।।

इस करके भाई ! माया के नशे में जीव मत्त हुआ बोल नहीं सकता परमेश्वर व गुरु के आगे। एक बार खंडूर साहिब में गुरु अंगद देव जी बैठे बच्चों की कुश्ती देख रहे थे। वहां पर हुमायूँ आया और कहने लगा,

कोई ऐसा है जो मुझे पुनः राज्य दिला देवे। तब उन्होंने कहा कि इस समय गुरु नानक देव जी की गद्दी ऐसी है जो पुनः राज्य दिला सकती है। वह अनेक साथी लेकर गुरु साहिब के पास पहुंचा। महाराज जी अपनी मस्ती में विराजमान थे। वह जाकर खड़ा हो गया। पर उसे बहुत क्रोध आया कि मैं राजा, इन्होंने मेरा कोई आदर नहीं किया। उसने तलवार निकाली उसका हाथ वहीं अकड़ गया अर्थात् रुक गया।

कर्मचारियों ने कहा—इनसे भूल हो गई। उन्होंने पकड़ करके चरणों में डाला। महाराज जी कहने लगे जहां पर तुमने तलवार चलानी थी वहां से तो भाग आया और साधु जनों पर तलवार चलाता है। तेरी तो मर्यादा ही गलत है। सभी ने कहा महाराज कुछ कृपा करो। उन्होंने कहा १२ वर्ष बाद आना। इस समय के दौरान शेरशाह सूरी आया उसने यह सारी जी०टी० रोड़ बनवाई और भले के काम भी किये। पर उसका कार्य बहुत नहीं था। फिर हुमायूँ आया। उस की अब पहली अवस्था नहीं थी। वह अब बदल गया था। इसलिये भाई ! हुमायूँ बदल गया, गुरु अंगद को मिल करके, और बाबर बदल गया गुरु नानक को मिलकर। इस प्रकार भाई ! जिस पर संत महापुरुष का हाथ हो उसके सामने कोई बोल नहीं सकता। फिर हुमायूँ की तलवार चली? ज़बान न चली जो पहले माया के नशे में चलती थी। फिर वह गुरु अंगद जी के चरणों में गिर पड़ा, और परमेश्वर गुरु उसका रक्षक हो गया। इसलिये भाई ! गुरु परमेश्वर एक ही है वह दो नहीं।

ब्रह्म गिआनी कउ खोजहि महेसुर।।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु।।
ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता।।
ब्रहम गिआनी सद जीवै नहीं मरता।।

(गौड़ी सुख पृ० २७३)

ब्रह्मज्ञानी और परमात्मा में कोई भेद नहीं। उसकी मर्यादा इस तरह होती है कि परमेश्वर की जो आज्ञा होती है, वैसे ही करता है। यही ब्रह्म ज्ञानी का लक्षण है। वह हुक्म से कभी बाहर नहीं जाता। उसके आगे कोई भी बोल नहीं सकता। जिस पर उसकी कृपा होती है उसे कोई अभाव नहीं रहता।

मरणा चीति न आवै।।

पर जब व्यक्ति माया में मत्त होता है उसे मरना भूल जाता है। अनेकों प्रबंध करता है, दो पुश्तों तीन पीढ़ियों तक आदि। योजना बनाता रहता है।

आपको मालूम होगा महाराजा रणजीत सिंह ने खालसा राज्य के समय सिखों से मिलकर और मुसलमानों ने बड़ी सहायता की। हिन्दुओं ने भी बड़ी सहायता की। खजाने का काम हिन्दुओं के पास था। और तखत प्राप्त कर लिया। चालीस वर्ष तक राज्य सम्भाला। फिर माया के भ्रम में भूल गया। उसके सात पुत्र तथा दो पुत्रियां थीं। वह निजी स्वार्थ से कार्य करने लगा। जब अकाली फूला सिंह ने महाराज को देखा कि यह कुमार्ग में पड़ चुका है उसने कहा मैं तेरा साथ नहीं दूंगा। तुम तो ग़लती करते हो, यह तो जनसत्ता थी। इसी करके हमने एक रखा था कि वह सामूहिक राज्य करे और जनता को सुख मिले। पर तुम तो अपनी ही बेटियों की तरफ जा रहे हो। फिर अकाली फूला सिंह चला गया। वह ऊना साहिब पहुंच गया और महाराज जी के बारे सभी बातें बेदी को बताई। महाराज जी भी वहां पहुंच गये। उसने बेदी को कहा-कि वह अकाली को मनाये। मेरा और कोई ठिकाना नहीं। बेदी कहने लगा जो अकाली कहता है वही मैं कहता हूं। तुम्हें तिलक तो मैंने दिया है। तेरे साथ वचन करके दिया था और तूं वचन करके मुकर गया है। अकाली ठीक कहता है। महाराजा तीन दिन तक वहीं बैठा रहा। इधर से अकाली ने बेदी को कह दिया था कि— उस 'काणे' (रणजीत सिंह) को कह देना कि मेरे सामने न आये। जब फूला सिंह क्रोध में होता था तो वह रणजीत सिंह को 'काणा' कहता था। और जब प्रसन्न होता था तो 'बादशाह' कहता था। उस (रणजीत सिंह) ने बहुत मिन्नत करने के बाद, बेदी ने अकाली को कहा। भाई ! अकाली अब मेरी एक बार बात मान ले। अकाली कहने लगा बेदी तेरा कहना तो मानेंगे पर महाराजे का जो व्यवहार है बड़ा गलत है और यह गलत रास्ते जा रहा है। महाराज अकाली के पैरों में पड़ गया। अकाली कहने लगा यह नहीं हो सकता। महाराजा कहने लगा जो आप कहेंगे मैं करूंगा। इस प्रकार अकाली पुनः आ गया। अकाली के शरीर छूटने के पश्चात और नलवा के शरीर छुटने के बाद जो कुछ हुआ आप इतिहास पढ़ के देख लें। वह अकाली ही था जो एक उचित मार्ग लिये जा रहा था। अकाली में ईश्वरीय शक्ति होने के कारण उसे महाराजा मानता था। इस प्रकार जब यह जीव सीधे मार्ग पर चलता है उसे कोई खतरा नहीं है। जब भी यह गलती करेगा तो वह अपनी गलती को स्वयं भोगेगा। जब यह माया के मोह में मस्त होता है तो दुनियाँ की कोई बात नहीं सुनता। जो उसे गलती नहीं करनी चाहिये वही करने लग जाता है—पुनः महापुरुष द्वारा ही कृपापात्र बनता है। अतः गुरु अर्जन देव जी उपदेश करते हैं—

मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे।।

तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरै।। रहाउ।।

हे व्यापक, प्रकाश स्वरूप मेरे राम राय ! मेरी तूं आत्मा है। जो संत जो तेरे में एक रस लीन हैं तूं उन्हीं का है और वह तेरे हैं। तेरे सेवक को कभी भय नहीं होगा। अकाली आयुपर्यंत नहीं डरा। हनुमान नहीं डरा। ऊधो नहीं डरा। सत्य को कभी आंच नहीं आती। जो प्रभु का सेवक होगा वह नहीं डरेगा। उसको कोई भय नहीं रहता। डर तो झूठ करके होता है। सत्यशील कभी भी नहीं डरता। इस बात की पुष्टि यहां होती है कि जब सीना (बिधि चंद) संगत के खोये हुए वस्त्र लेने गया तो उसने वस्त्रों के साथ-२ जो गहने उसे अच्छे लगे वह भी उठा लिये। जब वह बाहर निकला तब लोगों को पता चल गया कि एक ऐसा पुरुष आया है जो कपड़े भी ले गया है और गहने भी ले गया है। उसे कोई जगह छिपाने के लिये न मिले। वह एक भट्ठी वाले के पास पहुंचा और कहने लगा तेरे पास कोई जगह है, घंटा, दो घंटा काटने के लिये। वह कहने लगा मैं तो गरीब आदमी हूं दाने भूनकर अपना गुजारा करता हूं। वह उस भट्ठी में प्रवेश कर गया और भाई को कहा कि तूं अपने दाने भूनता चला जा। जब वह भट्ठी में गया ही था कि उधर छठे पातशाह अमृतसर तलाब में बैठ गये। उनके सभी शिष्य पानी डालते जायें सिर में। किसी को यह पता नहीं था कि आज क्या लीला हो रही है। जब वह (बिधि चन्द) बाहर आया तब पातशाह भी तलाब में से बाहर निकल आये। शिष्य पूछने लगे– 'महाराज ! क्या बात है ? महाराज कहने लगे तुम्हें स्वयं ही मालूम हो जायेगा। भट्ठी में वह गहने तो सभी जल गये थे पर वस्त्रों की एक तार भी नहीं जली थी। जब वह आया गुरु जी ने 'सीने' को अपनी छाती से लगा लिया और उसे बख्श दिया। वह कहने लगे कि–केवल तूने एक ही गलती की है तुम्हें ये नहीं कहा था कि तूं उन के गहने उठा। केवल संगत के वस्त्र लाने के लिये कहा था। तूने तो गहने भी उठा लिये। सीना (बिधि चन्द) कहने लगा मेरा दिल फिसल गया। वह कहने लगे यह बड़ा गलत काम हुआ। अतः जब यह अपने हक से फिसल जाता है अर्थात् आगे पीछे होता है उसकी उसे स्वयं ही सजा मिल जाती है। इस प्रकार भाई! गुर परमेश्वर में ऐसी शक्ति होती है। वह बालक को जठराग्नि से प्रतिदिन रक्षा करता है। अतः परमेश्वर अपने सेवकों की इज़्ज़त रखता है और उनके सेवकों को दुःख नहीं पहुंचता।

जमु नहीं आवै नेरे।। रहाउ।।

अतः यम भी उसके पास नहीं जाते। वह कृपा सदन में प्रवेश कर जाता है।

जा कउ अपुनी करे बखसीस। ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गौड़ी सुख पृ० २७७)

जिस पर कृपा हो जाती है, उसके पास यम नहीं आते। वह परमात्मा के साथ एक हो जाता है।

जो तैरे रंगि राते सुआमी .....

हे स्वामी जो तेरे रंग में, मस्ती में रंगे गये हैं।

तिन का जनम मरण दुखु नासा।।

उसका जन्म मरण दुख कट गया अर्थात् उसका जन्म मरण नहीं हुआ। किसी ब्रह्मज्ञानी का आज तक जन्म-मरण नहीं हुआ। वह भाई ! अविनाशी के साथ मिलकर अविनाशी हो गये। उन पर कृपा हो गई।

तेरी बखस न मेटै कोई .....

तेरी कृपा को कोई मेट नहीं सकता, पंचम् पातशाह कहते हैं–

सतिगुर का दिलासा।।

सतिगुरु का सहारा होता है। वह जिस ऊपर एक बार भी सतगुरु की कृपा हुई, देख लो। नानक ने, मुहम्मद ने कितने बख्श दिये वह कृपा करने वाले महापुरुष ही होते हैं। अतः उनको कोई शोक नहीं होता।

नाम धिआइनि सुख फल पाइनि .....

वह आठ पहर परमात्मा का भजन करते हैं और आत्मस्थिति में आनन्द मानते हैं।

आठ पहर आराधहि।।

वह आठ पहर परमात्मा की आराधना करते हैं। इस बात का उन्हें अनुभव हो गया कि यह हमारे संकल्प, हमारी कामना, वासनायें इत्यादि सब दृश्य हैं तथा मिथ्या है पर हमारा स्वरूप सत्य है।

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ।। करन करावन तिनि मूलु पछानिया।।

(गोड़ी सुख० पृ० २८५)

उस सत्य के साथ जब इसका ध्यान एक हो गया, वह पृथक् न रहा तो फिर इसकी मुक्ति हो गई। इस पर कृपा हो गई और इसका जन्म मरण कट गया, पंचम पातशाह हुक्म करते हैं–

तेरी सरणि तैरै भरवासै .....

हे प्रभु ! मैं तेरी शरण में हूं। आपकी शरण के बिना मेरी और कोई जगह नहीं है। एक आप ही शरण के योग्य हैं।

जिते सरन आये है।।
तिते राखु लये है।।

बिना सरण ताकी नहीं और ओटं।।
लिखे जंत्र केते पढ़े मंत्र कोटं।।
बचेगा न कोई करे काल चोटं।।

(दसम् ग्रन्थ)

कोई शरणागति से वापिस नहीं गया, न कबीर न नामदेव, न जयदेव न रविदास। जो भी शरण में आया उसे परमात्मा ने अपने साथ मिला लिया। भगवान कृष्ण ने गीता में यहीं पर बात को समाप्त कर दिया।

सर्वधर्मानपरित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।।

(गीता अध्याय १८, श्लोक ६६)

कहते—तू सोच मत कर, शरण में आ जा। वह परिपूर्ण है। तूं उसकी शरण में जा। तुझे कोई चिंता नहीं होगी। मैं तेरा जिम्मेवार हूं। इसलिये गुरु साहिब कहते हैं कि जितने भी शरणागत हुए वह वापिस कभी जन्म मरण में नहीं आये। समर्पण अन्तिम भक्ति है।

तेरी सरिण तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि।।

वह जो पांच दुष्ट थे काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार वह मैंने वश में कर लिये हैं।

गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाण तेरी।।
सभ ते वड्डा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी।।

गुरु अर्जन साहिब कहते हैं कि मैं कोई ज्ञान नहीं जानता। परमेश्वर-मुझे तेरा कोई पता नहीं था। नानक जी कहते हैं कि सत् गुरु सबसे बड़ा है जिसने कलियुग में मेरी इज़्ज़त रखी। गुरु रामदास जी मेरे गुरु हैं—

हरि जीउ नामु परिओ रामदासु।।

(सोरठि म० ५ पृ० ६१२)

वह पूर्ण गुरु जिसे बख्श दे उनका बेड़ा पार होगा। गुरु सबसे बड़ा है, क्योंकि ज्ञान सवसे बड़ा है, संसार में और कोई वस्तु बड़ी नहीं है। गुरु के सम्बन्ध में आज्ञा करते हैं।

गुरु कुंजी पाहू निवलु, मन कोठा तनु छति।।
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै, अवर न कुंजी हथि।।

(सलोक मः २ पृ० १२३७)

गुरु 'शिष्य को' गुरु बना देता है। तीसरे पातशाह ने बारह वर्ष गागरें उठाईं और गुरु की सेवा की। बारह वर्ष के अंतिम दिन जब वह पानी

की गागर लेकर आ रहे थे तो मार्ग में योगी की हड्डी दबी हुई थी जिसका योग भ्रष्ट हो गया था। जब तीसरे पातशाह का अंगूठा हड्डी से स्पर्श किया तो वह सुर जीत हो गया। महाराज जी ने कहा कि क्या बात ? मैं तो प्रतिदिन यहीं से निकलता था। योगी कहने लगा कि आज आपमें वह ईश्वरीय शक्ति प्रकट हुई है। जाओ अपने गुरु के पास तुम्हें सब मालूम हो जायेगा। जाते हुए, वहां पर बाबा बुड्ढ़ा जी को आज्ञा हुई थी कि वह चंदन तथा केसर आदि तैयार रखें। उसके आते ही गुरु अंगद देव जी ने आदेश दिया कि हे पुरुष ! इस आधी गागर पानी से तू स्नान कर ले तथा बाबा बुड्ढ़ा जी को उसे तिलक करने हेतु आदेश दिया। इस तरह महाराज गुरु अंगद देव जी ने तीसरे पातशाह को गुरआई (गुरु-गद्दी) देकर कई वरदान दिये। "निमणियां दा माण, निताणियां दा ताण", निओटियां दी ओट", निआसरियां दे आसरे, निधिरियां दी धिर आदि वरदान देकर के प्रसन्न किया। फिर तीसरे पातशाह आप लिखते हैं।

नानक गुर ते गुरु होइआ, वेखहु तिस की रजाइ।।

(सलोक म. ३ पृ० ४९०)

उन्होंने कहा प्रभु की इच्छा का अवलोकन करो। मैं गुरु को मिलकर गुरु हो गया हूं। कई अपनी इच्छानुसार अर्थ कर देते हैं। पांचवें पातशाह कहते हैं कि सबसे बड़ा सतिगुरु है। नानक बड़ा नहीं कहा गया है।

सब ते वड्डा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी।।

पर आप लोग अपने संकीर्ण विचारों से अर्थ इधर का उधर लगा देते हैं। इसलिये भाई ! प्रसंग का अर्थ गलत नहीं करना चाहिये। सतिगुरु, परमेश्वर की कृपा से होता है तथा जो गुरु अवतार होता है वह कभी २ आता है। वह संसार पर कृपा करके जाता है। वह आता ही कृपा करने हेतु है। वह कोई आम व्यक्तियों की तरह नहीं होता, प्रमाण है—

जोति रूप हरि आपि गुरू नानकु कहाइउ।।

(सवैये पृ० १४०९)

वह ज्योति रूप गुरु बने। उन्होंने आगे कृपा की। इस करके सब से बड़ा गुरु है और कोई बड़ा नहीं है।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

❑

१२

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ।।
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ।।
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ।।
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ।।
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविन्द अलाइ।।
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ।।
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ।।
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ।।
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ।।
फलगुणि नित सलाहीअै जिस नो तिलु न तमाइ।।

(बारह माहा पृ० १३६)

एक बार आठवें महाराज जी ने किसी गांव में आना था। संगत ने बड़ी खुशी से सब मार्ग साफ किये और जलूस निकाला। वहां एक पंडित रहता था। बहुत पढ़ा हुआ। पंडित ने शिष्यों से पुछा—कि आप बड़े खुश हो, क्या बात है ? शिष्यों ने कहा—कि हमारे गुरु आठवें पातशाह ने आना है। पंडित ने कहा कि उन का नाम क्या है ? तो शिष्यों ने कहा नाम है हरि कृष्ण जी। तब ब्राह्मण ने कहा कि—कृष्ण ने तो गीता सुनाई और अर्थ भी किये थे वह तो देव हैं। आपके गुरु एक तो कृष्ण और साथ ही हरि, क्या वह गीता के अर्थ सुना सकेंगे ? शिष्यों के मन में यह बात घर कर गई कि यह अवश्य ही महाराज जी के आगे शंका करेंगे। कहीं यहां ऊंच नीच बात न कह दे। इसलिये शिष्यों ने महाराज जी के आगे सर्व बात कह दी। ब्राह्मण को विद्या का बहुत अभिमान था। गुरु जी ने कहा पंडित जी को बुला लाओ। पंडित आ गया। तब गुरु जी ने पूछा कि—आपके गांव में कोई ऐसा व्यक्ति है जो गूंगा और बहरा भी हो। तब शिष्यों ने कहा कि—एक है उसका नाम छज्जू है। झीवर का बालक है। तो कहा उसको लाओ। फिर पंडित को कहा कि आप कहोगे कि यह गुरु

साहिब के साहिबजादे हैं और बाल्यकाल में ही गीता कंठस्थ करवा दी होगी। अब तूं बता कि इस छज्जू से गीता सुनवा दें, अर्थों सहित। पंडित कहता है कि यह तो बड़ी विलक्षण बात है ! गुरु साहिब ने छज्जू के सिर पर एक छड़ी रख दी। उसने गीता सुनाई और ऐसे अर्थ किये कि सुन कर पंडित उठा और गुरु जी के चरणों में पड़ गया। और कहा कि—मुझे नहीं पता था कि आप ज्योति स्वरूप हरि हो।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ तत मिलायउ।।

(सवैये पृष्ठ १४०८)

आप जी की इतनी छोटी आयु देखकर मुझे भ्रम हो गया था। उसने क्षमा याचना की। मुझे भ्रम हो गया था। यह हरिकृष्ण हैं और पूर्ण सतिगुरु हैं। यही शंका दिल्ली में बिशन सिंह को भी हुई थी कि—यह आठ वर्ष की आयु में गुरु है यह तो ठीक है पर गुरु नानक साहिब की सामर्थ्य इसमें है कि नहीं ? उसने रानियों और दासियों को दर्शन हेतु ले जाना था। संशय होने करके बिशन सिंह ने रानियों के वस्त्र दासियों को, दासियों के वस्त्र रानियों को पहना दिये। गुरु जी के पास जाकर बिठा दी। गुरु जी ने छड़ी सिर पर रख के सभी के बारे में बता दिया कि यह रानी है यह दासी है, यह रानी है यह दासी है। यह बता करके अपने सिंहासन पर जा विराजे। बिशन सिंह ने चरणों में पड़ कर क्षमा मांगी। मैं भ्रमित हो गया था। मुझे क्षमा कर दें। उसे संशय था कि आठ वर्ष की आयु में गुरु में ज्योत कैसे प्रगट हो गई। अविद्या में तीन आवरण हैं। संशय, विपर्यय तथा अज्ञान। और तो कोई अविद्या नहीं। संशय पड़ जाते हैं। विपर्यय हो जाते हैं और भ्रम हो जाता है। न जानना यह अविद्या का धर्म है। चेतन का नहीं। तुम्हें इस बात का पता है कि स्वयं आप नानक अंगद कहलाये।

नानक अंगद को बपु धरा। धर्म प्रचुर इस जग में करा।।

(दशम् ग्रन्थ)

श्री गुरु नानक ज्योति रूप में आये और उन्होंने श्री गुरु अंगद देव जी का शरीर धारण करके वही प्रचार किया।

अंगद अमुर दास कहाइओ।। जन दीपक ते दीप जलाइओ।

(दशम् ग्रन्थ)

सभी में एक ही ज्योति व्याप्त है। इन जीवों को सशंय भी हो जाता है। इसलिये भाई, जब गुरु पर श्रद्धा होती है तो इसे परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। अब पहली पंक्ति पढ़ें—

फलग्रणि अनंद उपारजना.....

गुरु साहिब ने कहा—मुझे बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ। बहुत उत्साह प्राप्त हुआ जिस तरह कोई झरना चलता है। जब उसकी वह पुण्य-दशा प्रकट होगी तभी उसके हृदय में परमात्मा प्रकट हो जाएगा। जब उसका वह पूर्व पुण्य जाग्रत होगा तब उसे बहुत उत्साह आएगा। क्यों आएगा ? क्योंकि वहां पर परमात्मा ने साक्षात प्रगट होना है। परमात्मा किसी के लिये प्रकट नहीं होता। इसलिये भाई !

ब्रहम गिआनी से जन भए।।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ।।

(गउड़ी सुख० पृ० २७२)

ब्रह्मज्ञानी वह होगा जिसे प्रभु आप करेगा।

जा कउ अपनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुख० पृ० २७७)

यह सभी कृपा का व्यापार है। इसलिये जब हृदय में प्रभु प्रकट हो गया, तो बहुत ही उत्साह हुआ। एकाग्रता हुई। यह इसका अर्थ है—

हर सजण प्रगटे आइ।।

वह हरि जो सर्व संसार का मित्र है, सृजन पालना और लय करता है, वह प्रकट हो गया। कोई सज्जन पृथक वस्तु नहीं है।

चीनत चीतु निरंजन लाइआ।। कहु कबीर तौ अनुभउ पाइआ।।

(क़बीर पृ० ३२८)

जब इसने पहचान कर प्रभु के साथ मन को जोड़ा तो अनुभव स्वरूप परमात्मा स्वयं ही प्रकट हो गया। वह पहले ही बैठा था। प्रभु की कृपा से ही पर्दा दूर हुआ और हृदय में प्रभु प्रकट हुआ।

संत सहाई राम के करि किरपा दीया मिलाइ।।

वह संत गुरु रामदास महाराज जी हैं, उन्होंने हमें राम के साथ मिला दिया।

रमत राम जनम मरणु निवारै।।

(गौंड म० ५ पृ० ८६५)

वह जो व्यापक राम है उसके प्रकट करने में संत ही सहायक हैं।

संत सांगि अंतरि प्रभु डीठा।। नामु प्रभु का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुखः पृ० २६३)

अतः हमने गुरु रूप संतों के संग परमात्मा को प्राप्त कर लिया। हृदय में उस परमात्मा का दर्शन किया। वह जो देखने वाला है वही तो परमात्मा

है। और कौन परमात्मा है ? भाई—एक बात मुझे, एक व्यक्ति की बहुत अच्छी लगी कि जो भीतर देखता है, 'मुहम्मद' वह खुदा है। फिर मैंने कहा जो आप कहते हो हिन्दू भी वही है। उसका क्या बना ? वह आदमी कहता है-कि बात तो वही है, जो देखने वाला है, साक्षी है, द्रष्टा है, चेतन है। पारख है वही चेतन ही है। संसार से पार करना तो उस 'दाना बीना' ने ही है। उस संकल्प को देखने वाला कौन है ? वह एक है इसमें कोई संशय नहीं। कोई जड़ वस्तु तो देख नहीं सकती सब को। जड़ में तो देखने की शक्ति ही नहीं है और न ही जानने की। पर जब आपका मन संकल्प विकल्प करता है तो उसे कौन देखता है। क्योंकि मन तो जड़ है, द्रष्टा देखता है वह द्रष्टा कौन है ? क्या वह आप नहीं हो ? पक्की बात है न कि ऐसे झूठ ही हां-हां करते हो। जो भी संकल्प इसके बनते तथा बदलते हैं उसको देखने वाला तथा जानने वाला एक चेतन ही है। वह व्यापक है। जब यह अपने मन को इधर उधर जाते हुए देखता है तो इसे निश्चय नहीं होता। वहां रुकता भी है। शंकराचार्य लिखते हैं विज्ञानकार अर्थात् उस ब्रह्म की अनुभूति होती है। अनुभव होता है जितने भी संकल्प हैं उन्हें देखने वाला तो आप ही है, चेतन है। इसे अनुभव यहीं से होगा। उपनिषद् जब लिखने लगे तो श्रुति से पहले लिखा है कि सर्व विज्ञान का अनुभव कर्त्ता एक है। इस व्यापक का अनुभव कर्त्ता भी एक है। इस व्यापक की अनुभूति भी यहीं से हुई और कहीं नहीं हुई। अब आप देखें कि जितने भी आपके संकल्प हैं बदलते हैं—

घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

(श्लोक म० ९ पृ० १४२७)

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठित

(गीता अध्याय १८, ६१)

यह जितने भी आयेंगे सभी यह बात करेंगे पर जब हम देखते हैं तो हमें यह पूरा निश्चय हो जाता है कि यह जो हमारे मन को देखता है, वही द्रष्टा है।

मूई सुरति बादु अहंकार।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गोउड़ी म० १ पृ० १५२)

यह जन्म मृत्यु को भी देखता है। यदि हमें यह ज्ञात हो जाये तो हमारा मन एकाग्र हो जाए, पर हम वहां ठहरते नहीं। हमारे मन में गंदगी बहुत भरी हुई है। आठों पहर तो हम यही गिनती करते हैं कि भाई, हमें

है। और कौन परमात्मा है ? भाई—एक बात मुझे, एक व्यक्ति की बहुत अच्छी लगी कि जो भीतर देखता है, 'मुहम्मद' वह खुदा है। फिर मैंने कहा जो आप कहते हो हिन्दू भी वही है। उसका क्या बना ? वह आदमी कहता है-कि बात तो वही है, जो देखने वाला है, साक्षी है, द्रष्टा है, चेतन है। पारख है वही चेतन ही है। संसार से पार करना तो उस 'दाना बीना' ने ही है। उस संकल्प को देखने वाला कौन है ? वह एक है इसमें कोई संशय नहीं। कोई जड़ वस्तु तो देख नहीं सकती सब को। जड़ में तो देखने की शक्ति ही नहीं है और न ही जानने की। पर जब आपका मन संकल्प विकल्प करता है तो उसे कौन देखता है। क्योंकि मन तो जड़ है, द्रष्टा देखता है वह द्रष्टा कौन है ? क्या वह आप नहीं हो ? पक्की बात है न कि ऐसे झूठ ही हां-हां करते हो। जो भी संकल्प इसके बनते तथा बदलते हैं उसको देखने वाला तथा जानने वाला एक चेतन ही है। वह व्यापक है। जब यह अपने मन को इधर उधर जाते हुए देखता है तो इसे निश्चय नहीं होता। वहां रुकता भी है। शंकराचार्य लिखते हैं विज्ञानकार अर्थात् उस ब्रह्म की अनुभूति होती है। अनुभव होता है जितने भी संकल्प हैं उन्हें देखने वाला तो आप ही है, चेतन है। इसे अनुभव यहीं से होगा। उपनिषद् जब लिखने लगे तो श्रुति से पहले लिखा है कि सर्व विज्ञान का अनुभव कर्त्ता एक है। इस व्यापक का अनुभव कर्त्ता भी एक है। इस व्यापक की अनुभूति भी यहीं से हुई और कहीं नहीं हुई। अब आप देखें कि जितने भी आपके संकल्प हैं बदलते हैं—

घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

(श्लोक म० ९ पृ० १४२७)

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठित

(गीता अध्याय १८, ६१)

यह जितने भी आयेंगे सभी यह बात करेंगे पर जब हम देखते हैं तो हमें यह पूरा निश्चय हो जाता है कि यह जो हमारे मन को देखता है, वही द्रष्टा है।

मूई सुरति बादु अहंकार।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गोउड़ी म० १ पृ० १५२)

यह जन्म मृत्यु को भी देखता है। यदि हमें यह ज्ञात हो जाये तो हमारा मन एकाग्र हो जाए, पर हम वहां ठहरते नहीं। हमारे मन में गंदगी बहुत भरी हुई है। आठों पहर तो हम यही गिनती करते हैं कि भाई, हमें

इतना बच गया, यह हो गया, इतना हो ग़या, यह करते तो यह हो जाता। इस कपड़े का मूल्य यह था ऐसा करते तो इतना ज्यादा हो जाता, यह इस प्रकार करते तो इतना हो जाता।

इस प्रकार इसका झगड़ा ही कभी समाप्त नहीं होता। वह कौन है जो यह करता है ? वह मन है। मन कभी अवसर ही नहीं देता कि यह मुझे कहीं पकड़ ही न ले, और पहचान ही न ले। पर मन को देखने वाला तो चेतन है, देखने वाला तथा जानने वाला है और तो कोई है ही नहीं। इस प्रकार जब कहीं मन जाता है तब यह जाते हुए भी देखता है और आते हुए को भी देखता है। कई बार मन कहीं गया होता है जब इसे कोई बुलाता है तब यह सुनता ही नहीं। जो पूर्ण एकाग्रता किसी वस्तु पर हो जाए तो यह किसी और की बात नहीं सुनता। कहता है कि मेरा मन कहीं गया हुआ था। इसलिये मन की आवश्यकता तो रही। जो मन से बिना काम हो जाता, तो मन की जरूरत न रहती। जो मन को देखने वाला है वह ही चेतन है और वह ही पारख है।

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।

(म० १ पृ० १४४)

मन को परखने वाला भी वही है। अपने मन का निरीक्षक भी वह स्वयं है, और कहता है कि मेरे से यह गलती हो गई। मुझे क्षमा कर दें। वह तो सभी कुछ जानता है।

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ।।
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ।।

(तिलंग म० ९ कबीरजी पृ० ७२७)

इसने अभिमान तो दूर नहीं किया। पाप करने से हटा नहीं। फिर मन को कैसे देखे। मन को उस समय देखेगा जब इसका मन निर्मल होगा। वह प्रभु परमात्मा इसके हृदय में प्रगट हो जाएगा। अब बतायें कि होता है कि नहीं ? वह कब प्रकट होता है ? जब मन जाएगा तो ध्यान भी जाएगा और इनका जो द्रष्टा है वह दाना बीना है उसी ने ही होना है, और किसी ने होना ही नहीं क्योंकि यह भीतरी बात है, यह बात बनी कि नहीं ? पर इसे यह पता ही नहीं कि वह देखने वाला मैं हूं। कोई इस से पूछता भी नहीं क्योंकि किसी को किसी के अंतर का क्या पता। यदि सब को यह मालूम हो जाए तो झगड़ा हो जाये। इसलिये भाई ! वह जो परमेश्वर है, वही देखने वाला है वह तो—

दाना बीना साईं मैडा नानक सार न जाणा तेरी।।

(सोरठि म० ५ पृ० ५२०)

भाई वीर सिंह ने इस पर लिखा, जो मालिक है वह सर्व के अन्दर साक्षी रूप में विराजमान है। भाई साहिब कहते हैं कि वह सर्व में द्रष्टा

रूप में बैठा है, व्यापक रूप में नहीं। जो व्यापक रूप में बैठे तो उस समय वृत्ति नहीं होगी। जो एक बार भी व्यापक हो जाए तो वह सोने वाला नहीं है। फिर जाकर इसको जाग्रत, ज्योति प्राप्त हो जाएगी। इसे अभी तक उस ज्योति की प्राप्ति नहीं हुई।

संत सहाई राम के .....

उस राम परमात्मा को प्रगट करने वाले संत, श्री गुरु रामदास जी महाराज हमारी सहायता करेंगे। वही हमें ब्रह्मज्ञानी बनायेंगे।

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है।।

(सवैये पृ० १३८८)

जब प्रेमाभक्ति हृदय में आयेगी तो फिर यह संत बन जाएगा।

संत सांगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(गौडी सुख० पृ० २९३)

फिर वह संत परमात्मा को अंतर में दिखा देंगे ? संतों ने कृपा करके मेरे मन को प्रभु से मिला दिया। जब आपका ध्यान ऐसा हो जाएगा कि जो मन को देखता है वह मेरी आत्मा है। तब मन को बाहर से मुड़ना पड़ेगा। वह देखेगा कि मन को देखने वाला जो दाना बीना है इसकी आत्मा है। जब इसे आत्मा का दृढ़ निश्चय होगा, इसकी बुद्धि वहीं आ गई तो इसका कोई संकल्प नहीं होगा। पर इसने मन को मोड़ना ही नहीं, इसको आदत ही नहीं मन को मोड़ने की। मन मुड़ेगा नाम द्वारा। संसार की कोई वस्तु मन को मोड़ने वाली नहीं है। तुम स्वयं देखो, अनुभव करो। जब आपका मन नाम के साथ जुड़ेगा तो दुनियाँ की कोई वस्तु वहां नहीं होगी। आप यह बतायें—कि आपका मन कभी नाम के साथ जुड़ा है ?

एक चित जिह इक छिन धिआइउ।। काल फास के बीच न आइउ।।

(दशम् ग्रन्थ)

आप सच बताना कि आपका मन कभी एक क्षण मात्र भी नाम के साथ लीन हुआ ? कभी परमेश्वर के साथ जुड़ा ? आप ग्रहण तो कर लेंगे और बात करनी भी सीख जाएंगे पर जो एकाग्रता आपको मिलनी है वह गुरु की कृपा से ही प्राप्त होगी। यहां गुरु की कृपा की आवश्यकता है। एक संत थे वह पहली पौड़ी का उपदेश देते थे, उनका मंत्र ही पहली पौड़ी का था—

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुर प्रसादि।। जपु।।

(पृ० १ जपुजी)

वह कहते थे कि भाई ! मोक्ष गुरु की कृपा से होगा। फिर तुम्हारा मन सही चलेगा। वह बात ठीक ही थी। अब तो लोग बहुत समझदार हो गये हैं। बिना नाम के काम निकाल लेते हैं। हां जब तक नाम के साथ नहीं जुड़ेगा 'नामी' की प्राप्ति नहीं होगी। 'नाम' और 'नामी' एक है। विचार करके बतायें कि तुम्हारा मन नाम के साथ एक बार भी कभी जुड़ा है। ठीक प्रकार से बतायें कि जुड़ा कि नहीं। कृपा होगी। ऊपर से कृपा होगी परमेश्वर की अपने आप।

करि किरपा दीआ मिलाइ।।

गुरु साहिब कहते हैं कि जब तुम अपने अंतःकरण को शुद्ध कर लोगे तुम्हारे को सर्व सुख प्राप्त हो जाएंगे। फिर क्यों चिंता करते हो ? यदि तुम अपने मन को शुद्ध कर लो तो तेरी सर्व वासनायें निवृत्त हो जायेंगी। अब बतायें कि मन को भागने की जगह कौन सी है ? वासना की सड़कों पर मन जब भी भागेगा पहले इस तरफ घूमने जायेगा फिर दूसरी तरफ खिसक जायेगा। वासना के साथ मन चंचल हो जाता है। जितनी वासना ज्यादा होगी उतना ही आपका मन चंचल होगा। गुरु जी कहते हैं कि—वासना को दूर करके अतःकरण को शुद्ध करो। इधर उधर न भटको। फिर इस तरह चीत्कार नहीं करना। न ही इसके साथ कोई ज्यादा लाभ होगा, अंतःकरण को शुद्ध करो तुम्हें मालूम है न ? सिद्ध गोष्ठ का, जब भंगर नाथ ने गुरु नानक साहिब से पूछा कि मैं भी एक प्रश्न कर सकता हूं ? गुरु नानक साहिब को वह गुरु तो कहते नहीं थे। वे तो गोरख को गुरु कहते थे। उसके गुरु ने कहा कि जगह तो नहीं रही, तूं भी प्रश्न कर ले। तब भंगरनाथ ने प्रश्न किया और गुरु नानक साहिब ने उत्तर दिया—

नानक आखे भंगर नाथ तेरी माउं कुचजी आही।।
भांडा धोइ न जातिउन भायें कुचजे फुल सड़ाही।।

(वार भाइ गुरदास जी)

गोरखनाथ भंगरनाथ को कहने लगा कि अब उत्तर दे क्योंकि माता तो उसकी गोरख ही थी। गुरु उसका, गुरु नानक साहिब जी ने कहा कि भंगरनाथ तेरा गुरु तो बुद्धिमान नहीं है। इसने तेरा बर्तन नहीं धोया। भाव तेरे मन को निर्मल नहीं किया। गोरखनाथ ने भंगरनाथ को कहा कि अब बता तूने हमारी बेइज्ज़ती ही करवानी थी ! जब इसके अन्दर पापों के संस्कार उठते हैं तो मन अशुद्ध है। गुरु साहिब कहते हैं कि मन तो तभी निर्मल है जब पांच वस्तुएं—सत्, संतोष, दया, धर्म तथा पवित्रता मन में आ जायें। हमें यह उपदेश संतों से प्राप्त हुआ है। मन आपका तब निर्मल होगा जब राग द्वेष से रहित होगा। यह वस्तुएं आपके पास होंगी तो आपका मन शुद्ध हो जाएगा। अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे मन में क्या उठता

है ? पहले आप पापियों वाली बातें करते रहते हो। कि यह बुरा है, यह अच्छा, वह अमुक है। इन तुच्छ बातों के करने से कुछ प्राप्त नहीं होगा। पर गुरु तो कुछ थे। उनको तो प्रभु की प्राप्ति हुई है। क्या आपको प्राप्त हुआ है ? साथ ही रुपये भी दिये तथा साथ निंदा भी की।

सेज सुहावी सरब सुख .....

यदि तुम अपने को शुद्ध कर लो तो तुम्हें सर्व सुख प्राप्त हो जाएंगे अर्थात् तुम्हें पूर्ण सुख मिल जाएगा, दुनियाँ का भी तथा परमेश्वर का भी। पर यदि तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध हो जायेगा, क्योंकि अंतःकरण भ्रम करके अशुद्ध है।

भरमे सुरि नर देवी देवा।।
भरमे सिद्ध साधिक ब्रहमेवा।।
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ।।
नानक तेह परम सुख पाइआ।।

(गौड़ी बैरागण म० ५ पृ० २५८)

जब यह अपने भ्रम, भय तथा मोह को मिटा देगा' अपने मन में से, तो इसे परम सुख प्राप्त हो जाएगा। यह कार्य तो इसने करना ही है। यदि यह गुरु की एक बात मान ले जो हमने कई बार कही है वह यह है पूर्ण संत का मिलाप तथा सेवा। एक साधु था महापुरुष, एक व्यक्ति उनके पास गया और कहा कि महाराज मुझे कल्याण का कोई मार्ग बतायें। तो संत ने बताया कि यदि तूं वास्तव में ही कल्याण चाहता है तो यहां निरन्तर धान कूटता रह। यहां यज्ञ होता है, उस समय धान कूटकर चावल निकाले जाते थे। वह व्यक्ति २४ वर्ष धान कूटता रहा। वह संत भी पूर्ण था। उसने कहा—मैंने अब जाना है। संगत को कहा—तुम अपना कोई गुरु ढूंढ लो। जो गद्दी पर बैठने के योग्य हो। संगत ने एक पर्चा छपवाकर कि यह गुण उसमें हो तथा यह गुण उसमें ऐसे हो। आदमी वही लेकर के वहां से फिरता-२ पहुंच गया। उस जगह जहां २४ वर्ष से वही व्यक्ति निरन्तर धान कूट रहा था। यह आदमी पर्चे के प्रश्न सुन के हंसने लगा। पर्चे वाले आदमी ने पूछा कि मुझे लगता है आप धान कूटने वाले हो। मैं तो यह कहता हूं कि भाई ! गद्दी पर वही बैठेगा जिसमें यह गुण होगें। वह ज्ञाता हो। धान कूटने वाले ने कहा कि मेरा नाम लिख ले। जब गुरु के पास उसे ले जाया गया तो गुरु ने उसे पूछा, वह आदमी कहता है न कोई ज्ञानी है, न अज्ञानी, न शुद्ध है, न अशुद्ध है। फिर गुरु ने पूछा तुझे अनुभव हुआ है ? उसने कहा अनुभव होना क्या है जी, वह अनुभव तो एक ही है। गुरु ने कहा बस। अपनी लाठी तथा कमण्डल ज्यों का त्यों उसे देकर आप शरीर त्याग कर दिया। और उस आदमी को गद्दी पर बैठा दिया। इस करके भाई ! यह तो काम हैं प्रभु को प्राप्त करने वाले का। यदि तीसरे

पातशाह एक वर्ष ही पानी ढो करके हट जाते फिर गुरु नहीं बन सकते थे या दस दिन ही पानी भर के हट जाते कि अब किसी और से उठवाओ। नहीं बिल्कुल नहीं यह भी पूर्व जन्म कर्मों से ही हुआ। इतिहास में यह बात भी लिखी है जो मुझे बहुत सुन्दर लगी। जब बारह वर्ष समाप्त हुए जहां दमदमा साहिब है। मैंने देखा उसके आसपास ईटें लगी हुई थी। मैंने वहां एक रात भी काटी। वह बड़ा पवित्र स्थान है—भाई, इसलिये मैं वहीं पर पड़ गया और सारी रात जागता रहा। यह वह स्थान था जहां बारहवें वर्ष के अंतिम दिन जब गुरु अमर दास जी वहां पर आकर खड़े हुए थे। वहां एक हठ योगी की हड्डी पड़ी थी। उसको इनके पांव का अंगूठा लग गया। पहले भी लगता था। वह योगी खड़ा हो गया और कहने लगा—कि आज आपके पास ईश्वरीय शक्ति प्रकट हो चुकी है और आपकी कृपा से मेरी मुक्ति हो चुकी है। मैं हठ योगी था। हठ योग करते करते मेरा यहां शरीर छूटा था। अतः आज आपके चरण स्पर्श से मेरी मोक्ष हो गई है। आज आपके पास ईश्वरीय शक्ति का संचार हुआ है। आपको स्वयं ही मालूम हो जायेगा। आगे गुरु अंगद देव जी ने पहले ही तैयारी की हुई थी। रागियों को कीर्तन करने के लिए कहा गया। बाबा बुड्ढ़ा जी को तिलक करने हेतु तैयार किया। आधी गागर से गुरु जी ने स्नान किया और शेष आधे पानी की गागर से श्री गुरु अमर दास जी को स्नान कराया। गुरु साहिब स्वयं नीचे बैठ गये और अमरदास जी को गद्दी पर बिठाया। बाबा बुड्ढ़ा जी ने तिलक दिया। जुलाहे को भी बुलाया जिसने अमर दास जी को गाली निकाली थी। उसके सामने ही अमरदास जी को बहुत वरदान दिये। इस प्रकार जब अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा तो इसे सर्व सुख प्राप्त हो जायेंगे। यह तो वाणी है कोई किस्सा तो है नहीं, उत्साह युक्त है, यह बिल्कुल सत्य है।

हुणि दुखा नाही जाइ।।

अब दुःख कहां रहेंगे ? अंतःकरण शुद्ध हो गया। तुम्हें ज्ञान हो गया। और ज्ञान में दुख सुख होना ही नहीं।

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरन्तरि नानक दरपनि निआई।।

(सोरठ मः ९ पृ० ६३२)

वह तो सुख दुख से रहित है, चेतन है, दुखों से निर्लेप है। गुरु साहिब कहते हैं कि अब दुखों का कोई स्थान नहीं है। कहां रखोगे ? ब्रह्मज्ञानी में तुमने कभी दुख सुख देखा है ? वह तो दुख सुख का प्रकाशक है, मुक्त है। जो ज्ञानवान् होता है, वह दुख सुख को अपना धर्म नहीं मानता, वह धर्म रहित है, व्यापक है।

इछ पुनी वडभागणी .....

बड़े भाग्य होने से मेरी सर्व इच्छाएं पूर्ण हो गई। पंचम् पातशाह कहते हैं कि गुरु राम दास जी की कृपा से सभी कुछ प्राप्त हो गया। क्या ?

वरु पाइआ हरि राइ।।

हरि जो प्रकाश सरूप परमेश्वर है वह वरदान में प्राप्त हो गया। 'वर' कहते हैं लड़के को या पति को। पर यहां जो 'वर' है वह प्रकाश रूप परमेश्वर है। वह 'वर' मैंने प्राप्त कर लिया। वही मेरा पिता है, वही मेरा गुरु है, मेरा मालिक है, और मेरा आश्रय है।

मिलि सहीया मंगलु गावही गीत गोविन्द अलाइ।।

अब तो सखियों से मिल के, जो कि बख्शे गये हैं उनके साथ मिलकर मंगल गावेंगे। अब तो मिल गये, और गुरु पदवी पर पहुंच गये।

गीत गोविन्द अलाइ।।

अब गोविन्द के गीत गाया करेंगे। उसका भजन किया करेंगे। यश गाया करेंगे। यहां पंचम पातशाह ने यश गाया है। और क्या है ? अब परमात्मा के बिना तो और कोई है ही नहीं, और सब मिथ्या है।

दिसटिमान् है सगल मिथेना।

(मारू म० ५ पृ० १०८३)

झूठे तथा मिथ्या के गुण नहीं गाने हैं। इस सारी बाणी में परमात्मा के ही गुण गाये हुए हैं।

हरि जेहा अवरु न दिसई .....

मुझे हरि जैसा कोई प्रेमी नहीं मिला।

तैडी बंदसि मै कोई न डिठा तूं नानक मनि भाणा।।
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंत पछाणा।।

(सलोक म० ५ पृ० ६६४)

गुरु साहिब कहते हैं कि परमात्मा जैसा कोई नहीं है पर जिसको मिल कर मैंने कंत (परमात्मा) को पहचाना है मैं उसे नमस्कार करता हूं और परमात्मा को भी करता हूं।

कोई दूजा लवै न लाइ।।

उसके समान कोई सत्य है ही नहीं। सत्य एक है। यह सत्य ऋषियों को ज्ञात है। एक ही है दूसरा सत्य तो कोई नहीं है। दो सत्य तो नहीं हैं फिर दूसरे को साथ कैसे लगायें। वह सत्य एक आनन्द परमात्मा इसका आत्मा है। आपा है। इसके समान और कोई नहीं, पर यहां जाकर जहां पंचम् पातशाह गुरु अर्जुन देव महाराज जी खड़े हैं।

हलतु पलतु सवारिओनु .....

लोक परलोक सभी सफल हो गये, शुद्ध हो गये।

निहचल दितीअनु जाइ।।

वह अटल है, अमर है, उस स्थान पर मुझे गुरु रामदास जी ने कृपा करके पहुंचा दिया।

संसार सागर ते रखिअनु .....

उन्होंने हमें जन्म मृत्यु से बचा लिया, संसार में जन्म मृत्यु तभी तक है, जब तक पूर्ण कृपा नहीं हुई थी। अब जन्म मरण का प्रश्न ही नहीं है, ब्रह्मज्ञानी का आज तक जन्म मरण नहीं हुआ।

बहुड़ि न जनमै धाइ।।

अब पुनः जन्म मरण में नहीं जाएंगे।

जिहवा एक अनेक गुण .....

कहते हैं गुरु साहिब, मेरी ज़बान एक है, परमात्मा तेरे गुण अपार हैं। प्रभु ! तू कृपा कर।

तरे नानक चरनी पाइ।।

अपने चरणों का आधार देकर पार करें, गुरु रामदास जी के चरणों में पड़ें।

हरि जीउ नामु परिओ रामदास।।

(सोरठि म० ५ पृ० ६१२)

पंचम् पातशाह कहते हैं कि हरि का नाम रामदास रखा गया है। लोगों को ज्ञात नहीं।

फलगुणि नित सलाहीऐ, जिस नो तिलु न तमाइ।।

पंचम् पातशाह कहते हैं कि इस मास में प्रभु की स्तुति किया करें। गुण गाया करें जो प्रभु सर्वव्यापक है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।।

(जपुजी पृ० २)

गुरु साहिब कहते हैं उसे कभी भूलें मत, इस बात को मान लो, याद कर लो।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।। ❑

१३

जैतसरी महला ४ घर १ चउपदे १ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।
मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा।।
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा।।
मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा।।
गुरि पूरै हरि नामु दृिड़ाइआ बिनु नावै जीवन बिरथा।। रहाउ।।
बिन गुर मूढ़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा।।
तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा।।
जिन साधू चरण साध पगु सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा।।
मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा।।
हम अंधुले गिआन हीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा।।
हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा।।

(पृ० ६९६)

जैतसरी म० ४ घर १ चउपदे १ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

मेरे हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ, गुरि हाथु धरिउ मेरै माथा।।

सब संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, 'सतिनाम श्री वाहिगुरु'। चौथे पातशाह द्वारा शब्द हुआ है। चौथे पातशाह सोढी पातशाह थे। राज बेदियों के कब्जे में था। बेदियों से सोढ़ियों के हाथ आया। सोढ़ियों ने बेदियों को निकाल दिया। काशी चले गये, चार वेद पढ़े, संसार के धर्म-कर्म अर्जित किये और उनकी बड़ी शोभा हुई। सोढी बड़े आदर पूर्वक उन्हें लाये और चार वेद सुने। चार वेद सुनके सोढ़ी पातशाह जो उस समय था, राजपाट छोड़ करके वन को चला गया। बेदियों ने वरदान दिया कि

चतुर्थ गद्दी आपकी होगी। चार वेद सुन कर तुमने सब कुछ अर्पण कर दिया। अतः चतुर्थ गद्दी तुम्हारी होगी।

जब बरदान समा वहु आवा।। रामदास तब गुरु कहावा।।
इह बरदान पुरातन दीआ।। अमरदास को सुरमग लीया।।

(दशम् ग्रन्थ)

भल्ले कुल (जाति) में श्री गुरु अमरदास जी हुये। भल्लों में कुछ 'भरत' की कुल है। यह भरत की कुल में से थें। बेदी गुरु नानक की कुल में से हुए। राम की कुल में से हुए सूर्य वंशी परम्परा से। उसके बाद सोढ़ी आए। उन को पातशाही चतुर्थ गद्दी मिली। उन्हीं के द्वारा जो शब्द आया है, उसकी व्याख्या सुनों–

जैतसरी म० ४

जैतसरी राग में चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी कथन करते हैं–

घर १

पहली तार में यह शब्द गायें–

चउपदे

चार पदों का यह शब्द है।

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

एक जो परमात्मा है (परिपूर्ण) वह पूर्ण गुरु की कृपा द्वारा प्राप्त होता है। गुरु परमात्मा की कृपा से प्राप्त होता है। फिर गुरु की कृपा द्वारा परमात्मा प्राप्त होता है।

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिया .....

हरि जो शुद्ध (रत्न) है, वह मेरे हृदय में प्रकट हो गया। गुरु रामदास जी कहते हैं, उस गुरु अमरदास जी ने मेरे सिर पर हाथ रखा। मुझे परमेश्वर का साक्षात करा दिया। अतः मेरे हृदय में प्रगट हुआ है। यह मुझे पता लग गया है कि वही जो मेरा आत्मा है, साक्षी चेतन है। वह मेरा आपा है। शेष सारी प्रकृति है। यह त्रिगुणात्मक है।

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइया।।
चउथे पद कउ जो नर चीनै तिन ही परम पदु पाइया।।

(राग केदारा वाणी कबीर जी पृ० ११२३)

वह चतुर्थ पद परमात्मा है (शुद्ध सत्य स्वरूप), यह मेरे मन में तथा हृदय में प्रकट हो गया। मुझे साक्षात्कार हो गया। मैं मन बुद्धि से परे हो गया। यह जीव मोह माया मे फंसा रहता है। यदि अंतिम तक जाएगा भी तो बुद्धि तक जाता है। बुद्धि विज्ञान में जीव है। यह भी संसार की कल्पना करती रहती है। इसके अन्तर से कल्पना भी नहीं जाती क्योंकि बुद्धि कल्पना भी करती है। जब परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है बुद्धि लय हो जाती है। उस समय बुद्धि नहीं रहती। बुद्धि तो सुषुप्ति में नहीं होती। जाग्रत स्वप्न में मन और बुद्धि रहते हैं। जब यह सुषप्ति गहरी निद्रा में जाती है, तब अज्ञान रह जाता है और मन बुद्धि लय हो जाते हैं। यदि अज्ञान न हो तो ब्रह्मज्ञानी हो जाए। इस प्रकार मन बुद्धि के आगे जब जाता है तो इसका मन अज्ञान में फंस जाता है। इसे कुछ पता नहीं लगता। कि मैं कौन हूं ? परमेश्वर कौन है ? किस लिये मेरा जन्म हुआ ? इसे कोई मालूम नहीं। अंतिम कृपा परमात्मा की हो जाए, गुरु का मेल हो जाए। वह इसे हृदय में जो साक्षी दाना बीना परमेश्वर है दर्शन करवा देता है। तब इसे पता लगता है। जब उसका पता लग जाए तो इसे परमात्मा का साक्षात हो जाता है। वह मेरे हृदय में प्रकट हो गया—गुरु रामदास जी कहते हैं—

गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा।।

मेरे मस्तक पर गुरु अमरदास जी ने हाथ रखा और मुझे परमात्मा का साक्षात हो गया। मेरे पर गुरु परमेश्वर की बड़ी कृपा हुई है और मुझे हृदय में परमात्मा प्राप्त हो गया है।

जनम जनम के किलबिख दुख उतरे .....

यह जितने जन्म २ के पाप पुण्य अन्दर बैठे हैं उनके संस्कार बैठे हैं, वह सब चले गये। परमेश्वर में संस्कार नहीं होता। जब तक परमात्मा प्रकट न हो जाए, नाम के साथ मन न जुड़े, नामी की प्राप्ति न हो जाए, तब तक इसे संस्कार नहीं छोड़ते और तब तक इसके मन में कल्पना भी रहती है। उस कल्पना में जीव फंसा होता है। वह विज्ञानमय कोष में होता है। वह अभी आनन्दमय अवस्था में नहीं पहुंचा और साक्षात परमात्मा को तो क्या जानना था। इस करके मेरे सब पाप पुण्य नष्ट हो गये हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं कि गुरु अमरदास जी की कृपा द्वारा मेरे सब पाप पुण्य नष्ट हो गये हैं।

गुरि नामु दीओ रिनु लाथा।।

वह मेरा मन रिक्त हो गया है। मेरा मन अब संकल्प विहीन हो गया। अब मुझे गुरु ने नाम दे दिया है, कि इस नाम के साथ मन को जोड़ कर परमात्मा के समीप पहुंचना है। उस गुरु ने मेरे मस्तक पर हाथ रखके मेरी कल्पना हटा दी और मुझे नाम दे दिया कि इसी मार्ग से परमेश्वर को प्राप्त होना है।

रिन लाथा।।

वह जो ऋण थे—पितृ ऋण, ऋषि ऋण, देव ऋण सभी नाश हो गये हैं। इसके ऊपर तीन ऋण होते हैं वह तीनों ऋण मेरे नष्ट हो गये। अब मैं कर्ज़दार नहीं रहा। मेरा सब पाप पुन्य नष्ट हो गया। मेरा कोई ऋण नहीं रहा। किसी का मैं कर्ज़दार नहीं रहा। लेन-देन नहीं रहा। मेरे कर्मों का हिसाब समाप्त हो गया।

मेरे मन भजु राम नाम सभि अरथा।।

हे मन ! अब तूं इस राम के नाम को भज

रमत राम जन्म मरण निवारै।।

वह जो सर्वव्यापक परमात्मा है उसका नाम भज, तेरे सभी कार्य स्वयं ही पूर्ण हो जाएंगे। कोई चिन्ता न कर। अब नाम तुम्हें प्राप्त हो चुका है और नाम के साथ 'नामी' प्राप्त होगा और तेरी मुक्ति हो जाएगी। मन ! अब तू कोई चिन्ता मत कर।

गुरि पूरै हरि नाम द्रिङाइआ .....

गुरु अमरदास जी ने मुझे नाम दृढ़ करवा दिया, भाई ! यह जो नाम है नामी से पृथक नहीं है। वह सर्वव्यापक है। तुम्हारे संकल्पों में जो बैठा—जो देखता जानता है और मालिक है, वह परमात्मा है उससे विलग होकर सब मिथ्या है। इस प्रकार मुझे परमेश्वर दृढ़ करवा दिया है।

बिनु नावै जीवनु बिरथा।। रहाउ।।

यदि जीव को नाम प्राप्त न हो तो इस का सारा जन्म व्यर्थ चला जाता है क्योंकि नाम के बिना नामी की प्राप्ति नहीं होती। इस करके इसका सारा जन्म व्यर्थ चला जाता है। अतः भाई ! पहले आप परमात्मा के आगे प्रार्थना करो तो वह गुरु भेजेगा, उस गुरु द्वारा नाम प्राप्त करो, नाम लेकर नाम के साथ २ चलो। एक जगह गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है—यह जो

संसार सागर है इसमें जब इसकी नाव फंस जाती है तो निकलना बड़ा दुष्कर हो जाता है। गुरु साहिब कहते हैं कि—मैं भी संसार सागर में गया पर मैं नाम को साथ लेकर गया और मैं इससे पार हो गया। इस करके जीव संसार सागर में जाता है। जब तक इसको नाम प्राप्त नहीं होता तब तक यह संसार से निकल नहीं सकता। इस करके भाई ! यदि नाम प्राप्त न हुआ तो तुम्हारा जन्म व्यर्थ चला जायेगा।

बिना गुर मूड़ भये है मनमुख.....

जो मन के पीछे चलते हैं वह मूढ़ हैं और मूर्ख हैं क्योंकि वह मनमुख हैं। उन्होंने गुरु का मार्ग नहीं पकड़ा। गुरु का मार्ग क्या था ? नाम का मार्ग था। वह नाम के साथ नहीं चले। अपने मन के पीछे चले इस करके वह मूर्ख हैं और मूढ़ हैं। वे संसार में से नहीं निकलेंगे क्योंकि नाम उनके पास नहीं है।

ते मोह माइआ नित फाथा।।

वह माया के मुख में सदा फंसे हुए हैं। माया का मोह अनेक प्रकार का है। एक प्रकार का तो नहीं, जितनी देर माया के मोह में है उतनी देर पार नहीं हो सकता। यह जीव माया के मोह में फंस गया है अतः इसे कुछ प्राप्त नहीं हुआ है।

तिन साधू चरण न सेवे कबहू .....

उसने साधु ब्रह्मज्ञानी, महापुरुषों की सेवा नहीं की। जन, साधु, नाथ, ये सब ब्रह्मज्ञानी के वाचक हैं। इनको ब्रह्मज्ञानी पुरुष का संग प्राप्त नहीं हुआ। आध्यात्मिकता उसमें प्रकट नहीं हुई। अध्यात्मिकता तो चेतन का नाम है और तो सारा व्यवहार है। व्यवहार तो तूने शुद्ध करना है। अध्यात्म इसका आपा है। वह तो चेतन है इस करके उन्होंने किसी महापुरुष की सेवा नहीं की और उन्होंने किसी पूर्ण ब्रह्मज्ञानी का संग नहीं किया अतः वह पार नहीं होंगे।

तिन सभु जनमु अकाथा।।

(अकाथा का अर्थ व्यर्थ) उनका सारा जन्म व्यर्थ चला गया। जितना जन्म था उन मनमुखों का सारा जन्म व्यर्थ चला गया, वो मन के पीछे चले, वह मन माया के मोह में फंस गया, वह यहां से निकलता नहीं, इस करके इन का सारा जन्म व्यर्थ चला गया।

जिन साधू चरण साध पगु सेवे .....

जिन्होंने पूर्ण महा पुरुष की सेवा की है वह सेवा करके परमेश्वर को प्राप्त हुए। गुरु अमरदास जी ने १२ वर्ष सेवा की। १२ वर्ष पश्चात ईश्वरीय शक्ति स्वयं आई, जिसे प्रकृति कहते हैं और माया कहते हैं। वह ईश्वरीय शक्ति है। यह ईश्वर से पृथक नहीं होती। ईश्वर की आज्ञा में रहती है। जो भी कार्य होगा हुक्म में ही होगा। इस करके उसको ईश्वरीय शक्ति प्राप्त नहीं हुई। आपको मालूम है कि जब गुरु अमरदास जी के १२ वर्ष पूरे हुए वहां एक जोगी रहता था। वह हठ योगी था। वहां उसकी हड्डी पड़ी थी। वहां पर गुरु अमरदास जी खड़े होकर दम लेते थे—अब तो उसका नाम दमदमा साहिब है। अब तो उस स्थान पर बड़ा भारी गुरुद्वारा बन गया है। गुरु अमरदास जी वहां 'कीर' पर गागर रख कर दम लेते थे। गुरु जी को जब सेवा करते १२ वर्ष व्यतीत हो गये तब उस योगी को गुरु अमरदास जी का अंगूठा छू गया तो वह योगी खड़ा हो गया और वही योगी गुरु अमरदास जी को कहने लगा कि आपके चरण स्पर्श से मेरा उद्धार हुआ है। तब गुरु अमरदास जी कहने लगे हम तो यहां पर १२ वर्ष से ठहरते हैं। योगी कहने लगा, १२ वर्ष से आप यहां खड़े होते थे पर ईश्वरीय शक्ति तो आज प्रकट हुई है। योगी गुरु साहिब को कहने लगा कि आपको पता लग जायेगा कि आप के वास्ते आज गद्दी तैयार है। जब वहां आप जाएंगे तो पता लग जायेगा। योगी गुरु साहिब को कहने लगा पर आपको इस बात का पता नहीं कि आपमें ईश्वरीय शक्ति आ चुकी है। उसने गुरु साहिब को यह बात बताई कि जब इसे ईश्वरीय शक्ति प्राप्त हो जाये तब यह ईश्वर में लीन हो जाता है, एक हो जाता है क्योंकि ईश्वरीय शक्ति तथा ईश्वर दो नहीं है, यह एक हैं। शक्ति कभी शक्तिवान, से पृथक नहीं होती, उसे ईश्वर प्राप्त हो जाता है। उसी दिन गुरु अमरदास जी को गद्दी प्राप्त हुई। इसलिए कि यह साधु के चरणों की सेवा करता है। गुरु अमरदास जी ने १२ वर्ष सेवा की।

नानक गुर ते गुरु होइआ, वेखहु तिसकी रजाइ।।

(गूजरी म० ३ पृ० ४९०)

तीसरे पातशाह गुरु अमरदास जी लिखते हैं कि—गुरु से मिलकर मैं भी गुरु हो गया। देखो ! परमेश्वर की इच्छा कितनी सच्ची है। परमेश्वर की आज्ञा कितनी सच्ची है।

इस करके जीव परमेश्वर का भजन नहीं करता और सतसंग नहीं करता अतः यह रिक्त रह जाता है।

तिन सफलिओ जनमु सनाथा।।

एक तो उनका जन्म सफल हो गया है और एक वह सनाथ हो गया हैं। 'नाथ परमेश्वर' का नाम है मालिक का। इस करके वह मालिक वाले हो गये। आज तक वह अकेले थे। आज उन को वह परमेश्वर प्राप्त हो गया।

राखा एकु हमारा सुआमी।। सगल घटा का अंतरजामी।।

(भैरउ म० ५ पृ० ११३६)

परमेश्वर उन के अन्दर प्रकट हो गया। उन को पता लग गया। वही जो मेरे अन्दर साक्षी रूप में विराजमान है। परमेश्वर पारख रूप। यह परमेश्वर है। यही साक्षात पारब्रह्म परमेश्वर है। आज तक यह उन्हें पता नहीं था।

मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा।।

मुझे उस परमात्मा का दास बना दें, और उन के दासों के भी दास बना दें। मैं गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास का दास हूँ। तीन बार कहा है दासों का दास हूँ। हे परमेश्वर अब मुझे दास ही बना कर रखना। मुझे जो कुछ प्राप्त हुआ है वह दासों द्वारा ही हुआ है। मैं अब भी परमेश्वर का दास बना रहूं।

हरि दइया धारि जगंनाथा।।

हे जगन्ननाथ ! परमेश्वर मालिक ! मेरे पर कृपा कर, मुझे दास बना। मेरे अन्दर अहंकार न पैदा हो। यदि अहंकार आ जाये तो दासत्व चला जाता है। इस करके मेरे अंतर अहंकार विहीनता बनी रहे और मेरा मन परमात्मा से जुड़ा रहे। मैं और कोई वस्तु नहीं मांगता हूं।

हम अंधुले गिआन हीन अगिआनी .....

हम अन्धे हैं, ज्ञानहीन और अज्ञानी हैं। तुम्हें पता है कि अज्ञान का प्रकाश करने वाला कौन है ? ज्ञान होता है। अज्ञान तो जड़ है और अज्ञान को पता ही नहीं कि अंधेरे को दूर करने वाला प्रकाश ही होता है अर्थात् अज्ञान को नष्ट करने वाला ज्ञान ही होता है।

गिआनै कारन करम अभिआसु।। गिआनु भइआ तह करमह नासु।।

(भैरउ बाणी रविदास जी पृ० ११६७)

जब तक इसे ज्ञान न हो जाए तब तक इसने शुभ कार्य करने हैं, निष्काम कर्म और निष्काम सेवा करनी है और सिमरन करना है। जब इसे ज्ञान हो जाये तो फिर कर्मों का नाश हो जाता है। इसको किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती, फिर यह संसार को पार करने वाला हो जाता है। गुरु नानक देव जी ने चार विस्तृत यात्रायें की थीं। उन्होंने संसार का उद्धार किया है। कबीर ने कितनों का उद्धार किया ? दादू ने कितनों का

उद्धार किया ? यह सब लोग जो होते हैं परमेश्वर आप अवतार लेकर के दुनिया में आता है—अतः दुनिया को सुमार्ग पर लगाता है।

हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी।।

हम अन्धे हैं, ज्ञानहीन हैं और अज्ञानी हैं।

किउ चालह मारगि पंथा।।

यह सीधे मार्ग कैसे चले ? जब इस को ज्ञान ही नहीं है। सीधे मार्ग कैसे चलेगा ? इस करके इसे नाम प्राप्त नहीं हुआ और न ही इसे मार्ग मिला है। इसका मन नाम में लीन नहीं हुआ। जब मन नाम के साथ जुड़ गया तब इसे 'नामी' प्राप्त हो जाएगा। तुम स्वयं ही अपने अनुभव में देखो, यह पूछने की बात नहीं है तुम प्रातः उठ कर तथा बैठ कर देखो। जब तुम्हारा मन नाम में लग गया तब आपको शांति प्राप्त होगी। यदि दुनियां की कल्पना में लगा रहा कि—ऐसा करेंगे—वैसा करेंगे,—यह करेंगे—वह करेंगे इन कल्पनाओं में लगे रहने से मन नाम के साथ नहीं लय होता। इस करके यह संसारी ही बना रहता है। यह मोह माया में फंसा रहता है। जब तक इसे नाम नहीं प्राप्त होगा तब तक इसे सीधा मार्ग हाथ नहीं लगा। तब तक मोह माया में से निकल नहीं सकता।

हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै .....

गुरु ने मुझे आंचल दे दिया है, पल्ला दिया है, पल्ला क्या है ? नाम है, गुरु ने नाम मुझे पकड़ाया और मेरे मन को नाम के साथ जोड़ा अतः फिर मैं नाम के पीछे चल पड़ा हूं, और जब मुझे नाम प्राप्त हुआ तब मैं नामी (परमात्मा) के पास पहुंच जाऊंगा।

जन नानक़ चलह मिलंथा।।

और अब तो यह चलेगा क्योंकि इसको 'नाम' रूपी दामन गुरु ने दे दिया है। उसके साथ चलेगा तो इसका मेल हो जाएगा। अब यह मिलेगा नाम द्वारा ही नामी के साथ और कोई उपाय नहीं है। गुरु रामदास जी कहते हैं कि मुझे गुरु अमरदास जी ने नाम दिया है। उस नाम के साथ मैं चला और मेरा परमेश्वर के साथ मेल हो गया और मन का भी लय हो गया अतः मेरा जन्म मरण कट गया है।

हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा।।
हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा।।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१४

धनासरी महला ५।।

जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा।।
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा।।
ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि।।
सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि।। रहाउ।।
जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही।।
जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही।।

(पृ० ६७६)

सारी संगत कृपा दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु। पांचवें पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी द्वारा ईश्वरीय वाणी का आदेश आया है। जैसे परमात्मा की कृपा होगी वैसा प्रवचन करेंगे। पढ़ भाई !

सतिनाम श्री वाहिगुरु साहिब जी।

धनासरी महला ५

धनासरी राग में पांचवें पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं।

जा कउ हरि रंगि लागो इसु जुगु महि .....

इस कलियुग में जिस को परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाये, जिसके मन में प्रेम बस जाए, प्रेम से परमात्मा मिलता है।

जिन प्रेमु कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।।

(दसम् ग्रन्थ)

प्रेम अहंकार की निवृत्ति करता है और प्रेम ही परमात्मा को मिला देता है जिसके हृदय में प्रेम प्रगट हो जाता है। तो इस युग में

सो कहीअत है सूरा।।

वह सारे संसार में शूरवीर माना जाता है, क्योंकि वह संसार से विमुख हो जाता है।

बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैल न जाइ।।
सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ।।

(सिरी राग महला १ पृ० ६०)

गुरु के बिना इस को प्रेम प्राप्त नहीं होता। यह एक कृपा है और प्रेम भी कृपा है। नाम भी कृपा है। जिस पर परमात्मा की कृपा हो जाती है उस को प्रेम प्राप्त हो जाता है। प्रेम ऐसी वस्तु है जो कि प्रेमी को परमात्मा के साथ अभेद कर देती है जिस को इस युग में प्रेम लग गया। तुम अपने अन्तःकरण आप ही देख लो। वह गर्व कहां चला जाता है।

बिन गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ।।

अहंकार की मैल प्रेम के बिना नष्ट नहीं होती। अगर नाम और प्रेम रूपी साबुन लगाओगे तो अहंकार रूपी मैल दूर होगी। फिर क्या होगा ?

सोहं आपु पछाणीऐ

यह 'सोहं, जो कि परमात्मा व्यापक है, वह तुम्हारे हृदय में है, वह यह नहीं कि—व्यापक तुम्हारे हृदय में नहीं है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(सलोक म० ९ पृ० १४२७)

सबसे पहले तुम को अपने आप का प्रत्यक्ष होना है। पर तुम आगे लग जाते हो। तुम यह देखो ! इसको देखते हैं, इसको कौन देखता है ? चक्षु देखते हैं ? मन देख रहा है ? और बुद्धि देखती है ? यह तो जड़ हैं। इसलिए देखने वाली बुद्धि के पीछे अनुभव बैठा है। वह चेतन है, वह द्रष्टा है।

मूई सुरति बादु अहंकारु।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गउड़ी म० १ पृ० १५२

द्रष्टा जन्म मरण में नहीं आता। वह द्रष्टा तुम्हारा 'आपा' है यहां से आगे बढ़ो। आंखें एक झरोखा हैं। मन एक जड़ वृत्ति है और बुद्धि भी जड़ वृत्ति है। इनसे आगे बढ़ोगे तो तुम स्वयं द्रष्टा में स्थित हो जाओगे। जहां तुम बैठे हो, यह अन्तरमुखता है। वहां बैठकर तुमने बुद्धि से मन से जोड़ कर नयनों द्वारा इस का प्रत्यक्ष कर लिया है। वह द्रष्टा चेतन ही होगा। जड़ कभी द्रष्टा आज तक हुआ ही नहीं। ज्ञाता चेतन ही होता

है। ज्ञाता कभी और वस्तु हो ही नहीं सकती है। इस लिये यह आत्मा है परमात्मा है, चेतन स्वरूप है, द्रष्टा है। यह अपने आप को पहचान कर वहां से चले तो फिर इस को पता चल जाएगा कि मैं यहां बैठा देखता हूं। यह सब वस्तु जड़ है ?

आपि उपदेसै समझै आपि।।

(गउड़ी सुखः पृ० २७६)

यह आप ही उपदेश करता है और समझता भी कानों द्वारा आप ही है।

आपे रचिआ सभ कै साथि।।

(गउड़ी सुख०)

यह सब के साथ आप ही रचित है। इस को अपने आप की पहचान नहीं हुई।

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ।।रहाऊ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर ज्ञानु बताई।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।

(धनासरी म० ६ पृ० ६८४)

जब तक तुम अपने आप को नहीं पहचानोगे, तब तक तुम्हारी भ्रम रूपी काई नहीं मिटेगी। भ्रम नष्ट नहीं होगा। इस करके प्रेम तुम को परमात्मा के समीप ले जाएगा। जब प्रेम के साथ नाम मिल गया तो आपको नामी की प्राप्ति की बहुत आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अपने आप ही मिल जाएगा। क्योंकि नाम और नामी का अभेद है। यह नहीं कि नाम कोई और वस्तु है और नामी कोई और वस्तु है।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।

(गउड़ी सुख० पृ० २८४)

नाम ने तो सर्वखंड ब्रह्माण्ड धारण किये हुये हैं। क्या नाम तुम्हारे अन्दर नहीं है ? द्रष्टा बना तुम्हारे अन्दर बैठा है।

द्रष्टा की दृष्टि आज तक कभी लोप नहीं हुई। वह अविनाशी है। तुम यह बताओ तुम्हारे जितने भी संकल्प होते हैं, एक संकल्प छोड़ते हो

दूसरा पकड़ लेते हो फिर तीसरा पकड़ लेते हो। पर जो तुम्हारा द्रष्टा है उस की दृष्टि कभी नाश नहीं होती। वह बतलाता भी और सोचता भी जाता है। यह संकल्प गलत है यह संकल्प ठीक है। फिर यह कहता है कि यह संकल्प गलत है यह संकल्प ठीक है। इसलिये वह द्रष्टा व्यापक है, परिपूर्ण है, तुम्हारा आपा। शंकराचार्य ने बहुत ही सरल काम कर दिया है। वे कहते हैं कि ज्ञान तीन प्रकार का है—एक तो अपरोक्ष ज्ञान (आपा), एक प्रत्यक्ष ज्ञान है, एक है परोक्ष ज्ञान जो कि अनुमान द्वारा होता है। पर नाम द्वारा विज्ञान हम को दृष्टिगोचर नहीं होता और जो यह ज्ञान है, यहां से उठ कर जाए तो परोक्ष हो जाएगा। उसने कभी अपरोक्ष होना भी नहीं। तुम्हें अपने स्वयं का पता नहीं, वह तुम्हें हमेशा प्राप्त है। कोई भी ऐसा समय नहीं है जब वह तुम्हें प्राप्त न हो। आप सारे संसार को सम्मुख तोल (विचार) लो, सारा संसार मिथ्या है। पर वह तो सत्य है। आप का 'आपा' भी सत्य है। वह कभी असत्य नहीं हुआ। उसका तो कभी जन्म-मरण नहीं होता।

आदि सचु जुगादि सचु।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

(जपुजी साहिब, पृ० 1)

ज्योति साक्षात् अपरोक्षात् पारब्रह्म

उपनिषद् में स्पष्ट कहा है कि यह ज्ञान है। यह ज्ञान तेरा आपा है। यही सर्वव्यापक है, परिपूर्ण है। पर अभी तक तेरे को उसकी पहचान नहीं हुई। अज्ञान करके तुझे भ्रम है। प्रेम से जब तू भजन करेगा वही तेरे अन्दर प्रकट हो जाएगा।

आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा।।

आत्मा यहां पर मन का वाचक है। वह तो पूर्ण व्यापक है। उसको जीतने वाला तो संसार में पैदा ही नहीं हुआ। वह तो नित्य है, सत्य है। आत्मा यहां मन का वाचक है। इस करके—

आतम जिणै सगल वसि ता कै .....

जो कोई अपने मन को जीत लेगा। अगर तू अपने आप की पहचान कर लेगा तो तेरा मन जीता जाएगा। सारा संसार तेरे बस में हो जाएगा और तेरी इन्द्रियां तेरे वश में आ जाएंगी। यह सारा संसार कृत्रिम ज्ञान

है। वह तेरा 'आपा' सत्य है। इस करके जब तू अपने मन को जीत लेगा तो सब कुछ तेरे वश में हो जाएगा।

जा का सतिगुरु पूरा।।

जिस के ऊपर सतिगुरु नानक मेहरबान हो जाएगा, उस को यह वस्तु प्राप्त हो जाएगी।

नानक नदरी नदरि निहाल।।

(जपुजी साहिब)

क्या आपको पता है ? घास काटने वाले ने पांच पैसे अर्पित किये। उसने रोटी भी नहीं खाई। वह घास काटने वाला जहांगीर के शिविर में गया। उन लोगों (कर्मचारियों) ने विचार-विर्मश किया कि आज जब भी कोई आये और सच्चे पातशाह का शिविर पूछे तो उस को जहांगीर के शिविर में ले जाना। काज़ियों ने सलाह कर ली। वह घास काटने वाला शिविर में गया। जहांगीर की चार बार परिक्रमा करके आगे पैसे रख कर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। जहांगीर बादशाह ने पूछा तू क्या मांगता है ? घासी कहता है कि—मोक्ष चाहता हूं। बादशाह कहने लगा मोक्षवाला शिविर तो परे है। मैं मोक्षवाला बादशाह नहीं हूं। दुनियाँ की वस्तु मेरे से कोई भी मांग ले। कोई गांव ले ले। घासी ने कहा कि नहीं मैं तो मोक्ष लेने के लिये आया हूँ। मुझे पता चला था कि यहां सच्चे पातशाह आये हैं। जहांगीर बादशाह ने स्पष्ट कह दिया कि सच्चे पातशाह का तम्बू वह सामने है। घासी ने पांच पैसे उठा लिये और वहां से चल पड़ा। वही क्रिया उसने वहां जाकर कर की। जहांगीर और उसके सारे कर्मचारी उसके पीछे चल पड़े। छठे पातशाह श्री गुरु हरि गोबिंद साहिब ने पूछा कि भई ! क्या चाहता है ? गुरु साहिब ने कहा कि हमारी आंख से आंख मिला। जब मिलाई तो वह आनंदित, आनंदित, आनंदित हो गिया। जहांगीर कहने लगा एक बात मैं कहूं। गुरु साहिब ने कहा कि क्या कहता है ? जहांगीर कहता है हिन्दुओं की मोक्ष बहुत सस्ती है जोकि पांच पैसे से मिल जाती है। गुरु साहिब जहांगीर को कहने लगे तुम घासी को क्या देते थे। जहांगीर कहता है कि मैं तो बहुत कुछ दे बैठा पर यह तो माना ही नहीं। घासी ने कहा मैं तीन लोकों का राज्य भी नहीं चाहता। मुझे तो मोक्ष चाहिये। मोक्ष तो पूर्ण गुरु दे सकते हैं। पर देते उस को हैं जो पूर्ण अधिकारी हो। जिस को और किसी वस्तु की इच्छा न हो। प्रेम और विराग से हृदय शुद्ध हो उस को मोक्ष मिलती है।

ठाकुर गाईऐ आतम रंगि।।

अपनी जिह्वा से, मन से, तुम ठाकुर की स्तुति करोगे। जब तुम्हें आत्मा की प्राप्ति हो गई तो फिर तुम्हारा ध्यान किसी और तरफ नहीं जा सकेगा।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अंमृत बिरखु है फलु अंमृतु होई।।

(आसा म० १ पृ० ४२१)

वह एक ही वस्तु है। यह वास्तविक परमात्मा को पहचानने वाला है। जो आत्म-ज्ञान न हुआ तो प्रभु-पहचान नहीं होगी। यह सूफीयों का मत है। अपने आपको पहचानो। खुदा तो तुम हो ही। तुम तो चेतन हो। जड़ तो तुम हो नहीं। तुम तो ज्ञान और आनंद हो। जड़ तो तुम हो नहीं। इसलिये प्रेम के साथ परमात्मा के गुण गाने हैं।

सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि।। रहाउ।।

इसलिये परमेश्वर की शरण चला जा यदि हमेशा नाम सिमरन करना है।

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

(गीता अध्याय १८, ६६)

तू सारे धर्मों को त्याग दे। जितने भी आरम्भ किये हुए हैं लोगों के। इन पागलों ने जो कि तेरे में भर दिये इन सब को त्याग दे। अपने आप में स्थित हो जा। बिल्कुल किसी की परवाह नहीं करनी। तू चेतन है। मुझे एक साधु मिला जो कि अपने साथी को कहता था तुझे ज्ञान दूंगा। मैंने कहा ज्ञान स्वरूप चेतन तो यह पहले ही है। तुम कौन सा ज्ञान दोगे। तुम इसको भ्रम में क्यों डालते हो। यह तो आप चेतन है। इस को कहो कि तुम आप चेतन हो। जो तुम्हारे संकल्प अन्दर उठते हैं उसको देखने वाला द्रष्टा तू है कि नहीं ? वह तुम्हारा आपा नहीं है ?. वही परमात्मा है, ज्ञान है, व्यापक है। अपने आपको विचारो तो सही कभी ?

सभना जीआं का एकु दाता सो मै विसरि न जाई।।

(जपुजी पृ० २)

वह ज्ञान है। उस परमेश्वर को सदा याद रखा करो।

सहजि समावन संगि।।

यदि तेरा संग नाम के साथ हो गया—

नामु संगी सो मनि न बसाइओ।
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।।

(टोड़ी मः ५ पृ० ७१५)

यदि नाम के साथी तुम हो गये तो सहज में स्थित हो जाओगे।

चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ।।

(सिरी राग मः ३ पृ० ६८)

सहज ज्ञान का नाम है। चौथे पद में तुम्हें पहुंचा देगा। इसलिए सहज है। गुरु साहिब ने लिखा है।

एकम एकंकारु निराला।।
अमरु अजोनी जाति ना जाला।।
अगम अगोचर रूपु न रेखिआ।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

(राग बिलावल मः १ पृ० ८३८)

जब तुम ने खोज करके सब के दिलों में 'एक' को देख लिया तो तुम्हारा किसी के साथ द्वेष नहीं रहेगा। भाई कन्हैया ने सब में एक के दर्शन किये। सब को एक जैसा पानी पिलाया और सब के साथ एक जैसा व्यवहार किया। तुम सब में 'एक' को देख लो। तुम्हारा काम ठीक हो जाएगा। यदि एक में अनेक देखोगे तो भटक जाओगे। अगर अनेक में एक देखोगे तो सही हो जाओगे। इस तरह वह परमेश्वर व्यापक है। वह सहज अवस्था तुम्हें प्राप्त हो जायेगी।

जन के चरन वसहि मेरै हीअरै .....

मेरे हृदय में प्रभु के भक्तों के चरन बसते हैं। चरण कई जगह नाम का वाचक भी है। वह जो नाम मुझे दिया है प्रभु के भक्तों ने ? परमेश्वर घट घट में रहता है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

(सलोक मः ९ पृ० १४२७)

वह जो तुम्हारे हृदय में नाम रहता है (चेतन) वही परमात्मा है सब के भीतर वही व्यापक है। इस करके मेरे हृदय में उन प्रभु के भक्तों के चरण बसते हैं जिन्होंने मेरे ऊपर कृपा की है। गुरु रामदास महाराज ने—

संगि पुनीता देही।।

यह देह मेरी साथ ही पवित्र हो गई जब मुझे नाम प्राप्त हो गया। नाम और 'नामी' का अभेद होता है।

जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही।।

मुझे प्रभु के भक्त जनों की धूलि दे दे, बस मैं और कुछ मांगता ही नहीं। अगर धूलि मिल जाए तो सब कार्य सिद्ध हो जाऐंगे। आपको पता होगा जब भाई अदली ने बिधी चन्द को गुरु हरिगोबिन्द साहिब के पास भेजा। उसने गुरु साहिब को कहा मुझे किसी सेवा पर लगाओ जी। महाराज जी ने कहा बहुत अच्छा। तूं यहां पर आटा गूंथा कर। बिधी चन्द बहुत ताकतवर था। उसने बहुत ही आटा गूंथने की सेवा की। जब गुरु साहिब बाहर जाते तो संगत कहती हमारे बर्तन एक स्थान पर नहीं रहते। बदले हुए होते हैं। गुरु साहिब ने वचन दिया कि बंद हो जायेंगे। एक रेखा है भगत के मस्तक पर, उस को मिटा देंगे। गुरु साहिब सैर करने के लिए बाहर गये तो बिधी चन्द आया। उसने हाथ पीछे कर लिये। आटा गूंथ रहा था। उसने गुरु साहिब के चरणों पर माथा टेका। चरणों की धूलि लग गई। गुरु साहिब कहने लगे नीचे हो। तो गुरु साहिब ने माथे की रेखा पर अंगूठा फेर दिया। कृपा कर दी। भाई ! वह धूलि ऐसी लगी कि उसकी रेखा ही नष्ट हो गई। बिधी चन्द पवित्र हो गया। इस करके उस दिन से जब वह चरण धूलि उस को पूर्ण पुरुष की मिल गई तो सारा हृदय ही पवित्र हो गया और शरीर भी पवित्र हो गया। मैं उन सन्तों की कृपा मांगता हूं जो परमेश्वर के साथ अभेद हैं। एक तो सब ही हैं इस में कोई संदेह नहीं।

सब महि जोति जोति है सोइ।।
तिसदै चानणि सब महि चानणु होइ।।
गुर साखी जोति परगटु होइ।।

(राग धनासरी मः १ पृ० १३)

ज्योति तो सबके अन्दर है। तुम अपने संकल्प भी तो ज्योति से देखते हो। वह जो ब्रह्मज्ञानी है वह भी तो उसी ज्योति से देखता है। पर आपको यह नहीं पता कि ज्योति वही है। तुम कोई और ज्योति मानते हो, बस ज्योति एक ही है। जब तुम गहन निद्रा में जाते हो। मैं एक उदाहरण देता हूँ। वहां तुम यह कहते हो कि हम सुख से सोयें। कुछ भी नहीं जानते थे। उस सुषुप्ति को तुम ने देखा भी और जाना भी। फिर आकर कहते हो कि बहुत सुख से सोये। पर फिर कुछ पता न लगा। वहां एक अज्ञान था। फिर आप बताओ—क्या पांच इन्द्रियां काम नहीं करती थीं ? वह तो

लीन हुई थी और मन, बुद्धि भी लीन हुई थी उस सुषुप्ति को आपने किस से देखा। बगैर ज्ञान से ? वहां तो एक ज्योति थी। वह ज्योति ईश्वर ज्योति है जिस ज्योति से तुमने सुषुप्ति को देखा सुख से सोये और कुछ भी नहीं जानते थे। वह ज्योति स्वरूप चेतन है। वही ईश्वरीय ज्ञान है। परोक्ष ज्ञान नहीं क्योंकि इन्द्रियों से मनुष्य को ज्ञान होता है। इन्द्रियां तुम्हारी पांचों वहां हैं ही नहीं ? ज्ञान इन्द्रियाँ तो लीन हैं। मन तुम्हारा वहां है ही नहीं। लीन हुआ पड़ा है। बुद्धि तुम्हारी है नहीं, लीन हुई पड़ी है। उस सुषुप्ति को तुम देखते आए साथ में बताते हो। वह कैसे देखा। उसी ज्योति से देखा। वह ईश्वरीय ज्योति है, जाग्रत ज्योति है। तुम्हारा अपना आपा है। सन्त अत्तर सिंह जी मस्तुआणे वालों के मुख से हमने सुना था छोटी आयु में वह यह बात जपाते थे जपो खालसा जी जागती जोत (ज्योति) को यह सवैया एक पढ़ा करते थे।

जागत जोति जपै निस बासुर।।
एक बिना मन नैक न आनै।। (दशम् ग्रन्थ)

यह सवैया पढ़ कर धारना गाते रहते थे। बाद में एक बात कहा करते थे। खालसा जी तुम जागती ज्योति के उपासक हो। फिर तुम आगे पीछे चले जाते हो। क्या जागती ज्योति आपा नहीं है ? आपा नहीं तो तुम्हारा आपा क्या है ? फिर वहां इन्द्रियां तो हैं ही नहीं, मन है ही नहीं। बुद्धि है ही नहीं। तुमने देखा किस तरह ? और जाना किस तरह ? वही जागती ज्योति जाग्रत में काम करती है। वही स्वप्न में काम करती है। वही सुषुप्ति में काम करती है। तीनों को छोड़ कर व्यापक ज्योति तुम्हारा आपा है। उस ईश्वरीय ज्ञान में तुम दृढ़ निश्चय करो। ईश्वरीय ज्ञान तुम्हारा आपा है, इसमें कोई शंका नहीं है। ग्रन्थकारों ने यही बात सिद्ध की है। इस करके जाग्रत ज्योति के उपासक हो जाओ। वही तुम्हारा आपा है। उस का ही सिमरन करो। उसका ध्यान करो। सतिनाम श्री वाहिगुरु, चल भाई !

जन की धूरि देह किरपा निधि .....

हे कृपा निधि ! परमेश्वर। मुझे प्रभु के प्यारे भक्तों की धूलि दे दो।

नानक कै सुखु एही।।

नानक के घर में यही सुख है जोकि प्रभु प्यारों की धूल मिल जानी है, कृपा हो जानी है, अपने स्वरूप की प्राप्ति हो जानी है। प्रेम के साथ नाम जप करके, गुरु नानक का यही घर है।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१५

सोरठि म० ९

माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई।।
महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई।। रहाउ।।
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ ना असथिरु मति पाई।।
बिखियासकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अध माई।।
साधसंगु कबहू नहीं कीना नह कीरत प्रभ गाई।।
जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई।।

(पृ० ६३२)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु। ईश्वरीय वाणी का यह शब्द नौवें पातशाह महाराज के द्वारा आया है। आप जानते होंगे

तिलक जंञू राखा प्रभि ताका।।
कीनो बडो कलू महि साका।।
साधन हेत इती जिन करी।।
सीस दीया पर सी ना उचरी।।

(दशम् ग्रन्थ)

यह उस गुरु का शब्द है। दशम पातशाह लिखते हैं कि वह कौन था जिसने तिलक तथा यज्ञोपवीत की रक्षा की, अपना शीश दिया। वहां हमारे पास सन्त आया था, वह दुर्वचन कहता। हां-अभी-वह कहता कि हम ने दिल्ली जा करे रक्त गिराया। कहता लहू पीने वालों ने जन्म ले लिया है। हमारे गुरुओं के रक्त-पिपासू अब पैदा हो गये हैं। वह कहता–अब इनका क्या करोगे। सच्ची बात यह है कि–वह गुरु शब्द है तथा इसकी व्याख्या यह है कि सबसे नजदीक मन है, जब आपको मन दिखाई दे जाये तो आपका काम बन जायेगा। मन दो वस्तुओं का बना हुआ है, एक तो वहां है चेतन। एक है जड़ वृत्ति।

वह वृत्ति तो जड़ है। संकल्पों में बैठने वाला मन–

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूल पछाणु।।

(आसा मः ३ पृ० ४४१)

मन ज्योति स्वरूप है, पर वह जो संकल्प हैं इनकी सत्ता नहीं। पर अज्ञान करके उसकी पूरी सत्ता बन गई। इसलिये तुम्हारे मन का पता नहीं लगा है। यह चित्त जड़ की एक ग्रन्थि पड़ गई, यदि दोनों वस्तुएं मिल गई मन की ग्रंन्थि खुलेगी तो थोड़ी आंखें खुलेंगी। आंखें तब खुलेंगी जब जड़ दूर होगा और तुम चेतन हो।

है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गांठि।।

(फुनहे मः ५ पृ० १३६३)

तो वह बात करे जो हमें समझनी नहीं। जब मैं गया तो बात हुई। उसने कहा कि ईश्वर कोटि में है। उसकी भाषा थी मद्रास की। कुटी का अर्थ है कोटि। वह ईश्वर कोटि में था। वह जीव कोटि में नहीं था। जीव कोटि का जीव अल्पज्ञ होता है। ईश्वर कोटि का कोई भी हो तो वह सर्वज्ञ होता है जैसे गुरु नानक देव हुए ।

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।
ता ते अंगद भयउ तत सिउ तत मिलायउ।।

(सवैये पृ० १४०८)

यह तो आपने समझ लिया होगा–

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ।।

(वार सत्ता बलवंडि पृ० ९६६)

यह तो एक ज्योति है, वह ज्योति क्या है ? उसको जाग्रत जोत कहते हैं–

जागति जोति जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै।।

(दशम् ग्रन्थ)

सभमहि जोति जोति है सोइ।।
तिस दै चानणि सबमहि चानणु होइ।।
गुरसाखी जोति परगटु होइ।।

(धनासरी म० २ पृ० १३)

यह ज्योति तो चार वर्गों में है, पर "गुरसाखी जोति परगट होइ।" गुरु महाराज जिनका नाम पहले 'लहना' था और जो देवी के उपासक

थे, यदि वे जीव कोटि के न होते, तो देवी जी के उपासक न होते। यदि जीव-कोटि के न होते तो गंगा के उपासक न होते पर जब उन्हें वह पारस लगा, वह ज्योति आई तो वे ईश्वरीय कोटि में पहुंच गए इसलिये यह आदि से दो प्रकार की सृष्टि आती है। ईश्वरीय कोटि की सृष्टि के अपने कर्म नहीं होते हैं। यह ग्रन्थ पढ़ के देखो सारे वेदान्त के। सारे जीवों के अपने कर्म होते हैं। कर्मों के अनुसार ही आपको इच्छा होगी और इच्छा के अनुसार ही चलना होगा। तो वह वासना बन जाती है। आपकी इच्छाओं ने एक दिन वासना बन जाना है। वासना उस वस्तु का नाम है जो बहुत देर तक रहे। और किसी वस्तु का नाम नहीं और फिर यदि वह आपके हृदय में व्याप्त रहेगी तो उस पर अधिकार जमा लेगी।

वासना बधा आवै जाये।।

(वार भाई गुरदास)

भाई साहिब कहते हैं कि—यह जीव वासना का बंधा हुआ आता और जाता है। इसलिये जो ईश्वरीय कोटि महापुरुष आप परमेश्वर है। ज्योति स्वरूप उस पर किसी कर्म का बोझ नहीं होता है। वह जीवों के कर्म भुगतवाने के लिये आता है। चाहे गीता पढ़ो, चाहे दशम पातशाह की बाणी पढ़ो, चाहे गुरु ग्रन्थ साहिब—

मैं आपना सुत तोहि निवाजा।।
पंथु प्रचुर करबे कउ साजा।।
जहां कहां तुम धरम विथारो।।
दुसट दोखीअन पकर पछारो।।

(दशम् ग्रन्थ)

—अंततः मैं अपना एक पुत्र बहुत प्यारा बना कर दुनिया में भेजता हूं।

मै आपना सुत तोहि निवाजा।।
पंथु प्रचुर करबे कउ साजा।।

(दशम् ग्रन्थ)

आपने एक धर्म का मार्ग प्रकट करना है।

ठाढि भइउ मै जोर कर, बचन कहा सिर निआइ।।
पंथु चलै तबि जगत मै जब तुम करहु सहाइ।।

(दशम् ग्रन्थ)

कोई ईश्वर है, वह जिसके सम्मुख उसे कहते हैं। जिसका एक रूप हो कर कहते हैं।

जब आप सहायता करोगे तो ही मैं इस काम को कर सकूंगा। मेरे तो सार्मथ्य नहीं है।

हम इह काज जगत मो आए।।
धरम हेत गुरदेव पठाए।।
जहां कहां तुम धरम विथारो।।
दुसट दोखीअन पकर पछारो।।

(दशम् ग्रन्थ)

आपने धर्म का संसार में विस्तार करना है–

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु।।

(सुखमनी म० ५ पृ० २६६)

यह गुरु साहिब ने फैसला कर लिया। एक तो परमेश्वर का निष्काम नाम ही जपना और एक परमेश्वर के प्यारों की सेवा करना। एक शुभ काम करने और नाम को कभी छोड़ना नहीं।

सबना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।।

(जपुजी पृ० २)

उस जीव ने तो ईश्वर से कभी मिलना है क्योंकि यह दशम पातशाह का दृष्टांत है–

द्वै ते एक रूपि होइ गइउ।।

(दशम् ग्रन्थ)

पहले दो थे तो एक रूप हुआ, वह दूसरा कौन था। दूसरा माया का आच्छादित किया हुआ जीव था।

आपीनै आपु साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।।
दूयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।।

(आसा दी वार म० १ पृ० ४६३)

उस माया के भीतर जीव का अन्तःकरण ऐसा जुड़ा, यह वासना, कामना, तृष्णा आदि ऐसा रोग लगा–

हउमै दीरध रोगु है दारु भी इसु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।।

(आसा दी वार. म. १ पृ० ४६६)

एह तिसना वड्डा रोगु लगा मरणु मनुह विसारिया।।

(रामकली म० ३, पृ० ९१९)

और दोनों की औषधि भी बिल्कुल सही बताई–

सरब रोग का अउखदु नामु।।
कलियाण रूप मंगल गुण गाम।।

(गौ० सुख० : पृ० २७४)

सचु सभना होइ दारु पाप कढ़ै धोइ।।
नानक वखाणौ बेनती जिन सचु पलै होइ।।

(आसा दो वार पृ० ४६९)

सच परमेश्वर है–

आदि सचु जुगादि सचु।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

(जपजी पृ० १)

'सत्यं ज्ञान मनन्तम ब्रह्म'

(उपनिषद्)

उपनिषद् ने जब स्वरूप लक्षण किया तो उसने कहा कि–परमेश्वर कैसा है ? उसने कहा–

वह सत्य स्वरूप है, वह अनन्त स्वरूप है, वह व्यापक है, वह सुख आनन्द स्वरूप है। वह ऐसा परमेश्वर है जिसके साथ तूने मन एकाग्र करना है, वह है। पर उसका निदान भी साथ बताया है–

सिमरि सिमरि नामु बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(गो० सुख पृ० २९५)

जा कै रिदै बिसवासु प्रभ आइआ।।
तउ गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ।।

(गो-सुख पृ० २८५)

जब तक इसको पूरा विश्वास नहीं आयेगा, तब तक इसका मन जुडेगा नहीं। जब तक पूर्ण प्रेम परमेश्वर में नहीं आयेगा। तब तक इसके सारे बन्धन नहीं कटेंगे। आपको मालूम है कि वे मुसलमान जो बड़े मौलवी होते हैं वही गुरु जी के नमाज न पढ़ने पर कहते हैं कि हिन्दू झूठे होते हैं क्योंकि कल तो इन्होंने कहा था कि नमाज पढ़ेंगे पर आज नहीं पढ़ी।

गुरु साहिब ने कहा किसके साथ ? उन्होंने कहा कि हमारे साथ। गुरु साहिब ने कहा कि तुम तो अपनी घोड़ी की नमाज़ पढ़ते थे। दौलत खां पठान घोड़ों के व्यापार की नमाज़ पढ़ता था। एक और कहने लगा मैं कूएं से आया था। मुझे चिंता थी कि कहीं पानी न टूट जाये। गुरु साहिब ने कहा कि बता भाई ! तुम ने हमारे साथ खुदा की नमाज़ पढ़ने की बात की थी। तुम्हारी इस अनुपस्थिति की नमाज़ हम क्यों पढ़ें। भाई तुम्हारी उपस्थिति की नमाज़ होती और खुदा की होती तो हम अवश्य पढ़ते। परमेश्वर तो एक है। उसके केवल नाम ही भिन्न-भिन्न हैं।

एकम एकंकारु निराला।।
अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिया।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिया।।

(वि० म० पृ० ८३८)

गुरु जी ने कहा कि वह तो सब हृदयों में एक है। वह शेर में भी हैं, सांप में भी, सब में एक है। पर मैंने एक व्यक्ति से कहा कि सांप के हृदय में है ? वह कहने लगा हां है। वह काफी बुद्धिमान व्यक्ति था। फिर—गुरु जी ने कहा डरता क्यों है ? कहने लगा निर्वैर पढ़ रहा हूं लेकिन निर्वैरता नहीं आई। उसने कितनी सच्ची बात कर दी। कहने लगा कि 'निरभउ' तथा 'निरवैर' पढ़ता तो हूं लेकिन मेरे में यह दोनों बातें नहीं आई। यदि आई होती तो मैं क्यों डरता ? मैंने कहा बस—अब तेरा उत्तर बिल्कुल ठीक है। इसलिये जब तक हम गुरु तेग बहादुर के पद चिह्नों पर नहीं चलेंगे।

यदि आप कहो कि गुरु तेग बहादुर जी को कोई कष्ट हुआ या कोई तकलीफ छुई, इन सब बातों को मैं मानने को तैयार नहीं। ईश्वरीय कोटि में कभी दुःख सुख होता नहीं। जब यहां तक हो गया—

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी, जा कउ कहत गुसाई ।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।।

(सो. मः ९ पृ० ६३२)

जो आपके अन्दर रहता है जब वह ही दुख सुख से रहित है तो ईश्वर में दुःख सुख कहां से आयेगा, वह तो चेतन और निर्लेप है। व्यापक तथा शुद्ध है—

सरब भूत आपि वरतारा।।
सरब नैन आपि पेखनहारा।।
सगल समग्री जा का तना।।
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ।।
आगिआकारी कीनी माइआ।।
सभ कै मधि अलिपतो रहै।।
जो किछु कहणा सु आपे कहै।।

(गो-सुख : पृ० २९४)

वह तो निर्लेप है। हुकम में जीव आते हैं, जाते हैं। यह सारा संसार हुक्म में है। पर ईश्वरीय कोटि वाले जीव तो हुक्म में नहीं हैं। वे उस 'आकल पुरख' के हुक्म में हैं। आप जानते हो कि जब लाहौर के निवासी आये और आकर मिले तो उन्होंने कहा—तालाब के इस ओर दशम पातशाह ठहर गये। जब उन्होंने सिर नवाया तो उन्होंने कहा—क्या बात है, तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम आपका मेल करवाने आये हैं। वह कहने लगे कि हमारा मेल क्या करवाओगे ? पहले अपना मेल तो कर लो। हमारी किसी से शत्रुता हो तो मेल करवाओ हम तो उसके हुक्म में चल रहे हैं। अन्त में उन्होंने कहा कि अब आप क्या करोगे ? उन्होंने कहा जो ईश्वर का हुक्म होगा करेंगे पर आप हमारा कहना मानो। यदि हुक्म मानना है तो आ जाओ यदि नहीं मानना तो चले जाओ। पर हम तो उस परमात्मा के हुक्म में हैं। हमने आप के कहने पर कोई मिलाप नहीं करना है। जब व्यक्ति दूसरे, व्यक्ति से मिलाप करता है तो उसके मन में भी उतना ही अन्तर आ जायेगा जितना उसके मन में होगा। यदि नाम के साथ जुड़ा होगा तो मन शुद्ध होगा—

सभ कै मधि अलिपतो रहै।।
जो किछु कहणा सु आपे कहै।।

(सुखमनी साहिब पृ० २९४)

कहा भी है—

दाना बीना साई मैडा नानक सार ना जाणा तेरी।।

(गूजरी वार म० ५ पृ० ५२०)

बताओ तुम्हारे किस विचार को टंकित नहीं करता ? वह कौन से विचार को नहीं देखता ? वह 'बीना' और 'दाना' किस विचार को नहीं

जानता? लेकिन हमारा विश्वास तो दृढ़ नहीं हुआ कि परमेश्वर अन्तर्यामी है, द्रष्टा है, साक्षी है, व्यापक है, जो कुछ हम करते हैं वह देखता है।।

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ।।

(सिरी राग म० ३ पृ० १३६)

जब वह सब कुछ सुनता और देखता है फिर तुम मुकर कैसे जाओगो। वह तो साक्षात् है। पहले उसका तुम्हें साक्षात्कार होगा। निर्लेप, चेतन, अपना आप। फिर तुम बुद्धि को देखोगे कि मेरी बुद्धि ऐसी है। इस समय बुद्धि में थोड़ी वासनायें, कामना, तृष्णा भरी भी होंगी। फिर देखोगे। पहले तुम आप, पहले खड़े होगे। बुद्धि तो तुम्हारा दृश्य है।

दिसटिइमान है सगल मिथेना।।

(राग मारू म० ५ पृ० १०८३)

पर दृश्यमान् तो सारा मिथ्या है। आपने आज तक कभी द्रष्टा भी मिथ्या पढ़ा है। किसी भी ग्रन्थ में किसी ने ऐसा आज तक पढ़ा है ? वह ध्यान तो अलग है—

मूई सुरति बादु अहंकारु।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।।
रतन पदारथ घट ही माही।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै।।
भीतरि होदी वसतु न जाणै।।

(गउड़ी म० : १ पृ० १५२)

यहां बाणी में एक प्रश्न किया है ? जब हमें पढ़ाते थे तो ज्ञानी सरोवर सिंह साथ में प्रश्न भी करते होते थे। पंडित तारा सिंह के साथ भी प्रश्न करके अर्थ करते होते थे। इसलिये वे कहते कि तुम भी मानो। मेरे लड़के का मुझे शोक हुआ ? वह तो आपने दूर कर दिया। पांच तत्त्वों का था। उसकी बुद्धि थी, ऐसा था। प्रकृति मिथ्या है, द्रष्टा सत्य है। ठीक है लेकिन

हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।

मरता जाता नदरि न आइआ।।

(गउड़ी म० : १ पृ० १५२)

बताओ—कौन सी वस्तु मरने वाली है ? जो तुम्हारी बुद्धि में बैठा हुआ है। जिसको गुरुजी ने खूब ज़ोर से कहा—

कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।।

(गउड़ी म० : १ पृ० १५२)

चार वर्गों की गुफा में जो बैठा है उसको कैसे तुम छिपा सकते हो। गुरु तेग बहादुर—तो ज्योति स्वरूप थे। यह सब ज्योति स्वरूप होते हैं। गुरु तेग बहादुर, दस पातशाहियां, कबीर, दादू और ईसा। यह कोई जीव कोटि के पुरुष नहीं होते। यह तो ईश्वर कोटि के हैं। वह संसार का सुधार करने के लिये आते हैं।

और हम अपने कर्मों में बन्धें बैठे हैं। उनमें और हम में यही अन्तर है। हमारे में भी कुछ व्यक्ति ऐसे होंगे जिनको योग भ्रष्ट कहा है। बाल्मीकि तथा विधिचंद जैसे कितने लोग काम करने वाले और एक दम वे भगवान् से जुड़ गये। जिस दिन से उन्होंने नाम लिया, जब तक उनका मिलाप नहीं हुआ तब तक उन्होंने दीमक लगी हुई भी नहीं देखी। वे भी ईश्वर कोटि में पहुंच गये। इसलिये वे परमेश्वर थे। वे ईश्वर कोटि के थे। वह गुरु तेग बहादुर महापुरुष परोपकारी थे। बहुत परोपकारी थे।

चल भाई पढ़—

सोरठि म० ९

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी कथन करते हैं—सुन लो—यह पढ़ने वाला, मैं सुनाने वाला और कथन अकाल पुरख का है—

माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई।।

यह प्रश्न है, हे भाई ! हे बाबा ! हे प्यारे मैं उस परमेश्वर को कैसे देखूं ! गोसांई वह है जो 'गो' का स्वामी है। 'गो' नाम है सृष्टि का। 'गो' तो बहुत सी वस्तुओं का, जो सबका मालिक हो उसको गोसांई कहते हैं। मैं उस स्वामी को किस विधि के साथ देखूं मुझे वह विधि बताओ जिस के द्वारा मैं ईश्वर को देख लूं। परमेश्वर देखा नहीं जाता। वह दृश्य नहीं है। वह अनुभव किया जाता है, बुद्धि में समझा जाता है। भई यह जो मेरी बुद्धि को सत्ता स्फुर्ति देने वाला—मेरी बुद्धि में बैठा है और मेरी बुद्धि

को देखता है। जब आप कोई बुरा संकल्प सोचते हो तो खीझ नहीं आती ? जब कोई अच्छा काम करते हो तो खुशी नहीं होती है ? वह कौन है जो तुम्हारी बुद्धि में बैठा है ? 'दाना बीना साँई' वही है और कोई नहीं। वह सब के अन्दर है। चार वर्गों में है। हमारी जो यह अरदास है 'तेरे भाणे सरबत दा भला" यह बहुत अच्छी है। पर यह एक सीमा के अन्दर ही रह जाती है। जब यहां से जाते हैं तो फाटक तक नहीं जाती। यही साथ ले जाओ तो बहुत अच्छा है। कहोगे जरूर 'तेरे भाणे सरबत दा भला" लेकिन यदि सदैव के लिये साथ रखो तो फिर दोष ही कोई न आये। जब हमने सब का भला ही करना है फिर हमारा शत्रु कौन है?

ना को बैरी नही बिगाना सगल सांगि हम कउ बनि आई।।

(कानडा म : ५ पृ० १२९९)

फिर तो यह बात है कि मैं उस परमेश्वर को किस विधि से देख लूं और जान लूं।

महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिउ उरझाई।।

यह जो मोह है—यह अत्यंत तिमिर है, जंगल घना है, इसमें मेरा मन उलझ चुका है, फंस चुका है। यह तुम अब आप ही अपने मन के निर्णायक बन कर देखना। जहां जहां तुम्हारा मन लगा होगा वहीं पर। दुनियाँ में तो कई लोगों की बातें तो होती हैं कि—मुझे बेटा बड़ा प्यारा है। भाई! मुझे तो स्त्री प्यारी है। भई ! मुझे फलां प्यारा है। मेरा बड़ा प्रेम है। यह बात गलत है। प्रेम परमेश्वर से होता है अथवा गुरु से होता है। यह मोह है। इस मोह को लोग प्रेम कहने लग गये। यहां सारे भूल गये हैं कि यह तो मोह है। वह भी स्वार्थ वाला मोह है, यह तो बड़ा गलत है। इस मोह में, इस अज्ञान में मेरा मन फंस चुका है।

फिर हम सबको कहते हैं—

महा मोह अगिआनि तिमरि मो मन रहिउ उरझाई।। रहाउ।।

मेरा मन इस मोह में उलझ गया है। सबके प्रति उपदेश करते हैं। मन के प्रति उपदेश करके। यह पहला है।

उपदेश तीन प्रकार का होता है। जो मन के प्रति करे। वह उपदेश उत्तम होता है। मेरा मन यहां उलझ गया। भाई ! आप देखना। आप ही विचार करना। मेरा मन तो—गुरु साहिब कहते हैं कि यहां उलझ गया है। पर कहते हमें हैं। लेकिन मन के प्रति कह कर कहते हैं। रहाउ होता है

रागियों के लिये पंक्ति दो बार पढ़ो।

सगल जनम भरम ही भरम खोइउ.....

सारा जन्म तो मैंने भ्रम में गंवा दिया बेरहम दुनियाँ में। जब आप वेदान्त या कोई ग्रन्थ पढ़ोगे तो तीसरा कोई नहीं आयेगा। एक यथार्थ, एक भ्रम ज्ञान, तीसरा ज्ञान कोई है ही नहीं। भ्रम ज्ञान क्या है ? आपको सांयकाल में या रात को रस्सी में सांप दिखाई दिया। भ्रम ज्ञान के कारण आप दौड़ पड़ोगे। कहोगे लाओ डंडा। फलां-फलां दौड़े फिरोगे। यदि बहुत डरोगे तो गिर भी जाओगे। यह भ्रम ज्ञान है। यदि आपने लालटेन या दीपक मंगवा लिया रस्सी को रस्सी देख लिया। यह यथार्थ ज्ञान है। कोई इसमें हानि तो नहीं है। सूत्रों में बहुत अर्थ भरे होते हैं। अब आप यह बताओ कि आपको अपनी आत्मा में भ्रम तो नहीं दिखाई दे रहा। रस्सी में सर्प का भ्रम भी नहीं रहता जब हम उसे देख लेते हैं। यदि कोई अन्य आपको कहे कि सांप है तो आप कहोगे कोई नहीं। आ जाओ आ जाओ। मैं विचार सागर पढ़ाता था। बहुत शीध्र बताता हूं। जब मैंने उदाहरण दिए वह मानें नहीं। मैंने कहा—चलो अच्छा। एक नहर बह रही थी। मैंने एक ऐसी लकड़ी ले ली जिसका सिर बड़ा था। वह पुल के बीच में रख दी। वही तीन व्यक्ति बातें करते आ रहे थे जो मानते नहीं थे। जब पास आये तो सब दौड़ पड़े कि बीच में सर्प बैठा है। मैंने कहा आओ मैं देखता हूं। मैंने उस लकड़ी पर पैर रख दिया। फिर सब हंस पड़े। मैंने कहा क्यों ? कहते—हां जी ठीक है। भ्रम ज्ञान में ऐसे उलझा है कि उसे अपनी आत्मा का वास्तविक ज्ञान ही नहीं। लेकिन साथ में यह सिद्धान्त है—

बिना ज्ञान के अन्य कोई मोक्ष का मार्ग नहीं। पहले साधन हैं, पहले यज्ञ आदि निष्काम साधन हैं, फिर वैराग्य आदि साधन हैं, श्रवण मनन निधिध्यासन।

सुणिया मनिया मनि कीता भाउ।।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ।।

(जपुजी)

उस तीर्थ में तुम्हारा मन का स्नान तब होगा जब तुम्हारा ध्यान लग जायेगा। जब तुम्हारी ब्रह्माकार वृत्ति होगी। यदि ध्यान ऐसे लग जाता। नारद ने तो आना था। शास्त्र कंठस्थ किए। सब कुछ किया, पर शोक न गया। जब श्री सनत् सनंदन के पास गया तो उसने कहा कैसे है ? तुम तो देवऋषि हो। कहने लगा कि मुझे शोक व्याकुल कर रहा है। वह नहीं गया। जो

पढ़ा था उसने वह सब सुना दिया। चौदह विद्याएं जो कंठस्थ थीं सुनाई। उसने कहा कि विद्या पढ़ने से तुम्हारा मन तो परमात्मा के साथ जुड़ा नहीं। जिस को हम ध्यान कहते हैं उस ध्यान से अबिनाशी पद की प्राप्ति होती है। उसने पूछा कि तेरा मन परमेश्वर के साथ जुड़ा है ? तो नारद ने कहा—नहीं जी। फिर उसने कहा कि शोक कैसे जायेगा ? अब तू यह काम कर। कहने लगे कि—अब आप मुझे यह उपदेश दो "जोग अते भू मातम सुख मसती" यह उपदेशक ने लिखा है। उसने कहा जो व्यापक है उसके बिना तुम अपने ध्यान में कोई संस्कार नहीं डालना। और उस व्यापक पर दृढ़ निश्चय रखना—

साचि नामि मेरा मनु लागा।।
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।।

(आसा महला ५ पृ० ३८४)

तू नाम से मन को जोड़। दुनियाँ से प्रीति 'ठाठा बागा" ऐसी प्रीति पाई पर जब तुम्हारा मन भगवान् से जुड़ेगा तो कभी नहीं छूटेगा। तब तुम्हारे हर्ष शोक सब दूर हो जायेंगे। जब उसका अभ्यास किया, अभ्यास करके जब मन जुड़ा तो शोक दूर हो गया। फिर उसी नारद ने आकर के प्रहलाद को उपदेश दिया और व्यास को भी उसने उपदेश दिया।

इसलिये जब तक यह जीव यथार्थ नहीं जान लेगा कि यथार्थ संसार में एक ही वस्तु है, और कोई अन्य यथार्थ नहीं। 'एक' तो संकेत है, यह वस्तु है। यह 'एक' जो है न !

साहिबु मेरा एको है।।
एको है भाई एको है।।

(आसा महला १ पृष्ठ ३५०)

बस यह दृढ़ हो जाए कि भाई—मेरा परमात्मा एक है, वह सर्वव्यापक है—

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(सलोक महला ९ पृष्ठ १४२७)

मुझे वह विधि बताओ। अब वह विधि बता रहे हैं—

सगल जनम भरम ही भरम खोइउ नह असथिरु मति पाई।।

सारा जन्म भ्रम में खो गया। मुझे वह यथार्थ ज्ञान, आत्मा जाग्रत ज्योति का न हुआ। इसके साथ साथ यह भी है कि हमने संत मस्तुआने

वालों के मुख से सुना।

जब उन्होंने उद्घोष किया जपो खालसा जी सारे जाग्रत जोति नूं। फिर सब को कहा कि एक जाग्रत ज्योति जो तुमने देखनी है। यदि वह जाग्रत न हो तो बुद्धि को किस के साथ देखोगे, विचारों को किस के साथ देखोगे ? जाग्रत ज्योति यथार्थ है,

जनम मरन ते रहत नाराइण।।

वह है, वह व्यापक है, मुझे तुम यह बताओ

नह असथिरु मति पाई।।

'स्थिर' बुद्धि कब होती है ? जब एक के सन्मुख हो जाये। "१ ओंकार" एक के आकार वृत्ति हो जाए। मन एक के साथ जुड़ा हो और मुझे वह बुद्धि प्राप्त न हुई, जो परमेश्वर के साथ मिल कर लीन हो जाती है।

और बाकी अपना आपा रह जाता है। मैं 'अस्थिर' बुद्धि नहीं पाई। नौंवे पातशाह कहते हैं कि जब तक हमारी बुद्धि स्थिर नहीं होगी तब तक हमें परमेश्वर प्राप्त नहीं होगा। आप अपने अन्दर देखो आप के अन्दर कितने विचार चलते हैं और जब तक आपकी बुद्धि स्थिर नहीं होती तो उसमें प्रतिबिम्ब किस का होगा ? चलते जल में प्रतिबिम्ब नहीं पड़ेगा। इसलिये वह बुद्धि हमें प्राप्त नहीं हुई। यदि तुम्हारी बुद्धि परमेश्वर के साथ मिल कर एक हो जाती, फिर कभी चंचल न होती।

बिखिआसकत रहिउ निसु बासुर नह छूटी अधमाई।।

मन सारी आयु विषयों में आकर्षित होता रहा। विषयों में लगा रहा। सारे काम करता रहा। उसने भीष्म को प्रश्न करके पूछा कि क्या यह माया अच्छी है जो लोग एकत्रित करते हैं ? यदि तुम माया के साथ जाओगे पदार्थों के साथ जुड़ोगे, मोह के साथ जुड़ो तो, रोना भी तुम्हें पड़ेगा।

यदि धन आपके रहते चला गया तो रोना आपको है। यदि आप छोड़ कर चले गये तो फिर भी आपने रोते जाना है। रोना तो आपको ही है। पदार्थों के साथ मोह करोगे वह जायेंगे तो रोओगे। यदि मोह बना रहेगा तुम जावोगे तो रोते जाओगे पर जिसका मन नाम के साथ जुड़ गया वह तो फिर—

सिमरि सिमरि नाम बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २९५)

मन अपनी नीचता नहीं छोड़ता। उसके ऊपर किसी का भी यत्न नहीं होता। ना रविदास का, ना नामदेव का, ना धन्ने का और ना का। पर जिन पुरुषों ने ईश्वर के आगे प्रार्थना करके प्रयत्न किया गये।

हमारे महन्त होते थे। वे कहते—मैंने इतना किया,—इतना कि वह कह चुके तो उनको कहा गया कि तुमने अपने द्वारा क्या किय वह कहता कि—मुझे इस बात का तो पता ही नहीं।

उससे पूछा गया कि तुमने अपने स्वरूप को जान लिया। कह कि वह तो नहीं जाना। फिर तूने क्या किया ? राख किया—तुम

पहिले मन प्रबोधहि आपणा
पाछै अवर रीझावै।।

पहले अपने मन को प्रबोध करो। फिर जनक बनना है। जैसे निर्लेप रहा राज्य में। जहां बैठे वहां निर्लेप रहना होगा। सबसे प्रथ अपने मन को जगाना चाहिये। तुम्हें अपनी आत्मा का साक्षात्कार हो चाहिये। आत्मा के साथ अपने आप का।

जिनी आतमु चीनिआ परमातम सोई।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रित होई।।

(आसा महला १ पृ

पहले यह आपनी आत्मा को जाने। ना तो मन इस का 'आ न बुद्धि 'आपा' है। इन्द्रियां और शरीर भी 'आपा' नहीं, कोई इसका नहीं। एक कर्त्ता प्रमाण इसका 'आपा' है। इसको जब इसने जान लि मन इसको कुछ नहीं कहेगा। फिर मन इसका दास हो जाएगा औ इसकी आज्ञा में हो जाएगी। सारे काम अपने आप हो जाएगें। पर ज इसने करना है—

भई परापति मानुख देहुरीआ।।
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।।
अवरि काज तेरै कितै न काम।।
मिलु साध संगति भजु केवल नाम।।
सरंजामि लागु भवजल तरन कै।।
जनमु ब्रिथा जाति रंगे माइआ कै।।

(आसा महला ५ पृ

गुरु साहिब ने आप यह निर्णय लिया कि यह माया के प्रेम

ने आकर्षित किया हुआ है। आदर मान ने इसको आकर्षित किया और परमेश्वर के साथ इसने ध्यान नहीं जोड़ा। उसके साथ प्रेम न जोड़ा—

जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभि पाइउ।।
साध संगु कबहू नहीं कीना
नह कीरति प्रभ गाई।।

(पृष्ठ ६३२)

संतों की संगत तो की नहीं, संत तो एक ऐसी वस्तु हैं दुनियाँ में उस जैसी ऊंची कोई वस्तु नहीं। क्यों—

गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु।।
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २९३)

गुरु अर्जुन देव जी कहते कि जब परमेश्वर ने हमारे पर कृपा की तो हमें संत गुरु रामदास मिला

हरि जीउ नामु परिओ रामदासु।।

(सोरठि महला ५ पृष्ठ ६१२)

हरि जिसका नाम अब रामदास पड़ गया, फिर क्या हुआ ?

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २९३)

मैंने उस संत के साथ अपने अन्दर भगवान को देखा। बताओ इससे बड़ी कौन वस्तु है ?

हम परमेश्वर को बड़ा मानेंगे। पर वह संत जो नाम देता है मेरे साथ शर्त्त लगा लो उस संत के बिना हमारा काम नहीं बनना। संत के बिना मिलाने वाला भी कोई नहीं है। आप यह बात कह सकते हो—

कोटि मधे कोई सन्तु दिखाइआ।।
नानकु तिन कै संगि तराइआ।।

(प्रभाती महला ५ पृष्ठ १३४८)

हम तीन व्यक्तियों ने बांगर के बीच बाहर चुबारे में तीन गुरु ग्रन्थ साहिब प्रकाश किये। एक पंडित बचित्र सिंह था, एक मैं था और एक और था। भई ! आपस में देखें। साथ में शुद्ध जान लेंगे। तीन जो होते हैं। तीनों का भेद नहीं पड़ता। जब यह शब्द आया कि विपत्ति का मारा संत बन गया, पंडित ने मेरी ओर ऐसे देखा जब यह पंक्ति आई। वे कहते

जी अब कोई हानि नहीं, रह गई दस भाई ! मैं चुप कर गया। पर जब यह शब्द आया—

कोटि मधे कोई सन्तु दिखाइआ।।
नानकु तिन कै संगि तराइआ।।

(प्रभाती महला ५ पृ० १३४८)

पंडित जी कहते रह गई बात, कोई चिंता नहीं है। रह तो गई। कोई है तो सही। हमे तो संत हैं। जब तक संसार है, सब समान रहेगा, अवतार भी रहेंगे, भक्त भी रहेंगे, जीव भी रहेंगे। संसार यह नहीं कि परमात्मा बनाकर चला गया। वह तो

घट घट मै हरि जू बसै।।

(पृष्ठ १४२७)

प्रभु संसार बनाकर, हृदय में निवास लगाकर बैठा है। पर वह बुरा काम करने वाले को दिखाई नहीं देता। परन्तु फिर भी कहता है भाई ! बुरा हो गया। या पिछले जन्म में हो गया। यह कैसे कहता है क्योंकि परमेश्वर, चेतन उसके अन्दर विद्मान है। वह सबको समझने वाला है। यदि साध ु की संगत करता तो क्या हो जाता—

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २९३)

फिर तो यह भगवान् को देख लेता। पर इसने सन्त का तो साथ ही नहीं किया। इसको सन्त कोई पसन्द ही नहीं आया। जिस प्रकार किसी मेले में पशु देखते हैं—ऐसे यह संत को देखता है। बताओ—यह संत क्या देखेगा—

ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै।।

(सुखमनी पृष्ठ २७३)

सन्त की महिमा सन्त ही जानता है। संत आपको पसन्द करने या खोजने से नहीं मिलेगा। गुरु कभी भी किसी को खोजने से नहीं मिला। गुरु परमेश्वर ढूँढने से नहीं मिलता। बहुत अफसोस में था कि सारी आयु व्यतीत हो गई। पर प्रभु की प्राप्ति नहीं हुई। गुरु साहिब ने मरदाने को भेज दिया कि जाओ खाना खा आओ। उसके बहाने झंडाबाढ़ी आ गया। जब वह बैठ गया तेा गुरु जी ने कहा प्रसाद खा ले। उसने कहा—खिलाकर खाँऊगा। अन्त में गुरु जी ने कहा कि क्यों सोच में पड़ा है ? किसकी चिन्ता कर रहा है ? वह तो चिंता के योग्य नहीं। झंड़े ने कहा—बात तो ठीक है। पर कुछ विक्षेप आ गया था। गुरुजी ने कहा तुम्हारे अन्दर कोई

विक्षेप को देखने वाली वस्तु है जो बताती है। कहने लगा है तो सही। वह कौन है ? वह कहता 'दाना-बीना साँई' है। उसने कहा तेरे अन्दर जानने वाला आत्मा है; पर तूने उसको जाना नहीं। दुबारा पूछा कि—वह प्रभु सत्य नहीं। कहने लगे—सत्य है। तो बुद्धि को उस सत्य में एकाग्र करके निहार—वह प्रभु सबके भीतर है। पर—

ससा सति सति सति सोऊ।।
सति पुरख ते भिन्न न कोऊ।।

(गउड़ी बावन अखरी पृष्ठ २५०)

वह जो सत् पुरुष से भिन्न है उसको चित्त में नहीं बिठा लेना। यदि उसको बिठा लिया तो निकालना कठिन हो जाएगा।

दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री।।

(आसा महला ५ पृष्ठ ३८४)

तृष्णा रूपी अग्नि ने सबके हृदय जला दिए। कोई कोई हरा पौधा रह गया। कबीर, जयदेव, नामा, धन्ना यह तृष्णा अग्नि से बचे रहे। जब नामदेव को त्रिलोचन ने आकर कहा कि—तू अब लोभी हो गया है। धन के लोभ में पड़ गया है और नाम को छोड़कर सारा दिन काम में व्यस्त रहता है तो नामदेव जी ने कहा—

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि।।

(सलोक कबीर पृष्ठ १३७६)

काम मैं हाथ पैर से करता हूँ पर दिल मेरा भगवान से लगा है। इसलिए गुरु जी कहते हैं कि 'आत्मा का दर्शन' साध-संगत के साथ के बिना नहीं होता। संत भगवान् द्वारा क्षमा पात्र का नाम है।

संत किसी जानवर का नाम नहीं। किसी पक्षी का नाम नहीं, बल्कि कृपापात्र का नाम है—

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ताका लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २७७)

संत तो कृपापात्र का नाम है। जब गुरु अगंद देव पर कृपा हुई तो पूर्ण संत हो गये। गुरु अमरदास जी पूर्ण संत हो गए। गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव पूर्ण संत हो गए। बस बक्शे गए। उन्होंने भी जो आगे बख्शे संत हो गए। परमेश्वर बिना 'साधु-संगति' के प्राप्त नहीं होता। संत के संग से प्राप्त होगा। करोड़ों में कोई विरला संत है और परमेश्वर का बख्शा हुआ है। आप के जब पुण्य उदय होंगे, पुणय पुंज जब पूर्ण होगा—वह संत से मिलाप करा देगा।

नह कीरति प्रभ गाई।।

फिर एक परमेश्वर की कीर्ति का गायन करना है।

उसतति मन महि करि निरंकार।।
करि मन मेरे सति बिउहार।।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २८१)

मैंने परमेश्वर का कीर्ति-गान करना था। पर मैं तो दुनियों के गुणों का गायन करने लग पड़ा। मैंने उस 'एक' की ही सेवा करनी थी। 'एक' का ही सिमरन करना था। 'एक' का ही ध्यान करना था—

एको जपि एको सालाहि।।
एकु सिमरि एको मन आहि।।
एकस के गुन गाउ अनंत।।
मनि तनि जपि एक भगवंत।।
एको एकु एकु हरि आपि।।
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि।।
अनिक बिसथार एक ते भए।।
एकु अराधि पराछत गए।।
मन तन अन्तरि एकु प्रभु राता।।
गुर प्रसादि नानक एकु जाता।।

(गउड़ी सुखमनी म : ५ पृष्ठ २८६)

लो यहां बात समाप्त करें

जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई।।

गुरु साहिब का इसमें बहुत गहरा भाव यह है कि इन्होंने बहुत समझाया है। भई ! यह कह दे कि मेरे में कोई गुण नहीं। गुण आप में कोई होता ही नहीं। चेतन में कोई गुण नहीं होता। वह तो निर्गुण है। गुण-अवगुण तो तुम्हारे अन्तःकरण में हैं। अपने मन में कोई वस्तु न रखो—

मन अपुने ते बुरा मिटाना।।
पेखै सगल स्रिसटि साजना।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २६६)

पर का बुरा न राखहु चीत।।
तुम कउ दुखु नही भाई मीत।।

(आसा महला ५ पृष्ठ ३८६)

गुरु जी कहते हैं कि आप कभी यह मत कहो कि मेरे में ये गुण हैं। मेरी जाति मेरा धर्म, फलां-फलां। जब परमार्थ के मार्ग पर चलो तो नाम को छोड़कर और कुछ न पकड़ो।

वड्डा साहिबु ऊचा थाउ।।
उचे उपरि ऊचा नाउ।।
एवडु ऊचा होवै कोइ।।
तिस ऊचे कउ जाणै सोइ।।
जेवडु आपि जाणै आपि आपि।।
नानक नदरी करमी दाति।।

(जपुजी)

वह जो ऊंचा है, बड़ा है वह अपने आप को आप ही जानता है। वह नाम तुम्हें नामी के साथ मिला देगा। पर यह बात नहीं कि समुद्र में गंगा—मिलेगी तो सारा सागर गंगा हो जायेगा।

पर उस में लीन हो गई। वह नाम तुम्हारे मन को नामी (परमात्मा) के साथ मिला देगा और इससे बढ़ कर कोई बात नहीं है। पर इस बात का ज्ञान साधु संगति द्वारा होगा।

जो सरणि आवै तिसु कंठे लावै इहु बिरदु सुआमी संदा।।

(बिहागडा मः ५ पृष्ठ ५४४)

शरणागत की रक्षा करता है, बस।।
सर्व धर्माणपरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।।

(गीता अध्याय १८, ६६)

भगवान् कृष्ण ने सारी गीता का निचोड़ यहां दे दिया—कि शरण के बिना और कोई रास्ता नहीं है। शरण सारे पाप काट देती है। जब हम शरण चले जाएंगे तो सारे कर्म नाश हो जायेंगे। जब सज्जन ठग शरण में गया तो भाई वीर सिंह जी लिखते हैं कि उसने आंखों के जल से महाराज जी के चरण धो दिए। शरण में आ गया तथा सच्चा सज्जन बन गया। इसलिए भाई ! शरण सबसे बड़ा साधन है। शरणागति परमेश्वर के जन (संत) से कृपा होती है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।।

(गउड़ी सुखमनी पृष्ठ २७७)

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१६

सोरठि महला ५

माई मनु मेरो बसि नाहि।।
निस बासुर बिखिअन कउ धावत
किहि बिधि रोकउ ताहि।।१।। रहाउ।।
बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि
निमख न हीए बसावै।।
पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै।।१।।
मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना।।
घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना।।२।।
जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी।।
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी।।३।।१।।

(सोरठि म : ९ पृ० ६३२)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

माई मनु मेरो बसि नाहि।।

हे माई ! मन मेरा, मेरे वश में नहीं है।

निस बासुर बिखिअन कउ धावत .....

रात दिन विषय वासनाओं की ओर भागा जा रहा है। रात दिन विषयों का चिंतन करता है। यह बात कोई बताने वाली नहीं है। तुम अपने मन को स्वयं नहीं देखते कि यह क्या करता है ?. विषयों की ओर भाग रहा है। विषयों की और विषयों वाली वस्तुओं को जमा करता रहता है।

किहि बिधि रोकउ ताहि।। १।।

बताओ ! किस विधि से इस मन को रोकूं। गुरु साहिंब कहते हैं कि किस विधि से मन पर नियंत्रण करूं। इस बात पर तुम विचार कर लो।

बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै।।

वेदों और पुराणों की सारी पंक्तियों पर विचार सुनें, ऐसे ना कहो इतने अनजान नहीं हैं। सभी कुछ सुन लिया है पर कभी एक क्षण भी एकाग्र नहीं हुए। अगर हमारा मन एक क्षण के लिए भी एकाग्र हो जाता तो बच जाते।

एक चित जिहि इक छिन धिआइउ।।
काल फास के बीच न आइउ।।

(दशम् ग्रन्थ)

तुम स्वयं देखो एकाग्र होते हो कभी ? प्रातः स्नान करके बैठ के देख लो कभी, एकाग्र होकर। मन यदि नाम से जुड़ गया तो तुम्हारी विजय है। अगर संसार की बातें ही सोचता रहा तो फिर कैसी विजय है ? भाई ! इसीलिए मन विषयों से रुकता नहीं।

पर धन पर दारा सिउ रचिओ .....

कहते हैं वह कौन-सी चीज़ है जिससे गुरु देखा जाता है। जड़ माया और चेतन माया है। चेतन माया एक ही है और शेष जड़ माया है। उन में रमा हुआ है। जड़ या चेतन माया को चाहता है। बताओ ! अब इसका क्या उपचार किया जाए। पराया धन और पराई स्त्रियों पर लोभायमान रहता है।

बिरथा जनमु सिरावै।।

फिर इस जन्म में आकर हमने क्या प्राप्त किया ? यह जन्म विषय-विकारों के कारण ही मिला है जो कि पिछले जन्म का ही परिणाम है। इस जन्म में तुम्हें क्या लाभ मिला ? बीमारी तो पहले जैसी रह गई। फिर वही चौरासी के चक्कर में बन्ध गया।

मदि माइआ कै भइओ बावरो.....

मन को एक बीमारी और लग गई। माया के नशे में पागल हो गया। माया मिल जाए तो—

माइआधारी अति अंना बोला।।
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला।।

(गउड़ी वार पृ० ३१३)

मायाधारी को यदि कोई बुद्धिमता की बात बताओगे अथवा नाम की, तो वह कहेगा—कि हां तेरे जैसे भिखारी बहुत घूम रहे हैं। माया के नशे में पागल हो गया, दीवाना हो गया।

सूझत नह कछु गिआना।।

ज्ञान की तो इसको समझ नहीं आई। वह जो परमात्मा अन्दर

बैठा है जो साक्षी रूप होकर सब के अन्दर विद्मान है, वह कभी देखा है ? जो सब का मालिक है। वह साक्षी है, द्रष्टा है। कभी उससे मिले हो ? इसीलिए इसको ज्ञान नहीं है–

घट ही भीतरि बसत निरंजनु ताको मरमु न जाना।।

कहते हैं जो निराकार है, तुम्हारे हृदय में रहता है। बाहर खोजने मत जाओ।

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।।१।। रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।
तैसे ही हरि बसै निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।

(धनासरी म ९ : पृ० ६८४)

नौवें पातशाह कहते हैं कि प्रभु तुम्हारे हृदय में निवास करते हैं। पर तुम ने उसे ढूंढा नहीं। अपनी बुद्धि का मुख ऊपर की तरफ नहीं किया। बुद्धि पीछे रखी है। उस वाहिगुरु का ध्यान सब की बुद्धि की तरफ है पर हमारी बुद्धि की पीठ परमेश्वर की तरफ है। कैसी विपरीत बात है, मन की पीठ है। जिस दिन मन का मुख उस की ओर हो गया उस दिन निर्णय हो जायेगा।

ता को मरमु न जाना।।

उस का मर्म न जाना। वह यथार्थ तत्त्व तो हृदय में निवास करता है। पर उसका हृदय में तत्त्व न जाना। भई ! नारायण जन्म मृत्यु से रहित है। वह कभी जन्म-मृत्यु में नहीं आता। वह व्यापक है परिपूर्ण है यह–

घट घट मै हरि जू बसै

जो है यह अमर है। इसीलिए, भाई यह तत्त्व न जाना। यह मेरा 'आपा' अलग है और जन्म-मृत्यु से रहित है। जो क्षण मात्र भी हो जाए तो भी काम चल जाए।

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी।।

जब साधु की संगत हुई तो तुच्छ बुद्धि सारी नष्ट हो गई। भला तर्क से निम्न कोटि की बुद्धि नष्ट हो सकती है ? विचारों के साथ हो सकती है ? कबीर ने तो स्पष्ट बताया है

पंडित मुला जो लिखि दीआ।।
छाडि चले हम कछू न लीआ।।

(भैरउ कबीर पृ० ११५६)

हमरा झगरा रहा न कोऊ।।
पंडित मुलां छाडे दोऊ।।

कहता इन वस्तुओं में से तुम्हारे कर्म काण्ड में से, तुम्हारी शरण में से मैं कुछ नहीं लेकर जाता। इसको अपने पास सम्भाल के रखो। और मेरा किसी प्रकार का कोई झगड़ा नहीं है। इसीलिए गुरु साहिब कहते हैं कि तुम अपने आप में पहुंचे नहीं। तुम्हारे हृदय में जो बैठा है, तुमने उसका रहस्य नहीं जाना। यथार्थ वस्तु को नहीं जाना। वह व्यापक है, ज्ञान है और ज्ञान स्वरूप तेरा आपा है।

तब नानक चेतिओ चिन्तामनि.....

फिर मैं सब ओर से हार कर परमेश्वर का चिंतन करने लगा जैसे बाल्मीकी का मन लगा। जब तक वह दीमक जम नहीं गई और जब तक उसने कृष्ण को बुला लिया नहीं तब तक वह राम नाम के सिमरन में लगा रहा। नाम के साथ मन को लगाएंगे तो नामी की प्राप्ति होगी। यह मर्म है। नाम के साथ मन को जोड़ लो। नामी उसी समय तुम्हारे सामने है। अगर मन कहीं और हो तो गैर हाज़री की नमाज़ भी स्वीकार नहीं होती।

तो भजन कैसे हो जायेगा भाई ? ये सब गैर हाज़री की बातें हैं।

काटी जम की फासी।।

फेर भई मेरे यमों की फांसी कट गई। जब संत ने कृपा की तो रहस्य समझ में आ गया। जन्म-मरण कट गया। जन्म-मृत्यु चेतन का है ही नहीं। यह प्रकृति है। बस दो वस्तुएं हैं—एक प्रकृति, एक प्रवृत्ति। उस में चेतन का नाम है ये सब प्रकृति है।

दिसटिमान है सगल मिथेना।।

(पृ० १० ८३)

यह सब झूठ है। यह कोई पहला जन्म ही हमें मिला है। आगे आप को पता नहीं कि कितने जन्म मिले' हैं इसीलिए—

कई जनम भए कीट पतंगा।।
कई जनम गज मीन कुरंगा।।

(गउड़ी गुआ : मः ५ पृ० १७६)

यह कोई नई बात नहीं है। पर जब हमारा मन चेतन से जुड़ जायेगा तो परा विद्या प्राप्त हो जायेगी और जन्म-मरन समाप्त हो जायेगा। बोलो—

सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१७

सोरठि महला ९

मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।
पर दारा निंदिआ रस रचिओ
राम भगति नहि कीनी।। रहाउ।।
मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ।।
अंति संग काहू नहीं दीना
बिरथा आपु बंधाइआ।।१।।
ना हरि भजिओ ना गुर जनु सेविओ
नहि उपजिओ कछु गिआना।।
घट ही माहि निरंजनु तेरै
तै खोजत उदिआना।।२।।
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ
अस्थिर मति नही पाई।।
मानस देह पाइ पद हरि भजु
नानक बात बताई।।३।।

(पृ० ६३१)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु। सतिनाम श्री वाहिगुरु। सतिनाम श्री वाहिगुरु।

तिलक जंञू राखा प्रभि ताका।।
कीनो बडो कलू महि साका।।
साधन हेति इती जिन करी।।
सीस दीआ पर सी न उचरी।।

(दसम् ग्रन्थ)

ये पंक्तियां दसवें पातशाह ने नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी

के बारे में उच्चारण की थीं। कहते हैं—कि वह कौन था जिस ने तिलक और यज्ञोपवीत की रक्षा की, अपना शीश दिया ? वहां हमारे पास एक संत आया। वह बहुत गालियां निकालता था। वह कहता दिल्ली खून गिराया हमने जा के। अरे—अब रक्त पीने वाले पैदा हो गये, बताओ क्या करोगे इन का तुम ? इस शब्द में नवम् पातशाह मन के प्रति कहते हैं—क्योंकि सबसे समीप मन है। मन दो चीजों से बना है—एक है इस में चेतन और एक है जड़ वृत्ति। वृत्ति जड़ है, परंतु इसमें बैठने वाला मन है। जब यह मन तुम्हें दिख जाये तब तुम्हारा काम बन जायेगा।

मन तूं जोति सरूपु है
आपणा मूलु पछाणु।।

(पृ० ४४१)

मन ज्योति स्वरूप है पर संकल्प की सत्ता नहीं है। पर अज्ञान करके उसकी पूरी सत्ता दृष्टिगोचर होती है। इस करके तुम्हें मन का पता ही नहीं लगा है। अभी यह चित्त जड़ की ग्रन्थि पड़ गई। इसलिए यह मन की ग्रन्थि जब खुलेगी तब तुम्हारी आंख खुल जायेगी। जड़ता दूर हो जाएगी और तुम तो चेतन हो ही।

हो कोऊ ऐसा मीतु
जि तोरै बिखम गांठि।।

(पृ० १३९६)

कोई ऐसा सच्चा मित्र है जो चित्त जड़ की ग्रन्थि खोल दे।

नानक इकु स्रीधर नाथु
जि टूटे लेइ सांठि।।

गुरु साहिब कहते हैं कि एक परमेश्वर है, अगर वह कृपा कर दे तो इस को नजर आ जाए

दिसटिमान है सगल मिथेना

(मारू म० १ पृ० १०८३)

जो भी देखने में आता है, वह झूठ है, मिथ्या है। पर द्रष्टा तो मिथ्या नहीं।

मुई सुरति बादु अहंकारु
ओहु न मूआ जो देखणहारु।।

(गउड़ी मः १ पृ० १५२)

वह देखने वाला, जन्म मृत्यु वाला नहीं है। वह तेरा आपना 'आपा' है। ध्यान तेरा दृश्य है और तूं इसका द्रष्टा है। जब इसको अपने आप का होश आया तब फिर यह किसी की नहीं सुनेगा। मन की गांठ खुल गई। जड़ जड़ ही रहेगी और चेतन चेतन रहेगा। दृश्य सदा ज्ञेय रहेगा और देखने वाला ज्ञाता ही रहेगा। देखने वाला सत्य और दिखाई देने वाला झूठ। इसीलिए भाई, मन को उपदेश करते हैं गुरु जी

मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।

ऐ मेरे मन, तूने कौन सी कुबुद्धि पकड़ ली है। वह कहते हैं कि मुझे पता नहीं कि यह कौन सी खोटी बुद्धि है।

पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी।।

तुम यहीं तक पहुंचे हो, पराई स्त्रियों को देखना, दूसरे के धन को लूटना, ये बुरे काम करने। तुम यहीं रुक गये। आगे कौन था ? आगे थी भक्ति और प्रेम।

प्रेम भगति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है।

(सवैये पृ० १३८८)

परमेश्वर संत बना देता है पर किसके साथ ? वह कौनसी साम्रगी है ? प्रेमा भक्ति से। जब तक तुम्हारे अन्दर प्रेमाभक्ति नहीं आयेगी, तब तक तुम संत नहीं बन सकते। संत बनाना है परमेश्वर ने आप। स्वयं तुम नहीं बन सकते।

ब्रहम गिआनी सेइ जन भए
नानक जिन प्रभ आपि करेइ।।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २७२)

ब्रह्मज्ञानी वही बनेगा, जिसको प्रभु आप बनायेंगे। जब तक हम प्रेमाभक्ति नहीं करते अथवा तुम्हारा ध्यान उस नाम से नहीं जुड़ता, तुम्हारा कुछ नहीं बनेगा। यह है धर्म का पहला सोपान कि अपने मन को नाम से जोड़ लो फिर क्या हुआ—

नाम संगि जिसका मनु मानिआ
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।

(गउड़ी सुख पृ० २८१)

जब तक तुम्हारा मन नाम से नहीं जुड़ता, तुम मन में यह न सोचो कि हमें मोक्ष मिल जायेगा। ऐसा पागलपन न करो–

नामु संगी सो मनि न बसाइओ।।
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।।
सो सांचिओ जितु भूख तिसाइओ।।
अंम्रित नामु तोसा नहीं पाइओ।।

(टोड़ी मः ५ पृ० ७१५)

मन को नाम ने ही 'नामी' के साथ जोड़ना है और तुम्हें 'नामी' की प्राप्ति हो जायेगी। बात तो केवल इतनी सी है, इस से ज्यादा कुछ नहीं। यदि है तो बता दो। पर तुम बताओ क्या तुम्हारा मन नाम में रम गया ? अगर नहीं तो फालतू की बात है। फिर तुम लगे नहीं–

सो सांचिओ जितु भूख तिसाइओ।।

(पृ० ७१५)

जो भूख और तृष्णा बढ़ाए, वह माया तुम ने एकत्रित की, तृष्णा द्वारा, और माया के पीछे भागते फिरते हो–

सहस खटे लख कउ उठि धावै।।
तृपति न आवै माइआ पाछै पावै।।

(पृ० २७८)

बैंक में इतने पैसे जमा करवा दिये कि इतने सालों में इतने हो जायेंगे। मूर्ख, कल को तू मर जायेगा तो उनका क्या करेगा ? सारे मूर्ख इकट्ठे हुए हैं इसीलिए गुरु साहिब ने सार बताया है।

दावा अगनि बहुत तृण जाले।।
कोई हरिआ बूटु रहिओ री।।

(आसा म० ५ : पृ० ३८४)

इस माया ने सभी के अन्तःकरण झुलसा के रख दिये। क्या तुम हर समय माया की गिनती नहीं करते ? बताओ तो ? क्या कभी कबीर ने माया के मनकों की गिनती की ? उसने साफ कह दिया।

सरपनी ते ऊपरि नहीं बलीआ।।
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ।।

(आसा कबीर पृ० ४८०)

कबीर जी कहते हैं कि माया रूपी सर्पिणी से ज्यादा कोई बलवान

नहीं। इसने ब्रह्मा, विष्णु और महादेव को भी छला है। पुराण पढ़ कर देख लो कि शिव का क्या हाल हुआ और ब्रह्मा का क्या हुआ। विष्णु किधर दौड़ता रहा। तुम तो किसके बिचारे हो। फिर कबीर जी को कहा गया कि अब तुम क्या करोगे तो वह कहता—

सपनी सपनी किआ कहहु भाई
जिनि साचु पछानिआ तिनि सर्पनी खाई।।

(पृ० ४८०)

वह कहता है कि हमने इसका अभाव ही कर दिया और समझ गए, सच को पहचान लिया। वह सत्य क्या है ?

आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

वह तो तीनों कालों में एक रस रहने वाला सत्य है। वह सत्य क्या है ? "तरई काल अबाधिऐ" इसका लक्षण यही था कि जो तीनों कालों में एक रस रहे। तुम अपने भीतर देखो। तुम्हारा आत्मा कभी नहीं बदला। तुम्हारे संकल्प बदलते रहते हैं। अब यह संकल्प होगा, फिर दूसरा होगा, फिर तीसरा आ जायेगा। तुम बता भी दोगे कि आज मेरा क्या संकल्प है ? कल क्या था। पर वह देखने वाला तो नहीं बदला। तुम्हारा 'आपा' तो स्थिर है, संकल्प नहीं। वह तो संकल्पों को भी देखने वाला है। तुम्हारे विचारों को भी देखने वाला है और तुम्हारी कामनाओं को भी देखने वाला है। जो तृष्णा भरी हुई है उसको भी वह देखता है।

वासना बद्धा आवै जाइ।

(वारां भाई गुरदास)

वासना तो एक बंधन है, अगर इसमें फँस गया तो जन्म लेगा और मरेगा। उसने कहा कि इतने रुपये आठ साल में दो गुणा हो जाते हैं और मैंने उससे पूछा कि अगर तू कल मर गया तो फेर क्या करेगा ? वह कहता कि यह तो कुछ पता नहीं। मैंने कहा कि तुम लोक-रीति का पालन कर रहे हो। ये जो पढ़े-लिखे हैं लोभी से, ये ही लोगों को शिक्षा देते हैं। वह स्वयं तो बिगड़े हुये हैं और दूसरों को भी बिगाड़ देते हैं। इसीलिए भाई भले काम किया करो।

पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी।।

तुम लोगों की निंदा में रमे रहे। तेरा मन पराई स्त्रियों और पराये धन में रम गया। नवम् पातशाह कहते हैं कि वह प्रेमा भक्ति तुझे प्राप्त

नहीं हुई। सर्वप्रथम प्रेमा भक्ति को खोज–

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि .....

मुक्ति का मार्ग तुमने जाना ही नहीं। भाई ! तुम तो माया के चक्कर में ही भाग रहे हो। मनके गिनता हैं तेरा मन। तेरा मन कभी नाम से जुड़ा नहीं। तू थोथी बातें करता है। "धन जोरनि कउ धाइआ" रात और दिन धन के लिए भागता फिरता है। कि अमुक व्यक्ति ने कोठी बना ली और मैं भी कोई ठगी करूं। एक साधु का एक शिष्य था जिसके बारे में हम आपको बतातें हैं। शिष्य ने कोठी डाल ली और महात्मा को दिखाने के लिए ले गया। फिर वह साधु आकर मुझे कहने लगा कि कल तक तो यह व्यक्ति कह रहा था कि दो आने के दो केले, दो केले दो आने के और आज कोठी डाल ली। फिर साधु ने उससे पूछा कि तुम्हारे दूध है, घी है, रोटी पानी है। कहता नहीं। साधु ने कहा कि हर रोज एक ईंट निकाल के खा लिया कर। साधु भी इसी तरह का था। भाई, इसीलिए आप बताओ कि तुमने तो जनता जनार्दन की सेवा करनी थी ? पर कैसे करनी थी ? जन जनार्द्धन है। ये जितने संत आयेंगे न, वे पहले एक शब्द बोलेंगे, कि जन जनार्दन है। कहते कि यह जो जनता है ये भगवान् हैं। इनको परमेश्वर समझ के सेवा करो। सेवा का फल नहीं तुम देखते ? तुम्हारे तालाब बन गए है; जिला करनाल के, और तुम कभी वहां गये हो ? यह तुम्हें बनाकर दे गये हैं। तुम तो नहीं जाते होते। वे मुझे कहने लगे कि एक थूही गांव वाले थे। अन्य तो कोई आया नहीं। मैंने कहा कि वे इस बात को जानते ही नहीं। बड़े चालाक आदमी हैं। उन पर कभी भरोसा मत करना। भाई ! तुम यह बताओ क्या तुम्हारा सेवा का कर्त्तव्य नहीं बनता ? तुम घर में बेकारों की तरह बैठे हो, तुम्हारा सेवा का भी कर्त्तव्य है। भाई ! मन, तन और धन के साथ सेवा करो। तीसरे दिन काम बन जाएगा। कोई और कर जायेंगे तो तुम्हारा क्या बनेगा? अगर करनाल जिले वाले सेवा करेंगे तो तुम्हारा क्या बनेगा ? इस कर के कुछ सोचा भी करो।

धन जोरिन कउ धाइआ।।

ये बहुत समझदार हैं। इनसे बात करोगे तो इनको पता है कि हमने तो बहुत रुपये कमा लिये हैं। साधु तो ऐसे ही घूम रहे हैं। ये गलत है। अरे मूर्खो ! अगर तुमने सेवा करनी है तो तन मन से करो। बस रात

दिन धन संग्रह के लिए भाग रहे हो। कोठी बना लोगे और काम कर लोगे। तुम जन-सेवा करो गरीबों को ऊपर उठाओ। चार पांच दिन हुए ये मुझ से बातें कर रहे थे। मैंने कहा कि जो ज़िमीदार चार पांच एकड़ से कम जमीन रखते हैं वे भी यहीं बैठे होंगे। उस का भी कोई हाल है ? उस बीचारे का भी क्या कोई गुजारा है ? उसके बच्चे नंगे घूम रहे हैं। क्या तुमने उनको कभी कपड़े सिला के दिये हैं ? सभी चुप कर गये। मैंने कहा कि तुम गांव के गरीबों को ही ऊपर उठा देते। यदि किसी जट्ट के पास कम ज़मीन है तो उसको बटाई पर ही दे देते अथवा कुछ और करते। कुछ तो करो। तुम तो और ही कामों में लगे हो। भाई ! तुम गलत लगे हो तुम्हारा तो रास्ता ही खराब है।

अंति संग काहू नही दीना.....

उस धन ने अंत में तुम्हारा साथ नहीं देना। मुझे एक आदमी बताता है कि शामगढ़ वाले सरदार की जब मृत्यु निकट आई तो उसके तीनों लड़के कहने लगे—जी हस्ताक्षर करो। यहां हस्ताक्षर करो। वहां करो। सरदार कहने लगा—मूर्खो ! मुझे आराम से मरने तो दो। उसने ऐसा ही कहा कि मुझे फुर्सत में मरने तो दो। सो धन का यह हाल है। यह मरने भी नहीं देता। जब तुम मरोगे सच्ची बात है अपने मन में देख लेना। तुम्हें यह होगा कि इस दीवार में है, या उस स्थान पर है, इतने में ही तुम्हारे प्राण निकल जायेंगे। तुम्हारी आत्मा परमात्मा की तरफ जायेगी ही नहीं। इसीलिए

अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइया।।

धन ने अंत में तेरा साथ नहीं देना। व्यर्थ ही तुम लोभ में फंस गये हो।

लोभी का वेसाहु न कीजै
जे का पारि वसाइ।।

(सलोक मः ३ पृ० १४१७)

लोभी का कभी भरोसा न करो, जब तक तुम्हारा काम न चल जाए। पता नहीं आपको कहां मारे, कौनसे कूएँ में फैंके जाके। इसीलिए—

वासना बधा आवै जाइ (भाई गुरदास)

वासना से बंधा जन्मेगा और मरेगा, पर तुम्हें यह ज्ञात नहीं। प्रतिदिन पढ़ते भी हो

अंत बार नानक बिनु हरि जी
कोऊ कामि न आइओ।।

(पृ० ६३४)

बिना परमेश्वर के अन्त को तुम्हारी रक्षा करने वाला और कोई नहीं। साफ बात है।

ना हरि भजिओ ना गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।

ना तो तुमको हरि का भजन मिला, तुम सच बताओ कि तुम्हारा मन कभी हरि के नाम से जुड़ा है ? हरि के नाम के साथ कभी ? तो फिर न तुम ने हरि का भजन किया, न ही 'गुरुजन' की सेवा की ? न ही किसी महापुरुष ब्रह्मज्ञानी की सेवा की ? तेरे हृदय में ज्ञान ही नहीं आया, आत्मा का, तुझे प्रभु का ज्ञान ही नहीं।

यह तो वेद का ढिंढोरा है भाई। ज्ञान के बिना किसी का मोक्ष नहीं। ज्ञान से ही मोक्ष है।

भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ
पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ।।

(सिरीराग मः १ पृ० ५९)

गुरु जी कहते हैं कि जा कर अपने बड़ों से पूछ लो। ब्रह्मा से जो आपका बड़ा है और वेद व्यास से भी पूछ लो। किसी को भी गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। गुरु किसे कहते हैं ? गुरु उस को कहते हैं जिस को पूरा ज्ञान हो। ब्रह्मज्ञानी को कहते हैं–

ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर
नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर।।
ब्रहमगिआनी का सगल अकारु
ब्रहमगिआनी आपि निरंकारु
ब्रहमगिआनी सभ स्रिसटि का करता
ब्रहमगिआनी सद जीवै नही मरता।।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २७३)

वह गुरु तो सर्वव्यापक है और उस गुरु को आपने मिलना था। वह भी तुझे प्राप्त नहीं हुआ। तीनों स्थानों पर तुम असफल हो गये। न ही नाम प्राप्त हुआ, न ही किसी महापुरुष की सेवा की। समय यूं ही निकल गया।

घटि ही माहि निरंजन तेरै तै खोजत उदिआना।।

वह निराकार परमेश्वर तेरे हृदय में बैठा है जो मन के संकल्पों को देखता है। तुम अपने संकल्पों को देखते हो, कि आज मेरा यह विचार है, कल यह विचार था, आज मेरा मन ठीक नहीं है। यह कौन बताता है ? दाना बीना बताता है। वह द्रष्टा है।

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।

(सलोक मः २ पृ० १४४)

जो तुम्हारे अच्छे और बुरे कर्मों को टंकित करता है वह कौन है ? वह पारख आप है। तुम्हारे हृदय में प्रभु आप ही बैठा है। गुरु साहिब बताते हैं–

घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।।

वह तेरे हृदय में बैठा है और तुम वन में घूम रहे हो ? तो जंगल क्या है ? विषय शब्द, स्पर्श रूप, रस और गन्ध। मुझे किसी ने एक बात सुनाई कि–जिस दिन "रामतीर्थ" विदेश से आए तो कहने लगे कि मैं कल दो मिनट भाषण करूंगा फिर मुझे जाना है। बहुत दुनियां एकत्र हुई। भाई ! दो मिनिट में कौन सा व्याख्यान कर देगा ?

जब सारे एकत्र हो गए तो रामतीर्थ कहने लगा कि–आ गए सारे! अब सुनो ! जिस पुरुष को संसार के विषय नहीं हिला सकते वह सारे संसार को हिला देगा।" जाओ विचारो, कितनी ऊंची बात है। जिस के मन को विषय नहीं हिला सकते वह सब को हिला देगा। वह कौन है ? वह पूर्ण पुरुष है। उसको संत कहते हैं। महापुरुष कहते हैं, मुनि कहते हैं–तुम देखते नहीं अपने मन के भीतर। विषय तुम्हारे मन को टक्कर नहीं मारते ? पर तुम प्रसन्न हो रहे हो। जिधर विषय-वासनाएं प्रेरित करती हैं उधर भाग लेते हो। आज उधर जा के सिनेमा देखना है। तुम ने वहां क्या देखना है ? बीच में बीड़ी पीते हैं। एक और चीज ले आये हैं यह पागल जिसको कहते हैं–टेलीविजन'। अपने घरों में ले आये हैं। कि सारा परिवार देखते रहो। मैं देहली गया और अमरीक ने मेरी कुर्सी रख दी और वह चला दिया। मैंने देखा कि एक चोर भाग रहा है और दूसरा यह करे। मैंने पूछा कि तुमने यह क्या किया ? तो अमरीक ने कहा कि–इसीलिए तो दुनिया भाग रही है। मैंने कहा बच्चे बिगाड़ लोगे। न ये पढ़ेंगे, न कोई अच्छा काम करेंगे। रोज देखेंगे और वही संस्कार पड़ जायेंगे। उल्टे रास्ते

पर चलेंगे। मैं तो उठ कर चला गया। पर बच्चे कहां पीछा छोड़ते हैं ? गांव में अगर एक के घर हो तो आधा गांव ही वहीं आ जाता है। ये भी कोई देखने वाली वस्तु है ? तुमने तो यह देखना है कि हमारा मन नाम से जुड़ गया है कि नहीं ? देखना तो यह था। और तुम क्या देखते फिरते हो ? जो वस्तु नाम को भुलाने वाली है उसी के तुम प्रेमी हो गये हो।

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ .....

विषयों में लग कर बहुत जन्म घूम-घूम के हार गए।

असथिर मति नही पाई।।

तुम्हें वह बुद्धि नहीं मिली जो परमेश्वर के साथ मिलकर स्थिर होनी है वह तुम्हें प्राप्त नहीं हुई।

मानस देह पाइ पद हरि भजु .....

मनुष्य का जीवन मिल गया। यह कितना अच्छा हुआ। गुरु जी कहते हैं हरि का भजन करना चाहिए।

नानक बात बताई।।

मैं यह शब्द जंगल में ऊंची-ऊंची पढ़ रहा था जब मैं कह रहा था तो मेहर सिंह कहीं सुन रहा था। जब मैंने कहा कि–

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई।।

मेहर सिंह कहने लगा कि बहुत बढ़िया बात बताई। फिर नानक की बात तो गलत हो ही नहीं सकती। मैंने उसको पीछे खड़े नहीं देखा था। इसलिए भाई ! यह जन्म मिल गया है तो भजन करो। यह बात गुरु नानक देव जी ने बताई है। अब तुम इस बात को धारण कर लोगे ? क्यों भाई ? आदमी ने कहा, प्रयत्न करेंगे। मैंने कहा प्रयत्न का क्या काम ? मूर्ख ! कमर कस के लग, तीसरे दिन काम बन जाएगा

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई।।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१८

धनासरी म० ५

त्रिसना बुझै हरि कै नामि।।
महा संतोखु होवै गुर बचनी
प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु।।१।। रहाउ।।
महा कलोल बुझहि माइआ के
करि किरपा मेरे दीन दइआल।।
अपणा नामु देहि जपि जीवा
पूरन होइ दास की घाल।।१।।
सरब मनोरथ राज सूख रस
सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम।।
जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै
नानक जन के पूरन काम।।२।।

(पृ० ६८३)

त्रिसना बुझै हरि कै नामि।।

दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोइ हरिआ बूटु रहिओ री।।

(आसा मः ५ पृ० ३८४)

यह तृष्णा रूपी जो दावाग्नि है उसने जीवों के अन्तःकरण जला कर रख दिये हैं। पर कई और पौधे भी हैं जिन को तृष्णा अग्नि छू नहीं सकती। वह है कबीर, नामदेव, धन्ना और जितने भी भक्त महापुरुष हैं क्योंकि उनके पास नाम होता है। पर नाम कृपा से प्राप्त होता है। नाम के साथ समस्त रोग अपने आप निवृत्त हो जाते हैं। लेकिन 'नाम' कृपा से प्राप्त होता है। पूर्ण गुरु की कृपा से—

आपीनै आपु साजिओ आपीनै रचिओ नाओ।।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।।।

(आसा दी वार पृ० ४६३)

आज उन रागियों ने पढ़ा कि–

"गुहज नाम परगासिआ"

जब पूरे गुरु की कृपा हो जाए, तो जो 'रहस्य नाम' है उसका प्रकाश हो जाता है। आप निर्गुण परमेश्वर ने सगुण रूप होकर नाम भी उसने आपना स्वयं ही रचा है।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।

(गउड़ी सुख : पृ० २८४)

नाम क्या वस्तु है ? जिसने खंड ब्रह्माँड धारण किये हुए हैं, जो सब की पालना करता है और सब के हृदय में बैठा है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।

(सलोक मः ६ पृ० १४२६)

नाम और नामी एक है। दूसरी सृष्टि है। और उसके बीच में भी उसमें भी नाम आप आसन लगा कर सब के हृदय में साक्षी रूप होकर बैठा है। गुरुघर ने एक ही बात बताई है।

साहिबु मेरा एको है।। एको है भाई एको है।।

(आसा मः २ पृ० ३५०)

मेरा स्वामी एक है, एक है।

एकम एकंकारु निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

(पृ० ८३८)

वह सब के हृदय में बैठा है, निर्लेप है। कोई नाम रूप नहीं। उसका नाम ॐ है। उपनिषद् में आता है। पर बात यह है कि उस 'ॐ' का प्रकाश कैसे हो ? कहते हैं वह सत्य है। "१ ओंकार सतिनाम' इसीलिए उसका प्रकाश पूर्ण गुरु और प्रभु की कृपा से ही करती है। वह सब का अधिष्ठान और आधार है। सब का रक्षक है मालिक है और पारख है। नाम नामी का अभेद है। गुरु साहिब कहते हैं–

त्रिसना बुझै हरि कै नामि।।

यह तृष्णा रूपी बीमारी पैदा होती है अहंकार से। तृष्णा अहंकार की बेटी है। इसीलिए अहंकार के साथ ही तृष्णा भी हो जाती है और अहंकार की निवृत्ति के बिना तृष्णा की निवृत्ति नहीं हो सकती।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इस माहि।।

(सलोक म :१)

किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।।

(आसा दी वार पृ० ४६६)

इस की एक ही औषधि है—

सिमरि सिमरि नामु बारं बार।। नानक जीअ का इहै अधार।।

(गउड़ी सुख पृ० २९६)

प्रभु का सिमरन जब तुम्हारे अन्दर में आएगा, तो सत्य तुम्हारे अन्दर स्वयं आ जायेगा। सत्यता के पीछे सिमरन ने चलना है। यह 'एक' ग्रन्थों का नियम है कि—

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।।
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।।

(आसा दी वार मः १ पृ० ४६८)

जब इसके पास सत्य होगा तो हृदय में सिमरन चल पड़ेगा।

सरब रोग का अउखदु नामु।।
कलिआण रूप मंगल गुण गाम।।

(गउड़ी सुख प० २७४)

और सभी औषधियों की भी एक ही औषधि है, नाम। यह ही अहंकार को निवृत्त करेगा। तो फिर तृष्णा से निवृत्ति होगी, उस प्रभु के नाम से।

महा संतोखु होवै गुर बचनी .....

जब पूर्ण गुरु के वचन, पूर्ण प्रभु की बाबत इसने सुने तो इसको शांति हो जायेगी। जब तक वह वचन अर्थात व्यापक प्रभु प्राप्त नहीं हुआ, तब तक सन्तोष की प्राप्ति नहीं।

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते।।
आतम महि पारब्रह्म लहन्ते।।

(गउड़ी सुखमनी पृ० २७७)

कई कोटि प्रभु को खोजने चले। पर आत्मा के बिना किसी को भी परमात्मा न मिला। क्योंकि आत्मा ही परमात्मा है। महावीर और बुद्ध समकालीन हुए हैं। जैसे कबीर और गुरु नानक भी समकालीन हुए हैं और इनका मेल हुआ। बुद्ध ने किसी से पूछा कि तुम आत्मा को परमात्मा क्यों नहीं कहते ? वह कहने लगा आत्मा परमात्मा है ही एक। मैं इसको दूसरी बार क्या कहूं कि आत्मा ही परमात्मा है। और मैं आत्मा पर जाकर ठहर गया। कबीर पारख पर जाकर ठहर गये। व्यास ने 'व्यापक' कह दिया। इसीलिए भाई! पूर्ण गुरु के उपदेश से तुमको शांति आ जाएगी और तृष्णा रूपी आग समाप्त हो जाएगी। अहंकार की निवृत्ति हो जाएगी और सारे रोग चले जाएंगे।

पूर्ण प्रभु की प्राप्ति हो जाएगी।

प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु।।

परमात्मा के साथ तुम्हारा ध्यान पूरा हो जाये, तनिक मात्र भी अन्तर न हो। पतंजलि ने ध्यान की जो विधि बताई, व्यास ने उसी का खण्डन कर दिया। कबीर ने आगे उसका भी खण्डन कर दिया। वह कहता है कि—जिस अंगुष्ठ मात्र का ध्यान तुम दसवें द्वार में करते हो, वह चेतन का प्रतिबिम्ब है। उसको देखने जानने वाला तो परमेश्वर आप ही है। तुम अलग खड़े हो गए। जो देखने वाला द्रष्टा था उसी में लीन होना था।

काहि रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।। रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।

(धनासरी मः ९ पृ० ६८४)

तेरा भ्रम दूर नहीं हुआ। तुम प्रतिबिम्ब पर ही खड़े हो गये। कबीर ने भी यही खण्डन किया। 'बीजक' में कहते हैं—कि हे योगी ! तुम बहुत ऊंचे गये लेकिन प्रतिबिम्ब पर रुक गये। तुमने प्रतिबिम्ब को ही परमेश्वर मान लिया। देखने वाले को तो तुम ने जाना ही नहीं। इसीलिए जब तक यह उस में पूर्ण ध्यान नहीं लगाता, वह देखने वाला द्रष्टा है। पूरे गुरु को मिलकर ही उसका पूर्ण ध्यान प्राप्त हो सकता है। और कहीं नहीं। ध्यान देखना नहीं, जानना है। परमेश्वर परिपूर्ण है। मेरे हृदय में भी वही है ज्ञाता।

महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल।।

हे दीनों पर दया करने वाले, हे मेरे परमेश्वर वह जो *'महा कल्लोल'* दिन और रात, मन में और बाहर करता है वह कब बुझेंगे ?

करि किरपा मेरे दीन दइआल।।

जब उस प्रभु की कृपा होगी तो आत्म प्राप्ति होगी। तो इसकी कल्पना हटेगी। जो आपका मन *'महा कलोल'* करता है कभी यह सोचता है, कभी वह सोचता है। वह परमेश्र की कृपा के बिना नहीं हटेंगे। इसीलिए नवम् पातशाह ने लिखा है जब कृपा हो जाएगी तो—

जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई।।

(गउड़ी मः ९ पृ० २१९)

जब प्रभु की इस पर दया दृष्टि हो जायेगी तब सारी विधियां इस को, स्वयं ही बन जायेंगी। यह ज्ञाता हो जायेगा। जब तक गुरु की कृपा नहीं होगी तब तक माया के *'कलोल'* नहीं मिटेंगे। कल्पना नहीं हटेगी, मन-कल्पना में ही रहेगा। तुम स्वयं मन को देखो, किसी से पूछो मत। सच में तुम्हारा मन क्या क्या करता है ? वह तुम अकेले बैठ के देखना। जब तक उस आदि की कृपा नहीं होगी वह रहस्य 'नाम' जो आपके अन्दर वह 'एक' बैठा है उसका प्रकाश नहीं होगा।

अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल।।

तेरे बारे में क्या कहें ? बस तुम कृपा करो प्रभु ! अपने नाम की कृपा करो। फिर मेरा जीवन शुद्ध हो जायेगा और मैं भी जीवितों में आ जाऊंगा।

मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी।।

(सोरठि म० ९ पृ० ६३१)

तुमने तो अभी तक राम की भक्ति की ही नहीं। तुम तो इन रसों में ही भागे फिरते हो। तेरी तो बुद्धि रास ही नहीं आई, कुमति है।

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ।।

(पृ० ६३१)

तुमने, नाम जो मुक्ति का मार्ग है—उस को नहीं जाना, वह तुझे प्राप्त नहीं हुआ। उस नाम के साथ तेरा मन नहीं मिला।

नामु संगी सो मनि न बसाइओ।। छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।।

(टोडी मः ५ पृ० ७१५)

जिसका नाम के साथ मन मिल जायेगा वह परमेश्वर को पहचान लेगा इसीलिए—

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ।।
अंति संग काहू नहीं दीना बिरथा आपु बंधाइआ।।

(पृ० ६३२)

सारी आयु तुम धन जोड़ते रहे लेकिन अन्त में यह तेरा साथ नहीं देगा। वह धन, जो तुम एकत्र कर रहे हो, वह तुझे धोखा दे जायेगा।

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ।।
न हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।

न ही तुमने हरि का भजन किया क्योंकि तेरा मन नाम से जुड़ा ही नहीं था। एक संत था वह मुसलमानों से कहता था तुम बिसमिल्ला कहते

हो उसका अर्थ है—कि सारे विश्व में अल्लाह है। उन्होंने कहा कि अर्थ तो यही है। फिर संत ने कहा कि तुम चाकू क्यों रखते हो ? हर रोज प्रातः साथ साथ बिसमिल्ला-बिसमिल्ला करते हो फिर उसी का ही बुरा करते हो। वह फक्कड सा साधु था। मैंने कहा भई साधु बहुत उपयुक्त कहता है। इन बातों से कुछ नहीं बनना जो तुम करते हो। अगर तुम कहो कि इन बातों से तुम्हारा मार्ग साफ हो जायेगा तो कभी नहीं होगा।

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।।

(पृ० ६३२)

तेरे हृदय में निराकार परमेश्वर बैठा है। तुम संसार में, जंगल में घूम रहे हो। तुम विषय-वासनाओं में भागे फिर रहे हो।

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई।।

तुम अनेक जन्मों में घूम घूम कर आए हो और आगे इसी प्रकार फिरने की तैयारी कर रहे हो। जिस बुद्धि ने परमेश्वर के साथ मिलना था। ब्रह्माकार वृत्ति, अखण्डाकार, वह तुम्हें अभी तक नहीं मिली।

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई।।
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई।।

(पृ० ६३२)

नौवें पातशाह कहते हैं कि हमें यह बात गुरु नानक ने बताई है अगर मानव शरीर को धारण कर लिया, तो परमेश्वर के चरणों का ध्यान और प्रभु के नाम का सिमरन कर, तो तेरा उद्धार होगा। अन्य कोई उपाय नहीं।

आपणा नामु देहि जपि जीवा।।

हे प्रभु ! अगर आप अपना नाम मुझे दे दें, तो मैं भी जीवितों में आ जाऊं। ये कृपा की वस्तुएं हैं। नाम का सुमिरन कर के मैं मृत, फिर जीवित हो जाऊ।

पूरन होइ दास की घाल।।

मैं आप का दास हूं। मेरा जो, श्रम है, कमाई है, वह आप की कृपा से पूरी हो जाए और आप मुझे नाम की कृपा कर दो।

सरब मनोरथ राज सूख रस।।

जितने भी तेरे मन के मनोरथ हैं, वे पूरे हो जायेंगे। तुझे राज्य मिल जायेगा। सारे सुख और आनन्द अगर तुम चाहते हो तो फिर तुम्हें क्या करना पड़ेगा ?

सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम।।

तब तुम परमेश्वर का एक रस कीर्त्तन करो। उसका नाम जपो। जिनके

पीछे आज तुम भाग रहे हो, फिर ये सब तेरे पीछे भागे फिरेंगे। पर तुम तो इधर चलते ही नहीं। शैतानियां करते हो। आजकल तो दुनिया भी शैतान हो गई है। फिर कोई लाभ तो न हुआ। इसलिए तू नाम जपा कर, कीर्त्तन किया कर और श्रवण किया कर।

जिस कै करमि लिखिआ धुरि करते
नानक जन के पूरन काम।।

जिस पर परमेश्वर लिख दे, कृपा कर दे, उसके पूर्ण भाग्य होते हैं। तुलसी दास जी ने भी एक स्थान पर लिखा है–

पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता
सत संगति संसृति कर अंता।

(मानस उत्तर काण्ड ४५, ६)

जब संत का प्रसंग आया तब तुलसीदास को पूछा कि वे प्रभु कैसे प्राप्त होते हैं ? उन्होंने कहा संतों द्वारा दोबारा पूछा कि संत कैसे प्राप्त होते है? तब वे कहते हैं–

पुण्य पुंज बिनु मिलाहि न संता

जब तुम्हारे सारे शुभ कर्मों का पुण्य एकत्र हो जायेगा, निष्काम कर्मों का पुण्य तो तुझे संत मिल जायेगा। वह संत क्या करेगा, तुम्हारे संसार का अंत कर देगा। तुम्हारा संसार समाप्त हो जायेगा। फिर संत ऐसे नहीं मिलता, कृपा से मिलता है। गुरु जी कहते हैं–

प्रेम भगति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है।।

(सवैये पृ० १३८८)

कि प्रभु की कृपा से, फिर तुम ही संत बन जाओगे।

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।। नामु प्रभू का लागा मीठा।।

(गउड़ी सुख पृ० २९३)

संत गुरु रामदास की कृपा से मैंने अपने अन्दर परमेश्वर देख लिया है। अब मैं प्रभु को गुरुओं की कृपा से कभी नहीं भूलता। हमेशा याद रखता हूं, सिमरन करता हूं। मेरा अब उद्धार हो गया, कहते हैं गुरु अर्जुन देव जी।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु।।

❑

परिशिष्ट

आदरणीय जिज्ञासुओ ! जिन जिन सौभाग्यशालियों को इस ग्रन्थ रूपी ज्ञान के महत् सागर में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे सब इस बात को भली प्रकार जान सकेंगे कि जिन महापुरुषों के पवित्र हृदय में पवित्र रसना के माध्यम से यह अमृतमयी वृष्टि हुई है—वे किस देश के निवासी होंगे। जिसके सम्बन्ध में भक्त रविदास ने फरमाया है

बेगमपुरा सहर को नाउ।। दूख अंदोहु नहीं तिहि ठाउ।।

आप इस अवस्था में सदैव स्थित रहते थे और समीप आये प्रत्येक प्राणी को यही उपदेश देते कि भाई ! तू जड़ नहीं है, चेतन है, तू दृश्य नहीं द्रष्टा है। गुरुवाणी के माध्यम से समझाते, "मन तू जोत स्वरूप है अपणा मूल पछाण"। ऐ भाई ! तुझे मनुष्य देह प्राप्त हुई है। अपनी पहचान करने के लिये। यदि तू अपने आपको पहचान नहीं सका, तो यह अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा लेगा। इस से नीचे कभी उपदेश न करते।

इस प्रकार आपजी ने 'सत्य उपदेश करते करते समस्त देश का भ्रमण किया। अनेक प्राणियों को गुरबाणी का अंचल पकड़ाया। आप जी विरक्तीय स्वभाव के कारण प्रायः पद यात्रा ही करते। दिवस अवसान पर बाहर खेतों में एकांत ठहरते। जिस जिस धरती को आप जी की पवित्र चरण-स्पर्श प्राप्त हुई वही स्थान पवित्रता के साथ सुवसित हो उठा।

"जित्थे बैठन साध जन सो थान सुहंदा।" के महावाक्य के अनुसार वह धरती शोभनीय हो गई। इसलिये बहुत लोगों ने संगति करके अपने जीवन की दिशा परमेश्वर की ओर मोड़ दी। इस प्रकार महाराज जी जहां जहां गये, संगत भारी गिनती में वाणी अध्ययन में प्रवृत्त हुई जिन में से कुछ विशेष स्थान—थूहा, लोह सिंबली, अमरपुर, खोख, कोटली, लोपे धनौला, भोतने, गोराया, दौद, कुतबनपुर, होशियारपुर आदि स्थानों पर महाराज जी की याद में कुटियां बनी हुई हैं। इन स्थानों पर महाराज जी ने वाणी का ऐसा बीज-वपन किया जो कि बड़ी संख्या में संगत बाणी का शिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

सो इस प्रकार आप जी ने जहां अनेक प्राणियों को बाणी से सम्पर्क कराया वहां करनाल शहर पर उन्होंने विशेष कृपा की। आप जी ने सत्य उपदेश करते हुये अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग इस सौभाग्यशाली करनाल शहर में लगाया जिस के परिणाम स्वरूप समस्त भारत में शायद ही कोई ऐसा नगर हो जहां करनाल के समान पर-उपकार के कार्य चल रहे हों। करनाल शहर के बाहर जहां महाराज ठहरते थे—'निर्मल कुटिया' के नाम से प्रसिद्ध है जिस के आस-पास घनी आबादी हो चुकी है।

महाराज जी की कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यहां खुला लंगर चलता रहता है और संगत 'नानक दरबार' में सुखमनी साहिब का पाठ करके अपना जन्म संवार रही है।

इसी महान् नगर में महाराज जी के समकालीन महापुरुष बाबा भगत सिंह जी हुए हैं। उन्होंने भी यहां करनाल निवासी संगत पर भारी कृपा की। अनेक प्राणियों का उद्धार किया जिनकी स्मृति में नगर के भीतर एक स्थान बना हुआ है जिसको 'छोटी कुटिया' करके जाना जाता है। सो महापुरुषों की कृपा-दृष्टि और संगत का प्रेम देखकर, ईश्वरीय आज्ञा को शिरोधार्य करके परम आदरणीय महंत बाबा राम सिंह जी महाराज यहां दीपावली के शुभ अवसर पर एक बहुत ही महान् यज्ञ करवा रहें हैं जिसमें साहिब गुरु ग्रन्थ साहिब जी के २५१ श्री अखण्ड पाठ साहिबों के भोग दीपावली वाले दिन डाले जायेंगे और आठ दिन निरंतर लंगर चलते रहेंगे। सो दोनों कुटियाओं का चाहे एक किलोमीटर का अन्तर है पर महापुरुषों ने निर्गुण से सगुण जनम धारण करके सब दूरी मिटाकर दोनों कुटियाओं को एक कर दिया है जोकि ज्योति करके पहले भी एक ही थी।

अतः इस प्रकार महाराज जी ने पंजाब और हरियाणा के गांवों और नगरों की संगत का बहुत बड़ी संख्या में उद्धार किया, वहां आप जी ने महंत बाबा राम सिंह महाराज जी को 'निर्मल आश्रम' ऋषिकेश के महंत घोषित करके बाबा जोधसिंह एवं बाबा छोटू जी को सहायक बना कर अनंत कृपा से परिपूर्ण करके अनेकों सेवा के कार्य करवाये ओर करवा रहे हैं। जैसे कनखल में यात्रियों के निवास के लिये एक बहुत भव्य भवन का निर्माण किया गया है जो कि तैयार हो चुकी है, और वहां लंगर चलता रहता है। इसी प्रकार 'निर्मल आश्रम' ऋषिकेश में जहां अनेक कमरों का निर्माण किया वहां प्रतिदिन खुला क्षेत्र भी चलता है जिसमें पांच छः सौ साधु महात्मा और बहुत से दीन-हीन लोग प्रसाद लेते हैं और अनेकों यात्रियों के रहने का प्रबन्ध है। इसी प्रकार आश्रम की ओर से हस्पताल चल रहा है जिसका नाम 'निर्मल आश्रम हस्पताल' है जिसमें करीब प्रतिदिन ३०० मरीज़ देखे जाते हैं। यहां जन को जनार्दन का रूप जानकर सेवा की जाती है। यह विशेषतः गुरु-कृपा द्वारा ही हो रही है। सो इसी प्रकार आश्रम में पधारी संगत को गुरवाणी का पठन-पाठन चलता रहता है। सो महापुरुषों की महिमा का वर्णन कहां तक किया जाये—

महिमा ना जानहि बेद।। ब्रहमे नहीं जानहि भेद।।
अवतार ना जानहि अंतु।। परमेसर पारब्रहम बेअंतु।।

उस बेअंत की महिमा जिह्वा का विषय नहीं है। सो सब संगत से—भूल चूक गलतियों की क्षमा मांगते हैं।

आशा है आप क्षमा करेंगे।

❑